प्रियांशी जैन

अब बस करो.



१

बात आज से कुछ साल पुरानी है. रात का वक़्त था ओर पहाड़ी रास्ता था बारिश बहोत तेज़ हो रही थी. सुनसान सड़क पर मैं तेज़ रफ़्तार से अपनी कार भगा रहा था. पुलिस मेरा पीछा कर रही थी और मेरी गाड़ी पर गोलियो की बौछार हो रही थी. मेरी पीठ पर और कंधे पर भी दो गोली लगी हुई थी लेकिन मैं फिर भी बहोत तेज़ रफ़्तार से कार चला रहा था कि अचानक किसी पुलिस वाले की गोली मेरी कार के टायर पर लगी और मेरी गाड़ी जो कि तेज़ रफ़्तार मे थी जाके एक पहाड़ी से ढलान की तरफ नीचे बढ़ने लगी और एक पेड़ के सहारे मेरी कार हवा मे लटक गई.अब मैं और मेरी कार एक गहरी खाई की ओर एक कमज़ोर से पेड़ पर लटक रहे थे.मैने बहोत कोशिश करके कार को पिछे की तरफ रिवर्स किया और गाड़ी को खाई मे जाने से बचा लिया.लेकिन इससे पहले कि मैं कार से बाहर निकलता पुलिस की जीप खाई के पास आके रुक गई और तभी मेरी आँखो के सामने भी अंधेरा छाने लगा.उसके कुछ पल बाद जब मुझे होश आया तो मुझे अपने सीने मे तेज़ दर्द हो रहा था और मेरी पूरी कमीज़ खून से भीग गई थी.शायद उन पुलिस वालों ने मुझे कार से उतारकर गोली मार दी थी और फिर मुझे वापिस कार मे बिठा कर ढलान की तरफ कार को धक्का दे रहे थे.

मैं उस वक़्त आधा बेहोश था और आधा होश मे था फिर भी खुद को बचाने की पूरी कोशिश कर रहा था. मैने कार को संभालने की बहोत कोशिश की लेकिन संभाल नही पा रहा था.ब्रेक पर अपने पाओ का पूरा दबाव देने के बावजूद भी गाड़ी घिसट कर पहाड़ी से नीचे जा गिरी और धड़ाम की आवाज़ के साथ पानी मे गिर गई और कार का स्टियरिंग मेरे सिर मे लगा और बेहोशी ने मुझे अपनी आगोश मे पूरी तरह ले लिया उसके बाद क्या हुआ क्या नही मुझे कुछ नही याद. मैं नही जानता मैं कब तक उस पानी मे रहा और पानी का तेज़ बहाव मुझे और मेरी गाड़ी को कहाँ तक बहा कर ले गया. जब आँख खुली तो खुद को एक छोटे से कमरे मे पाया.लेकिन जब मैने चारपाई से उठने की कोशिश की तो मेरे हाथ-पैर मेरा साथ नही दे रहे थे और ज़ोर लगाने पर पूरे शरीर मे दर्द की एक लहर दौड़ गई. इतने मे अचानक एक बूढ़ा आदमी मेरे पास जल्दी से आया और मेरे कंधे पर हाथ रखकर मुझे लेटने का इशारा किया.

बाबा: बेटा तुम कौन हो क्या नाम है तुम्हारा?

मैं: (मुझे कुछ भी याद नही था कि मैं कौन हूँ.बहोत याद करने पर भी कुछ याद नही आ रहा था कि मेरी पिछली जिंदगी क्या थी और मैं कौन हूँ.इसलिए बस उस बूढ़े आदमी को और इस जगह को देख रहा था कि अचानक एक आवाज़ मेरे कानो से टकराई)

बाबा: क्या हुआ बेटा ? बताओ ना कौन हो तुम ? कहाँ से आए हो?

मैं: मुझे कुछ याद नही है कि मैं कौन हूँ.....(अपने सिर पर हाथ रखकर) यह जगह कौनसी है

बाबा: बेटा हम ने तुम्हे पानी से निकाला है मेरी बेटी अक्सर नदी किनारे जाती है वहाँ उसको किनारे पर पड़े तुम मिले. जब तुम उनको मिले तो बहोत बुरी तरह ज़ख्मी ओर बेहोश थे वो और मेरी बहू तुम्हे यहाँ ले आई.

मैं: अच्छा!!!!!! बाबा मैं यहाँ कितने दिन से हूँ?

बाबा: बेटा तुमको यहाँ तीन महीने से ज़्यादा होने वाले हैं तुम इतने दिन यहाँ बेहोश पड़े थे. जितना हो सका मेरी बेटी और बहू ने तुम्हारा इलाज किया हम ग़रीबो से जितना हो सका हम ने तुम्हारी खिदमत की.

मैं: ऐसा मत कहिए बाबा आपने जो मेरे लिए किया आप सबका बहोत-बहोत शुक्रिया. लेकिन मुझे कुछ भी याद क्यो नही है.

बाबा: बेटा तुम्हारे सिर मे बहोत गहरी चोट थी जिसको भरने मे बहोत वक़्त लग गया मुमकिन है उस घाव की वजह से तुम्हारी याददाश्त चली गई हो.

इतने मे एक लड़की की आवाज़ सुनाई दी....बाबा अकेले-अकेले किससे बात कर रहे हो....सठिया गये हो क्या और कमरे मे आ गई. मेरी नज़र उस पर पड़ी तो मैने सिर से पैर तक उसको देखा और उसका पूरा जायेज़ा लिया.दिखने मे पतली सी लेकिन लंबी, काले बाल, बड़ी-बड़ी आँखें, गोरा रंग, काले रंग का सलवार कमीज़ जिसपर छोटे-छोटे फूल बने थे और कंधे से कमर पर बँधा हुआ दुपट्टा चाल मे अज़ीब सा बे-ढांगापन.

बाबा :- देख बेटी इनको होश आ गया (खुश होते हुए)

जास्मिन :- अर्रे!!! आपको होश आ गया.अब कैसे हो...क्या नाम है आपका....कहाँ से आए हो आप (एक साथ कई सवाल)

बाबा : बेटी ज़रा साँस तो ले.. इतने सारे सवाल एक साथ पुछ लिए पहले पूरी बात तो सुना कर.

जास्मिन :- (मूह बनाकर) अच्छा बोलो क्या है?

बाबा :- बेटी इनको होश तो आ गया है लेकिन इनको याद कुछ भी नही है यह सब अपना पिछला भूल चुके हैं.

जास्मिन :- (अपने मूह पर हाथ रखते हुए) हाए! अब इनके घरवालो को कैसे ढूंढ़ेंगे?

इतने मे बाबा मेरी तरफ देखते हुए.

बाबा:- बेटा तुम अभी ठीक नही हो और बहोत कमजोर हो इसलिए आराम करो. यह मेरी बेटी है जास्मिन यह तुम्हारी अच्छे से देख-भाल करेगी और तुम फिकर ना करो सब ठीक हो जाएगा. हम सब तुम्हारे लिए दुआ करेंगे.(और दोनो बाप बेटी कमरे से बाहर चले गये)

यह बात मेरे लिए किसी झटके से कम नही थी कि ना तो मुझे यह पता था कि मैं कौन हूँ और नही कुछ मुझे मेरा पिछला कुछ याद था .उपर से मैं ३ महीने से यहाँ पड़ा हुआ था. एक ही सवाल मेरे दिमाग़ मे बार-बार आ रहा था कि मैं कौन हूँ....आख़िर कौन हूँ मैं अचानक मेरे सिर मे दर्द होने लगा इसलिए मैने अपनी पुरानी ज़िंदगी के बारे मे ज़्यादा नही सोचा और अपने ज़ख़्मो को देखने लगा मेरी बॉडी की काफ़ी जगह पर पट्टी बँधी हुई थी. मैं इस परिवार के बारे मे सोच रहा था कि कितने नेक़ लोग है जिन्होने यह जानते हुए कि मैं एक अजनबी हूँ ना सिर्फ़ मुझे बचाया बल्कि इतने महीने तक मुझे संभाला भी और मेरी देख-भाल भी की.मैं अपनी सोच मे ही गुम्म था कि अचानक मुझे किसी के क़दमो की आवाज़ सुनाई दी. मैने सिर उठाके देखा तो एक लड़की कमरे मे आती हुई नज़र आई यह कोई दूसरी लड़की थी.बाबा के साथ जो आई थी वो नही थी.वो शायद भागकर आई थी इसलिए उसका साँस चढ़ा हुआ था...यह सलमा थी जो यह सुनकर भागती हुई आई थी कि मुझे होश आ गया है.

मैने नज़र भरके उसे देखा....दिखने मे ना ज़्यादा लंबी ना ज़्यादा छोटी, रंग गोरा, नशीली सी आँखें, पीले रंग का सलवार कमीज़ और सिर पर सलीके से दुपट्टा ओढ़े हुए लेकिन वो दुपट्टा भी उसकी छातियों की बनावट को छुपाने मे नाकाम था. मैं अभी उसके रूप रंग ही गोर से देख रहा था की अचानक एक आवाज़ ने मुझे चोंका दिया.

सलमा: अब कैसे हो?

मैं: ठीक हूँ....आपने जो मेरे लिए किया उसका बहोत-बहोत शुक्रिया.

सलमा: कैसी बात कर रहे हो...यह तो मेरा फ़र्ज़ था...लेकिन मुझे बाबा ने बताया कि आपको कुछ भी याद नही?

मैं: (नही मे गर्दन हिलाते हुए)जी नही.

सलमा: कोई बात नही आप फिकर ना करो आप जल्द ही अच्छे हो जाओगे

मैं: आपका नाम क्या है?

सलमा: (अपना दुपट्टा सर पर ठीक करते हुए)मेरा नाम सलमा है मैं बाबा की बहू हूँ

मैं: अच्छा.....आपके पति कहाँ है?

सलमा : वो तो शहर मे एक मिल मे काम करते हैं इसलिए साल मे १-२ बार ही आ पाते हैं. (सलमा ने मुझसे झूठ बोला)

मैं: क्या मैं बाहर जा सकता हूँ?

सलमा: हिला तो जा नही रहा.. बाहर कैसे जाओगे. बाहर जाने की कोई ज़रूरत नही ओर फिर जाओगे भी कहाँ.अभी तो आपने कहा कि कुछ भी याद नही है. कुछ दिन आराम करो इस बीच क्या पता आपको कुछ याद ही आ जाए.फिर हम आपके घरवालो को आपकी खबर पहुँचा सके.

मैं : ठीक है.

सलमा: भूख लगी हो तो कुछ खाने को लाऊ?

मैं : नही मैं ठीक हूँ.

सलमा: ठीक है फिर आप आराम करो कुछ चाहिए हो तो मुझे आवाज़ लगा लेना.

इस तरह वो कमरे से बाहर चली गई और मैं पीछे से उसको देखता रहा. मैं हालाकी चल नही सकता था लेकिन फिर भी मैने हिम्मत करके उठने की कोशिश की और बेड पर बैठ गया .में खिड़की से बाहर देखने लगा और ठंडी हवा का मज़ा लेने लगा. बाहर की हसीन वादियाँ उँचे पहाड़ और उन पर सफेद चादर की तरह फैली हुई बर्फ और उन पहाड़ो के बीच डूबता हुआ सूरज किसी का भी दिल मोह लेने के लिए काफ़ी थे मेरी आँखें बस इसी हसीन मंज़र को मन ही मन निहार रही थी. मैं काफ़ी देर बाहर क़ुदरत की सुंदरता को देखता रहा और फिर धीरे-धीरे सूरज को पहाड़ो ने अपनी आगोश मे ले लिया और नीले साफ आसमान मे छोटे-छोटे मोतियो जैसे तारे टिम-तिमाने लगे. मैं यह तो नही जानता कि मैं कौन हूँ और कहाँ से आया हूँ लेकिन दिल मे अभी भी यही आस थी कि कैसे भी मुझे मेरी जिंदगी का कुछ तो याद आए ताकि मैं भी मेरे परिवार मेरे अपनो के पास जा सकूँ. जाने उनका मेरा बिना क्या हाल हो रहा होगा. मैं अपनी इन्ही सोच मे गुम था कि किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर मुझे चोंका दिया.

सलमा: खाना तैयार है अगर भूख लगी हो तो खाना लेकर आऊ

मैं: नही मुझे भूख नही है.

सलमा: हाए अल्लाह!!!! आपने इतने दिन से कुछ नही खाया है. खुद को देखो ज़रा कितने ज़ख़्मी और कमज़ोर हो अगर खाना नही खाओगे तो ठीक कैसे होगे बोलो...

मैं: लेकिन मुझे भूख नही है आप लोग खा लो...

सलमा: ऐसे कैसे नही खाएँगे अगर आप खाना नही खाओगे तो हम भी नही खाएँगे. हमारे यहाँ मेहमान भूखा नही सो सकता.

मैं: अच्छा ऐसा है क्या.... ठीक है फिर आप मेरा खाना डालकर रख दो.मुझे जब भूख होगी मैं खा लूँगा.

सलमा: (अपनी कमर पर हाथ रखकर) जी नही!!!! मैं अभी खाना डाल कर ला रही हूँ. आप अभी मेरे सामने खाना खाएँगे उसके बाद आपको लेप भी लगाना है.

मैं: ठीक है जी जैसे आपकी मर्ज़ी.(कुछ सोचते हुए) सुनिए ज़रा!!!!

सलमा : हंजी(पलटकर मुझे देखते हुए) अब क्या हुआ?

मैं: कुछ नही...!! यह लेप कौनसा लगाएँगी आप मेरे जख्म पर ?

सलमा : (मुस्कुराते हुए) आपके जो यह ज़ख़्म है इन पर दवा लगाने की बात कर रही थी मैं.

मैं: अच्छा (और मेरी नज़रे सलमा को कमरे से बाहर जाते हुए देखती रही)

कुछ ही देर मे सलमा खाना ले आई ओर मैने आज जाने कितने दिन बाद पेट भर खाना खाया था. कुछ देर बाद जास्मिन खाने की थाली ले गई और सलमा और जास्मिन दोनो कमरे मे आ गई एक कटोरा हाथ मे लिए.

सलमा: अर्रे आप अभी तक लेटे नही...खाना खा लिया ना..

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हंजी खाना खा लिया. बहोत अच्छा बनाया था खाना.

सलमा :शुक्रिया!!! अब चलिए लेट जाइए ताकि हम दोनो आपको लेप लगा सकें (सलमा और जास्मिन ने मुझे मिलकर लिटा दिया)

मैं : जब मैं बेहोश था तब भी आप दोनो ही मुझे दवाई लगाती थी?

जास्मिन: जी हाँ ओर कौन है यहाँ..

मैं : मेरा मतलब है.. कोई आदमी नही लगाता था मुझे..

जास्मिन: जी नही बाबा तो अब खुद ही बड़ी मुश्किल से चल-फिर पाते हैं और भाई जान बाहर ही रहते हैं. घर कम ही आते हैं ज़्यादातर.इसलिए हम दोनो ही आपको दवाई लगाती थी और.....

मैं: और क्या?

जास्मिन: कपड़े भी हम ही आपके बदलती थी(नज़रें झुकाते हुए)

मैं: अच्छा

सलमा : अच्छा छोड़ो यह सब वो वाली बात तो करो ना इनसे

मैं: कौनसी बात?

सलमा: वो हमें आपका असल नाम तो पता नही है इसलिए हम दोनो ने आपका एक नाम सोचा है अगर आपको अच्छा लगे तो....

मैं: क्या नाम बताइए?

सलमा: "सुजल" नाम कैसा लगा आपको?

मैं: जो आपको अच्छा लगे रख लीजिए मुझे तो कोई भी नाम याद नही वैसे यह नाम रखने कोई खास वजह?

सलमा : आप मौत को मात देकर फिर से इस दुनिया मे लौटे हो ओर हमें पानी मे बहते हुए मिले थे इसलिए हम ने सोचा कि आपका नाम भी हम "सुजल" ही रख दे.

मैं: मौत को मात से क्या मतलब है आपका?

जास्मिन : अर्रे कुछ नही..!! भाभी तो बस कही भी शुरू हो जाती है. आप बताइए आपको नाम कैसा लगा?

मैं: अगर आप लोगो पसंद है तो मुझे क्या ऐतराज़ हो सकता है.

सलमा: तो फिर ठीक है.... आज से जब तक आपको अपना असल नाम याद नही आ जाता हम सब के लिए आप "सुजल" हो.

मैं: जैसी आपकी मर्ज़ी (हल्की सी मुस्कुराहट के साथ)

सलमा: जास्मिन कल याद करवाना मुझे इनकी दाढ़ी और बाल भी काटेंगे.इतने महीनो से यह बेहोश थे तो देखो इनकी दाढ़ी और बाल कितने बड़े हो गये हैं. बुरा मत मानना लेकिन अभी आप किसी जोगी-बाबा से कम नही लग रहे हो कोई अजनबी देखे तो डर ही जाए (दोनो आपस मे ही हँसने लगी)

जास्मिन: कोई बात नही भाभी यह काम मैं कर दूँगी. बाबा की दाढ़ी बनाते और बाल काट ते हुए मैं अब माहिर हो गई हूँ इस काम मे.

मैं : (मैने दोनो का चेहरा देख कर सिर्फ़ हाँ मे सिर हिलाते हुए) ठीक है..!

जास्मिन: चलो "सुजल" जी कपड़े उतारो

मैं: (चौंकते हुए) क्यो कपड़े क्यो उतारू?

जास्मिन: दवाई नही लगवानी आपने?

मैं: अर्रे हाँ मैं तो भूल ही गया (और अपनी कमीज़ के बटन खोलने की कोशिश करने लगा)

सलमा: आप रहने दीजिए रोज़ हम खुद ही यह सब काम कर लेती थी. आज भी कर लेंगी. आप अपने हाथ-पैर ज़्यादा हिलाइए मत नही तो दर्द होगा.

मैं: (खामोशी से सिर्फ़ हाँ में सिर हिलाते हुए)

जास्मिन: फिकर मत कीजिए हम रोज़ आप चद्दर डाल देते थे दवाई लगाने से पहले (उसके चेहरे पर यह बात कहते हुए मुस्कुराहट और शरम दोनो थी)

दोनो ने मेरी कमीज़ उतारी और पाजामा भी उतार दिया. जो मेरे पैर से थोड़ा उँचा था. शायद सलमा के पति का होगा या फिर बाबा का होगा ओर मेरी टाँगो पर एक चद्दर डाल दी. मैं दवाई लगवाते हुए भी अपनी पिछली जिंदगी के बारे मे सोच रहा था लेकिन मुझे कोशिश करने पर भी कुछ याद नही आ रहा था......मैं बस अपनी ही सोच मे गुम था कि अचानक मुझे एक कोमल हाथ अपने सिर पर और आँखो पर घूमता महसूस हुआ साथ ही (एक आवाज़ आई कि अब आँखें मत खोलना) फिर दूसरा हाथ अपनी बाजू पर और २ हाथ एक साथ चद्दर के अंदर आते हुए मेरी टाँगो से रेंगते हुए जाँघो पर महसूस हुए.मेरी आँखें बंद थी ,फिर भी मैं साफ महसूस कर रहा था कि जब दो हाथ मेरी जाँघो पर चल रहे थे तो मेरे लिंग मे कुछ हरकत हुई जो कि अकड़ रहा था और इस हरकत के बाद जो हाथ मेरी जाँघो पर दवाई लगा रहे थे उनमे एक अजीब सी कंपन मैने महसूस की.....मुझे उस वक़्त नही पता था कि यह अहसास क्या है. लेकिन मुझे उससे सुकून भी मिल रहा था और एक अजीब सी बेचैनी भी हो रही थी...इस मिले-जुले अहसास को शायद मैं समझ नही पा रहा था कि यह मेरे साथ क्या अजीब सी बात हुई और चन्द सेकेंड्स मे मेरा लिंग पूरी तरफ खड़ा होके छत को सलामी दे रहा था और लिंग महाराज ने चद्दर मे एक तंबू बना दिया था. अचानक एक हाथ मेरे लिंग से टकराया कुछ पल के लिए उसने मेरे लिंग को पकड़ा और फिर एक दम से छोड़ दिया साथ ही एक मीठी सी आवाज़ मेरे कानो से टकराई. भाभी बाकी लेप आप ही लगा दो मैने नीचे तो लगा दिया है अब मैं सोने जा रही हूँ. शायद यह

आवाज़ जास्मिन की थी. उसके बाद मुझे नीचे वो अजीब से मज़े वाला अहसास महसूस नही हुआ. मैं वैसे ही आज बिना किसी कपड़े के सिर्फ़ चादर मे लिपटा हुआ सो रहा था

सलमा जाते हुए और कंबल भी मेरे ऊपर डाल गई यह कहकर कि यहाँ रात मे अक्सर ठंड हो जाती है. सलमा ने भी मुझे कपड़े नही पहनाए और ऐसे ही खिड़की बंद करके चली गई. शायद उसकी नज़र भी मेरे खड़े हुए लिंग पर पड़ गई थी .मेरी उस वक़्त आँखें तो बंद थी लेकिन पैरो की दूर होती हुई आवाज़ से मैने अंदाज़ा लगा लिया था कि शायद अब कमरे मे कोई नही सिवाए मेरे और मेरी तन्हाई के.रात को मुझे नींद ने कब अपनी आगोश मे ले लिया मैं नही जानता.सुबह मुझे नाश्ता करवाने के बाद सलमा और जास्मिन ने मेरी शेव भी की और बाल भी काट दिए. शीशे मे अपना यह नया रूप देखकर मुझे खुशी भी हो रही थी और बेचैनी भी हुई. लेकिन दिल मे अब यही सवाल बार-बार आके मुझे बेचैन कर देता था कि मैं कौन हूँ....आख़िर कौन हूँ मैं.

२

ऐसे ही दिन गुज़रने लगे अब मेरे जखम भी काफ़ी भर गये थे और अब मैं चलने-फिरने के क़ाबिल हो गया था. लेकिन एक बात मुझे हमेशा परेशान करती वो थे मेरे सीने पर गोली के निशान... ज़ख़्म भर गया था लेकिन निशान अभी भी बाक़ी था. मैं जब भी जास्मिन या सलमा से उस निशान के बारे मे पूछता तो वो बात गोल गोल कर जाती और मुझे उस निशान के बारे मे कुछ भी नही बताती.मैं बाबा से यह बात नही पूछ सकता था क्योकि उमर के साथ उनकी नज़र बहोत कमजोर हो चुकी थी.इसलिए उन्हे दिखाई भी कम देता था. मैं सारा दिन या तो खिड़की के सामने खड़ा बाहर के नज़ारे देखता या फिर घर मे दोनो लड़कियो को घर का काम करते देखता रहता लेकिन फिर भी सलमा मुझे घर से बाहर नही जाने देती थी. मुझे पुराना कुछ भी याद नही था मेरी पुरानी जिंदगी अब भी मेरे लिए एक क़ोरा काग़ज़ ही थी. जास्मिन अब मुझे दवाई नही लगाती थी लेकिन सलमा रोज़ मुझे दवाई लगाने आती थी और ऐसे ही बिना कपड़ो के ऊपर कंबल डाल कर सुला जाती. आज दवाई लगाते हुए सलमा बहोत खुश थी और बार-बार मुस्कुरा रही थी उसकी इस खुशी का राज़ पूछे बिना मैं खुद को रोक नही पाया.

मैं: क्या बात है आज बहोत खुश लग रही हो आप !

सलमा: जी आज मेरे शौहर आ रहे है ...पूरे ५ महीने बाद..

मैं: अर्रे वाह ! यह तो बहोत खुशी की बात है.

सलमा: हंजी (नज़रें झुका कर मुस्कुराते हुए) आप से एक बात कहूँ तो आप बुरा तो नही मानेंगे?

मैं: नही बिल्कुल नही ! बोलिए क्या कर सकता हूँ मैं आपके लिए?

सलमा: वो आज मेरे शौहर अब्दुल आ रहे हैं.तो अगर आप बुरा ना माने तो आप कुछ दिन ऊपर वाली कोठारी मे रह लेंगे...और हो सके तो उनके सामने ना आना.

मैं: (बात मेरी समझ मे नही आई) क्यो उनके सामने आ जाऊंगा तो क्या हो जाएगा?

सलमा: बस उनके सामने मत आना नही तो वो मुझे और जास्मिन को ग़लत समझेंगे और शक़ करेंगे.असल मे वैसे तो वो बहोत नेक़-दिल है.लेकिन ऐसे उनकी गैर-हाजरी मे हम ने एक मर्द को रखा है घर मे तो वो आपके बारे मे ग़लत भी सोच सकते हैं ना इसलिए.

मैं: क्या आपने उनको मेरे बारे मे नही बताया ?

सलमा: नही मैने आपके बारे मे उनको कुछ भी नही बताया. मुझे ग़लत मत समझना लेकिन मेरी भी मजबूरी थी.

मैं: कोई बात नही!!! ठीक है ..जैसा आप ठीक समझे!

सलमा: मैं अभी आपका बिस्तर कोठरी मे लगा देती हूँ. वहाँ मैं आपको खाना भी वही दे जाऊंगी. कुछ चाहिए हो तो रोशनदान मे से आवाज़ लगा देना. रसोई मे और किसी कमरे मे आवाज मत लगाना. इस बात को याद रखना भूलना मत ठीक है.

मैं: (मैं सिर हाँ मे हिलाते हुए) सलमा जी आपके मुझ पर इतने अहसान है.अगर आप ना होती तो आज शायद मैं ज़िंदा भी नही होता. अगर मैं आपके कुछ काम आ सकूँ तो यह मेरी खुश किस्मती होगी. आप मेरी तरफ से बे-फिकर रहे. मेरी वजह से आपको कोई परेशानी नही होगी.

सलमा: आपका बहोत-बहोत शुक्रिया. आपने तो एक पल मे मेरी इतनी बड़ी परेशानी ही आसान करदी.

फिर वो बाहर चली गई और मैं बस उसे जाते हुए देखता रहा. मैं वापिस अपने बेड पर लेट गया. थोड़ी देर मे मेरा बिस्तर भी कोठरी मे लग गया और मैं ऊपर कोठरी मे जाके लेट गया. कोठरी ज़्यादा बड़ी नही थी फिर भी मेरे लिए काफ़ी थी. मैं उसमे आराम से लेट सकता था और घूम फिर भी सकता था. वहाँ मेरा बिस्तर भी बड़े सलीके से लगा हुआ था. अब मैं ऐसी जगह पर था जहाँ से मुझे कोई नही देख सकता था. लेकिन मैं सारे घर मे देख सकता था क्योकि यह कोठरी घर के एक दम बीच मे थी और घर के हर कमरे मे हवा के लिए खुले हुए रोशनदान से मैं किसी भी कमरे मे झाँक कर देख सकता था. आप यह समझ सकते हैं कि वो सारे घर की एक बंद छत थी. सलमा के जाने के कुछ देर बाद मैने बारी-बारी हर रोशनदान को खोलकर देखा और हर कमरे का जायज़ा लेने लगा. पहले

रोशनदान से झाँका तो वहाँ बाबा अपनी चारपाई पर बैठे हुए हूक्का पी रहे थे. दूसरे रोशनदान से मैं रसोई मे देख सकता था. तीसरा कमरा शायद जास्मिन का था जहाँ वो बेड पर बैठी शायद काग़ज़ पर किसी की तस्वीर बना रही थी. चोथा कमरा मेरा था जहाँ पहले मैं लेटा हुआ था जो अब सलमा साफ कर रही थी शायद यह सलमा और अब्दुल का था इसलिए. कोठरी के पिछे वाला रोशनदान खोलकर देखा तो वहाँ से मुझे घर के बाहर का सब नज़र आया यहाँ से मैं कौन घर मे आया है कौन बाहर गया है सब कुछ देख सकता था.

मैं अभी बिस्तर पर आके लेटा ही था और अपनी ही सोच मे गुम था कि अचानक एक तांगा घर के बाहर आके रुका और उसमे से एक आदमी हाथ मे लाल अतेची लिए उतरा. शायद यह अब्दुल था जिसके बारे मे सलमा ने मुझे बताया था. देखने मे अब्दुल कोई खास नही था. छोटे से क़द का एक दुबला पतला सा आदमी था.सलमा उसके मुक़ाबले कहीं ज़्यादा सुंदर थी. वो टांगे से उतरकर घर मे दाखिल हो गया मैं भी वापिस अपनी जगह पर आके वापिस लेट गया और मेरी कब आँख लगी मुझे पता नही चला.

शाम को अचानक किसी के चिल्लाने से मेरी नींद खुल गई मैने उठकर देखा तो अब्दुल बहोत गंदी-गंदी गलियाँ दे रहा था और सलमा से पैसे माँग रहा था. सलमा लगातार रोए जा रही थी और उसको कहीं जाने के लिए मना कर रही थी. लेकिन वो बार-बार कहीं जाने की बात कर रहा था और सलमा से पैसे माँग रहा था.अचानक उसने सलमा को थप्पड़ मारा और गालियाँ देने लगा और कहा कि अपनी औकात मे रहा कर रंडी. मेरे मामलो मे टाँग अड़ाई तो उठाके घर से बाहर फेंक दूँगा.पांच महीने मे साली की बहोत ज़ुबान चलने लगी है. तुझे तो आके ठीक करूँगा. और अब्दुल तेज़ क़दमों के साथ घर के बाहर निकल गया. सलमा वही बेड पर बैठी रो रही थी. यह देखकर मुझे बहोत बुरा लगा लेकिन मैं मजबूर था. सलमा ने ही मुझे घर के नीचे आने से मना किया था इसलिए मैं बस उसको रोते हुए देखता रहा और अब्दुल के बारे मे सोचने लगा. सलमा हमेशा मेरे सामने अब्दुल की तारीफ करती थी और उसने मुझे अब्दुल एक नेक़-दिल इंसान बताया था. उसके इस तरह के बर्ताव ने यह साफ कर दिया कि सलमा ने मुझे अब्दुल के बारे मे झूठ बोला था. काफ़ी देर तक सलमा कमरे मे रोती रही और मैं उसको देखता रहा.

चेहरे पर अपनी सदाबहार मुस्कान के साथ रात को सलमा मेरे लिए खाना लेके आई. लेकिन मैं इस मुस्कान के पिछे का दर्द जान गया था.इसलिए शायद सलमा की हालत पर उदास था. फिर भी मैं नही चाहता था कि उसको मेरी वजह से किसी क़िस्म का दुख हो इसलिए उसको कुछ नही कहा. लेकिन ना चाहते हुए भी मेरे मूह से यह सवाल निकल गया.

मैं: आपके शौहर आ गये?

सलमा: हंजी आ गये तभी तो आज मैं बहोत खुश हूँ.(बनावटी मुस्कुराहट के साथ)

मैं:अच्छी बात है मैं तो चाहता हूँ आप सब लोग हमेशा ही खुश रहें.

सलमा: मैं आपके लिए खाना लाई हूँ. जल्दी से खाना खा लो नही तो ठंडा हो जाएगा.

मैं: आपने खा लिया.

सलमा: हंजी ! मैने अब्दुल के साथ ही खा लिया था.

मैं: मेरा तो आपको देखकर ही पेट भर गया. अब इस खाने की ज़रूरत मुझे भी नही.

सलमा: (चोंकते हुए) क्या मतलब?

मैं: आपने मुझसे झूठ क्यो बोला था अब्दुल के बारे मे... माफ़ करना लेकिन मैने आपके कमरे मे झाँक लिया था.

सलमा यह सुनकर खामोश हो गई और मूह नीचे करके अचानक रो पड़ी. मेरी समझ मे नही आया कि उसको चुप कैसे करवाऊ इसलिए पास पड़ा पानी का ग्लास उसके आगे कर दिया. कुछ देर रोने के बाद सलमा चुप हो गई और पानी का ग्लास हाथ मे पकड़ लिया.

मैं: जब आपको पता था कि अब्दुल ऐसा घटिया इंसान है तो आपने उससे शादी ही क्यो की?

सलमा: हर चीज़ पर हमारा ज़ोर नही होता.मुझे जो मिला है वो मेरा नसीब है.

मैं: आप चाहे तो मुझसे अपनी दिल की बात कर सकती है. आपके दिल का बोझ हल्का हो जाएगा.

सलमा: (नज़रे झुका कर कुछ सोचते हुए) इस दिल का बोझ शायद कभी हल्का नही होगा. शादी के शुरू मे अब्दुल ठीक था. फिर उसकी दोस्ती गाव के सरपंच के खेतो मे काम करने वाले लोगो से हुई.उनके साथ रहकर यह रोज़ शराब पीने लगा, जुआ खेलने लगा. इसके घटिया दोस्तो ने अब्दुल को कोठे पर भी ले जाना शुरू कर दिया. अब्दुल रात-रात भर घर नही आता था. लेकिन मैं सब कुछ चुप-चाप सहती रही. कहती भी तो किसको मुझ अनाथ का था भी कौन जो मेरी मदद करता. वक़्त के साथ-साथ अब्दुल और बुरा होता गया और वो रोज़ शराब पीकर घर आता और कोठे पर जाने के लिए मुझसे पैसे माँगता. हम जो खेती करके थोडा बहोत पैसा कमाते हैं वो भी छीन कर ले जाता. एक दिन अब्दुल ने मुझसे कहा कि मैं उसके दोस्तो के साथ रात गुजारू. जब मैने मना किया तो अब्दुल ने मुझे बहोत मारा और घर छोड़ कर चला गया. कुछ दिन बाद अब्दुल ने सरपंच के गोदाम से अपने दोस्तो के साथ मिलकर अनाज की कुछ बोरिया चुराई और बेच दी. अपने रंडीबाजी के शाँक के लिए. सुबह पुलिस इसको और इसके दोस्तो को पकड़ कर ले गई और इसको पांच महीने की सज़ा हो गई. अब यह बाहर आया है जेल से तो अब भी वैसा है. मैने सोचा था शायद जेल मे यह सुधर जाएगा लेकिन नही मेरी तो किस्मत ही खराब है (और सलमा फिर से रोने लग गई)

मैं: (सलमा के कंधे पर हाथ रखकर) फिकर मत करो सब ठीक हो जाएगा. अगर मैं आपके किसी भी काम आ सकूँ तो मेरी खुश-किस्मती समझूंगा.

सलमा: (मेरे कंधे पर अपने गाल सहला कर) आपने कह दिया मेरे लिए इतना ही काफ़ी है

मैं: पहले जो हो गया वो हो गया.लेकिन अब खुद को अकेला मत समझना मैं आपके साथ हूँ.

सलमा: कब तक साथ हो आप.... तब तक ही ना जब तक आपकी याददाश्त नही आती....और उसके बाद?

मैं: (कुछ सोचते हुए) अगर यहाँ से जाना भी पड़ा तो भी जब भी आप लोगो को मेरी ज़रूरत होगी मैं आऊंगा यह मेरा वादा है.

सलमा: (हैरानी से मुझे देखते हुए) चलो इस दुनिया मे कोई तो है जो मेरा भी सोचता है... (मुस्कुराते हुए)शुक्रिया!!!

उसके बाद कोठरी मे खामोशी छा गई और जब तक मैं खाना ख़ाता रहा सलमा मुझे देखती रही. फिर वो भी मुझे दवाई लगा कर नीचे चली गई. आज भी मैं सिर्फ़ एक कंबल मे पड़ा था अंदर जिस्म नंगा था मेरा. मैं अब नीचे सलमा को बिस्तर पर अकेले लेटा हुआ देख रहा था. शायद अब्दुल आज भी घर नही आया था इस बार जो सलमा ने अब्दुल के बारे मे बताया था वो सही था. सलमा अभी भी जाग रही थी और बार-बार रोशनदान की तरफ देख रही थी शायद वो कुछ सोच रही थी लेकिन उसे नही पता था कि मैं भी उसको देख रहा हूँ. ऐसे ही काफ़ी देर तक मैं उसे देखता रहा फिर मुझे नींद आने लग गई और मैं सोने के लिए वापिस अपने बिस्तर पर लेट गया कुछ ही देर मे मुझे नींद आ गई.

३

आधी रात को जब मैं गहरी नींद मे सो रहा था कि अचानक किसी के धीरे से कोठरी का दरवाज़ा खोलने से मेरी नींद खुल गई. लालटेन बंद थी इसलिए मैं अंधेरा होने के कारण यह देख नही सकता था कि यह कौन है.इससे पहले कि मैं पूछ पाता उस इंसान ने मेरे पैर को धीरे से हिलाया. मुझे कुछ समझ नही आया कि ये कौन है और इस वक़्त यहाँ क्या कर रहा है. मैं यह जानना चाहता था कि ये इस वक़्त यहाँ क्या करने आया है इसलिए खामोश होके लेटा रहा. फिर मुझे मेरी टाँगो पर उस इंसान के लंबे बाल महसूस हुए. इससे मुझे इतना तो पता चल ही गया था कि यह कोई लड़की है. यह या तो सलमा थी या फिर जास्मिन क्योकि इस वक़्त घर मे यही दो लड़किया मोजूद थी. मगर मेरे दिल मे अभी यह सवाल था कि यह यहाँ इस वक़्त क्या करने आई है.

मैं अभी अपनी ही सोच मे गुम था कि अचानक वो लड़की मेरे साथ आके लेट गई और मेरे गालो को सहलाने लगी. अंधेरा होने की वजह से मुझे कुछ नज़र नही आ रहा था. फिर अचनाक वो हाथ मेरी गालो से रेंगता हुआ मेरी छाती पर आ गया और मेरी छाती के बालो को सहलाने लगा और हाथ नीचे की तरफ जाने लगा मैने हाथ को पकड़ लिया तो शायद उस लड़की को यह अहसास हो गया कि मैं जाग रहा हूँ. इसलिए कुछ देर के लिए वो रुक गई और अपना हाथ पिछे खींच लिया. मैने धीरे से पूछा कि कौन हो तुम और इस वक़्त क्या कर रही हो. तो हाथ फिर से मेरे सीने से होता हुआ मेरे होंठो पर आया और एक उंगली मेरे होंठो पर आके रुक गई जैसे वो मुझे चुप रहने का इशारा कर रही हो. मेरी अभी भी कुछ समझ मे नही आ रहा था कि वो लड़की जो अभी मेरे साथ बैठी हुई थी धीरे से उसने कंबल एक तरफ से उठाया और खिसक कर कंबल मे मेरे साथ आ गई.उसके इस तरह मुझसे चिपकने से और उसके गरम शरीर के अहसास से मेरे शरीर मे भी हरकत होने लगी और मेरे सोए हुए लिंग मे जान आने लगी.यह एक अजीब सा मज़ा था जो मैं ना तो समझ पा रहा था ना ही कुछ बोल पा रहा था. फिर उसकी एक टाँग मेरी टाँगो को सहलाने लगी और उस लड़की का हाथ मेरे गले से होता हुआ छाती और पेट पर घूमने लगा और अचानक वो लड़की मेरे ऊपर आ गई और मेरे गालो को धीरे-धीरे चूमना शुरू कर दिया. मज़े से मेरी आँखे बंद हो रही थी उस लड़की के होंठो का गरम अहसास मेरे लिए बेहद मज़ेदार था उसके होठ मेरी गर्दन और गालो को चूस और चूम रहे थे. साथ मे नीचे मेरे लिंग पर वो लड़की अपनी योनी रगड़ रही थी जिससे मेरा लिंग लोहे जैसा कड़क हो गया था. मैं मज़े की वादियो मे खो रहा था कि अचानक एक मीठी सी लेकिन बेहद धीमी आवाज़ मेरे

कानो से टकराई. तुम मुझे पहले क्यो नही मिले सुजल.मैं जाने कब से प्यासी हूँ. मेरी प्यास बुझा दो. आज मुझे खुद पर काबू नही है.मैं एक आग की तरह जल रही हूँ. मुझे सुकून चाहिए मुझे आज प्यार चाहिए.

मैं बस इतना ही कह पाया कि क्या करू मैं ? तो उस लड़की ने मेरा चेहरा अपने हाथो मे थाम लिया और धीरे से अपने निचले होठ से मेरे दोनो होंठो को छू लिया और कहा प्यार करो मुझे. तुमने कहा था ना कि जब भी मुझे तुम्हारी ज़रूरत होगी मेरी मदद करोगे. तो आज मुझे तुम्हारी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है. मैं जल रही हूँ मेरे अंदर की आग को बुझा दो. यह बात मेरे लिए किसी झटके से कम नही थी क्योकि यह बात मैने सलमा को कही थी. इससे पहले कि मैं कुछ बोल पाता सलमा ने अपने गरम होठ मेरे होंठो पर रख कर उन्हे चूम लिया और मेरे सूखे हुए होंठो पर अपनी रसीली जीभ से उन्हे गीला करना शुरू कर दिया. मैने भी अपने दोनो हाथ उसकी कमर के इर्द-गिर्द बाँध लिए और अपनी आँखे बंद कर ली और अपने तपते होठ उसके होंठो से मिला दिए. जिसे सलमा ने चूमते हुए धीरे-धीरे चूसना शुरू कर दिया.

कुछ ही देर मे हम दोनो एक दूसरे के होंठों को बुरी तरह चूस और चाट रहे थे.वो मेरे होंठों को बुरी तरह चूस रही थी और उनको काट रही थी कभी वो मेरा निचला होंठ चुस्ती और काट लेती कभी उपर वाला होंठ चुस्ती फिर काट लेती. हम जिस मज़े की दुनिया मे थे उसमे ना उसे कोई होश था ना ही मुझे हम बस दोनो ही एक दूसरे मे समा जाना चाहते थे. मेरे दोनो हाथ उसकी पीठ की रीड की हड्डी को सहला रहे थे और उसकी योनि लगातार मेरे लिंग को मसल रही थी. अचानक उसने मेरे दोनो हाथ पकड़कर अपनी छाती पर रख दिए और मेरे हाथो को अपनी छाती पर दबाने लगी. मैने भी उसके ठोस और बड़े स्तनों को थाम लिया ओर उन्हे ज़ोर से दबाने लगा जिससे उसके मुँह से एक सस्सिईईईईईईईईईई की आवाज़ ही निकल गई ओर वो फिर मेरे होंठों को चूसने लग गई.मेरा हाथ बार-बार उसकी छाती से रेंगता हुआ उसकी कमर तक जाता और फिर उसके मोटे स्तनों को थाम लेता. अचानक वो रुक गई और लगभग मेरे लिंग पर अपनी बड़ी नितंब रख कर बैठ गई और अपनी कमीज़ और ब्रा को एकसाथ उपर कर दिया और फिर मेरी छाती के उपर लेट गई.उसके नाज़ुक और गरम स्तन जो हर तरह से बे-परदा मेरी छाती से चिपके हुए थे. उन्होने मुझे एक अजीब सा मज़ा दिया .अब मैं उसके नंगे स्तनों को दबा रहा था ओर उसकी नंगी कमर को सहला रहा था.उसको स्तनाग्र अंगूर की तरह सख़्त हो चुके थे जिन्हे जब मैने पकड़ा तो एक आह्ह्ह्ह्ह्ह्ह उसके मुँह से निकल गई और उसने मेरे कान के पास मुँह लेक कहा कि "इन्हे चूँसो सुजल अब रहा नही जा रहा". मैने थोड़ा नीचे सरक कर उसके एक स्तन को थाम लिया और अंगूठे से उसके स्तनाग्र को कुरेदने लगा और अंदाज़े

से उसके स्तन का जायेज़ा लेने लगा.वो काफ़ी बड़े थे. उसके स्तनाग्र छोटे मगर बहोत सख़्त हो गये थे. उसका स्तन मेरे एक हाथ मे पूरा नही आ रहा था. अचानक उसने मेरे सिर के बाल पकड़ कर मेरे मुँह को अपने स्तन पर ज़ोर से दबा दिया और मैने अपना मुँह खोलकर उसके स्तनाग्र को अपने मुँह मे जाने का रास्ता दे दिया.मैं किसी छोटे बच्चे की तरह उसके स्तनाग्र को चूस रहा था और काट रहा था वो लगातार मुँह से अजीब से आवाज़े निकाल रही थी. अचानक उसने अपनी कमीज़ और ब्रा दोनो एक साथ पूरी तरफ से उतार दी लेकिन सलवार अभी भी उसने पहनी हुई थी. मैं लगातार ज़ोर-ज़ोर से उसके स्तनाग्र को चूस और काट रहा था और मेरे हाथ उसकी नितंब की दोनो ठोस पहाड़ियो को बार-बार दबा रहे थे.उसका बदन बेहद नाज़ुक ओर मुलायम था. वो बस मेरे सिर पर हाथ फेर रही थी ओर मेरे माथे को बार-बार चूम रही थी.

अचानक मुझे याद आया कि मैं एक लड़की को बालो से पकड़कर बुरी तरह ज़ोर-ज़ोर से ठोका करता था और वो चिल्लाया करती थी.यह वो पहली याद थी जो मुझे वापिस मिली थी. वो भी सलमा की वजह से. मैने फॉरन उसकी सलवार को खोल दिया ओर सलमा को उसके खुले बालो से पकड़कर नीचे पटक दिया और खुद उसके उपर आ गया. शायद मेरे अंदर का सहवास का जानवर फिर से जाग गया था. इससे पहले कि सलमा कुछ कह पाती मैने उसकी दोनो टांगे उपर हवा मे उठाई और अपना मुँह उसकी योनी से लगा दिया.जो उसके लिए किसी झटके से कम नही था उसके मुँह से एक जोरदार आआअहह निकली ओर उसने मेरे सिर को दोनो हाथो से थाम लिया और अपनी योनी पर दबा दिया.मैं लगातार उसकी योनी को चूस रहा था ओर उपर लगे दाने को काट रहा था और अपनी जीभ से छेड़ रहा था. उससे बेहद मज़ा आ रहा था जिसकी वजह से उसकी योनी बहोत ज़्यादा पानी छोड़ रही थी और मेरा पूरा मुँह उसकी योनी से निकले पानी से भीग चुका था फिर भी मैं लगातार उसकी योनी को चूसे जा रहा था.अचानक उसकी टांगे अकड़ गई और उसने अपनी टाँगो मे मेरे मुँह को दबाकर अपनी नितंब हवा मे उठा ली.मैं साँस भी नही ले पा रहा था फिर भी मैने उसकी योनी को चूसना जारी रखा. अचानक उसकी नितंब ने उपर की तरफ एक झटका लिया. अब उसकी टांगे लग-भग बुरी तरह काँप रही थी और कुछ सेकेंड्स के बाद वो धडाम से नीचे गिर गई ओर मेरे मुँह उसकी टाँगो की गिरफ़्त से आज़ाद हो गया. अब वो बिस्तर पर पड़ी ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगी मैं अब भी उसकी योनी को चूस रहा था लेकिन अब वो शांत हो गई थी.अचानक उसने मेरे चेहरे को अपने दोनो हाथो से थामा और इशारे से उपर आने को कहा.

मैं उसके उपर आ गया और अपने हाथ से अपने मुँह पर लगा उसकी योनी का पानी साफ करने लगा तो उसने मेरा हाथ पकड़ लिया ओर एक तरफ कर दिया और मेरे चेहरे को फिर

से थाम कर मेरे होंठों को फिर से चूसना शुरू कर दिया. अब लगभग वो मेरा पूरा चेहरा चाट रही थी. कुछ ही देर मे वो फिर से गरम होने लगी और थोड़ी देर पहले नीचे जो हरकत उसकी नितंब मेरे लिंग के साथ कर रही थी अब वही हरकत उसकी योनी ने मेरे लिंग के साथ करनी शुरू कर दी थी.वो बार-बार नीचे से अपनी नितंब उठाकर मेरे लिंग पर अपनी योनी के होंठ रगड़ रही थी मुझे उसकी इस हरकत से बहुत मज़ा मिल रहा था. मैने फिर से उसके स्तनों को थाम लिया ओर चूसना शुरू कर दिया. अब वो भी नीचे से ज़ोर-ज़ोर से अपनी योनी को मेरे लिंग पर रगड़ने लगी शायद उसकी योनी अब ठुकवाने के लिए लिंग चाहती थी. जाने कितने वक़्त की प्यासी योनी थी एक बार झड़ने से कहाँ शांत होने वाली थी. मैं जब उसके स्तन के स्तनाग्र को चूसने और काटने मे लगा था तो उसने अपना हाथ नीचे लेजा कर मेरे लिंग को थाम लिया ओर अचानक उसके मुँह से निकल गया...इतना बड़ा .... उसने दूसरा हाथ मेरे कंधे पर रखा और मेरा चेहरा उपर किया और कान मे बोला

सलमा: सुजल ये इतना बड़ा कैसे हो गया...दवाई लगाते हुए तो कभी इतना बड़ा नही हुआ था.

मैं: पता नही शायद आज हम इस तरह साथ है इसलिए हो गया होगा.

सलमा: मैं चाहती हूँ तुम अपना ये मेरे अंदर डालो ओर मुझे खूब प्यार करो लेकिन आराम से अंदर डालना मैने बहोत वक़्त से किया नही .

मैं: (हां मे सिर हिलाते हुए)ठीक है !

उसने मेरे लिंग को दिशा देकर उसको अपनी योनी के छेद पर रख दिया और दूसरा हाथ धीरे से मेरी नितंब पर रखकर दबा दिया.अब लिंग का टोपा ही उसकी योनी से छुआ था कि उसने एक आआहह भरी और मेरे कान मे बोली धीरे से डालो.जब रुकने को बोलूं तो रुक जाना. मैने थोड़ा ज़ोर लगाया तो लिंग फिसलकर उपर को चला गया.उसने मेरे लिंग को पकड़के फिर निशाने पर रखा ओर कहा अब लगाओ ज़ोर. मैने फिर एक कोशिश की इस बार लिंग का टोपा अंदर चला गया और उसने मुझे रोकने के लिए दूसरे हाथ से मेरे कंधे को दबा दिया. मैं कुछ देर के लिए रुक गया फिर कुछ देर बाद उसने फिर से ज़ोर लगाने का कहा तो मैने एक झटका मारा जिससे मेरा लिंग अंदर चला गया और उसके मुँह से बस एक सस्स्सिईईईईईईईईईई रूको-रूको एक बार बाहर निकालो की आवाज़ निकली.

सलमा: सुजल ये बहुत बड़ा और मोटा है थोड़ा गीला कर लो नही तो मुझे दर्द होगा.

मैं: ठीक है तुम कर दो गीला.

उसने थोड़ा सा थूक अपने हाथ मे जमा किया और मेरे लिंग पर अच्छी तरह थूक लगा दिया और गीला कर दिया. बाकी बचा थूक उसने अपनी योनी पर मल दिया. अब फिर से उसने लिंग को निशाने पर रखा और मेरी नितंब को दबा दिया. ये इशारा था कि मैं फिर से ज़ोर लगाऊ इस बार जब मैने झटका मारा तो लिंग फिसलता हुआ आधा अंदर चला गया और रुक गया. उसके मुँह से फिर एक ससिईईईईईईईईईईईई की आवाज़ निकली और उसने मेरे कान मे कहा "ये तो बहुत मोटा है मुझे दर्द हो रहा है थोड़ा आराम से करो"

अब मैने उसके मुँह को पकड़के उसके होंठ चूसने शुरू कर दिए ताकि अगले झटके पर वो चीख ना दे.अब उसके दोनो होंठ मेरे मुँह मे क़ैद थे ओर मैने एक जोरदार झटका लगाया जो कि उसकी योनी की दीवारो को पिछे धकेलता हुआ पूरा लिंग अंदर चला गया. उसने अचानक से अपना मुँह उपर की तरफ कर लिया और उसका मुँह एक दम से खुल गया और एक तेज़ आआहह उसके मुँह मे ही दबके रह गई.उसने अपने सिर को दाए-बाए मारना शुरू कर दिया इसलिए मैने अब उसके मुँह को आज़ाद कर दिया तो उसके मुँह से निकला सीईईईईईई आईईई मर गई अम्मिईीईईईईईई आअह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह. मेरा अंदाज़ा सही था क्योकि अगर उसका मुँह आज़ाद होता तो नीचे से कोई भी उसकी चीख सुन सकता था. ऐसा नही था कि सलमा कुँवारी थी लेकिन शायद उसके पति का लिंग काफ़ी छोटा था या फिर वो इतने वक़्त से ठुकी नही थी तो उसकी योनी अंदर से बंद हो गई थी इसलिए उसको ज़्यादा दर्द हो रहा था. अब मैं कुछ देर के लिए फिर रुक गया और लिंग को अंदर अपनी जगह बनाने के लिए थोडा वक़्त दिया ताकि योनी मेरे लिंग को पूरी तरह हजम कर ले और सलमा को दर्द ना हो.

अब मैं लिंग सलमा की योनी मे डाले आराम से उसके स्तन चूस रहा था और सलमा मेरे सिर पर और पीठ पर अपने नाज़ुक हाथ फेर रही थी. अब सलमा का दर्द भी ठीक हो गया था इसलिए उसने नीचे से अपनी नितंब को उपर की तरफ उठाना शुरू कर दिया.मैने भी धीरे-धीरे झटके लगाने शुरू कर दिए. कुछ देर बाद हम दोनो की एक लय सी बन गई जब लिंग बाहर को जाता तो वो अपनी नितंब भी नीचे को ले जाती जब लिंग अंदर को दाखिल होता तो वो भी अपनी नितंब उपर को उठा देती. हम दोनो मज़े की वादियो मे खोए हुए थे. एक दूसरे को बुरी तरह चूम और चाट रहे थे. अचानक सलमा ने मुझे ज़ोर से झटके मारने को कहा मैने भी धीरे-धीरे अपने झटको मे तेज़ी पैदा की अब नीचे ठप्प्प...ठप्प्प...ठप्प्प की

आवाज़े आ रही थी सलमा की योनी बुरी तरह पानी छोड़ थी अब उसने अपनी नितंब को नीचे से ज़ोर से हिलाना शुरू कर दिया मैं भी अब उसको और तेज़ी से झटके लगा रहा था .

सलमा ने अपनी दोनो टांगे हवा मे उठाके मेरी कमर के इर्द-गिर्द लपेट ली.अचानक उसकी टांगे फिर से काँपने लगी और उसने मुझे ज़ोर से अपने गले से लगा लिया. मैं नीचे से लगातार ज़ोर से झटके लगाए जा रहा था और एक तेज़ आआहह सुजल मेरिइईईई जानंनननणणन् हेययीयीयियीयियी कहती हुई सलमा ठंडी पड़ गई. मैं अभी भी ठंडा होने के कही करीब भी नही था इसलिए झटके लगाता रहा.अब सलमा ने मुझे उपर से हटने का इशारा किया और खुद मेरे उपर आ गई और मेरे लिंग को पकड़ कर योनी के छेद पर सेट करके एक आअहह के साथ लिंग पर बैठती चली गई. अब उसकी योनी ने एक ही झटके मे पूरा लिंग अंदर ले लिया था बिना सलमा को किसी क़िस्म का दर्द दिए शायद अब उसकी योनी खुल गई थी. अब वो मेरे उपर थी और मैं नीचे लेटा था. सलमा उपर नीचे हो रही थी उसके इस तरह से करने से उसकी बड़ी नितंब थप्प्प.....थप्प्प की आवाज़ पैदा कर रही थी.अब वो मेरे उपर लेट गई और फिर से मेरे होंठ चूसने लगी. नीचे से उसकी नितंब लगातार झटके लगा रही थी. मैने उसके स्तनों को अपने दोनो हाथो से थाम लिया और उसकी स्तनाग्र को अपने अंगूठे और उंगली की मदद से मरोड़ने लगा जिसमे उसे शायद बहोत मज़ा आ रहा था.कुछ ही देर मे उसके झटके जोरदार हो गये वो लगातार तेज़ी से उपर नीचे हो रही थी

मैने भी नीचे से अब झटके लगाना शुरू कर दिया था. वो मज़े से मेरी छाती पर हाथ फेर रही थी और झटके लगा रही थी.कुछ ही देर मे वो आअहह.....आअहह करती हुई फिर से ठंडी पड़ गई ओर मेरी छाती पर ही लुडक गई और तेज़-तेज़ साँस लेने लगी. थोड़ी देर लेटने के बाद उसने मेरे कान मे कहा सुजल आपका हुआ नही. मैने ना मे सिर हिला दिया उसने फिर मेरे कान मे बोला आदमी हो या जानवर मेरा शौहर इतनी देर मे पांच बार ठंडा हो जाता .आप एक बार भी नही हुए लगता है आज मुझे भी मेरा असल मर्द मिल ही गया और इतना कहकर उसने फिर से मेरे होंठ चूम लिए और मुझे अपने उपर आने को कहा.

मैं अब अपनी पुरानी आई हुई याद की तरह उसको ठोकना चाहता था. इसलिए उसकी बाजू पकड़ कर उसको उठाया और घुमा कर उसको दोनो घुटनो पर दोनो हाथो पर किसी जानवर की तरह खड़ा कर दिया उसको कुछ समझ नही आ रहा था. क्योकि ये तरीका उसके लिए शायद नया था. मैने अंधेरे मे अंदाज़े से उसकी योनी को ढूँढ कर लिंग को

निशाने पर रखकर एक जोरदार झटका लगाया. मेरा लिंग उसकी योनी को खोलता हुआ अंदर चला गया उसके मुँह से एक "आआययईीईईईई सस्सिईईईईई आराम से करो" की आवाज़ निकली. अब मैने उसकी बड़ी सी नितंब को अपने दोनो हाथो मे थामा और तेज़-तेज़ झटके लगाने शुरू कर दिए जो उसको और भी मज़ेदार लगे. अब मैने एक हाथ से उसके लंबे बालो को पकड़ लिया था और दूसरे हाथ से उसकी नितंब पर थप्पड़ मारते हुए उसको बुरी तरह ठोकना शुरू कर दिया उसके लिए ये सब नया था इसलिए उसको मेरे ऐसा करने से दर्द भी हो रहा था और मज़ा भी बहोत आ रहा था. इसलिए उसने एक हाथ से अपना मुँह बंद कर लिया ताकि आवाज़ नीचे ना जाए अब मैं बुरी तरह से उसको ठोक रहा था और उसके मुँह से सिर्फ़ एम्म्म....एम्म्म की आवाज़ निकल रही थी. मेरे इन तेज़ झटको से वो दो बार और झड चुकी थी.लेकिन मेरी इतनी जबरदस्त ठुकाई से वो फिर गरम हो जाती थी. अब मैं भी मंज़िल के करीब ही था इसलिए अपनी रफ़्तार मे और इज़ाफ़ा कर दिया.अब मैने एक हाथ से उसके लंबे बाल पकड़े थे और दूसरा हाथ नीचे से उसके स्तन को थामे ज़ोर-ज़ोर से दबा रहा था और अचानक एक तेज़ बहाव मेरे लिंग मे पैदा हुआ मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे लिंग मे से कुछ निकलने वाला है इसलिए मैने अपनी रफ़्तार फुल स्पीड मे करदी...पूरी कोठरी मे तेज़ थप्प्प.....थप्प्प की आवाज़ आ रही थी. लेकिन अब हमें नीचे आवाज़ जाने की भी परवाह नही थी और हम दोनो अपनी मंज़िल को पाना चाहते थे. अचानक मेरे लिंग ने पहला झटका लिया और एक पिचकारी मेरे लिंग से निकली और सलमा की योनी मे गिरी पहली के बाद दूसरी फिर तीसरी फिर चौथी ऐसे ही मेरे लिंग ने कई झटके खाए ओर काफ़ी सारा गाढ़ा माल सलमा की योनी मे ही छोड़ दिया. सलमा भी अब ठंडी हो चुकी थी लेकिन उसकी योनी अब भी मेरे लिंग को अंदर की तरफ दबा रही थी जैसे मेरे लिंग को अंदर से चूस रही हो और एक भी कतरा बाहर निकालना उसे मंजूर ना हो. सलमा अब अपना मुँह बिस्तर पर गिराए हाँफ रही थी. मैं भी तेज़-तेज़ साँस ले रहा था मज़े का ये तूफान थम चुका था. हम दोनो ही तेज़ सांसो के साथ एक साथ बिस्तर पर लेटे थे सलमा मेरे सीने पर सिर रखे मेरे पेट पर हाथ फेर रही थी ओर मेरे सीने को उसके होंठ चूम रहे थे.

अचानक दरवाज़े पर किसी की दस्तक हुई तो हम दोनो ही चोंक गये. अंधेरे मे जल्दी-जल्दी सलमा अपने कपड़े ढूँढने लगी और अपने साथ मे मेरे भी कपड़े उठाके नीचे भाग गई. दरवाज़े पर लगातार दस्तक हो रही थी. लेकिन इस हालत मे सलमा दरवाज़ा नही खोल सकती थी. लिहाजा उसने पहले कपड़े पहने फिर दरवाज़ा खोल दिया. मैने रोशनदान से देखा तो ये अब्दुल था जो घर आया था. अंदर दाखिल होते ही उसने सलमा को धक्का मारा ओर अंदर दाखिल हो गया ओर सलमा को गालियाँ देने लगा कि कहाँ मर गई थी इतनी देर से दरवाज़ा खट-खटा रहा था. चल जा और मेरे लिए खाना बना भूख लगी है

मुझे. ये बात मुझे बहुत बुरी लगी क्योंकि अब्दुल सलमा से ऐसे बात कर रहा था लेकिन मैं कुछ नही कर सकता था. सलमा भी सिर झुकाए रसोई मे चली गई. मैने कुछ देर सलमा को रसोई मे देखा जहाँ वो अब्दुल के लिए खाना परोस रही थी. लेकिन आज एक नयी चीज़ मैने उसमे देखी थी अक्सर जो सलमा अब्दुल की गालियाँ सुनकर रोने लग जाती थी.आज वोई सलमा मंद-मंद मुस्कुरा रही थी और बार-बार रोशनदान की तरफ देख रही थी. शायद वो मेरे बारे मे सोच रही थी. कुछ देर मैं सलमा को देखता रहा फिर बिस्तर पर आके नंगा ही लेट गया. कब नींद ने मुझे अपनी आगोश मे लिया मुझे पता ही नही चला.

४

आज मैं काफ़ी देर तक सोता रहा. जब आँख खुली तो उसी कोठारी मे खुद को पाया और रात वाला सारा सीन किसी फिल्म की तरह मेरी आँखो के सामने आ गया.लेकिन अभी भी दिल मे कई सवाल थे कि रात ऐसा क्यो हुआ. आख़िर सलमा ने ऐसा क्यो किया. मैं अपनी सोच मे ही गुम था कि किसी ने कोठारी का दरवाज़ा खट-खटाया तो मेरा ध्यान खुद पर गया क्योंकि रात के बाद मैं नंगा ही सो गया था. मैने जल्दी से सामने पड़े कपड़े पहने और धीमी सी आवाज़ मे आ जाओ कहा. मेरे कहने के साथ ही दरवाजा खुल गया और जास्मिन कोठरी मे आ गई.

जास्मिन: आज तो जनाब बहुत देर तक सोते रहे(मुस्कुराते हुए).

मैं: हां वो आज नींद ही नही खुली (सिर पर हाथ फेरते हुए)

जास्मिन: चलो अच्छी बात है.वैसे भी आपने कौनसा कहीं जाना है.

मैं: आज आप दूध कैसे ले आई. रोज़ तो सलमा जी लाती है ना.

जास्मिन: क्यों मेरे हाथ से दूध पी लेने से कुछ हो जाएगा क्या.

मैं: नही ऐसी बात तो नही है.

जास्मिन: भाभी आज रसोई के काम मे मशरूफ थी. इसलिए उन्होने मुझे दूध दे कर भेज दिया.

मैं: अच्छा...वैसेजास्मिन जी मुझे आपसे एक बात करनी थी अगर आप सब को बुरा ना लगे तो.....

जास्मिन: मुझे भी आपको कुछ बताना है.

मैं : जी बोलिए क्या बात है.

जास्मिन: वो हम कल से खेत जा रहे हैं.फसल की कटाई शुरू करनी है फसल तैयार हो गई है इसलिए...

मैं: ये तो बहुत अच्छी बात है.... क्या मैं भी आपकी मदद कर सकता हूँ?

जास्मिन: (हँसते हुए) आप चलने फिरने लग गये हो इसका मतलब ये नही कि आप ठीक हो गये हो. अभी कोई काम नही चुप करके आराम करो.

मैं: सारा दिन यहाँ पड़े-पड़े क्या करूँ .आपकी बड़ी मेहरबानी होगी अगर आप मुझे भी अपने साथ खेतों मे ले जाए.वहाँ मैं आप सबको काम करता देखता रहूँगा तो मेरा दिल भी बहल जाएगा. ले चलिए ना साथ मुझे भी.

जास्मिन: बात तो आपकी ठीक है. लेकिन अब्दुल भाई को हम सबने आपके बारे मे कुछ नही बताया. इस तरह आप हमारे साथ चलोगे तो उनको क्या कहेंगी हम की आप कौन हो. ओर फिर बाबा भी पता नही आपको साथ ले जाने की इजाज़त देंगे या नही मैं तो ये भी नही जानती.

मैं: वैसे अब्दुल भाई कहाँ है.

जास्मिन: (मुँह बनाते हुए) होना कहाँ है होंगे अपने आवारा दोस्तो के साथ. वो घर पर कभी टिक कर थोड़ी बैठते है. बस नाम का ही बेटा दिया है अल्लाह ने हमे. अगर वो काम करने वाले होते तो हम को खेतो मे ये सब काम क्यो करना पड़ता. सब नसीब की बात है.

मैं: आपने मेरे लिए इतना कुछ किया है एक अहसान और कर दीजिए. हो सकता है मैं अब्दुल भाई की थोड़ी बहुत कमी ही पूरी कर दूं.वैसे भी आप दोनो लड़किया इतना काम अकेले कैसे करोगी मैं आप दोनो की मदद कर दूँगा खेतो मे....मान जाइए ना.

जास्मिन: (कुछ सोचते हुए) ठीक है मैं भाभी से और बाबा से बात करती हूँ.तब तक आप ये दूध पी लीजिए.

मैं: ठीक है.

फिर जास्मिन नीचे चली गई. उसने पहले सलमा से और फिर बाबा से बात की मेरे लिए तो वो लोग मान गये. मैं ये सब रोशनदान से बड़े आराम से उपर से बैठा देख रहा था. फिर जास्मिन उपर आई ओर उसने मुझे नीचे बुलाया कि बाबा आपको बुला रहे हैं. मैं बाबा के कमरे मे गया तो बाबा हमेशा की तरह चारपाई पर बैठे हुक्का पी रहे थे ओर कुछ सोच रहे थे.

मैं: हंजी बाबा जी आपने मुझे याद किया.

बाबा: हाँ बेटा ! पहले तो ये बताओ कि अब तुम्हारी तबीयत कैसी है.

मैं: बाबा जी बहुत बेहतर हूँ अब मैं. अब तो मेरे तमाम ज़ख़्म भी भर चुके हैं.

बाबा: बेटा ये तो बहुत अच्छी बात है. अच्छा मैने तुमसे कुछ बात करने के लिए बुलाया है.

मैं: जी बोलिए

बाबा: बेटा मेरे दो ही बच्चे है एक ये जास्मिन ओर एक मेरा बेटा अब्दुल लेकिन अब्दुल अब हाथ से निकल गया है. सोचा था उसका निकाह हो जाएगा तो सुधर जाएगा. लेकिन वो कुछ वक़्त बाद फिर से वैसा हो गया. अब वो पांच महीने बाद जेल से निकल कर आया है तो भी उसमे कोई सुधर नज़र नही आ रहा. मेरे दिल पर ये बोझ है कि अंजाने मे मैने अपनी बहू की जिंदगी भी बर्बाद कर दी ऐसे नकारा इंसान के साथ उसकी शादी करके. वो बिचारी एक बहू के साथ-साथ एक बेटे के फ़र्ज़ भी निभाती चली आ रही है जब से इस घर मे आई है. सलमा ने इस घर को भी संभाला. मेरी भी अच्छे से देख-भाल की ओर खेतों का काम भी संभालती है. अब कल से खेतों मे कटाई शुरू हो रही है और हर बार की तरह अब्दुल खेतो का काम संभालने की जगह अपने आवारा दोस्तो के साथ ही घूमता रहता है. ये एक बूढ़े की इल्तिजा ही समझ लो आज मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है .अगर तुम बुरा ना मानो तो कुछ दिन जब तक खेतों मे कटाई का काम चल रहा है तब तक तुम इन दोनो लड़कियो के साथ चले जाया करोगे इनकी मदद के लिए.तुम्हारा मुझ बूढ़े पर उपकार होगा.

मैं: बाबा जी आप मुझे ऐसा बोलकर शर्मिंदा ना करे. मेरी एक-एक साँस आप सबकी कर्ज़दार है .आज मैं ज़िंदा हूँ तो आप सबकी मेहरबानी से हूँ. अगर मैं आप लोगो के कुछ

काम आ सकूँ तो ये मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है.मैं कल से रोज़ इनके साथ खेतों पर चला जाया करूँगा.

बाबा: जीते रहो बेटा ! अल्लाह तुम्हे लंबी उम्र दे... मुझे तुमसे यही उम्मीद थी आज से तुम भी मेरे बेटे हो (मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए)

मैं: लेकिन बाबा अब्दुल भाई से आप क्या कहोगे कि मैं कौन हूँ कहाँ से आया.

बाबा: बेटा मैं अब भी इस घर का मालिक हूँ. मुझे किसी को कुछ कहने की ज़रूरत नही है.

(इतने मे जास्मिन बीच मे बोलते हुए)

जास्मिन: उसकी फिकर आप लोग ना करे.मैं हूँ ना मैं संभाल लूँगी अब्दुल भाई को.वो कुछ नही कहेंगे

मैं: ठीक है

बाबा: बेटी इनका बिस्तर भी मेरे कमरे मे लगा दो आज से ये भी इस घर का बेटा है. अब इसको अब्दुल से छुप कर रहने की कोई ज़रूरत नही है. आज से ये भी मेरे साथ मेरे कमरे मे ही सोएगा. तुम्हे कोई ऐतराज़ तो नही सुजल बेटा..???

मैं : (ना मे सिर हिलाते) नही मुझे क्या ऐतराज़ हो सकता है

ऐसे ही सारा दिन निकल गया और शाम को मैं बाबा के कमरे मे बैठा उनके पैर दबा रहा था कि अब्दुल घर आ गया. पहले तो वो मुझे देखकर थोड़ा हैरान हुआ फिर बाबा से पूछा कि कौन है तो बाबा ने उससे झूठ बोला, कि जब तू जेल मे था तब मेरी तबीयत खराब हो गई थी इस नौजवान ने मेरी बहुत देख-भाल की थी और मुझे संभाला था. इस बिचारे का दुनिया मे कोई नही था.ये नौकरी की तलाश मे था इसलिए मैं इसको भी अपने घर मे ले आया. अब्दुल ये बात सुनकर आग-बाबूला हो गया ओर कहने लगा कि आप कैसे किसी अजनबी को घर मे उठा के ला सकते हो. वो मेरे सामने ही बाबा से झगड़ा करने लगा मैं वहाँ बस खामोश बैठा सब सुनता रहा. अंत मे बाबा ने ये कहकर बात ख़तम करदी कि मैं अब भी इस घर का मालिक हूँ .मुझे किसी से इजाज़त लेने की ज़रूरत नही कि मेरे घर मे कौन रहेगा कौन नही जिसको मेरा फ़ैसला मंजूर नही वो ये घर छोड़ कर जा सकता है.

अब्दुल की ये बात सुनकर गुस्से से आँखें लाल हो गई थी. लेकिन फिर भी वो खुद को बे-बस सा महसूस करके पैर पटकता हुआ घर से बाहर निकल गया और रात भर घर नही आया.

रात को मैं अपने बिस्तर पर पड़ा आने वाले दिन के बारे मे सोच रहा था. में बहुत खुश था कि कल सुबह मुझे भी घर से बाहर निकलने का मोक़ा मिल रहा है. क्योंकि इतने महीनो से मैं बस एक खिड़की से ही सारी दुनिया देखा करता था. वैसे तो मैं यहाँ कई महीनो से था. लेकिन आज पहली बार मैं इस घर से बाहर निकल रहा था. बाहर की दुनिया से मैं एक दम अंजान था. ये सब बाते मुझे एक अजीब सी खुशी दे रही थी. इन्ही सोच के साथ मैं कब सो गया मुझे पता ही नही चला. लेकिन आधी रात को फिर मेरी नींद खुल गई. फिर वही अजीब सा अहसास मुझे महसूस होने लगा पाजामे के अंदर मेरा लिंग फिर से सख़्त हुआ पड़ा था और मुझे बेचैन सा कर रहा था. लेकिन आज मुझे मज़े की वादियो मे ले जाने वाली सलमा साथ नही थी. आज कोई मेरे बदन को चूम नही रहा था. खुद मे एक अजीब सा ख़ालीपन सा महसूस कर रहा था. आज मुझे फिर उसी नाज़ुक बदन की ज़रूरत थी जिसने कल रात मेरे बदन के हर हिस्से के साथ खेला था और एक अजीब सा मज़ा मुझे दिया था. एक पल के लिए मेरे दिल मे आया कि आज अगर सलमा नही आई तो मैं उसके कमरे मे चला जाऊ और फिर उन्ही मज़े की वादियो मे खो जाऊ. लेकिन मेरी उसके कमरे मे जाने की हिम्मत नही हुई इसलिए बिस्तर पर पड़ा सलमा का इंतज़ार करता रहा. लेकिन सलमा नही आई और मैं फिर से उन्ही नींद की वादियो मे खो गया.

५

सुबह जब मेरी आँख खुली तो खुद को बहुत खुश महसूस कर रहा था क्योंकि आज मैं बाहर की दुनिया देखने वाला था. मैं जल्दी से बिस्तर से उठा ओर तैयार होने लग गया. लेकिन पहन ने के लिए मेरे पास कपड़े नही थे. इसलिए मैं उदास होके वापिस कमरे मे आके बैठ गया. तभी जास्मिन कमरे मे आई ओर मुझे कंधे से हिलाके बोली...

जास्मिन: जाना नही है क्या खेत मे....कल तो इतना बोल रहे थे. आज आराम से बैठे हो क्या हुआ?

मैं: कैसे जाऊ मेरे पास पहन ने के लिए कपड़े ही नही है.

जास्मिन: (हँसती हुई) भाभी ने कल ही अब्दुल भाईजान के कुछ कपड़े निकाल दिए थे आपके लिए. वो जो सामने अलमारी है उसमे सब कपड़े आपके ही है. बस पूरे आ जाए .आपका क़द कौनसा कम है (हँसते हुए)

मैं: कोई बात नही मैं पहन लूँगा हँसो मत

जास्मिन: ठीक है जल्दी से कपड़े पहन लो फिर खेत में चलेंगे.हम आपका बाहर इंतज़ार कर रही है.

मैं: (हाँ मे सिर हिलाते हुए) ठीक है अब जाओ तो मैं कपड़े पहनु.

जास्मिन: अच्छा जा रही हूँ लम्बूऊऊऊऊ (हस्ती हुई ज़ीभ दिखा कर भाग गई)

फिर मैं जल्दी से कपड़े पहन कर तैयार हो गया. कमीज़ मुझे काफ़ी तंग थी इसलिए मैने कमीज़ के बटन खोलकर ही कमीज़ पहन ली और पाजामा मुझे पैरो से काफ़ी उँचा था. मैं ऐसे ही कपड़े पहनकर बाहर निकल आया जब मुझे सलमा और जास्मिन ने देखा तो ज़ोर-ज़ोर से हँसने लग गई. मैने वजह पूछी तो दोनो ने कुछ नही मे सिर हिला दिया. उसके बाद मैं भी सिर झटक कर जास्मिन और सलमा के साथ खेत के लिए निकल गया. आज मैं बहुत खुश था और हर तरफ नज़र घुमा के देख रहा था. गाँव के सब लोग मुझे अजीब सी नज़रों से घूर-घूर कर देख रहे थे और हँस रहे थे उसकी वजह शायद मेरा पहनावा थी. लेकिन गाँव वालो के इस तरह मुझ पर हँसने से जास्मिन और सलमा को बुरा लगा था.

इसलिए दोनो का चेहरा उतरा हुआ था और चेहरा ज़मीन की तरफ झुका हुआ था. कुछ देर मे हम खेत पहुँच गये वहाँ सरसो के लहलहाते पीले फूल, गेहू की फसल और उसका सुनेहरा रंग और ये खुला आसमान देख कर मेरी खुशी का ठिकाना ही नही था.मैं किसी छोटे बच्चे की तरह दोनो बाहें फेलाए खेतो मे भाग रहा था क्योंकि मेरे लिए ये सब नज़ारा नया था. कुछ देर मैं इस क़ुदरत की सुंदरता को निहारता रहा फिर मेरा ध्यान जास्मिन और सलमा पर गया जो कि खेतो मे काम करने मे लगी थी और मुझे देख कर मुस्कुरा रही थी.

मुझे खुद पर थोड़ी शर्मिंदगी हुई कि मैं यहाँ इनके साथ काम करने आया था और यहाँ मस्ती करने लग गया. इसलिए मैं वापिस उनके पास आ गया और उनसे काम के लिए पूछने लगा उन्होने जो सरसो और गेहू की फसल काट ली थी और उसकी गठरी सी बना ली थी. जिसको मुझे उठाकर एक जगह जमा करना था और बाद मे साफ करके बोरियो मे भरना था. ऐसे ही सारा दिन मैं उनके साथ काम करता रहा. शाम को जब हम घर आ रहे थे तब जास्मिन सलमा के कान मे कुछ बोल कर कही चली गई और मुझे सलमा के साथ घर जाने का बोल गई .मुझे कुछ समझ नही आया कि जास्मिन कहाँ गई है लेकिन फिर भी मैं और सलमा घर के लिए चल पड़े. काफ़ी दूर तक हम दोनो खामोशी से चलते रहे अब हम दोनो मे उस रात के बाद एक झिझक थी और अब भी मेरे दिमाग़ मे वही रात वाला सीन था.मैं सलमा से पूछना चाहता था कि उसने ऐसा क्यो किया. लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ बोल पता सलमा खुद ही बोल पड़ी.

सलमा: सुजल उस रात के लिए मुझे माफ़ कर दो. मैं जज़्बात मे बह गई थी और खुद पर काबू नही रख पाई.

मैं: कोई बात नही लेकिन मुझे तो वो अहसास बहुत अच्छा लगा था.

सलमा: (चोंकते हुए) नही ये गुनाह है.हम वो सब नही कर सकते क्योंकि मैं शादीशुदा हूँ और उस दिन जो हमारे बीच हुआ वो सिर्फ़ एक शौहर और उसकी बीवी के बीच ही हो सकता है. किसी और के साथ ये सब करना गुनाह होता है.

मैं: ठीक है ! मैं समझ गया.

सलमा: उस रात जो हुआ वो आप भी भुला दीजिए और हो सके तो मुझे माफ़ कर देना. मुझसे बहुत बड़ा गुनाह हो गया था अब्दुल की मार ने मुझे अंदर से तोड़ दिया था लेकिन आपके प्यार के दो मीठे बोल ने मुझे बहका दिया था. लेकिन आगे से हम ऐसा कुछ नही करेंगे.

मैं: ठीक है.

ऐसे ही बाते करते हुए हम घर आ गये और हमारे घर आने के कुछ देर बाद जास्मिन भी आ गई. उसके हाथ मे एक थेला था जिसको उसने छुपा लिया और भागती हुई अपने कमरे मे चली गई. मुझे कुछ समझ नही आया कि ये क्या लेके आई है फिर भी चुप रहा और आके बिस्तर पर लेट गया. सलमा रसोई मे चली गई रात खाना बनाने के लिए. इतने मे जास्मिन मेरे पास आ गई एक फीता लेकर और उसने मेरा माप लिया. मुझे कुछ भी समझ नही आ रहा था कि जास्मिन क्या कर रही है. इसलिए हाथ पैर फेलाए खड़ा रहा.जैसे वो खड़ा होने को कहती हो रहा था लेकिन वो बस अपने काम किए जा रही थी .लेकिन मेरे कोई भी सवाल का जवाब नही दे रही थी. माप लेकर जास्मिन वापिस अपने कमरे मे चली गई और मैं वापिस बिस्तर पर लेट गया.आज मेरा पूरा बदन दर्द से टूट रहा था. रात के खाने के बाद मुझे बिस्तर पर पड़ते ही नींद आ गई. शायद किसी ने सच ही कहा है कि जो मज़ा मेहनत करके रोटी खाने मे है वो हराम की रोटी खाने मे नही आ सकता.

६

अगले दिन सुबह जब मैं उठा तो मेरे बिस्तर के पास दो नयी जोड़ी कपड़े पड़े थे. अब बात मेरी समझ मे आ गई कि जास्मिन ने रात भर जाग कर मेरे लिए नये कपड़े सिले हैं. मैं वो कपड़े उठाए बाहर आया और जास्मिन को शुक्रिया कहा. तो उसने सिर्फ़ इतना ही कहा कि अब देखती हूँ तुम पर कौन हँसता है.मैं आज बहुत खुश था और नये कपड़े पहनकर खेत के लिए निकल रहा था. आज कोई मुझ पर नही हँस रहा था लेकिन आज सलमा और जास्मिन मुझे देख कर बहुत खुश थी. शायद कल गाँव वालो का मुझ पर हँसना उनको बुरा लगा था. इसलिए उन्होने मेरे लिए नये कपड़े सिले थे. ऐसे ही मैं जास्मिन और सलमा तीनो पूरा दिन खेतो के काम मे लगे रहे.

दिन गुज़रने लगे रोज़ मैं जास्मिन और सलमा के साथ खेत जाता और उनकी मदद करता. अब्दुल रोज़ दिन भर अपने आवारा दोस्तो के साथ घूमता रहता और रात को कोठे पर पड़ा रहता. बाबा मेरे काम से मुझसे बहुत खुश रहते थे लेकिन अब्दुल मुझसे नफ़रत करता था इसलिए मेरी मौजूदगी मे बहुत कम घर पर रहता. लेकिन एक नयी चीज़ जो मैने महसूस की थी वो ये कि अब सलमा मुझसे दूर-दूर रहने लगी थी. लेकिन जास्मिन मेरा बहुत ख़याल रखने लगी थी किसी पत्नी की तरह. जब कभी पास के खेतों मे काम करने वाली कोई औरत मुझसे हँस कर बात कर लेती तो जास्मिन का चेहरा गुस्से और जलन से लाल हो जाता और बिना वजहाँ मुझसे झगड़ने लग जाती. कुछ ही दिन मे हमने मिलकर सारी फसल की कटाई कर दी थी अब फसल बेचने का वक़्त था. इसलिए मैने जास्मिन से पूछा कि अब इस फसल का क्या करेंगे तो उसने कहा कि हम सब गाँव वाले अपनी फसल गाँव के बड़े ज़मींदार को बेचते हैं.

सलमा: ज़मींदार हर साल अपने हिसाब से फसल की कीमत लगाता है और खरीद लेता है. ऐसे ही हम सब का किसी तरह गुज़ारा हो जाता है.

मैं: लेकिन अगर तुम किसी और को ये फसल बेचो तो हो सकता है कि तुमको ज़्यादा पैसे मिले.

जास्मिन: ये बात हम सब जानते हैं. लेकिन उसके लिए हम को शहर जाना पड़ेगा जो हमारे लिए मुमकिन नही. क्यो कि हम लड़कियाँ अकेली कैसे शहर जाए और ज़मींदार ये बात

कभी बर्दाश्त नही करेगा कि गाँव का कोई भी अपनी फसल बाहर बेचे.वो अपने गुंडे भेज कर उस किसान को बहुत बुरी तरह से मारता है.

मैं: (ये सुनकर जाने क्यो मुझे गुस्सा आ गया और मेरे मुँह से निकल गया) मर गये मारने वाले...शेर की जान लेने के लिए फौलाद का कलेजा चाहिए.

जास्मिन: (हैरान होती हुई) ऐसी बोली तुमने कहाँ से सीखी?

मैं: पता नही जब तुमने मार-पीट का नाम लिया तो खुद ही मुँह से निकल गई.

ऐसे ही बाते करते हुए हम घर आ गये देखा सलमा कमरे मे बैठी रो रही थी. हम भागकर उसके पास गये और पूछा कि क्या हुआ रो क्यो रही हो.

सलमा: अब्दुल अभी आया था.उसने कहा है कि इस बार सारी फसल बेचने वो जाएगा.

मैं: तो इसमे रोने की क्या बात है. ये तो अच्छी बात है ना वो घर की ज़िम्मेदारी उठा रहा है.

सलमा: नही वो अगर फसल बेचेगा तो सारा पैसा जूए और शराब और कोठे मे उड़ा देगा. फिर साल भर हम सब क्या खाएँगे. कुछ भी हो जाए ये फसल अब्दुल को मत बेचने देना सुजल मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूँ.

मैं: तुम घबराओ मत. जैसा तुम चाहती हो वैसा ही होगा लेकिन रोना बंद करो.

इतने मे अब्दुल कुछ आदमियो के साथ घर आया और अनाज़ की बोरिया उठवाने लगा.तो बाबा ने उसको मना किया लेकिन वो उनकी बात को अनसुनी करते हुए बोरिया उठवाने मे उन आदमियो की मदद करने लगा. मैं ये सब कुछ बैठा देख रहा था. इतने मे बाबा ने मुझे आवाज़ लगाई और अब्दुल को बोरिया लेजाने से रोकने का कहा तो मैं खड़ा हुआ और दरवाज़े के पास जाके रुक गया.

मैं: अब्दुल जब बाबा मना कर रहे हैं तो तुम क्यों फसल बेच रहे हो.बाबा खुद अपने हिसाब से बेच लेंगे ना इन आदमियो को यहाँ से जाने का कहो.

अब्दुल: बकवास मत कर कमीने.आया बड़ा दलाल साला.अब तू मुझे सिखाएगा कि क्या करना चाहिए और क्या नही. पहले मेरे घर पर कबजा कर लिया अब इस अनाज के पैसे पर कबजा करेगा. ऐसा कभी नही होने दूँगा मैं. बुढ्ढा तो पागल है. चल मेरे काम मे दखल ना दे नही तो यही ज़िंदा गाढ दूँगा तुझे.

मैं: देखो अब्दुल प्यार से कह रहा हूँ, मान जाओ बाबा की बात. मुझे गुस्सा ना दिलाओ.

अब्दुल: तू ऐसे नही मानेगा ना रुक तेरा इलाज करता हूँ मैं.

उसने उन आदमियो को आवाज़ लगाई तो उन लोगो ने आके मुझे दोनो बाजू से पकड़ लिया और अब्दुल ने और एक और आदमी ने मुझे मारना शुरू कर दिया. मेरे पेट मे और मुँह पर घूसों की जैसे बरसात सी हो गई. मेरे मुँह से खून निकल रहा था आँखें बंद हो रही थी कि अचानक एक लोहे का सरिया मुझे मेरे कंधे पर लगा. शायद किसी ने पिछे से मुझे सरिया से मारा था. दर्द की एक तेज़ लहर मेरे पूरे बदन मे बह गई और मुँह से बस एक आअहह ही निकल पाई और मैं ज़मीन पर नीचे गिर गया और सब लोग मुझे देख कर हँस रहे थे. जास्मिन और सलमा को भी आदमियो ने पकड़ रखा था. वो दोनो रो रही थी और अब्दुल को रोक रही थी लेकिन अब्दुल किसी की भी बात सुनने को तैयार नही था. अचानक मेरी आँखे बंद होने लगी ओर मेरी आँखो के सामने एक तस्वीर सी दौड़ गई जिसमे मैं एक साथ कई लोगो को पीट रहा हूँ ये देख कर मैने अचानक से आँखे खोली तो मुझे एक लात मेरी छाती की तरफ बढ़ती हुई महसूस हुई. मेरे हाथ अपने आप उस पैर के नीचे चला गया और मैने अपने दोनो हाथो से उस पैर को ज़ोर से गोल घुमा दिया. वो आदमी एक तेज़ दर्द के साथ ज़मीन पर घूम कर गिर गया उसका पैर गिरने के बाद भी वैसा ही उल्टा था शायद उसका मैने पैर पूरी तरह से तोड़ दिया था.

अब मैने अपनी दोनो टांगे हवा मे गोल घुमा के अपने हाथ के सहारे एक झटके से खड़ा हो गया. इतने मे एक और आदमी जिसके हाथ मे सरिया था वो मुझे मारने के लिए मेरी तरफ लपका. मैने अपनी एक टाँग हवा मे उठाकर उसके मुँह पर मारी तो वो वही गिर गया और उसके मुँह से जैसे खून का फव्वारा सा निकल गया. जैसे ही मैने पलट कर बाकी आदमियो की तरफ नज़र घुमाई तो सब अपने-अपने हथियार छोड़ कर भाग गये. अब्दुल वही खड़ा मेरे सामने काँप रहा था मैं उसकी तरफ बढ़ा तो जास्मिन और सलमा बीच मे आ गई और मुझे उसको मारने से मना किया. मैने अपनी उंगली उसके मुँह के पास लाके नही में इशारा किया और फिर नीचे ज़मीन पर पड़ी तमाम अनाज की बोरियो को उनकी जगह पर वापिस रख दिया और वापिस अपने कमरे मे आके बाबा के पास बैठ गया. अब्दुल तेज़ कदमो के

साथ घर से बाहर निकल गया. अब पूरे घर मे एक शांति सी छा गई.कोई कुछ नही बोल रहा था थोड़ी देर मे जास्मिन के साथ सलमा भी कमरे मे आ गई सब मुझे हैरानी से देख रहे थे.

बाबा: बेटा तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया. आज तुम ना होते तो मेरी बच्चियों की साल भर की मेहनत जाया हो जाती.

मैं: आपने मुझे बेटा कहा था ना ! तो ये कैसे हो सकता है कि एक बेटे के होते उसके घरवालो की मेहनत जाया हो जाए.

बाबा: (मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए) तुम सदा खुश रहो बेटा. सलमा बेटी देखो सुजल के कितने चोट लगी है इसको दवा लगा दो.

जास्मिन: कोई बात नही बाबा दवा मैं लगा देती हूँ.

सलमा: (मेरी तरफ देखते हुए)लेकिन आपने ऐसा लड़ना कहाँ सीखा?

मैं: पता नही.जब वो लोग मुझे मार रहे थे तो पता नही मेरे सामने एक तस्वीर सी आई जिसमे मैं बहुत सारे लोगो को एक साथ मार रहा था बस उसके बाद क्या हुआ तुमने देखा ही लिया है.

जास्मिन: वैसे कुछ भी कहो मज़ा आ गया. क्या मारा है....वाआहह.अब वो लोग कम से कम ६ महीने बिस्तर से नही उठेंगे

सलमा: चल पागल कहीं की तुझे मज़े की आग लगी है. मुझे तो अब ये डर लग रहा है कि ज़मींदार क्या करेगा सुजल ने उसके आदमियो को मारा है.

मैं: आप फिकर ना करो. अब इस घर की तरफ कोई उंगली भी उठाके नही देख सकता. ज़मींदार तो क्या उसका बाप भी अब कुछ नही कर सकता.मैं हूँ ना.

सलमा: लेकिन हम को आपकी भी तो फिकर है ना...आपको कुछ हो गया तो.... देखो आज भी आपको कितनी चोट लग गई है कही कुछ हो जाता तो....वो तो गुंडे मवाली है उनका ना आगे कोई ना पिछे कोई लेकिन आपका अब एक परिवार है.

मैं: अर्रे आप लोग फिकर क्यो कर रहे हो.कुछ नही हुआ मुझे थोड़ी सी खराश आई सब ठीक हो जाएगा कुछ दिन मे.

ऐसे ही कुछ देर बाद जास्मिन ने मेरे दवाई लगा दी. और फिर हम सब खाना ख़ाके सो गये.

७

अगले दिन मैं जास्मिन और सलमा शहर जाके फसल बेच आए और हमें ज़मींदार से दुगुनी कीमत मिली फसल की. जिससे सब लोग बहुत खुश थे. फिर हमने शहर से ही घर का ज़रूरी समान खरीदा और जास्मिन कहने लगी कि उसको नये कपड़े लेने है सबके लिए. उसकी ज़िद के कारण हम तीनो एक दुकान पर गये जहाँ सबके लिए कपड़े खरीदने लग गये. इतने मे सलमा को एक चक्कर सा आया और वो मेरे कंधे पर गिर गई जिसे मैने ज़मीन पर गिरने से पहले ही संभाल लिया. उसने सिर्फ़ इतना ही कहा कि कमज़ोरी की वजह से चक्कर आ गया होगा और हम सब फिर से कपड़े देखने मे लग गये. ऐसे ही सारा दिन खरीद दारी करने के बाद बस मे घर आ गये. आज घर मे सब बहुत खुश थे सिवाए अब्दुल के. मैने एक जोड़ी कपड़े उठाए ओर अब्दुल को देने उसके कमरे मे चला गया लेकिन उसने वो कपड़े ज़मीन पर फेंक दिए. मैने भी ज़्यादा उसको कुछ नही कहा और कमरे से बाहर आके बाबा के पास बैठ गया जहाँ जास्मिन बाबा को नये कपड़े दिखा रही थी. थोड़ी देर बाद मैं और बाबा ही कमरे मे बैठे थे. रात को सबने मिलकर खाना खाया और सो गये अब्दुल आज भी घर मे नही था. अभी मेरी आँख ही लगी थी कि किसी ने मुझे कंधे से पकड़कर हिलाया तो मेरी नींद खुल गई. ये सलमा थी जो मुझे उठा रही थी और बाहर चलने का इशारा कर रही थी. मैं उसके पिछे-पिछे कमरे के बाहर आ गया.

मैं: क्या हुआ इतनी रात को क्या काम है

सलमा: मुझे आपसे एक ज़रूरी बात करनी थी

मैं: इस वक़्त...बोलो क्या काम है

सलमा: एक गड़-बड हो गई है समझ नही आ रहा है कैसे कहूँ

मैं: क्या हुआ खुलकर बताओ ना

सलमा: वो मैं माँ बनने वाली हूँ

मैं: तो ये तो खुशी की बात है .इसमे मेरी नींद क्यो खराब की ये बात तो तुम सुबह भी बता सकती थी.

सलमा: (झुंझलाते हुए) आप बात नही समझ रहे....मैं आपके बच्चे की माँ बनने वाली हूँ.

मैं: क्या.......(हैरानी से) ये कैसे हो सकता है....

सलमा: उस दिन वो सब हुआ था ना शायद तब ही हो गया.

मैं : ये भी तो सकता है कि ये अब्दुल का बच्चा हो.

सलमा: मुझे पूरा यक़ीन है ये आपका बच्चा है क्योंकि अब्दुल जबसे जेल से आया है उसने मुझे हाथ तक नही लगाया. जाने उस दिन मुझे क्या हो गया था....(ये कहते हुए वो चुप हो गई)

मैं: तो किसी को क्या पता ये किसका बच्चा है तुम बोल देना अब्दुल का है और क्या. मैं भी किसी से कुछ नही कहूँगा

सलमा: नही अब्दुल को पता चल जाएगा और वो सबको बोल देगा कि ये मेरा बच्चा नही है. क्योंकि उसने तो मुझे छुआ भी नही तो मैं माँ कैसे बन गई (परेशान होते हुए)

मैं: चलो जो होगा देखा जाएगा.अभी तुम भी सो जाओ बहुत रात हो गई है हम सुबह कुछ सोच लेंगे तुम फिकर ना करो मैं तुम्हारे साथ हूँ.

सलमा: पक्का मेरे साथ हो ना

मैं: हाँ बाबा

सलमा: मुझे छोड़ कर कभी मत जाना सुजल मैं तुम्हारे बिना बहुत अकेली हूँ (मुझे गले लगाते हुए और रोते हुए)

मैं: नही जाऊंगा मेरी जान चुप हो जाओ (उसके माथे को चूमते हुए)अब जाओ जाके तुम भी सो जाओ बहुत रात हो गई.

सलमा: (हाँ मे सिर हिलाते हुए ओर मेरे गाल को चूम कर) अच्छा आप सो जाओ अब.

फिर हम एक दूसरे से अलग हुए ओर अपने-अपने कमरे मे जाके बिस्तर पर लेट गये.नींद दोनो की आँखो से कोसो दूर थी. शायद आज हम दोनो ही एक ही चीज़ के बारे मे सोच रहे थे. मेरे अंदर उस दिन के सोए जज़्बात आज फिर जाग गये थे. लिंग फिर से खड़ा हो गया था फिर वही एक अजीब सा अहसास महसूस होने लग गया था लेकिन खुद को काबू करते हुए मैने आँखे बंद कर ली और सोने की कोशिश करने लगा. मैं अब बस आने वाले दिन के बारे मे सोच रहा था मेरे दिमाग़ मे कई सारे सवाल थे जिनका जवाब सिर्फ़ आने वाले वक़्त के पास था.

मैं अपनी सोच के साथ बिस्तर पर आके लेट गया और जल्दी ही नींद ने अपनी आगोश मे मुझे ले लिया. सुबह बाबा जल्दी जाग जाते थे और उनकी आवाज़ से मेरी भी आँख खुल जाती थी. मैं दिन के ज़रूरी कामों से फारिग होके सलमा और जास्मिन के साथ खेत पर काम के लिए निकल गया. दिन भर हम तीनो खेतो मे काम करते रहे और शाम को जब घर आए तो बाबा ने हम सब को गहरी फिकर मे डाल दिया. क्योंकि अब्दुल कल रात से घर नही आया था ये सुनकर हम तीनो के होश भी उड़ गये क्योंकि लाख लड़ने -झगड़ने के बाद भी वो दिन मे कम से कम एक बार तो घर आ ही जाता था. बाबा की बात सुन कर मुझे भी अब्दुल की चिंता हो रही थी और मैं उसको ढूँढने के बारे मे ही सोच रहा था. कि बाबा ने मुझे कहा......

बाबा : सुजल बेटा अब्दुल रात से घर नही आया है.... जाने इस ला-परवाह इंसान को कब अक़्ल आएगी.

मैं : बाबा आप फिकर ना करे मैं अभी जाता हूँ और अब्दुल को ढूँढ कर लाता हूँ.

सलमा : मैं भी आपके साथ चलूं?

मैं : नही आप घर मे ही रूको बाबा के पास मैं अभी अब्दुल भाई को लेकर आता हूँ.

सलमा : आप अपना भी ख़याल रखना

मैं : अच्छा

फिर मैं अब्दुल को गाँव भर मे ढूंढता रहा.शाम से रात हो गई थी लेकिन अब्दुल नही मिला था. मैने उसके तमाम अड्डो पर भी देखा जहाँ वो अक्सर शराब पीने ओर जुआ खेलने जाता था लेकिन वहाँ भी किसी को अब्दुल के बारे मे कुछ नही पता था. तभी मुझे एक आदमी मिला जिसने मुझे बताया कि अब्दुल अक्सर कोठे पर भी जाता है. मैने अब्दुल को बरहाल वही ढूँढने जाने का फ़ैसला किया. आज मैं पहली बार ऐसी किसी जगह की तरफ जा रहा था. मेरे दिल मे हज़ारो सवाल थे लेकिन इस वक़्त मुझे अब्दुल को ढूँढना था इसलिए अपने अंदर की बैचैनि को मैने दर-किनार कर दिया और कोठे की तरफ बढ़ गया.

मैं तेज़ कदमो के साथ कोठे की तरफ जा रहा था और दिल मे डर भी था कि कहीं कोई ये बात सलमा या जास्मिन को ना बता दे कि मैं भी कोठे पर गया था जाने वो मेरे बारे मे क्या सोचेगी. मैं अपनी सोच मे ही गुम था कि अचानक मुझे एक इमारत नज़र आई जो पूरी तरह जग-मगा रही थी लाइट की रोशनी के साथ मानो सिर्फ़ उस इमारत के लिए अभी भी दिन है बाकी तमाम गाँव की रात हो चुकी है. इमारत से बहुत शोर आ रहा था मेरी समझ मे भी नही आ रहा था कि अब्दुल के बारे मे किससे पुछू. मैने गेट के सामने खड़े एक काले से आदमी से अब्दुल के बारे मे पूछा....

मैं : सुनिए

आदमी : अंदर आ जाओ जनाब बाहर क्यों खड़े हो

मैं : नही मैं बाहर ही ठीक हूँ मुझे बस अब्दुल के बारे मे पूछना था वो कही यहाँ तो नही आया

आदमी : (ज़ोर से हँसते हुए) साहब यहाँ तो कितने ही अब्दुल रोज़ आते हैं ओर रोज़ चले जाते हैं. आपको अगर पूछना है तो अंदर अमीना बाई से पूछो.

मैं : ठीक है आपका बहुत-बहुत शुक्रिया.

उस आदमी ने मुझे अंदर जाने के लिए रास्ता दिया और मैने अपने जोरो से धड़कते दिल के साथ चारो तरफ नज़र दौड़ा कर देखा कि कही मुझे कोई देख तो नही रहा और फिर सीढ़िया चढ़ गया. अंदर बहुत तेज़ गानों का शोर था और लोगो की वाह-वाही की आवाज़े

आ रही थी. जैसे ही मैं अंदर पहुँचा तो वहाँ एक बहुत ही सुंदर सी लड़की छोटे-छोटे कपड़ो मे नाच रही थी और उसके चारो तरफ बैठे लोग उस पर नोटो की बारिश सी कर रहे थे. कोई आदमी उसकी चोली मे नोट डाल रहा था तो कोई उसके घाघरे की डोरी के साथ नोट लटका रहा था. वो लड़की बस मस्त होके गोल-गोल घूमे जा रही थी जैसे उसको किसी के भी हाथ लगाने की कोई परवाह ही ना हो . अचानक वो लड़की नाचती हुई मेरी ओर आई और खुद को संभाल ना सकी और मुझ पर गिरने को हुई.मैने फॉरन आगे बढ़कर उस लड़की को थाम लिया और गिरने से बचाया. जब मैंने उसे नज़र भरके देखा तो वो पसीने से लथ-पथ थी और उसकी साँस भी फूली हुई थी.

मैं : आप ठीक तो है आपको लगी तो नही?

लड़की : हाए...अब जाके तो क़रार आया है.आपने जो थाम लिया है.

मैं : (मुझे कुछ समझ नही आया कि क्या जवाब दूं इसलिए बस मुस्कुरा दिया)

लड़की : हाए तुम्हारा बदन कितना कॅसा हुआ है....कौन हो तुम.... यहाँ पहली बार देखा है

मैं : मेरा नाम सुजल है.मैं अब्दुल भाई को ढूँढने के लिए आया हूँ.वो तो कल रात से घर नही आया...

लड़की : ओह अच्छा वो अब्दुल.... आप अंदर चले जाइए और शबनम से पूछिए वो उसका खास है (आँख मार के)

मैं : शुक्रिया आपकी बहुत मेहरबानी जी.

मैं अंदर कमरे मे चला गया जहाँ बहुत सारी लड़कियाँ बैठी हुई थी. मैं वहाँ शबनम का पूछने जाने लगा तो एक बुढ़िया ने मुझे रोक दिया कि, ओ नवाबजादे अंदर कहाँ घुसा चला आया है ये लड़किया इंतज़ार मे है कोई और बाहर वाली मे से कोई ढूँढ जाके. मुझे उसकी कही हुई बात समझ नही आई इसलिए उसी से पूछा कि मैं शबनम जी को ढूँढ रहा हूँ.

बुढ़िया : शबनम जी (ज़ोर से हँसती हुई) कौन है रे तू चिकने ?

मैं : मेरा नाम सुजल है और शबनम जी से मिलना है

शबनम : बोल चिकने क्या काम है. मैं हूँ शबनम!

मैं : जी मैं अब्दुल को ढूँढ रहा था. तो बाहर वाली लड़की ने बताया कि आपको मालूम होगा अब्दुल के बारे मे. वो रात से घर नही आया है. घर मे सब उसकी फिकर कर रहे है.

शबनम : वो तो काफ़ी दिन से यहाँ भी नही आया. वैसे भी उस कंगाल के पास था क्या... ना साले की जेब मे दम था ना हथियार मे (बुरा सा मुँह बना के).

मैं : यहाँ नही आया तो कहाँ गया ?

शबनम : मुझे क्या पता उसकी बीवी को जाके पूछ.

अब मुझे कोई उम्मीद नज़र नही आ रही थी कि जो मुझे अब्दुल के बारे मे बता सके. मैं वहाँ से बाहर निकल आया. किसी को भी अब्दुल के बारे मे नही पता था. मैं पूरी रात उसको ढूँढ-ढूँढ कर थक चुका था और मेरे पैर भी चल-चल कर जवाब दे चुके थे. अब ना तो मुझ मे चलने की हिम्मत थी ना ही अब्दुल का कुछ पता चला था. मैने घर वापिस जाने का फ़ैसला किया ओर बो-झिल दिल के साथ वापिस घर आ गया.जब घर आया तो घर के बाहर पुलिस की गाड़ी खड़ी थी, जिसको देखकर ना-जाने क्यो एक पल के लिए मैं चोंक गया. बाबा और सलमा थानेदार से कुछ बात कर रहे थे मुझे उनको देख कर कुछ समझ नही आया इसलिए वहाँ जाके सारा मामला पता करना बेहतर समझा. जब मैं वहाँ पहुँचा तो जाने क्यो थानेदार मुझे गौर से देखने लगा. जैसे कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो. लेकिन सलमा ने मुझे आँखों से ही चुप रहने का इशारा किया और मैं बस पास जाके खड़ा हो गया और थानेदार को सलाम किया.

थानेदार : वालैकुम सलाम, ये कौन है.

बाबा : जनाब ये मेरा छोटा बेटा है.

थानेदार : (कुछ याद करते हुए) तुमको मैने पहले भी कही देखा है.

मैं : जी नही साब मैं तो आपको पहली बार मिल रहा हूँ.

थानेदार : क्या नाम है तेरा ?

बाबा : जनाब इसका नाम सुजल है. बहुत सीध-साधा लड़का है कोई बुरी आदत नही इसको.

थानेदार : ओह्ह अच्छा-अच्छा बेटा है तुम्हारा.... फिर ये कोई और है. इसको देख कर किसी की याद आ गई जो एक-दम इसके जैसा था.

इतने मे सलमा ने जास्मिन को इशारा किया और वो मुझे लेके अंदर चली गई. ये सब क्या हो रहा था मुझे कुछ भी समझ नही आ रहा था...ये थानेदार यहाँ क्यों आया है इतनी रात को, किसी ने भी मुझसे अब्दुल के बारे में क्यो नही पूछा? ऐसे ही मेरे अंदर कई सवाल एक साथ खड़े हो गये थे. अचानक मेरी नज़र जीप मे बैठे अब्दुल पर पड़ी तो मैं उसकी ओर जाने लगा. लेकिन जास्मिन ने मुझे बाजू से पकड़ लिया और अंदर आने का इशारा किया. मैं बिना कोई सवाल किया चुप-चाप उसके साथ अंदर आ गया.

मैं : ये सब क्या हो रहा है और ये अब्दुल को कहाँ लेके जा रहे हैं, थानेदार मुझे ऐसे क्यो देख रहा था?

जास्मिन : एक तो तुम सवाल बहुत करते हो....अभी कुछ मत बोलो बस अंदर चलो. बाबा बात कर रहे हैं ना...

मैं : अच्छा ठीक है (हां मे सिर हिलाते हुए)

कुछ देर बाद थानेदार भी चला गया और उनके साथ अब्दुल भी. लेकिन मैं बस खामोश होके अपने सवालो का जवाब जानने के लिए बे-क़रार होके बाबा और सलमा का इंतज़ार करने लगा. कुछ देर मे बाबा और सलमा भी घर के अंदर आ गये.

मैं : बाबा ये सब क्या हो रहा है और ये अब्दुल को कहाँ लेके जा रहे हैं?

बाबा : बस बेटा जाने कौनसे गुनाहो की सज़ा मिल रही है मुझ बूढ़े को जो बुढ़ापे मे ये दिन देखने को मिल रहे हैं (अपने सिर पर हाथ रखकर बैठ ते हुए)

मैं : क्या हुआ है बाबा कोई मुझे कुछ बताता क्यो नही.

जास्मिन : वो भाई जान ने हमारी फसल सरपंच को बेच दी थी और उससे पैसे लेके जुए और शराब मे उड़ा दिए थे अब सरपंच अपने पैसे वापिस माँग रहा है.लेकिन अब्दुल भाई ने वो सब पैसे खर्च कर दिए. इसलिए उस सरपंच ने अपने पैसे निकलवाने के लिए पुलिस को बुला लिया और वो उनको पकड़ के ले गई है.

मैं : तो हम उनके पैसे वापिस कर देते हैं ना उसमे क्या है .आख़िर वो इस घर का बेटा है वैसे भी हमारे पास फसल के काफ़ी पैसे बचे हुए हैं.

बाबा : नही बेटा ! अब्दुल के लिए हम बहुत बार पैसे दे चुके हैं. अब ज़रूरत नही है! शायद जेल मे रहकर ही उससे अक़ल आ जाए.

मैं : बाबा मैं सरपंच से बात करके आता हूँ.अब्दुल भाई के लिए शायद वो मान जाए?

बाबा : नही बेटा वो बहुत बे-रहम इंसान है.वो नही मानेगा. तुम भी इन सब चक्करो मे ना पडो तो बेहतर होगा.(और मायूस क़दमो के साथ अपने कमरे मे चले गये)

मैं : मानेगा बाबा ज़रूर मानेगा ! जास्मिन मैं अभी आया.

जास्मिन : नही सुजल वो बहुत घटिया किस्म का इंसान है जाने दो.

मैं : मुझ पर भरोसा है या नही?

जास्मिन : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) सबसे ज़्यादा तुम पर ही तो भरोसा है.

मैं : बस फिर चुप रहो मैं अभी आता हूँ.

८

मैं सरपंच की हवेली की तरफ चला गया. जब मैं हवेली के गेट पर पहुँचा तो एक दरबान ने मुझे रोक दिया.

दरबान : क्या काम है अंदर कहाँ घुसा चले आ रहा है?

मैं : मुझे सरपंच से मिलना है बुलाओ उसको.

दरबान : उनकी इजाज़त के बिना उनसे कोई नही मिल सकता और तू है कौन जो इतना रौब झाड़ रहा है.चल दफ़ा होज़ा यहाँ से.

मैं : (दरबान की गर्दन पकड़ते हुए) मैं बोला मुझे अभी सरपंच से मिलना है.गेट खोल नही तो तेरी गर्दन तोड़ दूँगा समझा....

दरबान : खोलता हूँ भाई ! मेरी गर्दन तो छोड़ो.... जाओ अंदर.

जब मैं हवेली के अंदर गया तो उसकी शान-ओ-शौकत से ही अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि जाने कितने ही ग़रीबो का खून चूस कर इस इंसान ने इतना पैसा जमा किया है. हवेली की हर चीज़ से पैसा झलक रहा था. अंदर से हवेली बहुत ही आलीशान और शानदार थी.जहाँ में खड़ा था वहाँ से चारों तरफ रास्ते दिखाई दे रहे थे. मुझे कुछ समझ नही आ रहा था कि अब मैं किस तरफ जाऊं.मैं वहीं खड़ा हो कर इंतिज़ार करने लगा कि कोई नज़र आए तो में सरपंच का पुछू. अभी मैं इसी शशो पुंज मे था कि मुझे हवैली के लेफ्ट साइड से किसी की खनकती हँसी की आवाज़ सुनाई दी. उस हँसी के बाद फॉरेन ही काफ़ी सारी लड़कियों के खिलखिला कर हँसने की आवाज़ आई.मेरा रुख़ खुद-ब-खुद उस तरफ हो गया जहन से आवाज़ें आ रहीं थीं. मुझे वहाँ कुछ लड़कियाँ आपस मे अठखेलिया करती नज़र आई. मैने अपने कदम उनकी तरफ बढ़ा दिए इससे पहले कि मैं उनसे कुछ पूछ पाता कुछ लोगो ने आके मुझे पिछे से पकड़ लिया. इससे पहले कि मैं अपना हाथ उठाता उन लड़कियो मे से एक लड़की ने आगे बढ़कर उन लोगो को हुकुम दिया कि मुझे छोड़ दिया जाए और सब लोगो ने सिर झुका कर उस लड़की का हुकुम मान लिया और मुझे छोड़ दिया....

लड़की : हंजी कौन हो आप और अंदर कैसे आए......

मैं : जी मुझे सरपंच जी से मिलना है.

लड़की : अब्बू तो घर पर नही है. बताओ क्या काम है मैं उनकी बेटी हूँ.

मैं : (कुछ सोचते हुए) जी कुछ नही फिर मैं चलता हूँ . माफ़ कीजिए आपको मेरी वजह से परेशानी हुई.

लड़की : तुमको पहली बार देख रही हो.तुम कौन हो और यहाँ नये आए हो क्या (साथ ही उन लोगो को उंगली से जाने का इशारा करते हुए)

मैं : जी मेरा नाम सुजल है.मैं हैदर अली का छोटा बेटा और अब्दुल अली का छोटा भाई हूँ.

लड़की : हमम्म तुमने अभी तक बताया नही कि तुमको अब्बू से काम क्या था और इतनी रात गये इस तरह क्यों आए.?

मैने लड़की को सारी समस्या बता दी और उनकी रकम धीरे-धीरे करके लौटाने की बात भी कह दी और उसको मेरी मदद करने को कहा....

लड़की : ठीक है मैं देखती हूँ क्या कर सकती हूँ आपके लिए.

मैं : आपका बहुत-बहुत शुक्रिया

लड़की : अब बहुत रात हो गई तुम अपने घर जाओ. सुबह अब्बू आएँगे तो मैं उनसे बात करके देखूँगी कि क्या हो सकता है.

मैं : ठीक है जी ! आपका मुझ पर अहसान होगा अगर आप मेरी मदद कर देंगी तो.

मैं खुशी-खुशी घर की तरफ जा रहा था लेकिन बार-बार मुझे उस लड़की का चेहरा आँखो के सामने नज़र आ रहा था. कुछ तो था उस लड़की मे जो मुझे अपनी ओर खींच रहा

था....लड़की इंतेहा खूबसूरत थी...... गोल सा चेहरा, चेहरे पर बालो की पतली सी लट जो बहुत क़ातिलाना लगती थी... बड़ी-बड़ी हिरनी जैसी आँखें... गुलाब की पंखुड़ी जैसे पतले से रस-भरे होंठ जब हँसती थी तो गालों मे गड्ढे से पड़ते थे जो उसकी खूबसूरती मे चार-चाँद लगाते थे शायद ये पहली लड़की थी गाँव मे जो मैने इतनी सजी-सवरी हुई देखी थी और उसके बात करने का सलीका भी बहुत अच्छा था. मैं उस लड़की के बारे मे ही सोचता हुआ पता नही कब घर के सामने आ गया.मेरा ध्यान तब टूटा जब जास्मिन ने मुझे हिला कर कहा....

जास्मिन : अब अंदर भी आना है या आज रात यही दरवाज़े पर ही गुज़ारनी है?

मैं : (चौंकते हुए) हाँ आता हूँ!

जास्मिन : क्या बात है आज बड़ा मुस्कुरा रहे हो. हवेली पर ही गये थे ना या फिर तुमने भी अब्दुल भाई की तरह कहीं और जाना शुरू कर दिया है (मुझे छेड़ते हुए)

मैं : कहीं और से क्या मतलब है तुम्हारा.तुमको मैं ऐसा लगता हूँ क्या....हाँ हवेली पर ही गया था और एक खुश खबरी लेके आया हूँ.

जास्मिन : (हैरानी से) क्या खुशख़बरी?

मैं : वो मैं जब हवेली पर गया था तो मुझे सरपंच की बेटी मिली थी. वो कह रही थी कि वो अपने अब्बू से बात करेगी और हमारी मदद भी करेगी बहुत अच्छी है वो.

जास्मिन : सुजल तुम कितने भोले हो...तुम आज के बाद कभी हवेली नही जाओगे समझे.

मैं : क्यो क्या हुआ मैने कुछ ग़लत किया क्या?

जास्मिन : नही तुमने कुछ ग़लत नही किया बस आज के बाद उस लड़की से मत मिलना.

मैं : वो जब हमारी मदद कर रही है तो ग़लत क्या है मिलने मे ये तो बताओ.

जास्मिन : मैने जो तुमको कहा वो तुम्हे समझ नही आया ना .ठीक है! जो तुम्हारे दिल मे आए करो लेकिन मुझसे बात मत करना आज के बाद समझे.

मैं : (परेशानी से) यार लेकिन हुआ क्या बताओ तो सही.

जास्मिन : कुछ नही हुआ ! बस तुम आज के बाद वहाँ नही जाओगे नही तो मैं तुमसे बात नही करूँगी. वो लोग अच्छे लोग नही है सुजल.

मैं : ठीक है जो हुकुम सरकार का !

जास्मिन : (हँसती हुई) तुम जब मेरी बात मान जाते हो ना तो मुझे बहुत अच्छे लगते हो. दिल करता है कि.....

मैं : कि...? क्या दिल करता है?

जास्मिन : कुछ नही बुद्धू चलो ,अब अंदर चलो खाना खा लो .1 तुम्हारी वजह से मैने और भाभी ने भी खाना नही खाया लेकिन तुमको क्या तुम तो जाओ अपनी उस सरपंच की बेटी के पास.....

मैं : अर्रे तुम दोनो ने खाना क्यों नही खाया?

जास्मिन : हमने सोचा आज हम सब साथ मे ही खाना खा लें (नज़रे झुका के मुस्कुराते हुए)

मैं : बाबा ने खाना खा लिया?

जास्मिन : हाँ वो तो खाना खा के सो भी गये. बस हम ही दो पागल बैठी है. जो अपने बुद्धू का इंतज़ार कर रही है.लेकिन तुमको तो हवेली वाली से ही फुरसत नही है हमारी याद कहाँ से आएगी..

मैं : (मुस्कुराते हुए) ज़्यादा मत सोचा करो.... चलो मुझे भी बहुत बहुत भूख लगी है.

खाने के वक़्त मैने एक नयी चीज़ जास्मिन और सलमा मे देखी. दोनो मुझे अज़ीब सी नज़रों से देख रही थी और मुझे देखकर बार-बार मुस्कुरा रही थी. मैने भी १-२ बार पूछा कि क्या हुआ लेकिन दोनो ने बस ना मे सिर हिला दिया. रात को खाने के बाद दोनो रसोई मे काम कर रही थी और मैं कमरे मे बैठा था कि सलमा ने इशारे से मुझे बाहर आने का कहा.

मैं : क्या हुआ.

सलमा : नींद तो नही आ रही?

मैं : ये पूछने के लिए बाहर बुलाया था.

सलमा : (मुस्कुराते हुए) नही कुछ और बात थी.

मैं : हाँ बोलो क्या काम है.

सलमा : (झुनझूलाते हुए) हर वक़्त काम हो तभी बुलाऊ ये ज़रूरी है क्या.

मैं : नही मैने ऐसा कब कहा. बोलो क्या हुआ फिर!

सलमा : कुछ नही बस तुमसे कुछ बात करनी है.

मैं : हाँ बोलो.

सलमा : अभी नही ! रात को जब सब सो जाएँगे तब अकेले मे मेरे कमरे मे आ जाना तब बात करेंगे.

मैं : अभी बता दो ना क्या बात है.

सलमा : हर बात का एक वक़्त होता है....रात को मतलब रात को.... ठीक है

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) ठीक है और कोई हुकुम?

सलमा : नही जी !बस इतना ही .बस अब सो मत जाना रात को.मैं इंतज़ार करूँगी तुम्हारा. ठीक है!

मैं : ठीक है !

९

मुझे रात को सबके सो जाने के बाद अपने कमरे मे आने का कह कर सलमा चली गई और मैं वापिस अपने कमरे मे आ गया और अपनी चारपाई पर लेट गया. साथ मे जास्मिन के सो जाने का इंतज़ार करने लगा ताकि मैं सलमा के कमरे मे जा सकूँ. वैसे तो अब्दुल के जेल से जाने से सलमा को और बाकी घरवालो को दुखी होना चाहिए था. लेकिन १ ही दिन मे ना-जाने क्यो सब ऐसे बर्ताव कर रहे थे जैसे कुछ हुआ ही ना हो. शायद सबने अब्दुल को भुला दिया था. आज सलमा भी मुझसे बात करते हुए बहुत खुश नज़र आ रही थी. जैसे कुछ हुआ ही ना हो...अभी मैं यही बात सोच ही रहा था कि अचानक मुझे याद आया कि सलमा ने उस दिन रात को कहा था कि वो माँ बनने वाली है. ज़रूर इसी मसले पर बात करने के लिए मुझे बुलाया होगा. लेकिन फिर मैने सोचा कि यार मैं तो खुद हर बात सलमा और जास्मिन से पूछ कर करता हूँ. मैं भला उसकी क्या मदद कर सकता हूँ.

यही सब सोचते हुए काफ़ी वक़्त गुज़र गया और मैं बस अपने बिस्तर पर पड़ा इन सब बातों के बारे मे सोच रहा था कि अचानक मुझे बाहर से किसी के छह्हीई....छह्हीई....की आवाज़ सुनाई दी. मैने आँखें खोलकर बाहर देखा तो सलमा दरवाज़े पर खड़ी मुस्कुरा रही थी और हाथ हिलाकर मुझे बाहर बुला रही थी. मैने इशारे से उसको जास्मिन के बारे मे पूछा कि क्या वो सो गई तो उसने भी सिर हिला कर हाँ मे जवाब दिया और साथ ही मुझे उंगली से पास आने का इशारा किया. जैसे ही मैं अपनी चारपाई से खड़ा हुआ तो सलमा पलटकर चलने लगी. मैं जानता था वो कहाँ जा रही है. इसलिए मैं भी उसके पिछे ही चल दिया. वो बिना पिछे देखे सीधा अपने कमरे मे चली गई और अपने कमरे की लाइट बंद कर दी और नाइट बल्ब ऑन कर दिया. मुझे कुछ समझ नही आया कि इसने अगर बात करनी है तो कमरे मे अंधेरा क्यो कर रही है. अभी मैने कमरे मे पहला कदम ही रखा था कि सलमा ने मेरे दाएँ हाथ को पकड़ कर जल्दी से अंदर खींचा और बाहर की तरफ मुँह करके दाए-बाएँ देखा और कमरा अंदर से बंद कर दिया. मुझे बस कुण्डी लगाने की आवाज़ सुनाई दी फिर सलमा मेरी तरफ पलटी और एक मुस्कुराहट के साथ मुझे देखने लगी मैने भी मुस्कुरा कर उसे देखा.

सलमा : क्या हुआ ऐसे क्या देख रहे हो.

मैं : वो तुमने कुछ ज़रूरी बात करनी थी ना.

सलमा : बताती हूँ पहले वहाँ चलो (बेड की तरफ इशारा करते हुए)

मैं : अच्छा... लो आ गया जी !अब जल्दी बताओ.

सलमा : तुमको कोई गाड़ी पकड़नी है क्या?

मैं : नही तो ! क्यो ?

सलमा : तो फिर हर वक़्त इतना जल्दी मे क्यो रहते हो. दो पल मेरे साथ नही गुज़ार सकते?

मैं : ऐसी बात नही है. मैं बस जल्दी के लिए इसलिए कह रहा था कि कोई आ ना जाए कोई हम को ऐसे देखेगा तो अच्छा नही सोचेगा ना इसलिए. बस ओर कोई बात नही.(मुस्कुराते हुए)

सलमा : अच्छा ये बताओ मैं तुमको कैसी लगती हूँ.

मैं : बहुत अच्छी लगती हो... तुम, जास्मिन और बाबा तो बहुत अच्छे हो. मेरा बहुत ख्याल भी रखते हो.

सलमा : या अल्लाह...(सिर पर हाथ रखते हुए) क्या करूँ मैं तुम्हारा.

मैं : क्या हुआ ?अब मैने क्या किया.

सलमा : मैने सिर्फ़ अपने बारे मे पूछा है सबके बारे मे नही. सिर्फ़ मेरे बारे मे बताओ.

मैं : म्म्म्मेम तुम बहुत बहुत बहुत अच्छी हो....खुश (मुस्कुराते हुए)

सलमा : ऐसे नही बाबा... मेरा मतलब देखने मे कैसी लगती हूँ.

मैं : देखने मे भी तुम सुंदर हो....तुम बताओ तुमको मैं कैसा लगता हूँ?

सलमा : हाए....ऐसे सवाल मत पूछा करो. दिल बाहर निकलने को हो जाता है. तुम तो मुझे मेरी जान से भी ज़्यादा प्यारे हो.तुम नही जानते तुम मेरे लिए क्या हो...जानते हो जब तुम नही थे तो मैं हमेशा रात को रोती रहती थी. नींद भी नही आती थी. खुद को बहुत अकेला महसूस करती थी.

मैं : और अब?

सलमा : अब तो मुझे बहुत सुकून है. तुम्हारे आने से जैसे मुझे सारे जहांन की खुशियाँ मिल गई है........जानते हो हर लड़की तुम जैसा पति चाहती है. जो उसको बहुत सारा प्यार करे. उसकी हर बात माने, उसका खूब ख्याल रखे,हर तक़लीफ़ मे उसके साथ खड़ा हो. तुम मे वो सब खूबियाँ है.

मैं : अर्रे....मुझमे ऐसा क्या देख लिया तुमने.... खुद ही तो कहती हो मैं बुद्धू हूँ.

सलमा : नही पागल! वो तो मैं मज़ाक मे कहती हूँ. तुम बहुत अच्छे हो (मेरे गाल खींच कर)

मैं : ऐसे मत किया करो (अपने गालो को सहलाते हुए) मैं कोई बच्चा थोड़ी हूँ जो मेरे गाल खींच रही हो.

सलमा : मैने कब कहाँ बच्चे हो...तुम बच्चे नही मेरी जान हो. तुम तो मेरे होने वाले बच्चे के बाप हो.(मेरे होंठों को चूमते हुए)

मैं : हाँ बच्चे से याद आया इसका अब हम क्या करेंगे?

सलमा : करना क्या है मेरा बच्चा है मैं पैदा करूँगी और क्या !

मैं : लेकिन अगर किसी को पता चल गया कि ये अब्दुल का बच्चा नही तो...?

सलमा : कुछ भी पता नही चलेगा. वो तो वैसे भी जेल मे है.जब तक वो बाहर निकलेगा हमारा बच्चा चलने फिरने लगेगा. वैसे भी वो आया था ना कुछ दिन के लिए यहाँ, तो मैं बोल दूँगी कि उसका है. तुम फिकर मत करो मैने सब कुछ सोच लिया है और किसी को पता भी नही चलेगा.

मैं : लेकिन उस दिन तो तुम कह रही थी कि वो जो तुमने उस दिन कोठरी मे मेरे साथ किया था जेल से आने के बाद अब्दुल ने तुम्हारे साथ एक बार भी नही किया .तो फिर उसको पता नही चल जाएगा?

सलमा : कुछ पता नही चलेगा उस शराबी को. अपनी होश नही होती वो मेरी परवाह कहाँ से करेगा .कुछ होगा तो कह दूँगी कि अब्दुल ने नशे मे मेरे साथ किया था वैसे भी नशे मे उसको कौनसा होश होता है....अब अगर तुमको तुम्हारे सारे सवालो का जवाब मिल गया हो तो मेहरबानी करके बेड पर लेट जाओ कब से जिन्न की तरह मेरे सिर पर बैठे हुए हो. (हँसती हुई)

मैं : वो तो ठीक है ! लेकिन तुम जानती हो जब मुझे सब कुछ याद आ जाएगा तो हो सकता है मेरे घरवाले मुझे यहाँ से ले जाए.तब तुम क्या करोगी?

सलमा : कोई बात नही मैने तुम्हे ये तो नही कहा कि मुझसे शादी भी करो. तुम जितना वक़्त भी मेरे साथ हो मैं बस उस हर पल को जी भरके जीना चाहती हूँ तुम्हारे साथ और फिर तुम चले जाओगे तो क्या हुआ तुम्हारी निशानी तो हमेशा मेरे पास रहेगी ना. जिसमे मैं हमेशा तुम्हारा अक्स देखूँगी.

मैं : जैसी तुम्हारी मर्ज़ी.

सलमा : चलो अब बाते बंद करो और लेट जाओ मेरे साथ.

मैं : यहाँ क्यो मैं तो बाहर बाबा के पास सोता हूँ ना.

सलमा : आज एक दिन मेरे पास सो जाओगे तो तूफान नही आ जाएगा. चलो चुप करके लेट जाओ नही तो मैं तुमसे बात नही करूँगी.

मैं : अच्छा ठीक है लेट रहा हूँ.

सलमा : इसलिए तुम मुझे बहुत प्यारे लगते हो. मेरी हर बात इतनी आसानी से मान जाते हो (मुस्कुराते हुए).

मेरे बेड पर लेट ते ही सलमा ने मेरा बायां हाथ अपने हाथो मे लिया और अपने गाल सहलाने लगी और मैं करवट लेके उसकी तरफ मुँह करके लेट गया. ये देखकर उसने भी मेरी तरफ करवट कर ली. अब हम दोनो के चेहरे एक दूसरे के पास थे यहाँ तक कि हम एक दूसरे की साँस की गर्माहट अपने चेहरे पर महसूस कर रहे थे.

सलमा : मैं तुम्हारे उपर आके लेट जाऊ.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म...

सलमा : ऐसे नही तुम खुद मुझे अपने उपर लो.

मैं : ठीक है (मैने सलमा को कमर से पकड़कर अपने उपर लिटा लिया)

सलमा : चलो अब अपनी आँखें बंद करो.

मैं : कर ली ! अब..

सलमा : अब कुछ नही बस मुँह बंद करो नही तो मुझे करना पड़ेगा.

मैं : वो कैसे (मुस्कुराते हुए)

सलमा : बोल कर बताऊ या करके बताऊ?

मैं : जो तुमको अच्छा लगे.

सलमा : पहले अपनी आँखें बंद करो मुझे शरम आती है.

मैं : तुमको शरम भी आती है (हँसते हुए)

सलमा :. अम्म्मीमम.... आँखें बंद करो ना सुजल

मैं : अच्छा ये लो अब......

सलमा : हम्म तो अब पुछो क्या पूछ रहे थे

मैं : मैं पुछ रहा था कीईईई..... (अचानक सलमा ने अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिए)

सलमा अपने रसभरे और नाज़ुक होंठ कुछ देर ऐसे ही मेरे होंठ के साथ जोड़ कर मेरे उपर पड़ी रही. फिर कुछ देर बाद उसने मेरे चेहरे को अपने हाथो से पकड़ लिया और मेरी आँखो पर, माथे पर, नाक पर, गालो पर हल्के-हल्के चूमने लगी. कुछ देर वो मेरे चेहरे को ऐसे ही धीरे-धीरे चूमती रही. फिर वो रुक गई और मेरी आँखो पर हाथ रख लिया. मैं कुछ देर ऐसे ही उसके अगले कदम का इंतज़ार करता रहा तभी मुझे मेरे होंठों पर कुछ गीलापन महसूस हुआ जैसे मेरे होंठों पर कुछ रेंग रहा हो. फिर सलमा ने अपना हाथ भी मेरी आँखो से उठा दिया ये सलमा की ज़ुबान थी जो वो मेरे होंठों पर फेर रही थी और मेरे होंठों को अपनी रसभरी ज़ुबान से गीला कर रही थी. अब मज़े से मेरी खुद ही आँखें बंद हो गई और धीरे-धीरे मेरा मुँह खुलने लगा. मेरे मुँह ने सलमा की ज़ुबान को खुद ही अंदर आने का रास्ता दे दिया और अब मैं धीरे-धीरे सलमा की ज़ुबान को चूस रहा था और अपने दोनो हाथ सलमा की कमर पर उपर नीचे फेर रहा था. ये मज़ा मेरे लिए एक दम अनोखा था. इससे मेरी साँसे भी तेज़ होने लगी ओर मेरे पाजामे मे भी हरकत शुरू हो गई. मेरा सोया हुआ लिंग अब जागने लगा था. मैने अपने दोनो हाथो सलमा को ज़ोर से अपने गले से लगा लिया ओर नीचे अपनी दोनो टांगे फैला कर सलमा की टाँगो को अपनी टाँगो मे जकड़ लिया.

अब हम दोनो ही मज़े की वादियो मे खो चुके थे.हम दोनो बारी-बारी एक दूसरे के होंठ चूस रहे थे ओर काट रहे थे. पूरे कमरे मे हमारे चूमने से पुच...पुच... जैसी आवाज़े आ रही थी. इधर सलमा का बदन भी गरम होने लगा था. उसने सलवार के उपर से अपनी योनी को मेरे लिंग पर रगड़ना शुरू कर दिया था. जिससे मेरा लिंग अब पूरी तरह से जाग चुका था और अपने असल रूप मे आ चुका था. सलमा बार-बार मेरे लिंग को अपनी टाँगो के बीच मे दबा रही थी. वैसे तो ये अहसास मुझे पहले भी महसूस हो चुका था लेकिन जाने आज क्या खास था कि मुझे उस दिन से भी ज़्यादा मज़ा आ रहा था. अचानक सलमा ने मेरे चेहरा पकड़ा और मेरे उपर उठकर मेरे लिंग पर बैठ गई साथ ही मुझे भी बिठा लिया. अब हम दोनो बैठ कर एक दूसरे के होंठ चूस रहे थे सलमा ने अपना मुँह मेरे होंठों से हटाया और मेरे मुँह को पकड़कर अपने गले पर लगा दिया मैने उसके इशारे को समझकर उसके गले पर चूसना और काटना शुरू कर दिया. इधर वो मेरी कमीज़ के बटन जल्दी-जल्दी खोल रही थी.

सलमा : अपने हाथ उपर करो मैं तुम्हे बिना कपड़ो के गले से लगाना चाहती हूँ.

मैने भी उसकी मदद के लिए अपनी दोनो बाहे उपर हवा मे उठा दी ताकि उसको आसानी हो जाए और उसने मेरी कमीज़ उतार दी. अब मेरा उपर का बदन एक दम नंगा हो चुका था. कमीज़ के उतरते ही वो किसी जंगली बिल्ली की तरह मेरे सीने पर टूट पड़ी ओर मेरी छाती पर कभी चूम रही थी कभी काट रही थी और कभी काटी हुई जगह को चूस रही थी. साथ मे नीचे से वो बार-बार मेरे लिंग पर अपनी योनी कभी दबा रही थी. तो कभी रगड़ रही थी जिससे उसकी सलवार एक दम गीली हो गई थी.उसका गीलापन मुझे भी मेरे लिंग पर महसूस हो रहा था.

अब उसने मेरे सीने पर हाथ रखकर पिच्चे को दबाया ओर अब मैं फिर से बेड पर लेट चुका था ओर वो मेरे उपर आके फिर से लेट गई .लेकिन इस बार वो मेरी पूरी छाती को जगह-जगह चूस रही थी और चूम रही थी. मुझे उसकी इस हरकत से बहुत मज़ा मिल रहा था. अब मुझसे बर्दाश्त करना बहुत मुश्किल हो रहा था. मैने उससे गर्दन से पकड़कर गला दबाने जैसे अंदाज़ मे उपर की तरफ लाया और उसके होंठ जबरदस्त तरीके से चूस लिए जैसे उसके मुँह से अलग करना चाहता हूँ. अब मैने उसको बालो से पकड़ा और बेड पर पटक दिया और खुद उसके उपर आ गया. मैं उसकी आँखो मे देख रहा था कि क्या उसको मेरी ये हरकत बुरी लगी. लेकिन उसने खुद ही एक प्यारी सी मुस्कुराहट के साथ मेरे सवाल का जवाब दे दिया. मैं भी अब उसकी गर्दन को चूस और काट रहा था और साथ मे उसके बड़े-बड़े स्तन दोनो हाथो से दबा रहा था.....वो बस मज़े से सस्सिईइ......ससिईईईईईई....... कर रही थी और मेरे बालो मे हाथ फेर रही थी अचानक मैने उसकी कमीज़ को दाएँ कंधे की तरफ से ज़ोर से खींच दिया जिससे उसका बयाँ कंधा एक दम नंगा होके मेरी आँखो के सामने आ गया मैने उसके गले से होता हुआ कंधे पर पहले चूमना फिर काटना शुरू कर दिया. वो बस मज़े से बार-बार सीईईई....सीईइ...और आअहह करके और करूऊ......और करूऊ ही कहे जा रही थी.

सलमा : जाआआँ कमीज़्ज़्ज़्ज़ उतार दूओ नाआअ मेरिइई भीईीईईई........

उसकी ये शब्द ऐसे थे जैसे वो बहुत ताक़त लगाके इतना कह पाई हो... मैने उसको फिर से बिठाया और उसने अपनी दोनो टांगे मेरी टाँगो की दोनो तरफ करके बैठ गई. ऐसे ही मैने उसकी कमीज़ भी उतार दी.अब वो सिर्फ़ ब्रा ओर सलवार मे थी. उसकी कमीज़ के उतरते ही उसने मुझे गले से लगा लिया और एक आअहह की आवाज़ उसके मुँह से निकली. उसने जैसे ही मुझे गले लगाया मेरे भी हाथ उसकी पीठ पर चले गये मैं अब उसको अपने गले से लगाए उसकी पीठ पर हाथ फेर रहा था और मेरे हाथ बार-बार उसकी ब्रा के स्टॅप से

टकरा रहे थे. इसलिए मैने उसकी ब्रा के स्टॅप खोल दिए अब उसकी ब्रा सिर्फ़ कंधे के सहारे ही उसके शरीर से जुड़ी हुई थी और मैं उसकी नंगी पीठ पर हाथ फेर रहा था.नीचे से वो बार-बार मेरे लिंग पर अपनी योनी रगड़ रही थी. अचानक उसने धीरे से मेरे कान मे कहा....

सलमा : सारे कपड़े उतार दे .मुझसे बर्दाश्त नही हो रहा अब.

मैं : हमम्म

हम दोनो एक दूसरे से अलग हुए और जल्दी जल्दी अपने सारे कपड़े उतारकर बेड से नीचे ज़मीन पर फेंक दिया. उसने मुझसे पहले कपड़े उतार दिए थे इसलिए वो बस मुझे नंगा होता देख रही थी और मुस्कुरा रही थी. जैसे ही मैने अपना आखरी कपड़ा यानी अंडरवेर उतारा वो मेरे उपर टूट पड़ी और मुझे बेड पर गिरा लिया.अब वो फिर से मेरे उपर थी और मेरे पूरे बदन पर हाथ फेर रही थी और मेरे होंठों को चूम रही थी और चूस रही थी. साथ ही बार-बार अपने बड़े-बड़े स्तन मेरे मुँह पर दबा रही थी. कुछ देर बाद उसने मुझे अपने स्तन चूसने को कहा और मैं किसी छोटे बच्चे की तरह उसके स्तनाग्र को चूसे और काटने लगा.वो मेरे उपर पड़ी बारी-बारी अपने दोनो स्तन चुसवा रही थी और मेरे सिर पर हाथ फेर रही थी. साथ मे सीईइ....सीईइ...कर रही थी मेरा काटना शायद उसको चूसने से भी ज़्यादा पसंद था इसलिए जब भी मैं उसके स्तनाग्र पर काट ता तो वो और ज़ोर से....और ज़ोर से...कहती....ऐसे ही काफ़ी देर तक मैं उसके स्तनाग्र को चूस्ता रहा उसके स्तनाग्र को मैने चूस-चूस कर लाल कर दिया था और उसके स्तनों के जगह-जगह पर मेरे काटने से गोल चक्रियो के निशान से पड़ गये थे जिसको वो देखकर बार-बार खुश हो रही थी और अपनी उंगली के इशारे से मुझे दिखाकर मुस्कुरा रही थी....ऐसे ही काफ़ी देर हम लोग लगे रहे फिर अचानक वो मुझे बोली....

सलमा : एक नया मज़ा दुन?

मैं : क्या मज़ा

सलमा : दिखाती हूँ अभी

मैं उसकी बात पर सिर हिला कर उसके अगले कदम का इंतज़ार करने लगा कि वो क्या नया करती है. वो फिर से मेरे सीने पर चूमने लगी लेकिन इस बार वो उपर से लगातार नीचे की तरफ जा रही थी. अचानक उसका हाथ मेरे लिंग पर पड़ा तो उसने मेरे लिंग को झट से पकड़ लिया और हैरत से मेरी ओर देखकर बोली......

सलमा : ये इतना बड़ा कैसे हो गया उस दिन भी इतना ही था क्या जब पहली बार किया था तो....?

मैं : पता नही शायद इतना ही होगा.

सलमा : हमम्म्म..... अब पता चला उस दिन इतना दर्द क्यो हुआ था मुझे.

मैं : किस दिन दर्द हुआ था?

सलमा : उस दिन कोठरी मे जब हमने किया तब.....जानते हो अगला पूरा दिन मैं ठीक से चल नही पाई थी. जास्मिन ने मुझसे पूछा भी था कि भाभी आज लंगड़ा के क्यो चल रही हो. तो मैने उससे झूठ बोल दिया कि पैर मे मोच आ गई है.

मैं : (हँसते हुए) तो मैने कहा था रात को मेरे पास आने को?

सलमा : नही आना चाहिए था (मुस्कुराते हुए)

मैं भी उसकी इस बात पर मुस्कुरा दिया और वो वापिस मेरे पेट पर चूमने लगी ओर मेरे लिंग को पकड़ कर उपर-नीचे करने लगी.मुझे उसका ऐसा करने से एक अलग ही किस्म का मज़ा मिल रहा था. तभी मेरे लिंग पर मुझे कुछ गीलापन महसूस हुआ और मेरे मुँह से एक जोरदार आआहह..... निकल गई. ये सुनकर सलमा एक दम से रुक गई और मेरा लिंग अपने मुँह से निकालकर और अपने मुँह पर उंगली रखकर ज़ोर से मुझे सस्शह..... किया और बोला कि,आवाज़ मत करो कोई जाग जाएगा और फिर से वो मेरे लिंग के उपर के हिस्से को ज़ुबान से चाटने लगी. धीरे-धीरे उसने पूरा लिंग अपने मुँह मे ले लिया ओर चूसना शुरू कर दिया ये मज़ा मेरे लिए एक दम नया था मैं मज़े की वादियो मे गोते लगा रहा था.

कुछ देर मेरा लिंग चूसने के बाद वो फिर से मेरे उपर आ गई और मेरे होंठ चूसने लगी. लेकिन अब उसने मुझे अपने उपर आने को कहा.

मैं : सलमा मैं भी ऐसे ही करूँ जैसे तुमने मेरे साथ किया?

सलमा : आज नही कल कर लेना. अभी बस डाल दो अब मुझसे और बर्दाश्त नही हो रहा है.

मैं : ठीक है

इसके साथ ही उसने आपनी टांगे चौड़ी कर ली और मुझे बीच मे आने का इशारा किया. मैने जैसे ही अपना लिंग उसकी योनी पर रखा उसने एक दम से मुझे रुकने को कहा.

मैं : क्या हुआ

सलमा : आराम से डालना उस दिन जैसे मत करना नही तो मेरी चीख निकल जाएगी.

मैं : तुम खुद ही डाल लो ना फिर अपने हिसाब से.

सलमा : ठीक है फिर मैं उपर आती हूँ और खबरदार जो नीचे से झटका मारा तो(मुस्कुराते हुए).

मैं : अच्छा...(हाँ मे सिर हिलाकर मुस्कुराते हुए)

अब मैं नीचे लेट गया था और सलमा फिर से मेरे उपर आ गई थी.उसने एक बार फिर से मेरे लिंग को थोड़ा सा चूस कर गीला किया और अब मेरे लिंग के टोपी पर काफ़ी सारा थूक जमा हो गया. कुछ थूक उसने खुद ही अपनी योनी मे लगाया और लिंग को अपने हाथो से पकड़ कर अपनी योनी पर सेट किया और साँस अंदर खींच कर धीरे-धीरे लिंग पर बैठने लगी.अभी आधा लिंग ही अंदर गया था कि उसके चेहरे से पता चल रहा था कि उसको

लिंग पूरा अंदर लेने मे अभी भी परेशानी हो रही है. इसलिए जितना लिंग उसके अंदर गया था उतने से ही वो उपर-नीचे होने लगी अब हर झटके के साथ वो थोड़ा ज़्यादा लिंग अंदर ले रही थी. कुछ ही देर मे उसने पूरा लिंग अपने अंदर उतार लिया और उपर नीचे होने लगी. साथ ही उसने मेरे हाथ पकड़कर अपने स्तनों पर रख दिए और मैं उसकी स्तनाग्र को अपनी उंगली और अंगूठे से मरोड़ने लगा. अब उसको भी मज़ा आने लगा था इसलिए वो अपनी नितंब को धीरे-धीरे उपर-नीचे करती हुई वापिस मेरे सीने पर लेट गई और मेरे सीने पर चूमने लगी.

मैं : अब मैं उपर आऊ?

सलमा : हमम्म ! आ जाओ. लेकिन इसको बाहर मत निकलना बहुत मज़ा आ रहा है.

मैं : ठीक है

मैने ऐसे ही बिना लिंग बाहर निकाले उसको कमर से पकड़ कर घुमा दिया. अब वो नीचे थी और मैं उसके उपर था उसने अपनी दोनो टांगे हवा मे उठाके मेरी कमर पर लपेट दी थी और मैने धीरे-धीरे झटके लगाने शुरू कर दिए उससे शायद अभी भी दर्द हो रहा था. इसलिए उसने मुझे गले से लगाए मेरे होंठ चूसने लगी मैं नीचे से झटके लगा रहा था. अब मैने धीरे-धीरे रफ़्तार बढ़ानी शुरू करदी जिससे उसकी योनी भी पानी छोड़ने लगी और लिंग अंदर जाने मे और आसानी हो गई धीरे-धीरे अब उसको भी मज़ा आने लगा था इसलिए उसने आँखें बंद किए ही मुझे कहा कि थोड़ा तेज़ करो. मैने अब अपनी रफ़्तार थोड़ी बढ़ा दी थी जिससे पूरे कमरे मे उसकी आहह....आअहह.... और फ़च....फ़च....की आवाज़े आ रही थी जो शायद कमरे के बाहर तक जा रही होंगी. आज सलमा और मुझे पहली बार से भी ज़्यादा मज़ा आ रहा था शायद.इसलिए हम दोनो ही अपने होश मे नही थे.ना ही बाहर आवाज़ जाने की परवाह थी. हम दोनो ही बस अपने मज़े मे डूबे थे. कुछ ही देर मे वो फारिग होने करीब आ गई और उसने मुझे ज़ोर से गले से लगा लिया और अपनी नितंब को उपर उठाना शुरू कर दिया...

सलमा : अब रुकना मत ज़ोर से करो तेज़्ज़्ज़.....और तेज़्ज़्ज़्ज़....मैं अब करीब ही हूँ.....

कुछ ही जोरदार झटको के साथ वो अपनी मंज़िल पर आ गई उसका पूरा बदन अकड़ गया और उसने अपनी नितंब हवा मे उठा ली साथ ही उसने मुझे भी उपर को कर दिया कुछ

सेकेंड्स वो ऐसे ही अकड़ी रही और फिर एक दम से बेड पर गिर गई और लंबे-लंबे साँस लेने लगी....

सलमा : आपका हुआ नही अभी तक?

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए)

सलमा : थोड़ी देर धीरे झटके लगाओ फिर तेज़ कर देना

इसके साथ ही मैं फिर से झटके लगाने लगा और उसकी योनी जो कुछ मिनिट पहले ठंडी हो गई थी वो फिर से गरम होने लगी.अब उसने भी मेरा फिर से साथ देना शुरू कर दिया. अब मैने उसकी दोनो टाँग हवा मे उठाई और अपने कंधे पर रख ली और ऐसे ही तेज़-तेज़ झटके मारने लगा. चन्द जोरदार झटको के बाद मैं भी मंज़िल पर पहुँच ही गया. मेरे लिंग मे एक अजीब सा उबाल आने लगा और इसी के साथ मेरे लिंग ने सलमा की योनी के अंदर एक झटका खाया जिसको सलमा की योनी महसूस करते ही फिर से एक बार और फारिग हो गई जिससे सलमा की योनी अजीब सी सिकुड़न सी आने लगी जैसे वो मेरे लिंग को अंदर चूस रही हो. वो अहसास ने मुझे इंतेहा मज़ा दिया और फिर मेरे लिंग ने लगतार ५-६ झटके खाए और अपनी सारी पानी सलमा की योनी मे उडेल दी.

हम दोनो की साँस ही फूली हुई थी और हमारा बदन पसीने से नहाया हुआ था लेकिन दोनो को इस वक़्त बहुत सुकून था और शरीर एक दम हल्का महसूस हो रहा था.मैं सलमा के मम्मो के बीच अपना सिर रखे लेटा हुआ था और अपनी सांसो को ठीक करने की कोशिश कर रहा था. सलमा का हाल भी मेरे जैसा ही था वो भी मुझे गले से लगाए मेरे बालो मे अपनी उंगलियो की कंघी बनाए हाथ फेर रही थी.उसके चेहरे पर सुकून था और वो बार-बार मेरे सिर को चूम रही थी. साथ मे मेरी पीठ पर हाथ फेर रही थी और मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी. मैने भी उसके चेहरे की तरफ देखा और उसके होंठों को हल्के से चूम लिया ऐसे ही हम दोनो कुछ देर एक दूसरे की आँखो मे देखते रहे और फिर मैं उसके उपर से उठ गया और कपड़े पहन ने लगा. अभी मैं कपड़े ही पहन रहा था कि अचानक किसी के दरवाज़ा खट-खटाने की आवाज़ आई हम दोनो ही घबरा गये थे कि इस वक़्त कौन आया होगा. मैने और सलमा ने जल्दी से अपने-अपने कपड़े पहने और सलमा ने मुझे बेड के नीचे

घुसने को कहा. मैं बिजली की फुर्ती के साथ बेड के नीचे घुस गया. मेरे नीचे घुसते ही सलमा ने दरवाज़ा खोला.........

मुझे नीचे से कोई लड़की के पैर ही नज़र आए शायद ये जास्मिन थी जो जल्दी उठ गई थी. मैं नीचे से ही उनकी बाते सुनने लगा.

सलमा : क्या बात है जास्मिन ख़ैरियत है इतनी रात को.

जास्मिन : भाभी रात कहाँ बाहर देखो दिन निकलने वाला है.

सलमा : अच्छा मैं तो सो रही थी .आज नींद ही नही खुली.

जास्मिन : कोई बात नही मैं बस आपको उठाने ही आई थी.

सलमा : तुम चलो मैं आती हूँ.

जास्मिन : ठीक है तब तक मैं सुजल को भी उठा देती हूँ आज पता नही वो भी नही उठा अभी तक.

सलमा : (घबरा कर) सुजल को....... तुम रहने दो उसको मैं उठा दूँगी. तुम जाके नहा लो फिर तुम्हारे बाद मैं भी नहा लूँगी!

जास्मिन : अच्छा भाभी....(अंदर कमरे मे झाँकते हुए) अर्रे भाभी रात को चद्दर के साथ कुश्ती कर रही थी क्या (मुस्कुराते हुए)

सलमा : नही तो क्या हुआ.

जास्मिन : आपकी चद्दर कैसे बिखरी पड़ी है.

सलमा : (ज़मीन पर देखते हुए) वो मैं सो रही थी हो गई होगी.

जास्मिन : हाँ भाई अकेले बेड पर आप ही शहंशाहों की तरह सोती हो कैसे भी सो जाओ आपका अपना बेड है (मुस्कुराते हुए)

सलमा : अच्छा....अच्छा अब ज़्यादा बाते ना बना और जाके नहा ले.

जास्मिन : ठीक है मेरी प्यारी भाभी (सलमा के गाल पकड़ते हुए)

इसके साथ ही जास्मिन नहाने चली गई और सलमा कमरा बंद करके जल्दी से मेरे पास आई....

सलमा : सुजल जल्दी बाहर निकलो

मैं : क्या हुआ जास्मिन थी ना

सलमा : हम को पता ही नही चला हम रात भर लगे रहे (मुस्कुराते हुए)

मैं : हाँ

सलमा : चलो अब तुम भी अपने कमरे मे जाओ नही तो किसी को शक़ हो जाएगा और सुनो जाके कुछ देर बेड पर लेट जाना ताकि थोड़ी देर बाद आके मैं तुमको उठा सकूँ.

मैं : अच्छा जाता हूँ

सलमा : सुनो सुजल रात को कैसा लगा मेरे साथ (मुस्कुराते हुए)

मैं (पलट ते हुए) म्म्मरममम.... बोल कर बताऊ या करके (हँसते हुए)

सलमा : अच्छा बदमाश मेरे अल्फ़ाज़ मुझे ही सुना रहे हो...चलो करके ही दिखा दो (सलमा ने अपना मुँह आगे कर लिया और आँखें बंद)

मैं : चलो फिर तैयार हो जाओ और चीखना मत.

सलमा : हमम्म्म (आँखें बंद किए हुए ही)

मैं : (मैने उसके दाएँ स्तन पर काट लिया)

सलमा : आईईईईईई.....बदमाश काटा क्यो....मुझे लगा था मेरे होंठों को चूमोगे तुम (अपने स्तन को मसलती हुई)

मैं : मेरी मर्ज़ी जैसे चाहूं वैसे बताऊ (मुस्कुराते हुए)

सलमा : रात को आना बच्चू तब बताउंगी

मैं : मैं रात को आऊंगा ही नही (हँसते हुए)

सलमा : हाए सच मे नही आओगे (रोने जैसी शक़ल बनाके)

मैं : अच्छा अब रोने मत लग जाना आ जाऊंगा बस..... मैं तो ऐसे ही कह रहा था.

सलमा : नही आए तो देख लेना फिर......(अपने दोनो हाथ कमर पर रखकर)

मैं : अच्छा-अच्छा अब जाने दोगि तो रात को आऊंगा ना.

सलमा : लो जी मैं तो भूल ही गई चलो जल्दी जाओ.

मैं धीरे से सलमा के कमरे से निकल कर जल्दी से अपने बिस्तर पर आके लेट गया और रात भर जागने की वजह से मुझे थकावट सी हो रही थी इसलिए मुझे पता ही नही चला कब मेरी आँख लग गई और मैं सो गया.

१०

मैं अभी सोया ही था कि कुछ ही देर मे मुझे कोई कंधे पर हाथ रखकर ज़ोर-ज़ोर से हिलाने लगा जिससे मेरी आँख खुल गई. मैं हड़बड़ा कर उठा मेरी आँखो मे अभी तक रात की नींद थी जिससे मेरी आँखें लाल हो गई और मेरी आँखें ठीक से खुल भी नही रही थी. मुझे नज़र नही आ रहा था कि मुझे कौन उठा रहा है इसलिए मैने अपने दोनो हाथो से अपनी आँखो को मसला तो मुझे कुछ साफ नज़र आने लगा ये सलमा थी जो मुझे उठा रही थी. जिसको देखते ही मुस्कान अपने आप मेरे चेहरे पर आ गई.

सलमा : सुजल क्या हुआ सो गये थे क्या?

मैं : हाँ ज़रा आँख लग गई थी.

सलमा : अगर रात की थकान है तो तुम आराम कर लो आज मैं ओर जास्मिन ही खेत चली जाएँगी.

मैं : अकेले जाओगी?

सलमा : तुम्हारे आने से पहले भी तो अकेली ही जाती थी ना. कोई बात नही हम चली जाएँगी. तुम आराम से सो जाओ वैसे भी मेरे शेर ने रात को बहुत मेहनत की है (आँख मारकर मुस्कुराते हुए)

मैं : नही मैं ठीक हूँ मैं भी चलूँगा तुम दोनो के साथ.

सलमा : रहने दो ना जान नींद पूरी नही होगी तो बीमार पड़ जाओगे.

मैं : तुम्हारी भी नींद पूरी नही हुई बीमार तो तुम भी पड़ सकती हो ना....चलो कोई बात नही दोनो साथ मे बीमार पड़ेंगे फिर तो और भी अच्छा होगा और ये जान क्या नया नाम रख दिया है मेरा.

सलमा : आज से मैं तुमको अकेले में हमेशा जान ही बुलाऊंगी. क्योंकि तुम मेरी जान हो इसलिए (मुस्कुराते हुए) अच्छा बाबा कहाँ है?

मैं : पता नही जब मैं कमरे मे आया था तो बाबा यहाँ नही थे.

सलमा : अच्छा ज़रूर बाहर घूमने गये होंगे इनको कितनी बार मना किया है कि अकेले बाहर ना जाया करो लेकिन सुनते ही नही है किसीकि. (सिर को झाड़ते हुए)

मैं : कोई बात नही जब आएँगे तब मैं समझा दूँगा फिर तो ठीक है (मुस्कुराते हुए)

सलमा : हाँ ये ठीक है तुम्हारी बात तो मान ही जाते हैं हमारी सुनते भी नही.....अच्छा एक मिनिट रूको मैं अभी आती हूँ.

मैं : अब तुम कहाँ जा रही हो मुझे नहाना भी तो है.

सलमा : बस एक मिनिट अभी आ रही हूँ जाना मत ठीक है

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) जो हुकुम सरकार का....

सलमा बाहर चली गई और मैं बैठा उसको बाहर जाते देखता रहा और अपनी दोनो बाहें उपर हवा मे उठाए अंगड़ाई लेने लगा. अभी एक मिनिट भी नही हुआ था कि सलमा वापिस आ गई और कमरे मे घुसते हुए उसके चेहरे पर उसकी प्यारी सी सदा-बाहर मुस्कान थी....

सलमा : उठो और इधर आओ...

मैं : आता हूँ रूको (मैं उठकर चलता हुआ उसके सामने जाके खड़ा हो गया)

सलमा : (पिछे मुड़कर एक बार फिर देखते हुए) यहाँ नही दरवाज़े के पिछे.

मैं : ये लो जी और कोई हुकुम सरकार.

सलमा : अच्छा सुनो आज मैं जास्मिन और बाबा को अपने माँ बनने के बारे मे बताना चाहती हूँ.तो तुम उनके सामने ऐसे ही बर्ताव करना जैसे तुम्हे भी उनके सामने ही पता लगा हो ज़्यादा खुश मत होने लग जाना कही उनको शक़ ही ना हो जाए.

मैं : ठीक है फिर मैं भी उनके साथ ही मुबारकबाद दूँगा (आँख मारते हुए)

सलमा : हमम्म ये ठीक है.

मैं : और कोई हुकुम सरकार.

सलमा : कुछ खास नही.... अब बस मुझे थोड़ा सा प्यार करो सुबह जो रह गया था.

मैं : सारी रात तो किया था दिल नही भरा क्या.

सलमा : उउउहहुउऊ वो वाला नही बुधु... रूको हर काम मुझे ही बताना पड़ता है (मुँह चिड़ाकर)

मैं : (कुछ ना समझने जैसा मुँह बनाके सलमा को देखते हुए)

सलमा : दरवाज़े के पिछे आओ बाहर कोई आ गया तो देख सकता है हम को इसलिए.

मैं : हमम्म्म आ गया अब.....

सलमा : थोड़ा नीचे तो झुको लंबू....(हँसते हुए)

मैं : (अपने आपको थोड़ा नीचे झुकाते हुए) अब ठीक है

सलमा : हमम्म्म अब एक दम ठीक है.

सलमा ने अपनी दोनो बाहें मेरे गले मे हार की तरफ डाल ली और अपनी एडियाँ थोड़ी सी उपर को उठा ली जिससे उसका और मेरा मुँह एक दम आमने सामने आ जाए. अब उसका बदन मेरी छाती से चिपक सा गया था और उसके बड़े-बड़े स्तन मेरी छाती के साथ लगे हुए

थे ओर दब से गये थे फिर उसने अपनी आँखें बंद की और मेरे होंठों पर अपने रसीले होंठ रख दिए.मैने भी अपनी दोनो बाहें उसकी कमर मे डाल ली और उसको अपने साथ चिपका लिया जैसे हम दो जिस्म नही बल्कि एक ही जिस्म हो कुछ देर हम ऐसे ही होंठों से होंठ जोड़े खड़े रहे फिर मुझसे उसके होंठों की जलन सहन करना बर्दाश्त के बाहर हो गया इसलिए मैने ही धीरे-धीरे उसके रसभरे होंठों को चूसना शुरू कर दिया .सलमा ने भी मेरा पूरा साथ दिया हम दोनो फिर से रात की तरह मज़े की वादियो मे पहुँच रहे थे और हम दोनो पर खुमारी छाने लगी थी.

अभी हम को कुछ ही पल हुए थे कि बाहर जास्मिन की आवाज़ आई जो कि सलमा को पुकार रही थी. इसलिए हम को ना चाहते हुए भी एक दूसरे से अलग होना पड़ा. मैं जल्दी से सलमा से दूर होके कुर्सी के पास जाके बैठ हो गया और सलमा मेरे बिस्तर की चद्दर तह करने लगी.

जास्मिन : भाभी आप यहाँ हो मैं आपको सारे घर मे ढूँढ रही हूँ.

सलमा : क्या हुआ मैं यहाँ सुजल को उठाने आई थी.

जास्मिन : हुआ तो कुछ नही पर मैने बस यही पूछना था कि आप दोनो अभी तक यही हो आज खेत मे नही जाना क्या.

सलमा : हाँ हाँ जाना है ना... मैं तो बस सुजल को उठाने के लिए ही आई थी बस जा रही हूँ.

जास्मिन : लाओ ये सब मैं कर लूँगी आप बस जाके तैयार हो जाओ फिर सुजल को भी तो नहाना होगा ना.

मैं : कोई बात नही ! पहले सलमा जी तैयार हो जाए मैं बाद मे तैयार हो जाऊंगा.

सलमा मुझे एक मुस्कान के साथ देखती हुई एक आँख मारकर बाहर को चली गई और मैं उसको देखता रहा. तभी मुझे ख़याल आया कि बाबा कहाँ है इसलिए मैने जास्मिन से ही पूछना ठीक समझा...

मैं : जास्मिन ! बाबा कहाँ है ?सुबह से दिखाई नही दिए.

जास्मिन : पता नही रात के बाद तो मैने भी बाबा को नही देखा.

मैं : (चिंता से) वो ऐसे घूमने चले जाते है या आज ही गये हैं.

जास्मिन : वैसे तो वो पहले रोज़ सैर करने जाया करते थे सुबह लेकिन कुछ वक़्त से उनकी तबीयत ठीक नही रहती थी.तो हमने उनको मना कर दिया था बाहर घूमने जाने से.

मैं : अच्छा !

इतना कहकर जास्मिन भी अपने बाकी काम निपटाने मे लग गई और मैं बाहर बैठक मे बैठा बाबा का इंतज़ार करने लगा. कुछ ही देर मे मुझे दरवाजे से बाबा आते हुए दिखाई दिए तो मेरा चेहरा भी खुशी से खिल उठा. बाबा हाथ मे एक छड़ी लिए हुए मुस्कुराते हुए मेरे सामने आके खड़े हो गये.

मैं : बाबा आज सुबह-सुबह किसकी पिटाई करने गये थे (मुस्कुराते हुए)

बाबा : (अपनी छड़ी की तरफ देखते हुए और ज़ोर से हँसते हुए) अर्रे पिटाई नही बेटा ! मैं तो बस अपनी नीम की दान्तुन ढूँढने गया था. इस उम्र मे किसकी पिटाई करूँगा.

मैं : बाबा मुझे कह देते आपको जाने की क्या ज़रूरत थी.

बाबा : बेटा अब इतना भी नकारा ना बनाओ मुझे कि कोई भी काम ना करने दो.... कुछ काम तो मेरे लिए भी छोड़ दिया करो इससे मेरा भी दिल लगा रहता है ! ही तो घर मे अकेला बैठा तो दिल ही नही लगता.

मैं : जैसा आप बेहतर समझे बाबा. (मुस्कुराते हुए)

बाबा : अच्छा बेटा तुम सुबह-सुबह कहाँ गये थे. जब मैं उठा तो तुम बिस्तर पर नही थे.

मैं : (सोचते हुए) कही नही बाबा रात को ज़रा खुली हवा मे घूमने का दिल था तो कोठारी मे खड़ा था.(मैं जानता था बाबा सीढ़िया नही चढ़ सकते इसलिए उन्होने कोठरी मे नही देखा होगा इसलिए ये झूठ बोला)

बाबा : अच्छा तभी मैं सोच रहा था कि सुजल कहाँ चला गया इतनी रात को.

मैं : (मुस्कुराते हुए) ठीक है बाबा हम शाम को बातें करेंगे.अभी खेत जाने के लिए देर हो रही है.

बाबा : अच्छा बेटा.

कुछ ही देर मे सलमा भी तैयार होके आ गई और मेरे तैयार होने के बाद हम खेत चले गये. दुपेहर तक हम तीनो अपने-अपने कामो मे व्यस्त रहे तभी एक आदमी हमारे खेतो मे आता हुआ नज़र आया. जिससे सलमा ने सबसे पहले बात की और फिर वो दोनो मेरी तरफ आने लगे.

आदमी : सलाम जनाब ! आपको छोटी मालकिन ने याद किया है.

मैं : सलाम ! आप कौन हो और कौनसी छोटी मालकिन.

आदमी : जी मेरा नाम खुदा बक्ष है मुझे सरपंच जी की बेटी ने भेजा है वो आपसे मिलना चाहती है

.

मैं : अच्छा उनको बोलो थोड़ी देर मे आता हूँ

वो आदमी इतना सुनकर वापिस चला गया और सलमा मुझे गुस्से से खा जाने वाली नज़रों से देखने लगी. मुझे समझ नही आ रहा था कि सलमा मुझे ऐसे गुस्से से क्यो देख रही है तभी वो वापिस पलट गई और वापिस अपने काम वाली जगह जाने लगी.

मैं : सलमा क्या हुआ ऐसे बिना कुछ बोले कहाँ जा रही हो बात तो सुनो.

सलमा : (गुस्से मे) क्या है. जाओ अपनी छोटी मालकिन के पास वो तुम्हारा इंतज़ार कर रही है मेरे पिछे क्यो आ रहे हो.

मैं : अर्रे हुआ क्या है बताओ तो सही !गुस्सा किस बात पर हो.मैं तुम्हारे लिए उसके पास जा रहा हूँ.तुम तो हर वक़्त गुस्सा ही करती रहती हो.

सलमा : अच्छा जी ! मैं गुस्सा करती हूँ. तुम हवेली गये और मुझे बताया भी नही.वहाँ जाके अब्दुल की बात भी कर ली फिर भी मुझे बताना ज़रूरी नही समझा और मैं बिना बात के गुस्सा कर रही हूँ क्यो हैं ना.

मैं : सलमा वो लड़की अब्दुल को जेल से निकलवाने मे हमारी मदद करेगी.इसलिए मैं उसके पास गया था और मैं तुमको बताना भूल गया था.जास्मिन को सब पता है जाके पूछ लो.

सलमा : मैं क्यो पुछू जास्मिन से.मुझे तुमको बताना चाहिए था ना और अब्दुल को निकलवाने की कोई ज़रूरत नही है.

मैं : (चौंकते हुए) क्यो तुम नही चाहती की वो बाहर आए और तुम्हारे साथ रहे.

सलमा : नही ! मैं बस ये नही चाहती कि तुम मुझसे दूर हो जाओ.

मैं : क्या मतलब ?

सलमा : ज़ाहिर सी बात है कि अब्दुल अगर बाहर आएगा तो हम दोनो जैसे अब मिलते हैं वैसे नही मिल पाएँगे और वैसे भी अब्दुल से मुझे सिर्फ़ आँसू और तक़लीफ़ ही मिली है.जो खुशी मुझे तुमसे मिली वो मैं खोना नही चाहती बस.

मैं : ठीक है जैसे तुम बोलोगि वैसा ही होगा.

सलमा : अब तुम छोटी मालकिन के पास भी मत जाना ठीक है.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म अब तो खुश हो.

सलमा : हमम्म (मुस्कुराते हुए)

अभी हम बात की कर रहे थे कि जास्मिन भी हमारे पास आ गई.....

जास्मिन : क्या हुआ सुजल ? वो आदमी कौन था?

मैं : वो हवेली से आया था.

सलमा : (मुझे चुप रहने का इशारा करके नही मे सिर हिलाते हुए) कुछ नही वो बस सरपंच ने ऐसे ही आदमी भेजा था कि हम अब्दुल के लिए हुए पैसे देंगे या नही. तो मैने मना कर दिया कि हमारे पास पैसे नही है. जब होंगे तो दे देंगे.

जास्मिन : ओह्ह अच्छा

फिर हम तीनो अपने-अपने कामों मे लग गये ओर शाम को खेत से घर आ गये. रात को मैं बाबा के पास बैठा बातें कर रहा था और उनके पैर दबा रहा था और जास्मिन और सलमा रसोई मे खाने बनाने मे लगी थी कि अचानक बिजली चली गई.

बाबा : ये बिजली वालो को रात मे भी सुकून नही है.

मैं : बाबा रुकिये मैं रोशनी के लिए मोमबत्ती लेके आता हूँ.

मैं मोमबत्ती लेने रसोई मे गया तो मुझे दो नही बल्कि एक साया नज़र आया जो झुका हुआ था और कोई समान निकाल रहा था. डब्बे मे से मुझे लगा कि सलमा है इसलिए मुझे शरारत सूझी और मैने पिछे से जाके उसको पकड़ लिया इससे पहले कि वो चोंक कर चीखती मैने उसके मुँह पर हाथ रख दिया.

मैं : चिल्लाना मत मैं हूँ सुजल (बहुत धीमी आवाज़ मे)

वो साए वाली लड़की : (वो खामोश होके खड़ी हो गई) हमम्म

मैं : एक पप्पी दो ना (धीमी आवाज़ मे)

वो साए वाली लड़की : (ना मे सिर हिलाते हुए)

तभी लाइट आ गई और मैं हैरान-परेशान वही खड़ा का खड़ा ही रह गया मेरी समझ मे नही आ रहा था कि मुझसे ऐसी ग़लती कैसे हो गई क्योंकि वो लड़की सलमा नही जास्मिन थी. जिसको मैं गले लगाए खड़ा था. लाइट आने के बाद जैसे ही मैने उसको देखा जल्दी से उससे अलग हो गया और रसोई से बाहर निकल गया तेज़ कदमो के साथ.

सलमा : अर्रे तुम यहाँ क्या कर रहे हो. मैं तो तुमको मोमबत्ती देने गई थी.

मैं : कुछ नही वो मैं भी मोमबत्ती लेने आया था.

मैं तेज़ कदमो के साथ वापिस कमरे मे आ गया. रात को खाने पर जास्मिन मुझे अजीब सी नॅज़ारो से देख रही थी लेकिन मुझमे उससे नज़ारे मिलाने की हिम्मत नही थी,ना ही ये बात मैं किसी को बता सकता था. मैं बस जल्दी-जल्दी खाना ख़तम करके वहाँ से उठना चाहता था तभी जास्मिन बोली...

जास्मिन: भाभी आजकल बिजली जाने के भी फ़ायदे हो गये हैं ना (मेरी तरफ देखती हुई)

मैं : (डर से ना मे सिर हिलाते हुए और मिन्नत वाले अंदाज़ मे जास्मिन को देखते हुए)

सलमा : (कुछ ना समझने वाले अंदाज़ मे) क्या मतलब?

जास्मिन : कुछ नही वो आजकल हम जैसे गाँव वाले भी शहर वालो की तरह मोमबत्ती जला के खाना खा सकते हैं. जैसे फ़िल्मो मे दिखाते हैं.

सलमा : चल पागल ! (हँसती हुई)

जास्मिन : (मुझे देख कर हँसती हुई और आँख मारते हुए) हमम्म्म.

सलमा : अच्छा जास्मिन तुम सबको एक बात बतानी थी (सिर झुका कर मुस्कुराते हुए)

जास्मिन : क्या भाभी.

सलमा : अब तू थोड़ी समझदार हो जा तुझे एक नये मेहमान की ज़िम्मेदारी उठानी है मेरे साथ.

जास्मिन : क्या मतलब ?

सलमा : मतलब ये कि तुम बुआ बनने वाली हो (शर्मा कर मुस्कुराती हुई)

जास्मिन : सचिइीई.....(अपनी जगह से खड़ी होके सलमा को गले लगाते हुए) हाए कोई मुझे सम्भालो कहीं मैं खुशी से बेहोश ही ना हो जाऊ.

मैं : बहुत-बहुत मुबारक हो सलमा जी !

सलमा : शुक्रिया...

जास्मिन : चलो अब्दुल भाई ने एक काम तो अच्छा किया!

सलमा : चल बदमाश कही की (कंधे पर मुक्का मारते हुए)

जास्मिन : अच्छा भाभी सुबह बाबा को भी बता दूं वो भी ये सुनकर बहुत खुश होंगे.

सलमा : (शर्म से मुँह नीचे करते हुए) जो तुमको ठीक लगे.

इसी तरह बातें करते हुआ हमने खाना खाया और रात को सब जल्दी सो गये. सलमा भी कल रात की ठुकाई से बहुत खुश थी इसलिए वो भी मुझे बुलाने नही आई और कुछ हम

दोनो पर नींद का भी खुमार था इसलिए आज मैं और सलमा भी सो गये थे अपने-अपने कमरो मे.

११

सुबह बाबा को जास्मिन ने बता दिया.तो वो भी सलमा के बारे मे सुनकर बहुत खुश हुए और उसको बहुत सी दुआएँ दी. अगले दिन मैने शहर जाना था फसल के लिए नये बीज लेने के लिए इसलिए जल्दी ही तैयार हो गया. आज मैं पहली बार अकेला शहर जा रहा था क्योंकि दो बार हम जब भी शहर गये थे तो सलमा और जास्मिन भी मेरे साथ जाती थी. सलमा मुझे जाने से पहले तमाम हिदायते दे रही थी जैसे मैं शहर नही किसी जंग पर जा रहा हूँ. जब मैं घर से निकला तो जास्मिन और सलमा दोनो दरवाज़े पर खड़ी मुझे जाता हुआ देखती रही.

फिर मैं बस स्टँड आ गया जहाँ शहर जाने के लिए बस आती थी और वहाँ खड़े तमाम लोगो के साथ बस का इंतज़ार करने लगा तभी एक काले रंग की कार मेरे सामने आके रुकी जिसका काँच नीचे हुआ तो अंदर सरपंच की बेटी बैठी थी.

मैं : सलाम छोटी मालकिन.

छोटी मालकिन : वालेकुम सलाम ! शहर जा रहे हो?

मैं : हंजी

छोटी मालकिन : चलो अंदर गाड़ी मे आ जाओ मैं भी शहर ही जा रही हूँ

मैं : जी नही,शुक्रिया ! मैं बस मे चला जाऊंगा बेकार मे आपको तक़लीफ़ होगी.

छोटी मालकिन : इसमे तक़लीफ़ की क्या बात है. वैसे भी मैं अकेली ही तो हूँ आ जाओ अंदर चलो.शाबाश !!(कार का दरवाज़ा खोलते हुए)

मैं : जी आपका बहुत-बहुत शुक्रिया. (कार मे बैठते हुए)

छोटी मालकिन : कल मैने तुमको बुलाया था तुम आए नही.

मैं : माफ़ करना ! काम मे मसरूफ़ था.फिर भूल गया.

छोटी मालकिन : कोई बात नही और ये तुम मुझे क्या छोटी मालकिन-छोटी मालकिन बुलाते हो मैं तुम्हारी थोड़ी ना मालकिन हूँ.

मैं : सारा गाँव आपको यही कहता है. तो मैने भी यही बुला दिया.

छोटी मालकिन : गाव वालो मे और तुम मे फ़र्क है.

मैं : क्या फ़र्क है जी ! मैं भी तो उन जैसा ही हूँ.

छोटी मालकिन : (हँसती हुई) गाँव मे किसी की हिम्मत नही कि मेरे घर मे इस तरह घुस कर मेरे ही लोगो की पिटाई कर दे.

मैं : जी माफी चाहता हूँ वो मैं.....

छोटी मालकिन : अर्रे ! मैं नाराज़ नही हूँ उल्टा खुश हूँ कि कोई तो है जिसमे इतनी हिम्मत है.बस कल थोड़ा सा बुरा लगा.

मैं : जी.... क्या हुआ मुझसे कोई ग़लती हो गई क्या.

छोटी मालकिन : आप मिलने जो नही आए बस यही खता हुई. पहले मैने सोचा कि मैं चलती हूँ फिर अब्बा जान घर थे तो आपकी समस्या याद आ गयी फिर मैने बात की थी अब्बू से.

मैं : अच्छा फिर क्या कहा उन्होने छोटी मालकिन.

छोटी मालकिन : वो कह रहे थे कि अब कुछ नही हो सकता. अब्दुल को सज़ा एलान हो चुकी है अब तो सज़ा पूरी ही काटनी पड़ेगी...(नज़रें झुका कर) माफ़ करना मैं आपकी मदद नही कर सकी.

मैं : कोई बात नही छोटी मालकिन आपने कोशिश की यही मेरे लिए बहुत है. (मुस्कुराते हुए)

छोटी मालकिन : ये तुम क्या मुझे छोटी मालकिन बुला रहे हो. हीना नाम है मेरा.

मैं : लेकिन मैं आपको आपके नाम से कैसे बुला सकता हूँ

हीना : क्यो नही बुला सकते ? मैं भी तो तुमको सुजल ही कहती हूँ ना.

मैं : ठीक है ! जैसा आप बेहतर समझे हीना जी.

हीना : हीना जी नही. सिर्फ़ हीना !

मैं : अच्छा हीना !

हीना : अच्छा मैं तो शहर नये कपड़े खरीदने जा रही हूँ. तुम शहर क्यो जा रहे हो.

मैं : वो मैने फसल के लिए नये बीज लेने थे. इसलिए जा रहा हूँ.

हीना : अच्छा.... तुमको मैने पहले इस गाँव मे कभी देखा नही. तुम कही बाहर रहते थे क्या पहले...?

मैं : जी... (मुझे याद आ गया कि सलमा ने अपने बारे मे किसी को भी बताने से मुझे मना किया हुआ है)

हीना : अच्छा तुमने ऐसा लड़ना कहाँ सीखा?

मैं : पता नही जब ज़रूरत होती है खुद ही सब कुछ आ जाता है.

हीना : हथियार भी चला सकते हो?

ये बात सुनकर मुझे जाने क्या हो गया और मुझे अजीब सी तस्वीरें नज़र आने लगी जिसमे मैं लोगो पर गोलियाँ चला रहा हूँ.मैने शहर के लोगो जैसे कपड़े पहने है मेरे आस-पास बहुत

सारे लोग है तभी मेरे सिर मे दर्द होने लगा और मुझे चक्कर से आने लगे ओर मेरा पूरा बदन पसीने से भीग गया...

हीना : क्या हुआ ठीक तो हो. (मुझे कंधे से हिलाते हुए)

मैं : जी नही...हाँ मैं ठीक हूँ.

हीना : कहाँ खो गये थे.

मैं : कुछ नही.... कुछ नही आप मुझे यही उतार दीजिए. मैं चला जाऊंगा अपने आप.

हीना : मैने कुछ ग़लत बोल दिया क्या.

मैं : नही मेरी शायद तबीयत खराब है. आप मुझे यही उतार दीजिए मैं चला जाऊंगा.

हीना : अरे क्या हुआ बताओ तो सही....रूको...ये लो पानी पीओ (पानी की बोतल मुझे देते हुए)

मैं : (पानी पी कर अपना पसीना साफ करते हुए) शुक्रिया!

हीना : क्या हुआ था तुमको एक दम से.

मैं : पता नही

हीना : बीज बाद मे ले लेना.पहले तुम मेरे साथ डॉक्टर के पास चल रहे हो ठीक है!

मैं : नही मैं ठीक हूँ ! बेकार मे तक़लीफ़ ना करे.

हीना : अर्रे ठीक कैसे हो ? अभी देखा नही कैसे पसीना-पसीना हो गये थे.

शहर आके हीना मुझे डॉक्टर के पास ले गई जिसने मेरा चेक-अप किया. फिर डॉक्टर ने मुझे बाहर जाने को कह दिया और खुद हीना से बात करने लगा कुछ देर बाद हीना भी डॉक्टर के कमरे से बाहर आ गई.

मैं : क्या कहा डॉक्टर ने आपसे?

हीना : तुम ठीक हो (मुस्कुराते हुए) बस ये कुछ दवाइयाँ दी है.डॉक्टर ने जो तुमको लेनी है और एक बार फिर हम को चेक-अप के लिए आना पड़ेगा और कुछ टेस्ट करवाने पड़ेंगे.

मैं : हीना जी क्यो पैसे खराब कर रही है. मैं एक दम ठीक हूँ ये डॉक्टर तो बस ऐसे ही....

हीना : तुम डॉक्टर हो....नही ना फिर जैसा कहती हूँ वैसे करो.

मैं : कितने पैसे हुए ?

हीना : तुमसे मतलब !

मैं : नही !वो आपको वापिस भी तो करने है इसलिए.....

हीना : तुम इतना क्यो सोचते हो...पैसे की फिकर छोड़ो और अपनी सेहत का ख्याल रखा करो .अगर मैं साथ ना होती तो....

मैं : तो कुछ नही (मुस्कुराते हुए)

हीना : अब तुम मेरे साथ ही वापिस जाओगे समझे....

मैं : मेरा तो यहाँ छोटा सा काम है. मैं यहाँ क्या करूँगा.

हीना : कुछ नही पहले हम तुम्हारे बीज लेने चलते हैं.फिर मेरी शॉपिंग के लिए चलेंगे ठीक है.

मैं : ठीक है !

हॉस्पिटल से निकलकर हम पहले बीज मंडी गये.फिर वहाँ से हीना के लिए शॉपिंग करने चले गये. जहाँ मैने सलमा और जास्मिन के लिए भी कुछ कपड़े खरीद लिए.फिर हम घर के लिए निकल पड़े. सारे सफ़र के दोरान मैं बस चुप-चाप बैठा अपने ज़हन मे आने वाली तस्वीरो के बारे मे सोचता रहा कि आख़िर मैं हूँ कौन...क्यो मुझे मेरा अतीत याद नही है.... क्यो २०-२० लोग भी मिलकर मुझसे लड़ाई नही कर सकते....और वो हथियार चलाना मुझे कहाँ से आए. वो मेरे ज़हन का बस ख्याल था या मैं सच मे हथियार चला सकता हूँ. तभी एक जीप तेज़ी से हमारी तरफ आई जिसमे कुछ शहर के लड़के बैठे थे जो बार-बार चिल्ला रहे थे.उन्होने हाथ मे शराब की बोतल पकड़ी हुई थी. अचानक उन्होने बीच सड़क मे जीप रोक दी और हमारी कार भी उनकी वजह से रोकनी पड़ी.

हीना : ड्राइवर बाहर जाके देखो क्या समस्या है इन लड़को के साथ.

मैं : हीना जी मैं जाके देखता हूँ.

हीना : नही तुम रहने दो. जाओ ड्राइवर तुम जाओ और उनको जीप साइड पर करने को बोलो.

ड्राइवर : अच्छा छोटी मालकिन.

ड्राइवर उन लड़को के पास गया और थोड़ी-देर बहस के बाद उन्होने ड्राइवर को मारना शुरू कर दिया. मैने एक मुस्कुराहट के साथ हीना की तरफ देखा और बिना कुछ कहे कार से बाहर निकल गया....बाहर निकलते ही मैं दौड़कर उनकी तरफ गया और उन लड़को पर धावा बोल दिया.सबसे पहले एक सामने खड़ा था जिस पर मैने हमला किया इससे पहले कि वो कुछ कह पाता या कर पाता मैने उसके मुँह पर मुक्का मारा और वो ज़मीन पर गिर गया.....

अचानक सब लड़के मुझे देखकर हैरान से हो गये और मुझसे लड़ने की बजाए सब अपने घुटनो पर बैठ गये ओर माफी माँगने लगे में कुछ समझ नही पाया कि ये क्या हुआ ये तो अभी इतनी गुंडागर्दी कर रहे थे अचानक इन्हे क्या हो गया.जो ये मुझसे माफी माँगने लगे....

१ लड़का : भाई माफ़ कर दो हम को पता नही था आप की गाड़ी है.

२ लड़का : भाई आप ज़िंदा हो ये जानकर बहुत खुशी हुई.

मुझे उनके इस तरह के बर्ताव से कुछ समझ नही आ रहा था कि क्या कहूँ इनको....

मैं : तुम जानते हो मैं कौन हूँ.

१ लड़का : भाई माफ़ कर दो आपके पैर पड़ता हूँ पहचानने मे ग़लती हो गई.

मैं : बताओ मुझे मैं कौन हूँ क्या तुम मुझे जानते हो.

२ लड़का : भाई माफ़ भी कर दो ! आगे से ऐसा नही होगा हम को पता नही था आपकी कार है.

मैं : बता मुझे मैं कौन हूँ ?मैं तुम्हे कुछ नही कहूँगा.

१ लड़का : उस्मान भाई कैसी बात कर रहे हो आपको कौन नही जानता.

मैं : मैं उस्मान हूँ....कौन उस्मान....

इससे पहले कि मैं कुछ और कह पाता हीना कार से निकलकर बाहर आ गई और जैसे ही मैं पिछे को मुड़ा वो लोग वहाँ से भाग गये और अपनी जीप मे बैठकर चले गये.

हीना : (मुस्कुराते हुए) क्या बात है एक ही मुक्के मे इतने सारे लड़को को अपने पैरो मे डाल लिया.

मैं : हीना जी आपने ये क्या किया उनको भगा दिया. जानती हो आपके आने से वो लोग भाग गये.मुझे उनसे कुछ पूछना था...

हीना : क्या पूछना था ? अर्रे माफ़ भी कर दो उनको बिचारों ने पैर तो पकड़ लिए अब क्या जान लोगे उनकी.चलो कार मे..... अर्रे अब कार कौन चलाएगा. ये तो बेहोश हो गया और

मुझे कार चलानी तो आती ही नही (रोने जैसा मुँह बनाके और अपने ड्राइवर की तरफ देखते हुए)

मैं : मैं चलाऊंगा !

हीना : (हैरानी से) तुम कार भी चला लेते हो.

मैं : हाँ ! शायद..!

हीना : वाह !क्या बात है. तुम तो छुपे विशाल हो. चलो पहले इस ढक्कन को कार मे फेंको .कोई काम के नही है अब्बू के आदमी (मुँह बनाते हुए). मैं अगली सीट पर तुम्हारे साथ ही बैठ जाती हूँ पिछे ये मनहूस पड़ा रहेगा.

(असल मे मैं नही जानता था कि मैं कार चला सकता हूँ या नही लेकिन उन लड़को ने जैसे कहा कि हम को पता नही था कि आपकी कार है उससे मैने बस अंदाज़ा लगाया था कि शायद मैं कार चला सकता हूँ.)

मैं कार मे ड्राइवर सीट पर बैठा और मैं नही जानता मैने कार चलानी कहाँ सीखी. लेकिन जैसे ही मैं कार की ड्राइवर सीट पर बैठा अचानक से मुझे सब कुछ याद आने लगा और कुछ ही देर मे कार हवा से बातें करने लगी. आज ना जाने क्यो कार चलते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही थी और मैं हवा से बाते करते हुए कार को तेज़-तेज़ दौड़ा रहा था......

हीना : सुजल आराम से चलाओ! तुम बहुत तेज़ चला रहे हो. मुझे डर लग रहा है.

मैं : देखती जाओ आज बहुत वक़्त के बाद ये स्टियरिंग व्हील मेरे हाथ आया है. आज इसको चलाऊंगा नही उड़ा दूँगा...

हीना : इतना ख्याल रखना कि कही मुझे ना उड़ा देना. हाहहहहहाहा.

ऐसे ही बाते करते हुए हम गाँव वापिस आ गये. मैने सरपंच की हवेली के सामने कार रोकी और खुद पैदल चलता हुआ अपने घर की तरफ कदम बढ़ा दिए. आज मैं बहुत खुश था क्योंकि आज इतने वक़्त के बाद मुझे मेरा असल नाम पता चला था. उस्मान हाँ यही नाम

लेके पुकारा था उन लड़को ने मुझे. मैं बे-क़रार हुआ जा रहा था ये खबर सलमा और जास्मिन को देने के लिए......

जैसे ही मैं घर पहुँचा तो जास्मिन ने दरवाज़ा खोला और मुझे देखते ही उसके चेहरे पर एक मुस्कान आ गई. जिसका जवाब मैने भी एक मुस्कान के साथ दिया....

जास्मिन : इतनी जल्दी कैसे आ गये.

मैं : मैं वहाँ बीज लेने गया था. घर बसाने नही (हँसते हुए)

जास्मिन : आज कल सुजल साहब आपको बहुत बातें आ गई है (मुस्कुराते हुए)

मैं : बस जी आपकी सोहबत का असर है.

जास्मिन : अच्छा जी...... देखना कही सोहबत मे बिगड़ ना जाना हमारी.

मैं : नही बिगड़ता जी. आप तो बहुत अच्छी हो.

जास्मिन : हमम्म तभी अच्छाई का फ़ायदा उठाते हो अंधेरे मे बदमाश... (हँसती हुई)

मैं : वो मैं वो.....(ज़मीन पर देखते हुए)

जास्मिन : बस...बस... अच्छा ये बताओ शहर से आ रहे हो. मेरे लिए क्या लाए?

मैं : बीज लाया हूँ खाओगी (हाहहहहहहहहाहा) ये लो तुम्हारे, बाबा और सलमा जी के लिए ओर नये सूट लाया हूँ.

इतने मे सलमा की रसोई से आवाज़ आई...

सलमा : कौन आया है जास्मिन?

जास्मिन : कोई नही भाभी ! एक बुधु है जो नये कपड़े लाया है (हँसती हुई).

मैं : अच्छा....बुधु ! वापिस करो नया सूट.....

जास्मिन : (भागते हुए) भाभी बचाओ......मेरा नया सूट ले रहे हैं.

इतने मे सलमा रसोई मे से बेलन लेके बाहर आ गई.....और जास्मिन उपर कोठरी मे कपड़े लेके भाग गई और अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया.....

सलमा : अर्रे सुजल तुम हो ! ये पागल तो कह रही थी बुधु है कोई.

मैं : जी वो बुद्धू आपके सामने है.

सलमा : जास्मिन भी पागल है ऐसे ही डरा दिया.... मुझे लगा पता नही कौन है.

मैं : ओह्ह अच्छा तो इसलिए आप बेलन लेके आई थी....हाहहहहहाहा

सलमा : अच्छा तुम इतनी जल्दी कैसे आ गये ?

मैं : वो बस सीधी मिल गई थी ना इसलिए.

सलमा : लेकिन अपने गाव से तो शहर के लिए सीधी बस कोई है ही नही.

मैं : वो कुछ लोग कार मे शहर जा रहे थे.तो मुझे भी उन्होने शहर छोड़ दिया पैसे भी नही लिए (मैने सलमा को झूठ बोला क्योंकि हीना के बारे मे बोलता तो उसको अच्छा नही लगता इसलिए)

सलमा : ओह्ह अच्छा...ऐसे ही किसी अंजान के साथ ना जाया करो सुजल.अगर वो ग़लत लोग होते तो....अपने बारे मे नही तो कम से कम हमारे बारे मे ही सोच लिया करो....

मैं : अर्रे तुम तो ऐसे ही घबरा जाती हो.देखो कुछ नही हुआ सही सलामत तो हूँ. वैसे भी तुमको लगता है मेरा कोई कुछ बिगाड़ सकता है (मुस्कुराते हुए अपने डोले सलमा को दिखाते हुए)

सलमा : फिर भी आगे से ऐसे किसी अंजान के साथ नही जाना ठीक है.

मैं : जो हुकुम सरकार का (मुस्कुराते हुए)

सलमा : अच्छा वो बीज मिल गये

मैं : हंजी मिल गये..... ये बाकी के पैसे भी रख लो और इसमे से कुछ पैसे खर्च हो गये वो मैं नये कपड़े आपके जास्मिन और बाबा के लिए लाया था वो जास्मिन उपर लेके भाग गई

सलमा : कोई बात नही.... सुजल तुम सारे पैसे मुझे क्यो दे रहे हो.कुछ अपने पास भी रखा करो तुम्हारी ज़रूरत के लिए.

मैं : मेरा खर्चा ही क्या....ख़ाता यहाँ हूँ, रहता यहाँ हूँ और कोई बुरी आदत मुझे है नही सिवाए तुम्हारे .तो फिर पैसे किसलिए आप ही रखू.

सलमा : हमम्म पता है.....अब मैं बुरी आदत हो गई हूँ ना..... सुजल तुम अपने लिए कुछ नही लाए.

मैं : नही वो अपने लिए मुझे कुछ पसंद ही नही आया.

सलमा : अगली बार जब जाओगे तो या तो अपने लिए भी कुछ लेके आना. नही तो ये भी वापिस कर आना मुझे नही चाहिए.

मैं : अर्रे ऐसे भी क्या कर रही हो ! मैं बहुत प्यार से लाया था.

सलमा : जानती हूँ....लेकिन तुम अपने लिए अगर कुछ खरीद लोगे तो क्या हो जाएगा. आख़िर मेरा भी मन करता है कि मेरा सुजल अच्छे-अच्छे कपड़े पहने और गाव मे सब आदमियो से सुंदर दिखे...

मैं : कुछ नही !वो बस ऐसे ही पैसे बहुत लग गये थे इसलिए.....अच्छा छोड़ो ये सब बाबा कहाँ है....

सलमा : वो ज़रा पड़ोस में अस्लम साब के घर गये हैं उनके पोते का पता लेने.

मैं : क्यो क्या हुआ.

सलमा : कुछ नही दोपहर को वो छत से गिर गया था उसकी टाँग टूट गई.

मैं : ओह्ह्ह अच्छा... तभी मैं सोच रहा था आज ये तितली इतना शोर कैसे मचा रही है.

सलमा : इस तितली को जल्दी इस घर से रवाना करना पड़ेगा (मुस्कुराते हुए)

हम ऐसे ही बाते कर रहे थे कि तभी पिछे से जास्मिन की आवाज़ आई....

जास्मिन :भाभी सुजल अगर कमरे मे चले गये तो मैं नीचे आ जाऊ.

सलमा : हाँ नीचे आजा वो बुद्धू अपने कमरे मे चला गया (हँसती हुई)

मैं : तुम भी बुधु....ठीक है (नाराज़ होके जाते हुए)

सलमा : अर्रे जान गुस्सा क्यो होते हो मैं तो मज़ाक कर रही थी .अच्छा लो कान पकड़े अब तो माफ़ कर दो अपनी सलमा को.

मैं : (मुस्कुराते हुए) तुम और जास्मिन दोनो एक जैसी हो एक नंबर की ड्रामेबाज़.

जास्मिन : क्यो जी आप मेरी भाभी से कान क्यो पकड़वा रहे हो (अपने दोनो हाथ कमर पर रखते हुए)

मैं : मैने तो कुछ भी नही कहा जी आपकी प्यारी भाभी को ये खुद ही कान पकड़े खड़ी है.

सलमा : देखो जास्मिन ये हम सब के लिए नये कपड़े लाए हैं और अपने लिए कुछ नही लाए.

जास्मिन : क्यो जी अपने लिए कुछ क्यो नही लाए

मैं : अर्रे ग़लती हो गई अगली बार जब जाऊंगा तो ले आऊंगा.अब तो खुश हो दोनो

सलमा : ठीक है फिर हम सब एक साथ ही नये कपड़े पहनेगे तब तक जास्मिन मेरे कपड़े भी संभालकर अंदर रख दो

अभी हम तीनो ऐसे ही बात कर रहे थे कि इतने मे बाबा भी आ गये और मुझे घर मे देखकर खुश होते हुए बोले....

बाबा : आ गये बेटा

मैं : जी बाबा आप बीज देख लीजिए ठीक लाया हूँ या नही.

बाबा : (बीज हाथ मे लेके देखते हुए) बहुत अच्छे बीज लाए हो बेटा.अब तो तुम लगभग सारा काम ही सीख चुके हो.

मैं : जी ये सब तो मुझे सलमा जी ने सिखाया है.

बाबा : हाँ बेटा ये मेरी सबसे लायक बच्ची है.

सलमा : (नज़रे झुका के मुस्कुराते हुए)

जास्मिन : और मैं.....बाबा मैं आपकी लायक बच्ची नही हूँ (रोने जैसा मुँह बनाके)

बाबा : अरे रे ..नही ! तुम्हारे सामने तो बात करना ही बेकार है जाने तुम्हारा बचपना कब जाएगा.

सलमा : बाबा ! अब हम को इसके लिए कोई अच्छा सा लड़का देखना शुरू कर देना चाहिए! सिर पर ज़िम्मेदारी आएगी तो खुद ही बचपना करना छोड़ देगी.

जास्मिन : क्या भाभी आप भी.... (मुस्कुराते हुए और मेरी तरफ देखते हुए)

बाबा : बेटी कोई अच्छा लड़का भी तो मिले तब ही बात चलाए तुम्हारी नज़र मे कोई हो तो बता दो.

सलमा : नही बाबा मैं तो ऐसे ही मज़ाक कर रही थी अभी तो इसके खेलने खाने के दिन है....

बाबा : चलो फिर ये ज़िम्मेदारी भी मैं तुमको ही देता हूँ.जब तुमको लगे कि ये शादी के लायक हो गई है तो खुद ही इसके लिए लड़का ढूँढ लेना मुझे तुम्हारी पसंद पर पूरा भरोसा है.

सलमा : जी बाबा..... अच्छा बाबा आप और सुजल बाते करो.मैं रसोई मे ज़रा खाना बना लूँ.

बाबा : हाँ बेटा अच्छा याद करवाया सलमा ने.... मुझे तुमसे एक ज़रूरी बात करनी थी.

मैं : जी बाबा हुकुम कीजिए.

बाबा : बेटा अब तो तुम सब काम देखने लग गये हो और तुम तो जानते हो कि अपनी सलमा बेटी भी अब उम्मीद से है तो इस हालत मे इसका काम करना सही नही है और खेत का मेहनत वाला काम तो बिल्कुल भी नही तो मैं सोच रहा हूँ कि जब तक बच्चा नही हो जाता तुम अकेले ही खेत का सारी देखभाल करो क्योंकि सलमा के बाद एक तुम ही हो जिस पर मैं भरोसा कर सकता हूँ .अब्दुल का तो तुम जानते ही हो वो हुआ ना हुआ एक बराबर है.... बाकी जास्मिन को तुम चाहो तो अपनी मदद के लिए साथ लेके जाना. तुम्हे मेरे फ़ैसले से कोई ऐतराज़ तो नही?

मैं : ऐतराज़ किस बात का बाबा. आपका हुकुम सिर आँखो पर.

बाबा : खुश रहो बेटा मुझे तुमसे यही उम्मीद थी....अल्लाह सबको ऐसी लायक औलाद दे.

(इतना कह कर बाबा जास्मिन को आवाज़ लगते हुए अपने कमरे मे चले गये)

मैं वही पर बैठा बाबा के फ़ैसले के बारे मे सोचने लगा और साथ ही अपने असल नाम के बारे मे सोच रहा था. काफ़ी देर मैं बाहर खड़ा रहा और अपनी पुरानी जिंदगी को याद करने की कोशिश करता रहा लेकिन मुझे कुछ भी पिछला याद नही आ रहा था. अब मैं सोच रहा था कि अपने नाम के बारे मे सबको बताऊ या चुप रहूं. बरहाल मैने ये फ़ैसला किया कि मैं इस बारे मे किसी को भी कुछ नही बताऊंगा और जब तक मुझे कुछ और बाते अपने बारे मे पता नही चल जाती या फिर याद नही आ जाती अपने बारे मे तब तक चुप रहूँगा. रात को खाने के वक़्त मैं जास्मिन और सलमा तीनो खाने पर बैठ गये और रोज़ की तरह बाबा आज भी जल्दी सो गये थे. खाने के वक़्त मैने सबको बाबा का फ़ैसला सुना दिया. जिस पर पहले तो सलमा नही मानी लेकिन मेरे इकरार पर वो मान गई और घर मे रहने का फ़ैसला कर लिया. लेकिन उसने ये शर्त रखी कि मैं अकेले काम नही करूँगा और जास्मिन को भी अपने साथ लेके जाऊंगा ताकि वो मेरी खेत मे मदद कर सके जिस पर जास्मिन खुशी-खुशी मान गई. फिर हम तीनो खाना खाने लग गये.

जास्मिन : अच्छा भाभी !बाबा ने मुझे आपके लिए कुछ हिदायतें दी है.

सलमा : (खाना खाते हुए) क्या कहा बाबा ने.

जास्मिन : वो शाम को बाबा ने मुझे कमरे मे बुलाया था तो कह रहे थे कि अब हमारे घर मे कोई बड़ी बुजुर्ग औरत तो है नही जो तुम्हारी भाभी का ख्याल रख सके इसलिए मैं ही अबसे तुम्हारा ख्याल रखूँगी.

सलमा : (हँसती हुई) अच्छा जी..... खुद को संभाल नही सकती मेरा ख्याल रखेगी.

जास्मिन : (चिड़ते हुए) हँसो मत ना भाभी !मैं सच कह रही हूँ .अब से आप ना तो रसोई मे ज़्यादा काम करेंगी ना ही कोई साफ-सफाई करेंगी.

सलमा : चलो जी.... तो खाना कौन बनाएगा ?घर कौन साफ करेगा महारानी जी.

जास्मिन : मैं हूँ ना! मैं सब संभाल लूँगी. इतना तो आपसे काम सीख ही लिया है.

सलमा : कोई बात नही कल सुबह देख लेंगे तुम कितने पानी मे हो. (हँसते हुए)

जास्मिन : हाँ...हाँ....देख लेना !

सलमा : मज़ाक छोड़ ना जास्मिन. मैं कर लूँगी तू रहने दे. तुझसे अकेले नही संभाला जाएगा ये सब.

जास्मिन : आप भी तो संभालती हो ना...फिर मैं भी संभाल लूँगी फिकर ना करो.

सलमा : लेकिन अभी तो मुझे बस दूसरा महीना लगा है.तुम सब अभी से मुझे बिस्तर पर डाल रहे हो ये तो ग़लत है. अभी तो मैं काम करने लायक हूँ सच मे.

जास्मिन : मैं कुछ नही जानती. बाबा का हुकुम है. उन्ही को जाके बोलो मुझे ना सूनाओ हाँ.

सलमा : (मुझे देखते हुए) तुम ही समझाओ ना इसे

मैं : (अभी तक चुप-चाप बस इनकी बाते सुन रहा था) मैं क्या समझाऊ. बाबा का हुकुम है तो मैं क्या बोल सकता हूँ इसमे.

सलमा : ठीक है ! सब मिलकर मुझे मरीज़ बना दो (रोने जैसा मुँह बनाते हुए)

जास्मिन : ये हुई ना बात (सलमा का गाल चूमते हुए) मेरी प्यारी भाभी.

ऐसे ही हम बाते करते हुए खाना खाते रहे फिर खाने के बाद मैं तबेले मे पशुओ को बाँधने चला गया और सलमा और जास्मिन रसोई मे काम निपटाने मे लग गई. मैं मेरे सब काम से फारिग होके जब अंदर आया तब तक जास्मिन और सलमा भी लगभग अपना सारा काम

निबटा चुकी थी. तभी सलमा ने मुझे इशारे से रसोई मे बुलाया. जब मैं अंदर गया तो जास्मिन वहाँ नही थी और सलमा मुझे कुछ परेशान सी लग रही थी.

मैं : क्या हुआ परेशान हो?

सलमा : जान एक और गड़-बॅड हो गई है (मुँह रोने जैसा बनाते हुए)

मैं : क्या हुआ सब ख़ैरियत तो है

सलमा : आज से जास्मिन भी मेरे साथ मेरे कमरे मे सोया करेगी ताकि रात को अगर मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मेरी मदद कर सके.

मैं : तो इसमे रोने जैसा मुँह बनाने की क्या बात है. ये तो अच्छी बात है तुमने तो मुझे भी बेकार मे डरा दिया.

सलमा : नही.... जान तुम मेरी बात नही समझे.

मैं : अब क्या हुआ है ? बाबा ठीक ही तो कह रहे हैं.अब मैं या बाबा तो तुम्हारे साथ सो नही सकते ना. इसलिए जास्मिन एक दम सही है.

सलमा : लेकिन फिर मैं मेरी जान को प्यार कैसे करूँगी (रोने जैसा मुँह बनाते हुए)

मैं : अच्छा तो ऐसा बोलो ना फिर.....

सलमा : ये बाबा ने तो सब गड़बड़ कर दिया.अब हम क्या करेंगे. (मेरे कंधे पर सिर रखते हुए)

मैं : मैं सोचता हूँ कुछ !आज-आज का दिन कैसे भी गुज़ार लो कल देखेंगे. ठीक है!

सलमा : कल रात भी हमने प्यार नही किया एक-दूसरे को और ऐसे ही सो गये थे जान....

मैं : अब कर भी क्या सकते हैं. मुझे बस एक दिन दो .कुछ सोचता हूँ मैं. तुम भी कुछ सोच.

सलमा : हमम्म!

मैं : ये जास्मिन कहाँ है ?

सलमा : तुम्हारा बिस्तर करने गई है (मुस्कुराते हुए)

मैं : तभी तुम इतना चिपक के खड़ी हो.

सलमा : क्यो अब चिपक भी नही सकती.....मेरी जान है (मुझे ज़ोर से गले लगाती हुई)

मैं : अच्छा अब छोड़ो नही तो जास्मिन आ जाएगी तो क्या सोचेगी.

सलमा : म्म्मडमम थोड़ी देर बसस्स....फिर चले जाना वैसे भी रात को सोना ही तो है.

मैं : जैसी तुम्हारी मर्ज़ी. (सलमा को गले से लगाते हुए)

इतना मे जास्मिन की आवाज़ आई और हम को ना चाहते हुए भी अलग होना पड़ा.

जास्मिन : क्या बात है आज तुम भी रसोई मे (मुझे देखते हुए) बर्तन धुलवाने आए हो क्या.

सलमा : जी नही इनको मैने बुलाया था!

जास्मिन : क्यो कोई काम था तो मुझे बुला लेती.

सलमा : अर्रे नही वो बस कल से तुम दोनो ने ही खेत जाना है. तो इनको सब काम अच्छे से समझा रही थी और कौनसा समान मैने कहाँ रखा है वो सब बता रही थी.

जास्मिन : वो सब तो इनको पहले से ही पता है.भाभी तुम तो ऐसे कर रही हो जैसे हम पहली बार खेत जा रहे हैं (हँसती हुई)

सलमा : नही फिर भी बताना तो मेरा फ़र्ज़ है ना.

फिर हम तीनो रसोई से अपने-अपने कमरो मे चले गये और कमरे मे जाते हुए सलमा बार-बार मुझे पलटकर देखती रही और मैं बस उसको देखकर मुस्कुराता रहा. फिर मैं भी अपने कमरे मे आके अपने बिस्तर पर लेट गया. उस रात ठुकाई वाला काम तो हो नही सकता था इसलिए मैं भी करवट बदलता हुआ आख़िर सो ही गया.

१२

सुबह मैं और जास्मिन तैयार होके खेत चले गये और अपने-अपने कामो मे सलमा वाले काम भी शामिल करके अपना काम बाँट लिया. दोपहर को मैं और जास्मिन खाना खा रहे थे तभी हीना भी वहाँ आ गई.

हीना : सलाम जनाब....लगता है मैं ग़लत वक़्त पर आ गई (मुस्कुराते हुए)

मैं : वालेकुम सलाम छोटी मालकिन (खाने से उठते हुए)

हीना : अर्रे ...उठो मत.बैठे रहो ! खाना खाते हुए उठना नही चाहिएपहले खाना खा लो,मैं बाहर इंतज़ार कर रही हूँ.

मैं : बाहर क्यो यहीं आ जाइए....आप भी आइए ना हमारे साथ ही खाना खा लीजिए.

हीना : नही शुक्रिया ! मैं खा कर आई हूँ आप लोग खाओ.

मैं हीना की वजह से जल्दी-जल्दी खाना ख़तम करने लगा कि तभी जास्मिन मुझे धीमी आवाज़ मे बोली....

जास्मिन : ये चुड़ैल यहाँ क्यो आई है ?

मैं : मुझे क्या पता ? मैने थोड़ी बुलाया है .तुम्हारे सामने तो बात हुई है.अभी जाके देखता हूँ

जास्मिन : मुझे इसकी शक़ल पसंद नही है. जल्दी दफ्फा करो इसे यहाँ से.चैन से खाना भी नही खाने देती (मुँह बनाते हुए)

मैं : अर्रे तो क्या हो गया अब. आ गई है तो उसको धक्का मारकर तो नही निकाल सकते ना.

जास्मिन : (हवा मे सिर झटकते हुए) हहुहह...

मैं खाना खाने के बाद बाहर चला गया और बाहर आके सामने देखने लगा तो मुझे हीना नज़र नही आई.तभी मुझे बाई और से किसी ने पुकारा तो मेरा ध्यान उस तरफ गया. जब मैने देखा तो हीना पानी के नाले के पास मे बैठी हुई दूर से मुझे हाथ हिला रही थी. मैं भी उस तरफ ही चला गया. जब जाके देखा तो वो अपनी सलवार घुटनो तक उपर किए हुए ठंडे पानी मे पैर डूबाए बैठी थी और मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी. मैं भी उसके पास ही चला गया.

हीना : हंजी ! हो गया आपका खाना.

मैं : मालिक के करम से हो ही गया जी आप बताओ यहाँ कैसे आना हुआ ?कोई काम था तो मुझे बुला लेती.

हीना : जैसे मेरे बुलाने से तुम आ जाओगे ना (मुस्कुराते हुए)

मैं : (अपना सिर खुजाते हुए) अब एक बार मशरूफ था तो इसका मतलब ये थोड़ी कि हर बार मसरूफ़ रहूँगा. फरमाइए क्या कर सकता हूँ मैं आपके लिए.

हीना : पहले ये बताओ दवाई ली या नही.

मैं : कौनसी दवाई ?

हीना : अर्रे बाबा जो कल तुमको डॉक्टर ने दी थी वो वाली दवाई और कौनसी तुम भी ना....

मैं : अच्छा वो तो मैं भूल ही गया (मुस्कुरा कर नज़रें नीचे करते हुए)

हीना : बहुत खूब शाबाश.... फिर मेरा यहाँ रुकना ही बेकार है. मैं चलती हूँ फिर.

मैं : अर्रे आप नाराज़ क्यो होती हो.मैं आज से ही दवाई लेनी शुरू कर दूँगा पक्का.

हीना : (अपना हाथ आगे करते हुए) वादा करो.

मैं : वादा (सिर हाँ मे हिलाते हुए)

हीना : ऐसे नही मेरे हाथ पर अपना हाथ रखो फिर पक्का वाला वादा करो तब मानूँगी.

मैं : अच्छा ये लो अब ठीक है (उसके हाथ पर अपना हाथ रखते हुए)

हीना : हमम्म अब ठीक है. (मुस्कुराते हुए)

उसका हाथ जैसे ही मैने अपने हाथ मे लिया दिल मे एक अजीब सी झुरजुरी सी पैदा हो गई. उसका हाथ बेहद कोमल और मुलायम था जबकि मेरे हाथ खेत मे काम करने की वजह से कुछ सख़्त हो गये थे. उन चन्द पलों मे जब मैने उससे छुड़वाया तो दिल मे ख्याल आया कि इसका हाथ इतना नाज़ुक है काश कि मैं इससे एक बार गले से लगा सकता. अभी मैं अपनी सोच मे ही गुम था कि हीना ने मुझे दूसरे हाथ से कंधे से पकड़कर हिलाया.....

हीना : कहाँ खो गये जनाब.

मैं : कहीं नही वो मैं बस ऐसे ही....

हीना : लगता है मेरा हाथ आपको काफ़ी पसंद आया है (शरारती हँसी के साथ)

मैं : जी.... मैं समझा नही.

हीना : नही मैं देख रही हूँ काफ़ी देर से हाथ छुड़ाने की कोशिश कर रही हूँ आप छोड़ ही नही रहे.... हाहहहहहहाहा

मैं : (शर्मिंदा होते हुए) ओह्ह माफ़ करना मुझे ख्याल ही नही रहा.

हीना : कोई बात नही... अच्छा मुझे आपसे एक काम था.

मैं : हंजी ! बोलिए क्या कर सकता हूँ मैं आपके लिए.

हीना : वो मुझे भी गाड़ी सीखनी थी .अगर आपको कोई तक़लीफ़ ना हो तो सिखा देंगे मैं पैसे भी देने को तैयार हूँ.

मैं : बात पैसे की नही है हीना जी.... लेकिन मैं ही क्यो ? आपके अब्बू के पास तो बहुत सारे लोग है जो आपको कार चलानी सिखा सकते हैं आप मुझसे ही क्यो सीखना चाहती है.

हीना : अब्बू के लोग मुझे गाड़ी चलानी सिखा सकते हैं. लेकिन मुझे चलानी नही उड़ानी सीखनी है उस दिन जैसे.

मैं : देखिए सिखाने मे मुझे कोई तक़लीफ़ नही लेकिन वो बाबा ने सारे खेत की ज़िम्मेदारी मुझे दे रखी है.तो ऐसे मैं काम छोड़कर आपको गाड़ी चलानी कैसे सीखा सकता हूँ.देखिए बुरा मत मानियेगा लेकिन मैं बाबा के हुकुम की ना-फरमानी नही कर सकता.

हीना : एम्म्म (कुछ सोचते हुए) तो फिर आप मुझे शाम को सिखा सकते हैं.खेत के काम से फारिग होने के बाद.

मैं : सिखा तो सकता हूँ लेकिन बाबा से पूछना पड़ेगा.

हीना : (चिड़ते हुए) क्या तुम भी... २०-२० लोगो को एक झटके मे गिरा देते हो ५-५ आदमियो का काम अकेले कर लेते हो लेकिन अभी भी हर काम बाबा से पूछ-पूछ के करते हो .तुम अब बड़े हो गये हो बच्चे थोड़ी ना हो.

मैं : वो बात नही है, लेकिन मुझे अच्छा लगता है बाबा से और सलमा जी और जास्मिन से हर काम पूछ कर करना. (मुस्कुराते हुए)

हीना : ठीक है जैसे तुम्हारी मर्ज़ी..... अच्छा फिर मैं चलती हूँ

मैं : (मुझे भी समझ नही आ रहा था क्या कहूँ उसको) हमम्म...

हीना : दवाई वक़्त पर लेते रहना और अगले हफ्ते एक बार फिर मेरे साथ तुमको शहर चलना है.भूलना मत ठीक है.

मैं: नही हीना जी यहाँ खेतो मे बहुत काम है.मैं ऐसे शहर नही जा पाऊंगा.मैं तो बस अगर कुछ समान लेना हो या फिर कोई काम हो तभी जाता हूँ.

हीना : हाँ तो मैं कौनसा तुमको घुमाने लेके जा रही हूँ.तुमको डॉक्टर के पास ही लेके जाना है बस और कुछ नही फिर वापिस आ जाएँगे.

मैं : अच्छा फिर मैं आपको सोच कर बताऊंगा !

हीना : ठीक है.अच्छा ! अब काफ़ी वक़्त हो गया. मैं चलती हूँ. घर मे किसी को बोलकर भी नही आई.

मैं : अकेली आई हो तो मैं घर तक छोड़ आऊ..?

हीना : नही रहने दो आप अपना काम करो मैं चली जाऊंगी. कोई साफ कपड़ा मिलेगा पैर पौंछने है.

मैं : ये लो (मैने अपने गले का साफ़ा उसको दे दिया)

हीना : अर्रे ये नही कोई ओर कपड़ा दो.इस कपड़े से तुम अपना मुँह साफ करते हो. मैं इससे अपने पैर थोड़ी ना साफ करूँगी

मैं : कोई बात नही.वैसे भी आपके पैर साफ है इससे पोंछ लीजिए और कोई कपड़ा इस वक़्त है नही मेरे पास.

हीना : (मुस्कुरा कर मेरे हाथ से साफ़ा लेते हुए) शुक्रिया.

फिर उसको मैं खेत के फाटक तक छोड़ आया और पिछे जास्मिन खड़ी हम दोनो को घूर-घूर कर देखती रही .जब उसको मैं छोड़कर वापिस आया तब भी जास्मिन मुझे घूर-घूर कर देख रही थी लेकिन बोल कुछ नही रही थी.अचानक मेरी उस पर नज़र पड़ी....

मैं: क्या हुआ ? मुझे ऐसे खा जाने वाली नज़रों से क्यो देख रही हो.

जास्मिन : तुम इस सरपंच की लड़की पर कुछ ज़्यादा ही मेहरबान नही हो रहे.

मैं : अर्रे क्या हुआ मिलने आई थी तो साथ बैठकर बात करने से कौनसा गुनाह हो गया मुझसे.

जास्मिन : अपना साफा क्यो दिया उसको (गुस्से से मुझे देखते हुए)

मैं : उसके पैर गीले हो गये थे इसलिए पौंछने के लिए.

जास्मिन : मुझे तो कभी अपना रुमाल भी नही दिया.उसके लिए गले का साफा उतारके दे दिया...वैसे पैर गीले क्यो हो गये थे महारानी के?

मैं : वो नाले मे पैर डालकर बैठी थी इसलिए....

जास्मिन : (गुस्से से) पैर नही इसका गला डुबोना चाहिए था पानी मे.

मैं : (हँसते हुए) तुम इससे इतना जलती क्यों हो.

जास्मिन : जले मेरी जुत्ति....मैं क्यो जलने लगी बस मुझे ये ऐसे ही पसंद नही. वैसे ये क्या काम से आई थी यहाँ मैं भी तो सुनू.

मैं : (सोचते हुए) कुछ नही वो बस कह रही थी कि मैं उसको कार चलानी सिखाऊ और कुछ नही.

जास्मिन : तुमने क्या कहा.... और तुमने कार चलानी कब सीख ली और जो उसको सीख़ाओगे?

मैं : (परेशान होते हुए) अर्रे उस दिन शहर गया था ना रास्ते मे ये मिली थी.इसकी कार खराब हो गई थी तो मैने ठीक करदी थी (मैने जास्मिन को हीना के साथ जाने वाली बात

नही बताई) इसलिए वो साथ मे शुक्रिया करने आई थी और बोल रही थी कि मैं उसको भी कार चलानी सिखाऊ लेकिन मैने मना कर दिया.

जास्मिन : अच्छा किया जो मना कर दिया इसका कोई भरोसा नही. (खुश होते हुए)

मैं : अच्छा चलो अब काम कर लेते हैं बाते घर जाके कर लेंगे.

जास्मिन : ठीक है

फिर हम दोनो दिन भर खेतो के काम निपटाने मे लगे रहे शाम को जब घर आए तो सरपंच के कुछ लोग घर के बाहर खड़े थे. जिन्हे मैने और जास्मिन दोनो ने दूर से ही देख लिया था

जास्मिन : ये तो सरपंच के लोग है यहाँ क्या कर रहे हैं.

मैं : क्या पता चलो चलकर देखते हैं अब ये यहाँ क्या लेने आया है.

मैं और जास्मिन तेज़ कदमो के साथ घर आ गये अंदर देखा तो बाबा और सरपंच बैठे बाते कर रहे थे. मैने दोनो को जाके सलाम किया जबकि जास्मिन सीधा रसोई मे सलमा के पास चली गई और मैं भी बाबा के पास ही कुर्सी पर बैठ गया.

बाबा : आ गये बेटा !

मैं : जी बाबा

बाबा : बेटा सरपंच साब तुमसे कुछ बात करना चाहते हैं.

मैं : जी फरमाइए.... क्या कर सकता हूँ मैं!

सरपंच : बेटा तुमसे एक काम था वो मेरी बेटी चाहती है कि तुम उसको गाड़ी चलाना सिख़ाओ.

मैं : जी... मैं ही क्यो ? आपके पास तो इतने सारे लोग है किसी को भी बोल दीजिए.वैसे भी मेरे पास इतना वक़्त नही है मुझे खेत भी संभालना होता है.

सरपंच : मैने तो बहुत समझाया अपनी बच्ची को लेकिन वो बचपन से थोड़ी ज़िद्दी है. एक बार कुछ फरमाइश कर दे फिर सुनती नही है किसी की. मैं तुम्हारा क़र्ज़ माफ़ करने को तैयार हूँ. बस तुम उसको कार चलानी सीखा दो.

मैं : (बाबा की तरफ सवालिया नज़रों से देखते हुए) जी आप बाबा से पुछिये.

बाबा : बेटा मैं क्या कहूँ ? तुम देख लो.अगर तुम्हारे पास फारिग वक़्त होता है तो सिखा देना.

सरपंच : ये हुई ना बात,बहुत अच्छे ! तो फिर मैं अगले हफ्ते ही मेरी बेटी को नयी कार खरीद दूँगा. तब तक तुम मेरी कार पर ही उसको कार चलानी सिखा देना फिर कल से सिखा दोगे ना.

मैं : दिन-भर तो मैं खेत मे उलझा रहता हूँ .शाम को ही वक़्त निकाल पाऊंगा उससे पहले नही.

सरपंच : ठीक है मुझे कोई ऐतराज़ नही. ये कुछ पैसे हैं तुम्हारा मेहनताना (एक नोटो का बंडल टेबल पर रखते हुए)

बाबा : सरपंच साब इसकी कोई ज़रूरत नही.आपने अब्दुल का क़र्ज़ माफ़ कर दिया यही बहुत है.ये पैसे हमें नही चाहिए आप वापिस रख लीजिए.

सरपंच : ठीक है तो फिर मैं चलता हूँ (पैसे जेब मे वापिस डालते हुए).

फिर सरपंच वहाँ से चला गया और सलमा और जास्मिन दोनो मुझे रसोई से घूर-घूर कर देखे जा रही थी.लेकिन बाबा के पास बैठे होने की वजह से दोनो ना तो रसोई से बाहर आई ना ही मुझसे कोई बात की मैं भी चुप-चाप नज़ारे झुकाए बैठा रहा.

बाबा : बेटा तुम कार चलानी जानते हो?

मैं : जी बाबा वो जिस दिन मैं शहर गया था. तब रास्ते मे सरपंच की बेटी की कार खराब हो गई थी तो मैने उसकी कार ठीक कर दी थी.फिर काफ़ी दूर तक चला कर भी दी थी. शायद इसलिए वो मुझसे कार सीखना चाहती है (मैं ये सब सलमा को सुनाने के लिए कह रहा था)

बाबा : ओह्हो ! मैं क्या पूछ रहा हूँ तुम क्या जवाब दे रहे हो... मैने पूछा तुमको कार चलानी कहाँ से आई?

मैं : पता नही बाबा.याद नही !

बाबा : अच्छा चलो कोई बात नही... अब तुम आराम करो थके हुए होगे.मैं भी ज़रा बाहर सैर कर लूँ....खाना बन जाए तो आवाज़ लगा देना मैं पड़ोस मे अस्लम साब के साथ ज़रा सैर कर रहा हूँ यही पास मे.

मैं : अच्छा बाबा.

बाबा के घर से निकलते ही सलमा और जास्मिन दोनो मेरे पास आके खड़ी हो गई और गुस्से से मुझे घूरने लगी.

सलमा : अच्छा तो इसलिए जल्दी आ गये थे उस दिन शहर से.

मैं : अर्रे क्या हुआ क्यो गुस्सा कर रही हो बेकार मे!

सलमा : मुझे बताया क्यो नही कि हीना के साथ आए थे तुम

मैं : मैं आना नही चाहता था. लेकिन वो ज़बरदस्ती साथ ले आई (मैने सलमा को ये नही बताया कि मैं गया भी हीना के साथ ही था)

सलमा : मैने सोचा नही था कि तुम मुझसे भी झूठ बोल सकते हो.

मैं : बेकार मे झगड़ा ना करो. छोटी सी बात थी ,नही बताया तो क्या हुआ.

जास्मिन : हाँ भाभी आज दिन मे भी वो चुड़ैल मिलने आई थी

मैं : तो मैने तो उसको मना किया ही था ना ! अब मुझे क्या पता था वो अपने बाप को भेज देगी. ठीक है अगर तुमको नही पसंद तो नही सिखाऊंगा उसको कार चलानी....अब तो खुश हो दोनो.

सलमा : अब बाबा ने हाँ बोल दिया है तो सिखा देना (मुँह दूसरी तरफ करके बोलती हुई)

ऐसे ही हम तीनो काफ़ी देर लड़ाई करते रहे.फिर वो दोनो रसोई मे चली गई और मैं कुर्सी पर बैठा दिन भर के बारे मे सोचने लगा.जाने क्यो मुझे बार-बार अपने हाथो मे हीना का वही कोमल अहसास बार-बार हो रहा था. थोड़ी देर बाद सलमा और जास्मिन ने खाना बना लिया और बाबा को बुलाने के लिए बाहर आ गई. लेकिन अब वो मेरी तरफ देख भी नही रही थी जबकि मैं उसके पास ही खड़ा था.

मैं : अब तक नाराज़ हो.

सलमा : मैं कौन होती हूँ नाराज़ होने वाली.जो तुम्हारा दिल करे वो करो.

मैं : ऐसे क्यो बात कर रही हो ? आगे कोई काम बिना तुमसे पूछे कभी किया है,जो अब करूँगा. यकीन करो मैं सच मे नही जानता था कि वो सरपंच को घर भेज देगी.आज दिन मे भी मैने उसको मना कर दिया था.

सलमा बिना मेरी बात का जवाब दिए बाबा को २-३ बार आवाज़ लगाके अंदर चली गई. मुझे उसका इस तरह का बर्ताव मेरे साथ बहुत बुरा लगा. लेकिन मैं चुप रहा पर उसको मनाने के लिए कोई और तरीका सोचने लगा.

रात को हमने तीनो ने मिलकर ही खाना खाया. लेकिन दोनो आज एक दम खामोश थी और चुप-चाप खाना खा रही थी. मैं जानता था कि दोनो मुझसे नाराज़ है इसलिए मुझसे बात नही कर रही है. मैने सलमा को मनाने के लिए खाना खाते हुए ही एक तरीका सोचा

मैने जान-बूझकर चम्मच नीचे गिरा दिया और टेबल से नीचे झुक गया और चम्मच उठाने के बहाने सलमा की जाँघो पर हाथ रख दिए और सहलाने लगा. उसने अपना घुटना झटक दिया. मैने फिर से उसके घुटने पर हाथ रख दिया और फिर से अपना हाथ फेरने लगा उसने फिर से मेरा हाथ झटकने के लिए अपनी टाँग हिलाई लेकिन इस बार मैने अपना हाथ झटकने नही दिया बल्कि सीधा हाथ उसकी योनी पर रख दिया उसने दोनो टांगे एक दम से बंद कर ली और मेरा हाथ अपनी टाँगो के बीच मे दबा लिया. अब मैं अपना हाथ हिला भी नही पा रहा था तभी मुझे सलमा की आवाज़ आई," नीचे जाके सो गये हो क्या उपर आओ जाने दो दूसरा चम्मच लेलो" और उसने अपनी टांगे खोल दी ताकि मैं अपना हाथ बाहर निकाल सकूँ लेकिन मैने हाथ निकलने से पहले अपनी उंगलियो से उसकी योनी को अच्छे से मरोड़ दिया और फिर उपर आके अपनी कुर्सी पर बैठ गया. जब उपर आया तो मेरे चेहरे पर एक मुस्कान थी और उसके चेहरे पर मुस्कान और दर्द दोनो थे जैसे वो इशारे से कह रही हो कि मुझे नीचे दर्द हो रहा है.

मैने उसकी तरफ मुस्कुरा कर देखा और फिर से खाना खाने लग गया.हालाकी उस वक़्त हमारे साथ जास्मिन भी बैठी थी लेकिन मैने अभी सलमा के साथ क्या किया ये सिर्फ़ मैं ओर सलमा ही जानते थे.जास्मिन को इस बारे मे कोई खबर नही थी क्योंकि वो तो मज़े से अपना खाना खा रही थी.थोड़ी देर बाद मैने नीचे से पैर लंबा किया और उसके पैर पर रख दिया उसने एक पल के लिए मेरी तरफ देखा और फिर खामोशी से खाना खाने लगी. मैने थोड़ी देर अपने पैर से उसके पैर को सहलाया और फिर अपना पैर उपर की तरफ ले जाने लगा. वो मुझे इशारे से नही कहने लगी लेकिन मेरा पैर धीरे-धीरे उपर की तरफ जा रहा था और उसकी टाँगो के बीच मे ले जाके मैने अपना पैर रोक दिया अब मेरे पैर के अंगूठे का निशाना उसकी योनी पर था.मैं धीरे-धीरे खाना भी खा रहा था और साथ मे पैर के अंगूठे से उसकी योनी को मस्सल रहा था. सलमा की ना चाहते हुए भी मज़े से बार-बार आँखें बंद हो रही थी और वो मुझे बार-बार सिर नही मे हिलाकर ना का इशारा कर रही थी और मैं बस उसको देखता हुआ मुस्कुरा रहा था. उसकी योनी अब पानी छोड़ने लगी थी जिससे उसकी सलवार भी गीली होने लगी थी और मुझे भी उसकी योनी का गीलापन अपने पैर के अंगूठे पर महसूस हो रहा था. मैं लगातार उसकी योनी के दाने को मसलता जा रहा था अब सलमा ने भी अपनी दोनो टांगे पूरी तरह से खोल दी थी.

कुछ देर की रगड़ाई के बाद वो फारिग हो गई जिससे उसके मुँह से एक ज़ोर से सस्सिईईईईई की आवाज़ निकल गई. मैने जल्दी से अपना पैर हटा लिया और नीचे रख लिया ताकि मेरे पैर पर जास्मिन की नज़र ना पड़ जाए.

जास्मिन : क्या हुआ भाभी ठीक तो हो.

सलमा : हाँ ठीक हूँ वो बस मिर्ची खा ली थी तो मुँह जल रहा है.

जास्मिन : अच्छा... लो पानी पी लो.

मैं : (मुस्कुराते हुए) पानी नही इनको कुछ मीठा खिलाओ, ताकि मीठा बोल सकें.

सलमा : मुझे तो आपका ही मीठा पसंद है.आप ने मुँह मीठा नही करवाया इसलिए पानी से काम चलना पड़ रहा है(मुस्कुरा कर देखते हुए)

मैं : खाने के बाद मीठा खाना अच्छा होता है मुँह से कड़वाहट निकल जाती है.

सलमा : आज तो खाने के बाद मुँह मीठा कर ही लूँगी (शरारती हँसी के साथ)

जास्मिन : तुम दोनो ये क्या मीठा-मीठा कर रहे हो मुझे तो कुछ समझ नही आ रहा चलो दोनो चुप-चाप खाना खाओ.

मैं : अच्छा ठीक है.

फिर हम तीनो ने मिलकर खाना खाया और खाने खाते हुए सलमा मुझे बार-बार बस मुस्कुरा कर देखती रही. मुझे यक़ीन ही नही हो रहा था कि जो सलमा थोड़ी देर पहले मुझे ढंग से देख भी नही रही थी वो अब मुझे बार-बार मुस्कुरा कर पहले की तरह बड़े प्यार से देख रही है अब उसकी आँखो मे मेरे लिए प्यार ही प्यार था. खाने के बाद मैं बाबा के पैर दबाने चला गया और सलमा और जास्मिन रसोई के कामों मे लग गई.थोड़ी देर बाद जास्मिन मेरा बिस्तर करने आ गई तो मैने अच्छा मोक़ा देखकर सलमा के पास जाने का सोचा और मैं तेज़ कदमो के साथ सलमा के पास चला गया.

मैं : हंजी अब भी नाराज़ हो.

सलमा : (पलट कर) सुजल मैं तुमको बहुत मारूँगी फिर से ऐसा किया तो.

मैं : (हँसते हुए) क्या किया मैने ?

सलमा : अच्छा बताऊ क्या किया (मेरे लिंग को पकड़ते हुए)

मैं : आहह दर्द हो रहा है छोड़ो ना (हँसते हुए)

सलमा : (लिंग को छोड़कर मेरे गले मे अपनी दोनो बाहे हार की तरह डालकर) नही छोड़ती क्या कर लोगे ?

मैं : जास्मिन आ जाएगी (मुस्कुराते हुए)

सलमा : नही आएगी मैने ही उसको तुम्हारा बिस्तर करने भेजा है.

मैं : अच्छा... फिर एक पप्पी दो ना...

सलमा : (मुस्कुराते हुए) ना दूं तो....

मैं : (सलवार के उपर से ही उसकी योनी पर हाथ रखते हुए) ले तो मैं ये भी लूँगा और तुम मुझे रोक नही सकती जानती हो ना!

सलमा : सस्सस्स ...! जान ना करो ना !हाथ हटाओ पहले वहाँ से फिर जो मर्ज़ी ले लेना .

मैं : (हाथ को योनी पर ही रखे हुए) ये भी ले सकता हूँ.

सलमा : क्या बात है आज जनाब की नियत ठीक नही लग रही (मुस्कुराते हुए)

मैं : तुमको देखते ही नियत खराब हो जाती है क्या करू.

सलमा : अम्म्म ठीक है आज फिर करे?

मैं : लेकिन कैसे जास्मिन साथ होगी ना तुम्हारे.

सलमा : उसकी फिकर तुम ना करो तुम बस रात को कोठरी मे आ जाना और सो मत जाना ठीक है !

मैं : ठीक है आ जाऊंगा लेकिन तुम वहाँ आओगी कैसे.

सलमा : उसकी फिकर तुम ना करो. मैं आ जाऊंगी उसके सो जाने के बाद. वैसे भी वो बहुत गहरी नींद मे सोती है तो सुबह से पहले नही उठेगी.

मैं : हमम्म्म ! चलो ठीक है फिर अब जल्दी से पप्पी दो.

सलमा : मैं भी तुम्हारी। मेरा सब कुछ तुम्हारा.जहाँ चाहे वहाँ पप्पी ले लो मैने मना थोड़ी किया है.

मैं : नही आज तुम करो पहले फिर मैं करूँगा.

सलमा : ठीक है थोड़ा नीचे तो झुको

मैं : नही आज एक नये तरीके से करेंगे

सलमा : कैसे?

मैं : (सलमा की कमर को दोनो बाजुओ से पकड़कर हवा मे उठाते हुए) ऐसे.... अब देखो तुम्हारा चेहरा मेरे चेहरे के बराबर हो गया है.

सलमा : हमम्म (और फिर सलमा ने खुद ही अपने रसीले होंठ मेरे होंठों पर रख दिए और अपनी आँखें बंद कर ली)

थोड़ी देर मैं और सलमा एक दूसरे के होंठ चूस्ते रहे फिर मैने सलमा को नीचे उतरा तो उसकी साँस बहुत तेज़-तेज़ चल रही थी.शायद वो गरम हो गई थी फिर उसने मुझे बाहर जाने को कहा और खुद रसोई के बाकी कामो मे लग गई. मैं बाहर खुली हवा मे बैठा खुले आसमान मे टिम-टिमाते तारो निहारने लगा थोड़ी देर मे जास्मिन भी कमरे से बाहर आ गई और सीधा रसोई मे सलमा के पास चली गई.फिर मैं भी अपने कमरे मे आके बिस्तर पर

लेटा सबके सो जाने का इंतज़ार करता रहा कि कब रात हो और कब मैं सलमा के साथ मज़े की वादियो की सैर करूँ.नींद तो मेरी आँखो से क़ोस्सो दूर थी लेकिन फिर भी जास्मिन को दिखाने के लिए मैं बस चुप-चाप आँखें बंद किए हुए अपने बिस्तर पर पड़ा रहा. कुछ देर बाद सलमा और जास्मिन भी अपने कमरे मे सोने के लिए चली गई और मैं आधी रात का इंतज़ार करने लगा.

१३

मुझे इंतज़ार करते हुए काफ़ी देर हो गई थी. इसलिए मैं बस अपने बिस्तर पर पड़ा सलमा के आने का इंतज़ार कर रहा था. क्योंकि उसकी आदत थी वो हमेशा मुझे खुद बुलाने आती थी. मेरी नज़र दरवाज़े पर टिकी हुई थी लेकिन ज़हन मे बार-बार हीना का ख्याल आ रहा था. मैं अपने आप से ही कई सवाल पूछ रहा था और फिर खुद से ही जवाब तलाशने की कोशिश कर रहा था. इस वक़्त मुझे सलमा के बारे मे सोचना चाहिए था.लेकिन जाने क्यो मुझे हीना याद आ रही थी. इस वक़्त मैं दो तरफ़ा सोच मे फँसा हुआ था. आँखें बाहर दरवाज़े पर सलमा को तलाश रही थी और ज़हन हीना को.

अभी मैं अपनी सोच मे ही गुम था कि दरवाज़े पर मुझे एक साया नज़र आया. अंधेरा होने की वजह से मैं चेहरा ठीक से देख नही पा रहा था. मैं बस दरवाजे की तरफ नज़र टिकाए उस साए को ही देख रहा था कि कब वो मुझे बुलाए और मैं उसके पास जाऊ. लेकिन एक अजीब बात हुई उस लड़की ने पहले सिर घूमके दाए-बाए देखा फिर कमरे के अंदर आ गई.जबकि सलमा कभी भी अंदर नही आती थी. वो तो बाहर खड़ी हुई ही इशारा करके मुझे बुलाती थी. ये जानने के लिए कि ये कौन है और यहाँ इस वक़्त क्यो आई है मैने फॉरन उसको अपने पास आता देखकर अपनी आँखें बंद कर ली,जैसे मैं गहरी नींद मे सो रहा हूँ. जब वो लड़की थोड़ा और करीब आई तो मुझे हल्का-हल्का चेहरा नज़र आने लगा ये तो जास्मिन थी. मैं सोच मे पड़ गया कि इस वक़्त ये यहाँ कैसे आ गई ओर सलमा ने तो मुझे कहा था कि वो इसके सो जाने के बाद आ जाएगी. अब मैं ये सोचकर परेशान था कि कही इस वक़्त सलमा यहाँ आ गई और उसने जास्मिन को यहाँ देख लिया तो वो क्या सोचेगी मेरे बारे मे. लेकिन फिर भी मैं सोने का नाटक करते हुए वहाँ पड़ा रहा. कुछ देर जास्मिन ने बाबा को देखा जो गहरी नींद मे सो रहे थे और खर्राटे मार रहे थे फिर वो पलट कर गई और धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया और कुण्डी लगाके मेरी तरफ आई और मुझे गौर से देखने लगी मैं आँखें बंद किए हुए लेटा रहा. फिर वो धीरे से मेरे बिस्तर पर बैठ गई और कुछ देर मुझे देखती रही फिर जो साइड मे थोड़ी सी जगह थी वहाँ मेरे साथ ही करवट लेके लेट गई. क्योंकि उसके जगह कम थी और अब उसके होते हुए मैं थोड़ा पिछे सरक कर जगह भी नही बना सकता था.

कुछ देर वो ऐसे ही लेटी थी और फिर अपना एक हाथ मेरी छाती पर रख लिया और दूसरे हाथ की उंगलियो से मेरे गाल सहलाने लगी .फिर धीरे से अपनी एक टाँग मेरी जाँघ के उपर रख ली और अपनी बाजू को मेरे पेट से गुज़ार लिया. जैसे वो लेटे हुए को ही मुझे

साइड से गले लगा रही हो. इससे उसके स्तन मुझे अपने कंधो पर महसूस होने लगे. मैं फिर भी वैसे ही लेटा रहा असल मे मैं ये देखना चाहता था कि जो मुझसे अंधेरे मे ग़लती हुई थी उसका उस पर क्या असर हुआ है और वो किस हद तक जाती है.

कुछ देर वह मेरे साथ ऐसे ही पड़ी रही फिर थोड़ा ऊपर को होते हुए मेरी गाल पर अपनी उंगलिया की मदद से मेरे चेहरे को अपनी तरफ किया और कुछ देर मुझे देखती रही उसकी सांस तेज़ चल रही थी जो मुझे अपने चेहरे पर भी महसूस हो रही थी. फिर उसने धीरे से मेरे कान में कहा

जास्मिन : सुजल जाग रहे हो क्या...?

मैं खामोश होक लेटा रहा. जब उससे यक़ीन हो गया की मैं सोया पड़ा हूँ तो उसने मेरी गाल पर हलके से चुम लिया. उसने मेरा चेहरा अपनी उंगलियों की मदद से अपनी तरफ किया हुआ था और मुझे चूमने के बाद जैसे उसकी उंगलियों से जान ही ख़तम हो गयी हो. उसकी सांस भी बोहोत तेज़ चल रही थी. जो मुझे अपने चेहरे पर महसूस हो रही थी. उसके हाथ और उंगलिया कांप रही थी. कुछ देर वह ऐसे ही मेरे कंधे पर अपना सर रखकर मेरे साथ लेटी रही और अपने कांपते हाथो से मेरी छाती पर अपना हाथ फेरती रही. फिर वह उठी और हलके से मेरे कान में बोली....

जास्मिन : जो तुमने माँगा था मैंने दे दिया है.अगली बार तुमको मांगने की जरुरत नहीं है.

उसने फिर एक बार मेरी गाल पर चुम लिया और इस बार उसने हलके-हलके से १५-१६ बार मेरे गाल को लगातार चूमा. मुझसे अब और सबर नहीं हो रहा था. मेरा लिंग भी खड़ा होकर पाजामे में टेंट बना चूका था.इसलिए मैंने करवट ले ली और उसके चेहरे के सामने अपना चेहरा कर दिया. साथ ही उसकी कमर में अपने हाथ डाल लिया.जैसे लेटे हुए ही उसको गले से लगा रहा हूँ. अब वह पूरी तरह मेरी बाहो में थी और मेरा लिंग उसकी टांगो के बिच फसा हुआ था.मेरी इस हरकत से वह एक दम डर गयी और वही सुन्न हो गयी. जैसे जम्म गयी हो. मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया था की वह मुझे सोता हुआ समझकर ही यह सब कर रही थी. यह मैंने क्या किया ? इसलिए फिर से बिना कोई हरकत किये वैसे ही लेटा रहा ताकि उसको यही लगे की मैंने नींद में ही करवट ली है. कुछ देर मैं वैसे ही उसको अपनी बाहो में लिए पड़ा रहा. उसका सर मेरी निचे वाली बाजू पर था जो मैंने घुमा कर उसकी पीठ के पीछे रखा हुआ था और दूसरे हाथ मैंने उसकी कमर पर रखा हुआ था और मेरी एक टांग अब उसके ऊपर थी. कुछ देर वह ऐसे ही बिना कोई हरकत किये मेरे साथ लेटी रही.जब उससे यक़ीन हो गया की मैं सोया हुआ हूँ ,तो उसने फिर से एक बार मेरा नाम पुकारा और वही जुमला फिर से दोहराया...

जास्मिन : सुजल जाग रहे हो क्या....?

जब मेरी तरफ से कोई जवाब नहीं आया.तो उससे यक़ीन हो गया की मैंने नींद में ही करवट ली है. अब वह मुझसे और चिपक गयी और अपनी एक बाजू मेरी कमर में डाल कर मेरे और करीब हो गयी उसकी छातिया अब मुझे अपने सीने पर महसूस हो रही थी और उसकी गरम साँसे मुझे अपने गले पर महसूस हो रही थी. उसने हल्का सा अपना चेहरा उठाया और फिर से मेरी गाल पर एक बार फिर चुम लिया.अब उसने मेरा एक बाजू जो उसकी कमर पर था उसको एक हाथ से उठाया और उसको अपने हाथो में थाम लिया फिर धीरे-धीरे मेरे हाथ पर और मेरे हाथ की उंगलियों पर चूमने लगी. फिर खुद ही मेरा हाथ अपनी गाल पर रखकर अपने गाल सहलाने लगी.उसके गाल बोहोत नाज़ुक थे जिनका अहसास मुझे बोहोत अच्छा लग रहा था. फिर उसने हलके से मेरी टांग जो मैंने उसके ऊपर रखी थी उसको धीरे से निचे की और धकेला ताकि वह अपने ऊपर से मेरी टांग हटा सके. अब सिर्फ मेरा निचे वाला बाजु ही उसके सर के निचे था जिस पर वह सर रखे हुए लेटी रही. काफी वक़्त गुज़र गया लेकिन अब उसने कोई हरकत नहीं की और वह ऐसे ही मेरे कंधे पर अपने सर रखकर लेटी रही. शायद वह मुझे देख रही थी. थोड़ी देर लेटे रहने के बाद वह उठी और धीरे से बिस्तर पर पहले बैठी और फिर मेरे चेहरे पर २-३ बार चुम लिया और फिर वह खड़ी होकर चली गयी. फिर मुझे दरवाज़ा खुलता हुआ दिखाई दिया और वह बहार को निकल गयी.मैं बस उसको जाते हुए देखता रहा.

मुझे अब यह समझ नहीं आ रहा था की यह नया किस्सा कौनसा खुल गया. यह कहा से आगयी मैं तो सलमा का इंतज़ार कर रहा था. काफी देर मैं ऐसे ही लेटा रहा लेकिन सलमा नहीं आयी.मैंने सोचा चलकर देखता हूँ की क्या हुआ है.आना तो सलमा को चाहिए था यह जास्मिन कहा से आ गयी. इसलिए मैं बिस्तर से उठा और दबे कदमो के साथ सलमा के कमरे की तरफ बढ़ने लगा वह जाके देखा तो सलमा और जास्मिन की आवाज़ आ रही थी.

सलमा : जास्मिन कब तक बैठी रहोगी आधी रात हो गयी है अब तुम भी सो जाव

जास्मिन : भाभी आप सो जाओ ! मुझे अभी नींद नहीं आ रही.जब नींद आएगी तो सो जाउंगी

सलमा : जैसी तुम्हारी मर्ज़ी ! मुझे तो बोहोत नींद आ रही है. मैं सोने लगी हूँ.

जास्मिन : अच्छा भाभी आप सो जाओ. मैं भी थोड़ी देर में सो जाउंगी.

मैं बहार खड़ा उन् दोनों की बाते सुन्न रहा था .अब मुझे समझ आ गया की सलमा क्यों नहीं आ सकी. क्योकि जास्मिन जाग रही थी. मैं वापिस अपने कमरे में आके अपने बिस्तर पर

लेट गया.अब मुझे खुद पर गुस्सा आ रहा था की इतना अच्छा मौक़ा था. मैं जास्मिन को भोग सकता था. लेकिन मैंने उसको जाने क्यों दिया अब न मुझे सलमा मिली ना ही जास्मिन. यही सब बाते में सोच रहा था कुछ देर में मुझे नींद ने अपनी आग़ोश में भी ले लिया.

सुबह जब मेरी नींद खुली तो मैं अपने रोज़ के कामो से फारिग होकर तैयार हो गया. सुबह नाश्ते पर मैं और जास्मिन साथ में बैठे नाश्ता कर रहे थे और सलमा अंदर रसोई में थी. जैसे ही सलमा मुझे नाश्ता देने आयी तो मैंने गुस्से से उसकी तरफ देखा जिस पर उसने गन्दा सा मुँह बना लिया और जास्मिन की तरफ इशारा किया फिर मेरा और जास्मिन का नाश्ता रखकर वापिस रसोई में चली गयी.जास्मिन मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी और नाश्ता कर रही थी.

मैं : क्या बात है ? आज बड़े दांत निकल रहे हैं तुम्हारे.

जास्मिन : लो जी ! अब मैं हस्स भी नहीं सकती.

में : तुम्हारे दांत है जितने चाहे दिखाव

जास्मिन : ह्ह्हम्म्म.... आज तुम बड़ी देर तक सोते रहे

मै : पता नहीं रात को नींद बोहोत अच्छी आयी.

यह सुनकर जास्मिन शर्मा सी गयी और मुँह निचे कर लिया और मुझसे पूछा...

जास्मिन : क्यों रात को क्या खास था

में : पता नहीं लेकिन बोहोत अच्छी नींद आयी (ज़ोर से बोलते हुए...क्योकि मैं सलमा को यह सब सुना रहा था)

जास्मिन : ज़ोर से क्यों बोल रहे हो ? मैं बेहरी नहीं हूँ. धीरे भी तो बोल सकते हो ना!

में : अच्छा...अच्छा बाते ख़तम करो और जल्दी से नाश्ता खाओ फिर खेत भी जाना है.

उसके बाद हम दोनों खामोश होकर नाश्ता करते रहे और सलमा बार-बार रसोई में से चेहरा निकालकर मुझे देख रही थी और अपने कानो पर हाथ लगा रही थी. मैंने चेहरा घुमा लिया और अपना नाश्ता ख़तम करने लगा. नाश्ता करके हम उठे तो सलमा फ़ौरन मेरे पास आई

सलमा : कितने बजे तक वापिस आओगें ?

में : जितने बजे रोज़ आता हूँ !आज क्यों पूछ रही हो !

सलमा : नहीं कुछ नहीं वैसे ही बस

मै : (जास्मिन की तरफ देखते हुए) चले जास्मिन ?

जास्मिन : हां चलो (मुस्कुराते हुए)

सलमा बार-बार जास्मिन के पीछे खड़ी अपने कानो पर हाथ लगा रही थी और मुझसे रात के लिए माफ़ी मांग रही थी.लेकिन मैं उसकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा था. फिर मैं और जास्मिन खेत के लिए निकल गए और दिन भर काम में लगे रहे. शाम को जास्मिन सब सामान समेत रही थी और उनकी मुकम्मल जगह पर सारा सामान रख रही थी. मैं दिन भर के काम और खेतो की मिट्टी से काफी गन्दा हुआ पड़ा था. इसलिए नाले में अपने हाथ पैर अच्छे से धो रहा था. मेरे साथ जास्मिन भी अपने हाथ पैर धोने के लिए आ गयी और मेरे पास ही बैठ गयी. जास्मिन के हाथ-पैर धोने के बाद मैंने उसकी तरफ मुस्कुराके देखा और उसकी तरफ अपने साफा कर दिया,जिसे उसने हस्स कर पकड़ लिया और अपने हाथ और बाजू पोंछने लगी. अभी उसने अपनी बाजू ही पोंछी थी की मैंने उससे अपना साफा वापिस खिंच लिया. वह सवालिया नज़रो से मेरी तरफ देखने लगी. मैं निचे बैठा और खुद उसके पैर और टांगे पोंछने लगा और उसकी तरफ एक बार नज़र उठाके देखा वह मुझे ही देखकर मुस्कुरा रही थी. हम दोनों में कोई बात नहीं हो रही थी, बस एक दूसरे से मुस्कुराकर आँखों ही आँखों में बात कर रहे थे. उसके हाथ पैर साफ़ करने के बाद मैं अपने पैर पोंछ रहा था की उसने मेरा साफा खिंच लिया और गर्दन से नहीं में इशारा किया और खुद मेरे पैर पोंछने लगी. मुझे उसकी ये अदा बोहोत अच्छी लगी और मैं प्यार भरी नज़रो से उसकी तरफ देखने लगा. वह बस मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी और अपने काम में लगी हुई थी.मैंने उसको उसकी दोनों बाजू से पकड़ा तो वह मुझे देखने लगी.

मैं : पास आओ !

जास्मिन : (नज़रे झुककर) पास ही तो हू

में : और पास आओ !

जास्मिन : (थोड़ा और नज़दीक आते हुए) अब ठीक है.

मैं : और पास...!

जास्मिन : क्या है ? क्यों तंग कर रहे हो?

में : सुना नहीं क्या कहा मैने ?

जास्मिन : (ना में सर हिलाते हुए)मैंने उससे कंधे से पकड़ा और अपने सीने से लगा लिया.

जास्मिन : (तेज़-तेज़ सांस लेते हुए) छोडो न कोई आ जाएग

में : कोई नहीं आयेगा

जास्मिन : (ख़ामोशी से मेरे सीने से लगी रही) ह्म्म्म्म्म

में: एक पप्पी दो ना

जास्मिन : थप्पड़ खाना है (हस्ते हुए)

मैं : कयो ?

जास्मिन : ऊऊह्ह्हुउउ (ना में सर हिलाते हुए)

मैंने अपने दोनों हाथो से उसके चेहरे को पकड़ा और उसकी आँखों में देखने लगा. वह खामोश होकर कुछ देर मेरी आँखों में देखती रही और फिर अपनी आँखें बंद कर ली. शायद वह भी यही चाहती थी मैं धीरे-धीरे अपना चेहरा उसके चेहरे के करीब ले गया. उस वक़्त उसकी सांस बोहोत तेज़ चल रही थी.

मैं : आँखें खोलो

जास्मिन : (आँखें खोलते हुए) ह्म्म्म्म्म

में : नहीं.....(मुस्कुराते हुए)

जास्मिन : (मुस्कुराते हुए ना में सर हिलाते हुए)

मैं : ठीक है फिर थप्पड़ ही मार दो.मैं तो करने लगा

जास्मिन: (फिर से आँखें बंद करते हुए)

अब मुझसे रहा नही गया .मैने अपने होंठ जास्मिन के नरम और रसीले होंठों पर रख दिए जिससे उसे एक झटका सा लगा. कुछ देर उसने अपने होंठों को सख्ती से बंद करे रखा और मेरे हाथो को पकड़े रखा जिससे मैने उसके चेहरे को पकड़ा था. कुछ देर उसके होंठों के साथ अपने होंठ जोड़े रखे .अब धीरे धीरे उसके होंठ जो सख्ती से एक दूसरे से जुड़े हुए थे ,अब कुछ ढीले महसूस होने लगे. मैने सबसे पहले उसके नीचे वाले होंठ को चूसना शुरू कर दिया.वो मेरा साथ नही दे रही थी लेकिन मना भी नही कर रही थी. मैं लगातार उसके नीचे वाले होंठ को चूस रहा था. अब धीरे-धीरे उसने भी मेरे उपर वाले होंठ को चूसना शुरू कर दिया. मैने अपने दोनो हाथो से उसका चेहरा आज़ाद कर दिया. लेकिन वो अब भी मेरे होंठों से होंठ जोड़े बैठी थी और अपनी दोनो आँखें बंद किए थी. अब हम दोनो एक दूसरे को शिद्दत से चूम और चूस रहे थे. हम दोनो की आँखें बंद थी और हम एक दूसरे मे खोए हुए थे. मुझे नही पता कब उसने मुझे गले से लगाया और कब मैं ज़मीन पर लेट गया और वो मेरे उपर आके लेट गई हम दोनो किसी अजीब से मज़े के नशे मे मदहोश थे.मेरे दोनो

हाथ उसकी कमर पर लिपटे थे और उसने अपनी दोनो बाजू मेरे गले मे किसी हार की तरह डाल रखी थी और मेरे उपर लेटी हुई थी. हमें दुनिया को कोई होश नही था हम दोनो बस एक दूसरे मे ही गुम्म थे.

तभी मुझे एक कार का हॉर्न सुनाई दिया जिससे हम दोनो की एक दम आँख खुल गई.जास्मिन खुद को इस तरह मेरे उपर लेटा देखकर घबरा सी गई और जल्दी से मुझसे अलग होके मेरे उपर से उठ गई.उसके दोनो हाथ बुरी तरह काँप रहे थे. उसका और मेरा मुँह हम दोनो की थूक से बुरी तरह गीला हुआ पड़ा था. मैं ज़मीन पर पड़ा उसको देख रहा था वो नज़ारे झुकाए खड़ी थी और एक दम खामोश थी.

मैं : क्या हुआ !

जास्मिन : (ना में सिर हिलाते हुए) देर हो रही है घर चले..... (अपना मुँह अपनी चुन्नि से साफ करते हुए)

मैं : हां चलो !

हम दोनो को ही समझ नही आ रहा था कि एक दूसरे को अब क्या कहे. तभी उस कार का हॉर्न एक बार फिर से सुनाई दिया. हालाकी जहाँ हम दोनो थे वहाँ अंधेरा था इसलिए हम को कोई देख नही सकता था. मैने जल्दी से खड़े होके अपने कपड़े झाड़े जिस पर मिट्टी लग गई थी ओर फिर मैं और जास्मिन खेत के फाटक की तरफ बढ़ने लगे. वहाँ हमे एक कार नज़र आई जिसके पास एक लड़की खड़ी थी. मैने पास जाके देखा तो ये हीना थी जो मुझे देख कर हाथ हिला रही थी और मुस्कुरा रही थी.

जास्मिन : आप उससे बात करो मैं खेत का बाकी समान सही से रखकर आती हूँ.

मैं : अच्छा

१४

जास्मिन वापिस चली गई ओर मैं कार की तरफ बढ़ने लगा मुझे देखते ही हीना के चेहरे पर मुस्कान आ गई और मुझे दरवाजे से देखकर ही बोली....

हीना : आ गये जनाब...वक़्त मिल गया हमारे लिए.

मैं : जी वो मैं काम मे मसरूफ़ था...कहिए कैसे आना हुआ ?

हीना : अर्रे इतनी जल्दी भूल गये (आँखें दिखाते हुए)

मैं : क्या भूल गया?

हीना : कल अब्बू आपके घर आए थे ना ! कुछ वादा किया था आपने उनके साथ याद आया.

मैं : अच्छा हाँ याद आ गया.... गाड़ी चलानी सीखनी है तुमको.

हीना : जी हुज़ूर ! बड़ी मेहरबानी याद करने के लिए.

मैं : (मुस्कुराते हुए) सचमे ज़रूरी है क्या ? आपके साथ ये ड्राइवर तो आया ही है. इसी से सीख लो ना.

हीना : जी नही.... मुझे आपसे ही सीखनी है और आप ही सिख़ाओगे. ये तो बस मुझे यहाँ तक छोड़ने के लिए आया है.

मैं : ऊहह अच्छा....

इतने मे जास्मिन भी वहाँ आ गई...

जास्मिन : (मुझे मुस्कुरा कर देखते हुए)सब काम हो गया अब घर चलें...

मैं : हमम्म चलते हैं (मुस्कुरा कर जास्मिन को देखते हुए)

हीना : ओह्ह्ह मेडम.... आपको जाना है तो जाओ सुजल नही जाएँगे.

जास्मिन : (गुस्से से हीना को देखते हुए) क्यों.... ? तुम होती कौन हो इनको रोकने वाली ? ये मेरे साथ ही जाएँगे समझी ! सरपंच की बेटी हो इसका मतलब ये नही कि सारा गाँव तुम्हारा गुलाम है.

हीना : औकात मे रहकर बात करो समझी....

जास्मिन गुस्से मे उसको कुछ बोलने वाली थी तभी मुझे बीच मे बोलना पड़ा दोनो को शांत करने के लिए क्योंकि दोनो ही झगड़े पर उतारू थी जिसको मुझे रोकना था......

मैं : दोनो चुप हो जाओ क्यो लड़ाई कर रही हो. जास्मिन तुम हीना को ग़लत मत समझो ये सिर्फ़ कार चलानी सीखने आई है और कुछ नही.इसलिए घर जाने के लिए मना कर रही थी.

जास्मिन : तो हर बात कहने का तरीका होता है.ये क्या बात हुई ?

हीना : तो मैने क्या ग़लत बोला जो तुम मुझसे लड़ाई करने पर आमादा हो गई.

मैं : दोनो एक दम चुप हो जाओ. अब कोई नही बोलेगा.नही तो ना मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा ना तुम्हारे समझी..... (दोनो की तरफ उंगली करते हुए)

हीना और जास्मिन : (दोनो हाँ मे सिर हिलाते हुए)

मैं : जास्मिन कल बाबा ने वादा किया था सरपंच जी को इसलिए मुझे जाना होगा.लेकिन पहले मैं तुमको घर छोड़ देता हूँ ठीक है.

जास्मिन : नही मैं चली जाऊंगी.आप जाओ इनके साथ.

हीना : चलो सुजल चलें !

मैं : नही.... जास्मिन मेरे साथ आई थी मेरे साथ ही जाएगी. रात होने वाली है इस वक़्त इसका अकेले जाना ठीक नही.

हीना : अर्रे तुम तो बेकार मे ही घबरा रहे हो ! ये कोई बच्ची थोड़ी है .लो एक काम करते हैं इसको मेरा ड्राइवर घर छोड़ आएगा फिर तो ठीक है.

मैं : मैने बोला ना !मेरे साथ ही जाएगी .तुम कार मे हमारे घर की तरफ चलो हम पैदल आ रहे हैं.

हीना : जब कार है तो पैदल क्यो जाओगे चलो पहले इसको कार मे घर छोड़ देते हैं फिर हम कार सीखने चलेंगे.

मैं : (जास्मिन की तरफ सवालिया नज़रों से देखते हुए) ठीक है ?

जास्मिन : (हाँ मे सिर हिलाके मुझे मुस्कुराकर देखते हुए) हमम्म ठीक है....

हीना : (अपने ड्राइवर से) बशीर तुम जाओ मुझे सुजल घर छोड़ देंगे! अब्बू पूछे तो कह देना मैं २-३ घंटे तक घर आ जाऊंगी. (मुझे देखते हुए) इतना वक़्त काफ़ी होगा ना

मैं : हमम्म काफ़ी है.

जास्मिन : (हैरान होते हुए) २-३ घंटे.... तो फिर सुजल खाना कब खाएँगे.

मैं : अर्रे फिकर मत करो मैं जल्दी ही वापिस आ जाऊंगा. तब साथ मे ही खाएँगे रोज़ जैसे ठीक है (मुस्कुरा कर जास्मिन को देखते हुए)

जास्मिन : अच्छा... लेकिन ज़्यादा देर मत करना और अपना ख्याल रखना.

हीना : अब चलें या सारी रात यही खड़े रहना है.

मैं : हाँ... हाँ... चलो

अब हीना का ड्राइवर चला गया और मैं ड्राइविंग सीट पर बैठ गया और मेरे साथ हीना बैठ गई और पिछे जास्मिन बैठी थी. मैने कार मे बैठ ते ही कार के तमाम हिस्सो के बारे मे हीना को बताना शुरू कर दिया और वो बड़े ध्यान से बैठी सुन रही थी.साथ मे जास्मिन भी मुँह

आगे करके बड़े गौर से मेरी बाते सुन रही थी. फिर मैने कार स्टार्ट की और स्टियरिंग को संभालने के बारे मे हीना को बताने लगा....

हीना : थोडा सा मैं भी चलाऊ

मैं : हां ज़रूर ! ये लो अब तुम कार संभालने की कोशिश करो.

जास्मिन : तुम सच मे कार बहुत अच्छी चला लेते हो

मैं : शुक्रिया (मुस्कुराते हुए)

तभी हीना अपनी सीट पर बैठी हुई ही टेढ़ी सी होके स्टियरिंग संभालने लगी जिससे गाड़ी एक तरफ को जाने लगी.इसलिए मैने फॉरन स्टियरिंग खुद संभाल लिया और गाड़ी को सही तरफ चलाने लगा मैने फिर से हीना को संभालने के लिए कहा तो वो फिर से नही संभाल पाई और उसने कार को एक तरफ घुमा दिया. जिससे कार सड़क से नीचे उतरने ही वाली थी. मैने फिर से स्टियरिंग संभाला और कार को वापिस रोड पर ले आया.

हीना : (झल्लाकर) नही संभाला जा रहा.

मैं : अर्रे अभी तो पहला दिन है. पहले दिन नही संभाल पाओगी.कुछ दिन कोशिश करो फिर सीख जाओगी फिकर मत करो.

कुछ देर मैं ऐसे ही हीना को कार चलानी सीखाता रहा. फिर हमारा घर आ गया तो मैने घर के सामने कार रोक दी. जास्मिन कार से उतरी और मेरे पास आके खड़ी हो गई. मैने कार का शीशा नीचे किया तो जास्मिन ने खिड़की मे से मुँह अंदर किया और बोली...

जास्मिन : जल्दी आ जाना , ज़्यादा दूर मत जाना ! मैं खाने पर तुम्हारा इंतज़ार करूँगी (मुस्कुराते हुए)

मैं : हाँ बस थोड़ी देर मे आ जाऊंगा फिर खाना साथ मे ही खाएँगे.

हीना : आपकी बाते हो गई हो तो चलें.

मैं : हाँ..हाँ.. ज़रूर...

जास्मिन : अंदर भी नही आओगे

मैं : बस थोड़ी देर मे ही आ रहा हूँ.तुम जाओ और बाबा को बता देना नही तो फिकर करेंगे. ठीक है !

जास्मिन : हमम्म.....अच्छा...

जास्मिन मुस्कुराते हुए अंदर चली गई और मैने कार फिर से स्टार्ट की और हीना की तरफ देखते हुए...

मैं : हंजी हीना जी अब कहाँ चलें बताइए...

हीना : मुझे क्या पता आप बताओ कहाँ सिख़ाओगे ?

मैं : कोई खुला मैदान है आस-पास ?

हीना : हाँ ! है ना. गाँव के बाहर जहाँ अक्सर बच्चे खेलने जाते हैं.इस वक़्त वहाँ कोई नही होगा वहाँ. मैं आराम से सीख सकती हूँ (मुस्कुराते हुए)

मैं : ठीक है फिर वही चलते हैं.

कुछ ही देर मे कार गाँव के बाहर आ गई और वहाँ से दो रास्ते निकलते थे एक पतला रास्ता जो आगे जाके पक्की सड़क से मिलता था और दूसरा रास्ता काफ़ी उबड़-खाबड़ सा था जो आगे जाके मैदान मे खुलता था. मुझे हीना ने बताया कि मुझे इसी टूटे रास्ते पर कार लेके जानी है फिर मैदान आ जाएगा. तो मैने उसके कहने के मुताबिक कार उसी रास्ते पर दौड़ा दी. रास्ता टूटा होने की वजह से हम दोनो कार के साथ अपनी सीट पर बैठे उछल रहे थे. सामने अंधेरा होने की वजह से मुझे आगे का कोई भी खड्डा दिखाई नही दे रहा था.बस हेड लाइट की रोशनी से थोड़ा बहुत दिखाई दे रहा था. झटको की वजह से से हीना के गोल-गोल स्तन भी उछल रहे थे ,जिस पर बार-बार मेरी नज़र पड़ रही थी हीना ने मुझे कंधे

से पकड़ रखा था ताकि वो सामने शीशे से ना टकरा जाए. कुछ ही देर मे हम मैदान मे आ गये....

मैं : लो जी आपका मैदान आ गया. अब आप मेरी सीट पर आके बैठो ओर मैं आपकी सीट पर बैठूँगा. फिर आप कार चलाना और मैं देखूँगा.

हीना : मैं कैसे चलाऊ ? मुझे तो आती ही नही. कुछ गड़-बड हो गई तो....

मैं : अर्रे डरती क्यो हो ? मैं हूँ ना ! संभाल लूँगा. वैसे भी तुम चलाओगी नही तो सीखोगी कैसे.

हीना : अच्छा ठीक है.

मैं : अब तुम मेरी सीट पर आके बैठो फिर मैं जैसे-जैसे तुमको बताऊंगा तुम वैसे-वैसे चलाना ठीक है.

हीना : हमम्म

अब हम दोनो ने अपनी सीट बदल ली और एक दूसरे की जगह पर आ गये. मैने दुबारा उसको गाड़ी के तमाम पुरज़ो के बारे मे बताया. फिर हीना को कार चलाने को कहा. हीना ने कार चलानी शुरू की अब उसने सिर्फ़ स्टियरिंग पकड़ा था बाकी नीचे का सारा कंट्रोल मेरे हाथ मे था.मैने अपना एक पैर ब्रेक पर रखा हुआ था अहतियात के लिए. लेकिन उसने जैसे ही कार चलानी शुरू की उसने एक दम क्लच छोड़ दिया जिससे गाड़ी झटके से बंद हो गई. काफ़ी बार उसने ट्राइ किया लेकिन हर बार गाड़ी झटके से बंद हो रही थी. क्योंकि कभी वो झटके से क्लच छोड़ देती थी कभी रेस नही देती थी. अब वो भी परेशान होने लगी थी.

हीना : मुझे लगता है मैं कभी नही सीख पाउंगी (रोने जैसा मुँह बनाके)

मैं : फिकर मत करो आज तो पहला ही दिन है.कुछ वक़्त लगेगा लेकिन सीख जाओगी.

हीना : कैसे सीखूँगी गाड़ी तो शुरू होती नही मुझसे.... पता नही अब्बू ने भी कैसी खटारा गाड़ी दी है.कहा भी था नयी गाड़ी खरीद दो.

मैं : अर्रे कुछ नही होता गाड़ी एकदम ठीक है... चलो एक काम करो मैं ड्राइवर सीट पर बैठ जाता हूँ. तुम मेरी गोद मे बैठकर चलाओ फिर नीचे पैर से मैं तुमको क्लच छोड़ना सिखाता हूँ पहले.

हीना : (परेशान होके) ठीक है !

अब मैं ड्राइविंग सीट पर बैठा था और हीना आके मेरी गोद मे बैठ गई. उसके मेरी गोद मे बैठते ही मुझे एक झटका सा लगा. उसका बदन बहुत नाज़ुक और कोमल था. उसकी कमर एक दम सुरहीदार थी. एक दम पतली सी जबकि उसकी नितंब काफ़ी चौड़ी थी और बाहर को निकली हुई थी साइड से लेकिन बेहद नाज़ुक थी. मैने उसकी कमर के साइड से अपने दोनो हाथ निकाले और स्टियरिंग थाम लिया जिस पर उसने पहले से हाथ रखे हुए थे. अब हम दोनो की टांगे एक दम जुड़ी हुई थी और मैने अपने हाथ उसके हाथो पर रखे हुए थे मैने अपने मुँह उसके कंधे पर रखा हुआ था.हमने फिर से कार स्टार्ट की और इस बार कार सही चलने लगी. अब वो बड़े आराम से बैठी कार चला रही थी और खुश हो रही थी....

हीना: (खुश होके हँसते हुए) देखो सुजल मैं कार चला रही हूँ !

मैं : देखा मैने कहा था ना तुम बेकार मे उदास हो रही थी.

हीना : लेकिन ये हँडेल मुझसे सीधा क्यो नही चलता

मैं : धीरे-धीरे ये भी संभालना आ जाएगा. वैसे मेडम इसे हँडेल नही स्टियरिंग कहते हैं (हँसते हुए)

हीना : अच्छा मुझे पता नही था.

फिर वो ऐसे ही बैठी कार चलाती रही और मैं उसके नाज़ुक बदन और में उसके बदन की खुशबू मे खोया रहा. नीचे से मेरे लिंग ने भी सिर उठाना शुरू कर दिया था, जिसको शायद

योनी की खुशबू मिल गई. कुछ देर बाद हीना को शायद नितंब के नीचे मेरा लिंग चुभने लग गया. इसलिए वो अपनी नितंब को इधर-उधर हिलाने लगी जिससे मेरे लिंग को बे-इंतेहा मज़ा आया और वो एक दम लोहे की तरह सख़्त होके खड़ा हो गया. लेकिन क्योंकि उपर हीना बैठी थी इसलिए वो सीधा नही खड़ा हो सका और आगे की तरफ मूड गया और योनी की छेद पर दस्तक देने लग गया. जैसे-जैसे लिंग नीचे झटका ख़ाता वो सीधा योनी पर ठोकर मारता जिससे हीना को एक झटका सा लगता और वो थोड़ा उपर को हो जाती और फिर बैठ जाती. हम दोनो ही खामोश थे और कार चला रहे थे और हीना चुप-चाप मेरी गोद मे बैठी थी और नीचे से मेरा लिंग अपने ही काम मे लगा था क्योंकि कुछ दिन से उसे भी उसकी खुराक नही मिली थी. थोड़ी देर ऐसे ही बैठे रहने के बाद हीना ने खुद अपनी नितंब को मेरे लिंग पर मसलना शुरू कर दिया शायद अब उसको भी मज़ा आने लगा था.

हीना : अब तुम चलाओ मुझसे नही चलाई जा रही अब मैं देखूँगी.

मैं : ठीक है !

वो अब भी मेरी गोद मे बैठी थी और नीचे देख रही थी. लेकिन उसकी आँखें बंद थी उसने अपने दोनो हाथ मेरे हाथो पर रखे हुए थे.मैं काफ़ी देर ऐसे ही कार चलाता रहा और वो बस मेरी गोद मे बैठी रही बीच-बीच मे उसकी साँस तेज़ हो जाती और वो नितंब को हिलाने लगती,जैसे उसको अंदर से झटके लग रहे हो और फिर शांत होके बैठ जाती लेकिन ज़ुबान से वो एक दम खामोश थी. अब मेरा लिंग भी दर्द करने लग गया था क्योंकि वो हीना की नितंब के नीचे मुड़ा पड़ा था इसलिए उसको अपनी गोद से उठाने के लिए मैने उससे पूछा...

मैं : अब काफ़ी वक़्त हो गया है. बाकी कल सीख लेना अब घर चलें.

हीना : हमम्म (वो अब भी मुँह नीचे किए और नज़रें झुकाए बैठी थी)

हीना अब भी मेरी गोद मे ही बैठी थी शायद वो उठना नही चाहती थी.इसलिए मैने भी उससे उठने के लिए नही कहा और ऐसे ही गाड़ी घुमा दी. अब गाड़ी मैदान से निकलकर उसी उबड़-खाबड़ कच्चे रास्ते पर थी जहाँ से हम आए थे. मैं सोच रहा था कि यहाँ शायद हीना मुझे उतरने के लिए कहेगी इसलिए कुछ पल के लिए कार रोकदी और उसके जवाब का इंतज़ार करने लगा.लेकिन वो कुछ नही बोली और ऐसे ही मुँह नीचे किए हुए बैठी रही. इसलिए मैने भी बिना कुछ बोले उस रास्ते की तरफ गाड़ी बढ़ा दी. रास्ता कच्चा होने से

गाड़ी फिर से उछलने लगी और साथ ही हिना भी उछलने लगी. एक जगह ऐसी आई जहाँ कार ज़ोर से उछली साथ ही हीना भी काफ़ी उपर को उछल गई जिसको मैने कमर मे हाथ डालकर पकड़ लिया और सिर पर छत लगने से बचाया. लेकिन उसके उछलने से मेरे लिंग को खड़े होके अपना सिर उठाने की जगह मिल गई वो किसी डंडे की तरह कार की छत की तरफ मुँह किए खड़ा हो गया जिस पर हीना बैठ गई और एक तेज़ सस्स्सस्स के साथ उसने सामने देखा और मेरे हाथो पर अपनी उंगलियो के नाख़ून गढ़ा दिए. जिससे मुझे भी दर्द हुआ और मेरा हाथ छिल गया शायद मेरा लिंग उसकी नितंब की छेद पर चुभा था जिसकी वजह से उससे बेहद दर्द हुआ अगर हम दोनो की सलवार बीच मे ना होती तो मेरा लिंग सीधा उसकी नितंब मे ही घुस जाता. अभी मैं अपने ख्यालो मे ही था कि मुझे हीना की आवाज़ आई.

हीना : रोको....रोको....कार रोको...ससस्स आई....मेरे सिर मे लगी बहुत दर्द हो रहा है (मैं जानता था वो झूठ बोल रही है क्योंकि छत तक उसके सिर को मैने पहुँचने ही नही दिया था तो लगती कैसे)

मैं : क्या हुआ ठीक तो हो.

हीना : कुछ नही मुझे उधर बैठने दो नही तो फिर से छत सिर मे लग जाएगी रास्ता खराब है. इसलिए अब आप ही चलाओ बाकी मैं कल सीख लूँगी.

मैं : ठीक है !

मैने कार रोकी और वो बाहर निकलकर साथ वाली सीट पर आके बैठ गई. मैं लगातार उसके चेहरे को ही देख रहा था लेकिन उसकी नज़र एक दम सामने थी उसके चेहरे पर अब भी दर्द महसूस हो रहा था हालाकी वो अपने दर्द ज़ाहिर नही कर रही थी फिर भी उसके चेहरे से साफ पता चल रहा था कि उसको अब भी तक़लीफ़ हो रही है. उसकी तक़लीफ़ मेरे लिंग से भी देखी नही गई और वो भी बैठने लगा. मैं मन ही मन अपने लिंग को गालियाँ दे रहा था कि इतनी ज़ोर से घुसने की क्या ज़रूरत थी हल्के-फुल्के मज़े भी तो ले सकता था. ऐसे ही खुद से बाते करते हुए मैं कार चलाने लगा. सारे रास्ते हम खामोश रहे हम दोनो मे उसके बाद कोई बात नही हुई. थोड़ी देर मे हवेली भी आ गई और कार को देखते ही सरपंच के आदमियो ने बड़ा गेट खोल दिया जिससे कार अंदर आ सके. सामने सरपंच बाग मे टहल रहा था शायद वो हीना का ही इंतज़ार कर रहा था .हमें देखकर सरपंच

भी तेज़ कदमो के साथ हमारी तरफ आने लगा. मैने कार खड़ी की और चाबी निकालकर सरपंच की तरफ बढ़ने लगा मेरे साथ ही हीना भी सरपंच के पास आ गई.

मैं : ये लीजिए सरपंच जी आपकी अमानत (कार की चाबी सरपंच को देते हुए)

सरपंच : कैसा रहा पहला दिन (मुस्कुराते हुए)

मैं : जी ये तो हीना जी ही बता सकती है

हीना : बहुत अच्छा था अब्बू अब तो मुझे स्टियरिंग संभालना भी आ गया है थोड़ा-थोड़ा. (मुस्कुराते हुए)

सरपंच : अर्रे आएगा कैसे नही तुम तो मेरी बहुत होशियार बेटी हो (हीना के सिर पर हाथ रखते हुए)

मैं : अच्छा जी अब इजाज़त दीजिए घर मे सब इंतज़ार कर रहे होंगे

सरपंच: अर्रे ऐसे कैसे नही-नही खाना यही ख़ाके जाना

हीना : हाँ सुजल जी खाना यहीं ख़ाके जाना !

मैं : जी आज नही फिर कभी ! आज मैं घर बोलकर आया हूँ इसलिए सब लोग मेरा खाने पर इंतज़ार कर रहे होंगे.

सरपंच : अर्रे बचा-खुचा तो रोज़ खाते हो आज हमारे यहाँ शाही खाना भी खा के देखो. तुमने जिंदगी मे कभी नही खाया होगा.

हीना : (बीच मे बोलते हुए) अब्बू आप फिर शुरू हो गये…मैने आपको कुछ समझाया था अगर याद हो तो…

सरपंच : अच्छा ठीक है ! नही बोलता बस. अब तो खुश (इतना कहकर सरपंच अंदर चला गया)

मैं : ठीक है हीना जी ! कल मुलाक़ात होगी अब इजाज़त दीजिए.

हीना : अब्बू के इस तरह के बर्ताव के लिए माफी चाहती हूँ !

मैं : अर्रे कोई बात नही ! आप माफी मत मांगिए....

हीना : वैसे अगर यहाँ खाना खा जाते तो बेहतर होता (मुस्कुराते हुए)

मैं : आज नही फिर कभी ! आपकी रोटी उधार रही हम पर (मुस्कुराते हुए) अच्छा अब इजाज़त दीजिए.

हीना : अच्छा जी कल मिलेंगे फिर.... (हाथ हिलाते हुए मुस्कुराकर)

इतना कहकर मैं गेट की तरफ बढ़ गया और हीना वही खड़ी मुझे देखती रही. गेट पर खड़े मुलाज़िम ने छोटा दरवाज़ा मेरे जाने के लिए खोल दिया और मैं हवेली से बाहर निकल गया.

१५

मैं अपनी सोच मे गुम था और मेरे कदम घर की तरफ बढ़ रहे थे. मेरे दिमाग़ मे इस वक़्त कई सवाल थे जिनके जवाब मुझे जानने थे. कहाँ मैं सलमा के साथ था और बीच मे ये जास्मिन और हीना कहा से टपक पड़ी और अब ना तो मैं पूरी तरह जास्मिन के साथ था, ना ही सलमा के साथ और ना ही हीना के साथ. ये तीनो ही मुझे एक जैसी लगने लगी थी. तीनो मेरे लिए फ़िकरमंद रहती थी ओर मेरा ख्याल रखने की पूरी कोशिश करती थी. मुझे समझ नही आ रहा था कि तीनो मे किसको अपना कहूँ और किसको बेगाना समझकर भूल जाऊ.

अपनी ही सोच मे गुम कब मैं घर पहुंच गया मुझे पता ही नही चला. जब घर आया तो जास्मिन और सलमा घर के बाहर ही खड़ी थी शायद वो मेरा ही इंतज़ार कर रही थी. उनको मैने एक नज़र देखा तो दोनो ने ही अपनी सदाबहार मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया.

जास्मिन : ये क्या तुम पैदल आए हो तुम तो कार पर गये थे ना.

मैं : अर्रे हीना जी को छोड़कर भी तो आना था इसलिए कार भी वापिस वही दे आया.

सलमा : ये सरपंच ने तुमको पैदल ही भेज दिया. उससे इतना भी नही हुआ कि किसी मुलाज़िम को कहकर तुमको घर तक कार पर छोड़ जाए.उसकी साहबज़ादी को मुफ़्त मे कार चलानी सीखा रहे हो.

मैं : अर्रे कोई बात नही पैदल आ गया तो क्या हो गया.

जास्मिन : बाप-बेटी दोनो एक जैसे हैं अहसान-फरामोश कही के.

मैं : अर्रे तुम दोनो के सवाल-जवाब ख़तम हो गये हो तो मुझे अंदर जाने दो. भूख लगी है.

जास्मिन : चलो ! हमने भी तुम्हारी वजह से खाना नही खाया. (मुस्कुराते हुए)

सलमा : चलो पहले तुम नहा लो फिर हम खाना खा लेंगे तब तक मैं खाना गरम करती हूँ.

कुछ देर बाद मे मैं नहा लिया और सलमा और जास्मिन ने मिलकर खाना भी गरम कर दिया और सब खाना टेबल पर लगा दिया था. हम तीनो खाना खाने बैठ गये.

जास्मिन : तो क्या सिखाया उस हेरोयिन को मास्टर जी ने (मुस्कुराते हुए)

मैं : कार ही सिखानी थी वही सिखाई और क्या ?

सलमा : फिर सीख गई ना वो कार चलानी

मैं : अभी इतनी जल्दी कहा अभी तो कुछ दिन लगेंगे

जास्मिन : हाए तो क्या रोज़ा जाओगे उस भूंतनी को सिखाने के लिए?

मैं : हमम्म अब तो रोज़ इसी वक़्त ही घर आऊंगा कुछ दिन.

सलमा : ये बाबा भी ना इतना नही देखते कि एक अकेला इंसान सारा दिन खेत मे काम करके आया है.अब उसको एक नये काम पर और लगा दिया है.

मैं : अर्रे तो क्या हो गया मैने कभी तुमको शिकायत तो नही की ना...

सलमा : यही तो रोना है ! तुम कभी शिकायत नही करते. लेकिन हमें तो दिखता है ना ,तुम हमारे लिए कितनी मेहनत करते हो.जो काम किसी ओर इंसान के थे वो काम तुमको करने पड़ रहे हैं.

मैं : (मुस्कुराते हुए) कोई बात नही... मैं बहुत खुश-नसीब समझता हूँ खुद को जो मुझे इतने अच्छे घरवाले मिले. तुम लोगो के लिए तो कुछ भी कर सकता हूँ.

जास्मिन : किस्मत तो हमारी अच्छी है! जो हम को तुम मिल गये.

मैं : अच्छा-अच्छा अब ज़्यादा बाते ना बनाओ और चुप करके खाना खाओ.

फिर हम तीनो खामोश हो गये और चुप-चाप खाना खाने लगे. तभी मुझे कुछ रेंगता हुआ अपने लिंग पर चढ़ता महसूस हुआ मेरी फॉरन नज़र नीचे चली गई तो एक गोरा सा पैर मुझे अपने लिंग पर पड़ा हुआ महसूस हुआ जो मेरे लिंग को दबा रहा था. मेरी नज़र फॉरन उपर को गई तो सलमा खाना खा रही थी और साथ मे मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी. मैं समझ गया कि ये पैर सलमा का ही है जो मेरी ही हरकत मुझ पर दोहरा रही है. कुछ देर बाद मुझे उसका दूसरे पर भी अपने उपर महसूस हुआ.अब वो दोनो पैर से मेरे लिंग को रगड़ रही थी और दबा रही थी. मुझे मज़ा भी आ रहा था और दर्द भी हो रहा था क्योंकि हीना काफ़ी देर लिंग पर नितंब रखकर बैठी रही थी. अब सलमा भी लिंग को दबा रही थी इसलिए मैने उसके दोनो पैर वहाँ से हटा दिए और उसकी तरफ देखकर नही मे सिर हिलाया. उसको लगा शायद मैं अब तक रात को उसके ना आने की वजह से नाराज़ हूँ. इसलिए उसने फिर से अपने एक कान पर हाथ लगाए और मिन्नत भरी नज़रों से मुझे देखा जिसका मैने बिना कोई जवाब दिए नज़रें खाने की प्लेट पर कर ली और खाना खाने लगा. थोड़ी देर हम ऐसे ही खाना खा रहे थे कि सलमा ने चमच नीचे गिरा दिया...

सलमा : सुजल मेरा चमच गिर गया ज़रा उठाके देना

मैं : अच्छा रूको देता हूँ.

मैं जैसे ही नीचे झुका मुझे सलमा का हाथ नज़र आया जो उसने अपनी गोद मे रखा हुआ था उसने मेरे नीचे झुकते ही कमीज़ को एक तरफ किया और अपनी दोनो टांगे चौड़ी कर ली और मुझे उंगली से पास बुलाने लगी मैं जैसे ही पास गया तो उसने मेरे बालो को पकड़ लिया और मेरा मुँह अपनी योनी पर दबा दिया और अपनी दोनो टांगे बंद कर ली. उसकी योनी की खुशबू मुझे मेरी सांसो मे जाती महसूस हुई और मैं मदहोश होने लगा मेरा लिंग एक बार फिर से सिर उठाने लगा लेकिन तभी उसने मेरा मुँह हटा दिया और मेरे बाल छोड़ दिए. मैने उसका गिराया हुआ चमच उठाया ओर वापिस उपर आके बैठ गया.

मैं : ये लो तुम्हारा चम्मच

सलमा : मिल गया था ना (मुस्कुराते हुए आँख मार कर)

मैं : हमम्म

मैं वापिस खाना खाने मे लग गया तभी सलमा ने फिर से मेरे आधे खड़े लिंग पर अपने दोनो पैर रख दिए और पैरो से मेरे लिंग को पकड़ लिया और उपर नीचे करने लगी ये मज़ा मेरे लिए एक दम नया था. इसलिए मेरा लिंग उसके इस तरह करने से एक दम खड़ा हो गया जिससे सलमा अपने पैरो की मदद से बार-बार उपर नीचे कर रही थी. मुझे बहुत मज़ा आ रहा था इसलिए मैं मुस्कुरा कर सलमा को देख रहा था साथ मे खाना खा रहा था इस पूरे अमल मे हम तीनो खामोश थे तभी जास्मिन बोली...

जास्मिन : भाभी मैं सोच रही थी क्यो ना मेरा कमरा हम सुजल को दे-दें वैसे भी मैं तो आपके पास सोती हूँ रात को.

सलमा : (एक दम अपने पैर मेरे लिंग से हटाते हुए) हम्म ठीक है... तुमको कोई ऐतराज़ तो नही (मेरी तरफ सवालिया नज़रों से देखते हुए)

मैं : नही जैसा आप दोनो ठीक समझो मुझे तो सोना है कही भी सो जाऊंगा मेरे लिए तो ये कोठरी भी अच्छी थी. (मुस्कुराते हुए)

सलमा : ठीक है कल फिर जब तुम खेत चले जाओगे तो मैं तुम्हारे लिए जास्मिन वाला कमरा तैयार कर दूँगी.

जास्मिन : मैं अभी कर देती हूँ ना खाना खाने के बाद वैसे भी मेरे पास काम ही क्या है.

सलमा : नही अभी बहुत रात हो गई है कल मैं तुम्हारे पिछे से सब कर दूँगी.

जास्मिन : ठीक है जैसे आपकी मर्ज़ी. (मुस्कुराते हुए)

उसके बाद हम तीनो ने अपना खाना ख़तम किया और सलमा ने भी कोई हरकत नही की मेरे साथ शायद वो जास्मिन के एक दम बोलने से डर गई थी. खाने के बाद मैं बाबा के पास चला गया और उसके पैर दबाने लगा और जास्मिन और सलमा रसोई मे अपना बाकी काम ख़तम करने लग गई. थोड़ी देर बाद जास्मिन कमरे मे आ गई मेरा बिस्तर करने के लिए तब तक बाबा भी सो चुके थे और मैने भी कमरे से बाहर निकलने की सोची आज मेरा लिंग मुझे काफ़ी परेशान कर रहा था इसलिए मैने सोचा क्यो ना जब तक जास्मिन मेरा बिस्तर

करती है थोड़े से सलमा के साथ मज़े लिए जाए इसलिए वहाँ से मैं जाने लगा तो जास्मिन ने मुझे रोक लिया....

जास्मिन : कहाँ जा रहे हो

मैं : ऐसे ही कहीं नही ज़रा बाहर टहलने जा रहा था

जास्मिन : मेरे पास ही बैठो ना बाते करते हैं

मैं : हमम्म ठीक है (मैं सलमा के पास जाना चाहता था लेकिन जास्मिन ने मुझे वही बिठा लिया इसलिए मैं बाहर नही जा सका.)

जास्मिन : जानते हो तुम बहुत अच्छे हो सबके बारे मे सोचते हो.

मैं : तुम भी बहुत अच्छी हो....

जास्मिन : अच्छा जी मुझे तो पता ही नही था. (हँसते हुए)

मैं : तुमको बुरा तो नही लगा आज (मैं खेत मे चूमने के बारे मे पूछ रहा था)

जास्मिन : (ना मे सिर हिलाते हुए) उउउहहुउ....

मैं : फिर से कर लूँ (हँसते हुए)

जास्मिन : थप्पड़ खाना है...(मुस्कुराते हुए)

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म

जास्मिन : (सिर हिलाके पास आने का इशारा करते हुए)

मैं जास्मिन के सामने जाके खड़ा हो गया और उसका एक हाथ खुद ही पकड़ कर अपने गाल पर मारने लगा. जिसे जास्मिन ने दूसरे हाथ से पकड़ लिया और ना मे सिर हिलाया.

फिर मेरा मुँह एक हाथ से पकड़कर मेरी गाल को चूम लिया लेकिन बहुत हल्के से.

जास्मिन : अब खुश...

मैं : मज़ा नही आया (अपने गाल को सहला कर ना मे सिर हिलाते हुए)

जास्मिन : बाकी कल... ठीक है (मुस्कुराते हुए)

मैं : और आज का क्या....

जास्मिन : आज का हो चुका है अगर याद हो तो... (मुस्कुराते हुए) चलो अब बाहर जाओ मुझे काम करने दो कबसे तंग कर रहे हो.

मैं : तुमने ही कहा था मेरे पास बैठो बातें करते हैं.

जास्मिन : तो मैने बात करने का बोला था वो सब नही..... गंदे (मुँह बनाते हुए)

ऐसे ही हँसता हुआ मैं बाहर आया और सीधा सलमा के पास चला गया जो बर्तन धो रही थी. मैं चुपके से पिछे से गया और उसको पिछे से पकड़ लिया जिससे वो एक दम डर गई और हाथ मे पकड़ी हुई थाली ज़मीन पर गिरा दी. तभी जास्मिन की आवाज़ आई...

जास्मिन : (कमरे मे से ही आवाज़ लगाके) क्या हुआ भाभी...

सलमा : (चिल्लाती हुई) कुछ नही जास्मिन एक मोटा सा चूहा चढ़ गया था मुझपर (मेरे गाल पकड़ते हुए) मैं डर गई तो थाली गिर गई हाथ से.

जास्मिन : अच्छा....

सलमा : (धीमी आवाज़ मे) ये कोई तरीका है किसी को प्यार करने का डरा दिया मुझे.

मैं : (हँसते हुए) ठीक है अगली बार आवाज़ लगाता हुआ आऊंगा कि सलमा मैं आ रहा हूँ.

सलमा : जी नही ढिंढोरा पीटने को तो नही कहा मैने बस ऐसे अचानक ना पकड़ा करो मैं डर जाती हूँ.

मैने तमाम बात-चीत के दौरान सलमा को पिछे से पकड़ा हुआ था और वो साथ-साथ बर्तन धो रही थी साथ मे मुझसे बातें भी कर रही थी.

मैं : कल आई नही तुम सारी रात मैं तुम्हारा इंतज़ार करता था (रोने जैसी शक़ल बनाके)

सलमा : हाए....(मेरी गाल को चूमते हुए) मेरी जान मेरा इंतज़ार कर रहे थे. मैने तो सुना था बहुत मज़े से सोए रात को. (हँसते हुए)

मैं : मज़ाक ना करो ! बताओ क्यो नही आई

सलमा : मैं क्या करती रात को जास्मिन सोने का नाम ही नही ले रही थी. कैसे आती... आधी रात को इसको नहाना याद आ गया... जानते हो सारी रात मैं बस इसके सोने का ही इंतज़ार करती रही.

मैं : खैर जाने दो कोई बात नही.

सलमा : अच्छा सुनो मैने हमारे मिलने के बारे मे कुछ सोचा है.

मैं : क्या सोचा है.

सलमा : मेरी एक सहेली है कोमल नाम की उसकी सास ये नींद की दवाई खाती है (मुझे एक दवाई का पत्ता दिखाते हुए)

मैं : तो इस दवाई का हम क्या करेंगे.

सलमा : रात को मैं एक गोली जास्मिन को दूध मे मिलाके सुला दूँगी फिर वो सुबह से पहले नही उठेगी और हम रात भर मज़े करेंगे (मुस्कुराकर मेरी गाल चूमते हुए)

मैं : कुछ गड़-बड तो नही होगी

सलमा : कुछ नही होगा फिकर मत करो मैने अपनी सहेली से सब पूछ लिया है.

मैं : क्या पूछा अपनी सहेली से और क्या कहा तुम्हारी सहेली ने?

सलमा : उसकी सास ये दवाई इसलिए खाती है क्योंकि उसको नींद ना आने की बीमारी है और मैने ये बोलकर ये दवाई ली है कि,हमारे बाबा को भी नींद बहुत कम आती है. तो उसने खुद ही मुझे ये पत्ता दे दिया और कहा कि जब बाबा को नींद ना आए तो उनको एक गोली दूध के साथ दे देना वो सो जाएँगे आराम से.

मैं : तुम्हारी सहेली को हम पर शक़ तो नही हुआ?

सलमा : (ना मे सिर हिलाते हुए) तुम अपनी सलमा को इतनी पागल समझते हो !

मैं : अच्छा ठीक है ! जैसा तुम ठीक समझो (सलमा का गाल चूमते हुए)

सलमा : चलो अब तुम बाहर जाओ जास्मिन आने वाली होगी.हम रात को मिलेंगे ठीक है !

मैं : अच्छा जाता हूँ (जाते हुए सलमा के दोनो स्तनों को दबाते हुए)

सलमा : (दर्द से) सस्स्स्सस्स रात को आना फिर बताउंगी (हँसते हुए)

मैं रसोई से बाहर निकल गया और वापिस अपने कमरे मे आ गया. जास्मिन अभी तक मेरे कमरे मे ही थी और अलमारी से मेरे कपड़े निकाल रही थी...

मैं : ये क्या कर रही हो जास्मिन ?

जास्मिन : कुछ नही....तुमको कल मेरे वाला कमरा देना है तो तुम्हारे कपड़े मेरे कमरे मे रखने जा रही हूँ.

मैं : अच्छा...लेकिन ये काम तो सलमा भी कर सकती थी.

जास्मिन : हर काम भाभी को बोलते हो.अगर कोई काम मैं कर दूँगी तो क्या हो जाएगा.

मैं : तुमसे तो बहस करना ही बेकार है.जो दिल मे आए वो करो बस्स्स्स

जास्मिन : हमम्म जब जीत नही सकते तो लड़ते क्यो हो. (मुस्कुराते हुए)

मैं : अच्छा अब जल्दी-जल्दी ये सब ख़तम करो फिर मुझे सोना है.बहुत थक गया हूँ इसलिए नींद आ रही है.

जास्मिन : अच्छा मैं बस जा रही हूँ तुम सो जाओ आराम से.

थोड़ी देर मे जास्मिन मेरे सारे कपड़े लेके चली गई और मैं बिस्तर पर लेटा सलमा का इंतज़ार करने लगा. साथ ही दिन भर जो कुछ हुआ उसके बारे मे सोचकर मुस्कुरा रहा था. मेरा दिमाग़ कभी जास्मिन के बारे मे सोच रहा था कभी सलमा के बारे मे तो कभी हीना के बारे मे क्योंकि ये तीनो ही मेरी जिंदगी मे एक अजीब सी खुशी लेके आई थी. तीनो ही अपनी-अपनी जगह पर कमाल-धमाल थी खूबसूरती मे कोई किसी से कम नही थी. इन्ही तीनो के बारे मे सोचते हुए जाने कब मैं सच मे सो गया मुझे पता ही नही चला.

मुझे लेटे हुए काफ़ी देर हो गई थी और मुझे पता नही चला कि कितनी देर से मैं सो रहा था लेकिन अचानक किसी के गाल थप-थपाने से मेरी आँख खुल गई अंधेरा होने की वजह से मैं देख नही पा रहा था कि ये कौन है तभी मुझे एक मीठी सी आवाज़ आई...

सलमा : जान सो गये थे क्या ?

मैं : हाँ आँख लग गई थी शायद ! जास्मिन सो गई क्या ?

सलमा : हाँ आज तो सुला ही दिया उसको... मुझे लग ही रहा था तुम सो गये होगे क्योंकि मैं कितनी देर से खड़ी तुमको बाहर से बुलाने की कोशिश कर रही थी.लेकिन तुम कोई जवाब ही नही दे रहे थे... खैर जाने दो ये बताओ नींद आई है क्या?

मैं : नही अब तो मैं जाग गया हूँ...तुम खड़ी क्यो हो बैठो ना

सलमा : उऊहहुउ मैं बैठने नही आई चलो बाहर कहीं बाबा भी ना जाग जाए.

मैं : रुक जाओ पहले अपनी जान को गले तो लगा लून (सलमा की बाजू पकड़कर ज़ोर से अपनी तरफ खींचा जिससे वो मेरे उपर धडाम से गिर गई)

सलमा : ऑह्हूनो जान मैं मना तो नही कर रही हूँ...लेकिन यहाँ नही बाहर चलो ना...(मेरी गाल को सहलाते हुए)

मैं : अच्छा चलो....

हम दोनो एक दूसरे का हाथ पकड़कर बाहर आ गये. लेकिन फिर सलमा ने कमरे से बाहर आके मुझे हाथ से रुकने का इशारा किया और वापिस कमरे मे अंदर चली गई और बाबा के बिस्तर के पास खड़ी होके उनको देखने लगी. शायद वो ये तसल्ली कर रही थी कि बाबा सोए या नही फिर वो मुझे लेके अपने कमरे की तरफ गई और मुझे बाहर खड़ा करके अंदर चली गई और जास्मिन जो उसके ही बेड पर सोई हुई थी. उसको अच्छे से देखकर आई फिर वापिस आके अपने कमरे को बाहर से बंद किया और कुण्डी लगा दी और मेरी तरफ पलटकर मुस्कुराने लगी साथ ही अपनी दोनो बाजू हवा मे उठा दी. मैने भी आगे बढ़कर उसको अपने गले से लगा लिया और हमेशा की तरह उसको गले से लगाकर सीधा खड़ा हो गया. जिससे उसके पैर हवा मे झूल गये .उसने भी अपनी दोनो बाजू मेरे गले हार की तरह डाल रखी थी और मेरी गर्दन पर लटकी सी हुई थी.मैने उसको उसकी कमर से पकड़ रखा था और हम ऐसे ही चल भी रहे थे और एक दूसरे के गाल भी चूम रहे थे. पहले मैने उससे हमारे खाना खाने वाली टेबल पर बिठा दिया. वो अब भी मुझे वैसे ही पकड़ी हुई थी और बार-बार मेरे दोनो गालो को चूम रही थी.

सलमा : जान तुम्हारे बिना अब एक पल भी चैन नही आता मुझसे नाराज़ ना हुआ करो.

मैं : मैं कब नाराज़ हुआ तुमसे?

सलमा : (मेरे दोनो गाल पकड़कर) अच्छा...सुबह जब मैं कान पकड़ कर माफियाँ माँग रही थी तब मेरी तरफ कौन नही देख रहा था बताओ ज़रा.

मैं : अच्छा...वो मैं तो ऐसे ही तुमको तंग कर रहा था

सलमा : जान बहुत मुश्किल से तुम मुझे मिले हो. तुम नाराज़ होते हो तो दिल करता है सारी दुनिया ने मुझसे मुँह मोड़ लिया है. तुम नही जानते मैं तुमको कितना प्यार करती हूँ तुम तो मेरे सब कुछ हो.

मैं : अच्छा.... बताओ कितना प्यार करती हो (मुस्कुराते हुए)

सलमा : प्यार बताया नही करके दिखाया जाता है (मुस्कुराकर मेरे होंठों को चूमते हुए)

मैं : तो करके ही दिखा दो वैसे भी अब तो तुम्हारा ही हूँ मैं.

सलमा : जान यहाँ नही उपर कोठरी मे चलते हैं ना

मैं : ठीक है फिर मैं लेके जाऊंगा तुमको....मंज़ूर है

सलमा : (कुछ ना समझने जैसा चेहरा बनाते हुए) क्या.....

मैं : (सलमा को गोद मे उठाते हुए) ऐसे.....

सलमा : (डर कर चौंकते हुए) जाआंणन्न्.......

मैं : क्या है ? डर क्यो रही हो..... गिरोगी नही !

सलमा : (मुस्कुराकर अपनी दोनो बाजू मेरे गले मे डालते हुए) एम्म्म जानती हूँ.... तुमने एक दम उठाया तो डर गई थी. जानते हो मुझे आज तक किसी ने भी ऐसे नही उठाया.

मैं : (सलमा को गोद मे उठाके सीढ़िया चढ़ते हुए) किसी ने भी नही...

सलमा : (ना मे सिर हिलाते हुए)

मैं : चलो अब से हम जब भी कोठरी मे जाएँगे ऐसे ही जाएँगे....

सलमा : जो हुकुम मेरी सरकार का..... (हँसते हुए)

मैं : (अपना जुमला सलमा के मुँह से सुनकर हँसते हुए) मेरी बिल्ली मुझे ही मियऊओ....

सलमा : हमम्म जान भी मेरा.... मेरी जान के जुमले भी मेरे (मुस्कुराते हुए)

मैं : कोठरी का दरवाज़ा खोलो

सलमा : पहले मुझे नीचे तो उतारो फिर खोलती हूँ

मैं : उउउहहुउऊ ऐसे ही खोलो

सलमा : (अजीब सा मुँह बनके कोठारी की कुण्डी खोलते हुए) जान आप भी ना.....

हम दोनो अब कोठरी मे आ गये थे और सलमा अब भी मेरी गोद मे ही थी. मैं चारो तरफ नज़र घुमा रहा था ताकि सलमा को लिटा सकूँ लेकिन वहाँ लेटने की कोई भी जगह नही थी और ज़मीन भी मिट्टी से गंदी हुई पड़ी थी.

सलमा : क्या हुआ जान

मैं : लेटेंगे कहाँ यहाँ तो बिस्तर भी नही है.

सलमा : जान वो जिस दिन तुम शहर से आए थे, तब जास्मिन उपर आई थी ना तो उसने यहाँ बिस्तर पड़ा देखा था. जो उसने रात को उठाके नीचे रख दिया था क्योंकि अब तुम भी नीचे ही सोते हो॥

मैं : तो मैं अपनी जान को प्यार कहाँ करूँ फिर...

सलमा : आप मुझे नीचे उतारो मैं नीचे से जाके बिस्तर ले आती हूँ जल्दी से

मैं : म्म्ममम (कुछ सोचते हुए) रहने दो ऐसे ही कर लेंगे

सलमा : जान जिस्म और कपड़े गंदे हो जाएँगे ऐसे तो...देख नही रहे यहाँ कितनी धूल है.

मैं : खड़े होके करेंगे ना.... (मुस्कुराते हुए)

सलमा : (कुछ ना समझने जैसा मुँह बनाते हुए) खड़े होके कैसे करेंगे.

मैं : तुम बस देखती जाओ.

सलमा : अच्छा मुझे नीचे तो उतारो....जान ऐसे मज़ा नही आएगा.... बस दो मिनिट लगेंगे मैं बिस्तर ले आती हूँ ना...

मैं : अच्छा ठीक है ये लो... (गोदी से सलमा को उतारकर ज़मीन पर खड़ी करते हुए)

सलमा तेज़ कदमो के साथ वापिस नीचे चली गई और मैं कोठारी का उपर वाला गेट खोल कर बाहर की ठंडी हवा का मज़ा लेने लगा. अभी कुछ ही देर हुई थी कि मुझे किसी की सीढ़ियाँ चढ़ने की आवाज़ आई.मैने एक बार मुड़कर देखा तो ये सलमा थी जिसके हाथ मे एक गद्दा और एक चद्दर और एक तकिया था. आते ही उसने एक प्यार भरी मुस्कान के साथ मुझे देखा और आँखों के इशारे से मुझे बिस्तर दिखाया.

मैं : लाओ मैं बिछा देता हूँ

सलमा : जान आप रहने दो मैं कर लूँगी.

मैं : कोई बात नही दोनो करेंगे तो जल्दी हो जाएगा

फिर हम दोनो मिलकर जल्दी से बिस्तर बिछाने लगे.बिस्तर के होते ही सलमा जल्दी से खड़ी हो गई और अपना दुपट्टा साइड पर रख दिया जो अब भी उसके गले मे लटक रहा था. फिर हम दोनो जल्दी से बिस्तर पर बैठ गये तो उसने मुझे धक्का देकर बिस्तर पर लिटा दिया और खुद मेरे उपर आ गई.

मैं : आज क्या बात है बहुत जल्दी मे हो.

सलमा : मुझसे और इंतज़ार नही हो रहा (मेरा चेहरा चूमते हुए)

मेरा चेहरा चूमते हुए सलमा सीधा मेरे होंठों पर आई और उसने जल्दी से अपना मुँह खोल कर मेरे दोनो होंठ अपने मुँह मे क़ैद कर लिए और बुरी तरह चूसने लगी. उसकी साँस लगातार तेज़ हो रही थी और उसके चूमने मे शिद्दत सी आती जा रही थी. अब वो बहुत प्यार से मेरे होंठों को चूस रही थी.साथ ही अपनी ज़ुबान मेरे दोनो होंठ पर फेर रही थी. हम दोनो की मज़े से आँखें बंद थी कुछ देर मेरे होंठ चूसने के बाद उसने मेरे मुँह के अंदर अपनी रसीली ज़ुबान दाखिल कर दी.जिसे मैने मुँह खोलकर अपने मुँह मे जाने का रास्ता दे दिया और मज़े से उसकी ज़ुबान चूसने लगा. बहुत मीठा-मीठा सा ज़ाएका था उसकी ज़ुबान का. ज़ुबान चूस्ते हुए उसने मेरे दोनो हाथ अपने हाथ मे पकड़े और अपनी कमर पर रख दिए. मैं कभी उसकी ज़ुबान चूस रहा था कभी उसके रस से भरे हुए होंठ और साथ ही उसकी कमर पर अपने दोनो हाथ फेर रहा था.लेकिन आज मुझे उसकी कमीज़ के बीच मे कुछ चुभ रहा था....

मैं : (अपना मुँह उसके मुँह से अलग करते हुए) ये क्या है ? हाथ पर चुभ रहा है.

सलमा : ज़िप्प है जान ! आज मैने आपके लिए नया सूट पहना है (मुस्कुराते हुए) खोल दो परेशानी हो रही है तो... (वापिस मेरे होंठों पर अपने होंठ रखते हुए)

हम फिर से एक दूसरे के होंठ चूसने लगे मैं अपना हाथ लगातार उपर की तरफ ले जा रहा था ताकि मुझे ज़िप्प का जोड़ मिल सके. तभी मेरा हाथ सलमा के गले पर पहुँचा तो मुझे उसका जोड़ मिल गया जिसको मैं खींचता हुआ नीचे तक ले गया अब उसकी पूरी पीठ एक दम बे-परदा थी और मेरे हाथो का अहसास उसे अपनी नंगी पीठ पर होते ही उसने एक ठंडी आअहह भरी और फिर से मेरे मुँह से अपना मुँह जोड़ दिया. मैं अब लगातार उसकी पीठ पर हाथ फेर रहा था.लेकिन बार-बार उसकी ब्रा का स्टाप मेरे हाथो से टकरा रहा था.इसलिए मैने उसको भी खोल दिया अब सलमा की पीठ एक दम नंगी थी, जो एक दम चिकनी थी. उस पर अपने हाथ और अपनी उंगालिया फेरते हुए ऐसे लग रहा था जैसे

किसी मखमल पर हाथ फेर रहा हूँ. उसको गले लगाते हुए मेरी उंगालिया उसके जिस्म मे धँस रही थी जिससे उससे इंतहाई मज़ा आ रहा था.

सलमा : जान जब आप मेरी पीठ पर उंगालिया गढ़ाते हो तो इंतहाई मज़ा आता है और करो...

मैं : हमम्म ऐसा करो तुम उल्टी होके लेट जाओ आज मैं तुमको प्यार करूँगा तुम बस लेटी देखती रहना ठीक है

सलमा : (मेरे उपर से हटकर मेरे साथ उल्टी होके लेट ती हुई) हमम्म

अब वो उल्टी होके लेटी थी और मेरे सामने उसकी दूध जैसी नरम और नाज़ुक पीठ थी. मैं उसके उपर आके लेट गया और उसके गले के पीछे चूमने लगा वो बस आँखें बंद किए लेटी थी.मैं कभी उसके गले पर चूस रहा था कभी काट रहा था मेरे बार-बार काटने पर वो ससस्स ससस्स कर रही थी लेकिन उसने मुझे एक बार भी काटने से नही रोका शायद उसको भी मेरे इस तरह करने से मज़ा आ रहा था फिर मैं धीरे-धीरे नीचे आने लगा और उसकी पीठ को चूस-चूस कर काटने लगा. उसकी पूरी पीठ मेरी थूक से गीली हो गई थी. लेकिन वो बस खामोश होके लेटी थी ओर मज़े से आंखँ बंद किए.

सलमा : जान अपनी और मेरी कमीज़ उतार दो ना. मुझे इनसे उलझल हो रही .है मैं आपका जिस्म अपने जिस्म के साथ जुड़ा हुआ महसूस करना चाहती हूँ.

मैं : ठीक है रूको (मैं जल्दी से खड़ा हुआ और अपने सारे कपड़े जल्दी से उतारने लगा)

सलमा : (गर्दन पीछे करके मुझे कपड़े उतारता हुआ देखती हुई) जान तुम्हारा बदन दिनो-दिन ओर भी सख़्त होता जा रहा है. (मुस्कुराते हुए)

मैं : वो खेत मे काम करता हूँ ना इसलिए....

सलमा : जानते हो अब पहले से भी ज़्यादा मज़ा आता है (मुस्कुराकर आँखें दुबारा बंद करते हुए)

मैने जैसे ही अपने सारे कपड़े उतारे और सलमा के उपर लेटा तो सलमा बोली....

सलमा : जान मेरे भी आप ही उतार दो ना मुझमे अब हिम्मत नही है.

मैने जल्दी से उसको सीधा करके बिस्तर पर ही उठाके बिठाया और उसकी कमीज़ उतारने लगा उसने भी मेरी मदद के लिए अपनी दोनो बाहें हवा मे उठा दी. क्योंकि मैने पहले ही उसकी ब्रा का स्ट्रॅप खोल दिया था इसलिए उसकी कमीज़ के साथ उसकी ब्रा भी उतर गई और उसके बड़े-बड़े ओर सख़्त स्तन उछलकर बाहर आ गये.उसके स्तनाग्र अंगूर की तरह एक दम सख़्त और खड़े थे. जिसे मैं घूर-घूर कर देखने लगा.मुझे इस तरफ घूरता देखकर उसके अपने दोनो हाथ अपने स्तनों पर रख लिए.

सलमा : जान ऐसे मत देखा करो मुझे शरम आती है (मुँह नीचे करके मुस्कुराते हुए)

मैं : कमाल है... मुझसे भी शरम आती है (गौर से उसका चेहरा देखते हुए)

सलमा : अच्छा लो बसस्स खुश (अपने दोनो हाथ हवा मे उठाकर)

मैं : हमम्म चलो अब लेट जाओ

सलमा : जान ये भी उतार दो ना तंग कर रही है (बच्चों जैसी मुस्कान के साथ अपनी सलवार की तरफ इशारा करते हुए)

मैने जल्दी से उसकी सलवार भी उतार दी और वो जल्दी से वापिस उल्टी होके लेट गई शायद वो फिर से वही से शुरू करवाना चाहती थी जहाँ से मैने बंद किया था. इसलिए मैं भी बिना कुछ बोले उसके उपर ऐसे ही लेट गया. इस तरह बिना कपड़े के एक दूसरे के साथ जुड़ते ही हम दोनो के बदन को एक झटका सा लगा जिससे हम दोनो के मुँह से एक साथ आअहह निकल गई. उसकी नितंब बेहद नाज़ुक और मुलायम थी जिसका मुझे पहली बार अहसास हुआ था. क्योंकि पहले मैं हमेशा उसके उपर की तरफ ही लेटता था जब वो सीधी होके लेटी हुई होती थी इसलिए ये अहसास मेरे लिए नया था.

मैं : तुम्हारी नितंब बहुत मुलायम है किसी गद्दे की तरह

सलमा : (आँखें बंद किए ही हँसते हुए) मेरा सब कुछ ही आपका है जान जो चाहे करो.

मैं वापिस थोड़ा नीचे को हुआ और फिर से उसकी पीठ को चूसने चाटने और काटने लगा जिससे फिर से उसके मुँह से ससस्स ससस्स निकल रहा था. अब मैं साइड से हाथ नीचे ले जाकर उसके स्तनों को भी दबा रहा था और उसकी कमर पर अपने होंठ उपर नीचे फिरा रहा था. साथ ही अब मैं नीचे की तरफ जा रहा था जिससे शायद उसका मज़ा बढ़ता जा रहा था .इसलिए वो बार-बार अपनी नितंब की पहाड़ियो को कभी सख़्त कर रही थी कभी उपर को उठा रही थी. तभी मैने सोचा क्यो ना इसकी नितंब पर चूम कर देखूं मैं एक बार उसकी नितंब पर चूम लिया. जिससे उसे एक झटका सा लगा और उसके मुँह तेज़ सस्स्ससस्स निकल गया उसने पलटकर एक बार मुझे देखा फिर बिना कुछ बोले वापिस तकिये पर सिर रख दिया और आँखें बंद कर ली शायद वो भी देखना चाहती थी कि मैं आगे क्या करता हूँ.कुछ देर मैं ऐसे ही उसकी नितंब को चूमता रहा फिर अचानक मैने अपना मुँह खोल कर एक बार हल्के से उसकी नितंब की पहाड़ी को हल्का सा चूस कर काट लिया. जिससे उसको इंतहाई मज़ा आया ओर उसने अपने दोनो हाथ पीछे ले-जाकर मेरा चेहरा पकड़ लिया.

सलमा : आआहह...जाअंणन्न्....

मैं : क्या हुआ अच्छा नही लगा

सलमा : बहुत अच्छा लगा तभी तो बर्दाश्त नही कर पाई.

मैं : फिर हाथ हटाओ अपने

सलमा बिना कुछ बोला उसने मेरे चेहरे के आगे से अपने हाथ हटा दिए और मैं वापिस उसकी नितंब की पहाड़ियो की चूसने और काटने लगा वो बस मज़े से अपना सिर बार-बार तकिये पर मार रही थी और मज़े से ऊओ....आआहह......सस्स्स्ससस्स.....सस्स्स्स्ससस्स..... कर रही थी. अचानक मैने उसकी दोनो नितंब की पहाड़ियो को खोला और उसमे अपना मुँह डालकर उसकी नितंब की छेद पर अपनी ज़ुबान की नोक लगाई और फॉरन सस्स्स्ससस्स आआअहह करते हुए पलट गई और मेरा चेहरा अपने हाथो से पकड़ लिया...

सलमा : जान क्या कर रहे थे पागल हो गये हो वो गंदी जगह होती है

मैं : तुमको मज़ा नही आया

सलमा : बात मज़े की नही है लेकिन सिर्फ़ मेरे मज़े के लिए तुम ऐसी जगह मुझे प्यार करो तो मुझे आपके लिए बुरा लगेगा.

मैं : मैने क्या पूछा है तुमको मज़ा आया या नही....सिर्फ़ हाँ या ना मे जवाब दो

सलमा : (हाँ मे सिर हिलाते हुए)

मैं : बस फिर वापिस उल्टी होके लेट जाओ

सलमा : ठीक है अच्छा आप उंगली से कर लो बॅस लेकिन ज़ुबान नही डालना वहाँ वो गंदी जगह है आपको मेरी कसम है.

मैं : अच्छा ठीक है अब लेट तो जाओ ना...

सलमा बिना कुछ बोले वापिस उल्टी होके लेट गई और मैं अपनी उंगली को अपने मुँह मे डालकर गीली करके वापिस उसकी नितंब को खोल कर अपनी उंगली उसके छेद पर उपर नीचे घुमाने लगा जिससे उसको फिर से मज़ा आने लगा.

मैं : अच्छा लग रहा है?

सलमा : हमम्म्म

मैं ऐसे ही काफ़ी देर सलमा की नितंब के छेद पर उंगली फेरता रहा और उसकी नितंब के मोटे-मोटे पहाड़ो को उपर से चूमता रहा जिसके लिए सलमा ने भी मुझे मना नही किया. वो अपनी आँखें बंद किए बस ससस्स ससस्स और आहह ऊओ कर रही थी. ये मज़ा हम दोनो के लिए एक दम नया था. मैं जब भी सलमा की नितंब के छेद पर अपनी उंगली फेरता तो कभी वो अपने छेद को सख्ती से बंद कर लेती कभी खोल देती जिसको देखकर मुझे भी अच्छा लग रहा था. तभी मैने सोचा क्यो ना इसके अंदर उंगली डाल दूँ इसलिए मैने छेद के खुलने का इंतज़ार किया और जैसे ही उसने अपने छेद को थोड़ा सा ढीला किया तो मैने

अपने नाख़ून तक उंगली उसकी नितंब के छेद मे डाल दी जिससे शायद उससे भी मज़ा आया था उसने ज़ोर आआहह किया और फिर तेज़-तेज़ साँस लेने लगी.

मैं : दर्द तो नही हो रहा

सलमा : बहुत मज़ा आ रहा है जान! उंगली को हल्का-हल्का दबाओ अच्छा लगता है ऐसे करते हो तो.

मैं उसके बोले मुताबिक अपनी उंगली को हल्के-हल्के दबाने लगा. जिससे मेरी उंगली और अंदर तक जाने लगी .गीली होने की वजह से मेरी आधी उंगली उसकी नितंब के अंदर थी जिसको मैं बार-बार अंदर बाहर कर रहा था. तभी मुझे लगा जैसे वो नीचे अपना हाथ लेजा कर अपनी योनी मस्सल रही है शायद इसलिए उसको मज़ा आ रहा था. फिर मैं वापिस उसके उपर लेट गया और उसकी नितंब से अपनी उंगली बाहर निकाल ली. मैने सोचा क्यो ना इसकी नितंब मे अपना लिंग डाल कर देखु कि कैसा लगता है इसलिए मैने ढेर सारा थूक अपने लिंग पर लगाया और थोड़ा थूक और उसकी नितंब पर लगाया और लिंग को मैने जैसे ही नितंब की छेद के निशाने पर रखा सलमा को एक दम झटका सा लगा और वो फॉरन पलट गई.

सलमा : क्या कर रहे थे.

मैं : कुछ नही लिंग डाल कर देख रहा था अंदर.

सलमा : पागल हो गये हो ये इतना बड़ा अंदर नही जाएगा

मैं : अर्रे कोशिश तो करने दो पक्का अगर नही जाएगा तो मैं नही डालूँगा और वैसे भी तुमको उंगली से मज़ा आ रहा था ना तो इसलिए लिंग से भी मज़ा आएगा.

सलमा : नही जान ये बहुत बड़ा है अव्वल तो अंदर जाएगा नही अगर ज़बरदस्ती करोगे तो मुझे बहुत दर्द होगा मैने पहले कभी पिछे लिया नही.

मैं : बस एक बार कोशिश करने दो पक्का अगर दर्द होगा तो नही करूँगा

सलमा : वादा करो जब मैं रोकूंगी तो रुक जाओगे.

मैं : वादा (मुस्कुराते हुए)

सलमा : (बिना कुछ बोले वापिस उल्टी होके लेट ते हुए) हमम्म जान आराम से करना मुझे डर लग रहा है याद रखना आपको कसम दी है

मैं : हाँ हाँ याद है धीरे ही करूँगा

सलमा : अच्छा करो लेकिन बहुत आराम से

उसका सिग्नल मिलते ही मैने अपने घुटनो पर बैठकर फिर से अपने लिंग को निशाने पर रखा और थोड़ा सा लिंग पर दबाव दिया लिंग फिसल कर उपर को चला गया. शायद सलमा सच कह रही थी क्योंकि छेद सही मे बहुत तंग था. मैने फिर से लिंग को निशाने पर रख कर थोड़ा ज़ोर से दबाव दिया लेकिन छेद बिल्कुल भी नही खुल रहा था. मैं वापिस सलमा के उपर लेट गया और सलमा से छेद थोड़ा ढीला करने को कहा उसने हाँ मे सिर हिलाया तो मैं वापिस अपनी जगह पर आके बैठ गया इस बार मैने सोचा क्यो ना झटका लगाया जाए इसलिए मैने फिर से लिंग को निशाने पर रखा और नितंब को अच्छे से दोनो हाथ से फैला दिया अब मैं एक हल्का सा झटका मारा जिससे आधी टोपी लिंग की अंदर चली गई और सलमा को शायद दर्द हुआ जिससे उसके मुँह से एक हल्की सी सस्स्सस्स निकल गई मगर वो फिर भी खामोश रही. अब मैं धीरे-धीरे झटके मारने लगा और लिंग का दबाव छेद पर डालने लगा मगर जब भी मैं दबाव छेद पर डालता तो सलमा छेद को टाइट कर लेती थी जिससे मुझे अंदर डालने मे परेशानी हो रही थी.मैं वापिस सलमा पर लेटा और सलमा से कहा...

मैं : ऐसे तो नही जा रहा तुम थोड़ा ढीला करो छेद को और अब मैं हल्के से झटका दूँगा तुम चिल्लाना मत. नही तो सब उठ जाएँगे.

सलमा : (हाँ मे सिर हिलाते हुए पास पड़ा अपना दुपट्टा अपने मुँह के पास रख लिया) हमम्म करो लेकिन जान ज़्यादा ज़ोर से झटका ना देना वरना दर्द होगा मुझे.

मैं : अच्छा फिकर मत करो.

मैं अब वापिस अपनी जगह पर आया और लिंग पर फिर से ढेर सारा थूक लगाया और लिंग को छेद पर रखा सलमा ने भी इस बार छेद को ढीला छोड़ा हुआ था.मैने फिर से नितंब की पहाड़ियो को दोनो तरफ फैलाया और लिंग को इस बार ज़रा ज़ोर से झटका दिया जिससे लिंग की टोपी अंदर चली गई और सलमा को एक झटका सा लगा जिससे वो थोड़ा उपर को हो गई और उसने अपना दुपट्टा अपने मुँह पर ज़ोर से दबा लिया .उसने अपना हाथ पिछे करके मुझे रुकने का इशारा किया. मैं वैसे ही लिंग नितंब मे डाले कुछ देर के लिए रुक गया और सलमा के अगले इशारे का इंतज़ार करने लगा. जब उसका दर्द कम हो गया तो उसने अपना मुँह दुपट्टे मे छिपाये ही हाँ मे सिर हिलाया मैने फिर से लिंग बाहर निकाला और उस पर थूक लगाके अंदर कर दिया और फिर धीरे-धीरे मैं झटके लगाने लगा. सलमा का मुझे चेहरा नही दिख रहा था लेकिन शायद उसको दर्द हो रहा था क्योंकि वो बार-बार अपना सिर तकिये पर दाए-बाए मार रही थी और चेहरा दुपट्टे से छिपा रखा था इधर मेरा भी आधा लिंग उसकी नितंब मे जा चुका था और मैं अपने आधे लिंग को ही सलमा की नितंब मे अंदर-बाहर कर रहा था. कुछ देर बाद सलमा की आवाज़ आई...

सलमा : जान अब बस करो ... अब मैं आपके उपर आती हूँ ऐसे करने मे मुझे बहुत दर्द हो रहा है.

मैं बिना कुछ बोले उसके उपर से हट गया और मेरा लिंग पक्क की आवाज़ के साथ उसकी नितंब से बाहर आ गया. अब मैं नीचे लेट गया ओर सलमा मेरे उपर आ गई उसका पूरा चेहरा पसीना से गीला हुआ पड़ा था और एक दम लाल हुआ पड़ा था. उसके उपर आते ही हम दोनो ने एक दूसरे को देखा और दोनो ही मुस्कुरा दिया फिर उसने मेरे लिंग को पकड़ा जो छत की तरफ मुँह किए पूरी तरह खड़ा था. जिसको उसने हाथ से पकड़ कर पहले देखा फिर एक धीरे से थप्पड़ मेरे लिंग पर मार दिया और मेरी तरफ मुस्कुराकर देखने लगी. अब उसने मेरे लिंग को मुँह मे लेके अच्छे से चूसा और ढेर सारा थूक मेरे लिंग पर लगाया और कुछ थूक उसने खुद अपनी नितंब मे भी लगाया फिर आँखें बंद करके धीरे-धीरे मेरे लिंग पर बैठने लगी

उसके चेहरे से साफ पता चल रहा था कि उसको बहुत दर्द हो रहा है लेकिन फिर भी वो लिंग को धीरे - धीरे अंदर लेने लगी और जब आधे से थोड़ा सा ज़्यादा लिंग अंदर चला गया तो उसने एक बार नीचे मुँह करके लिंग को देखा और फिर मेरी छाती पर अपने दोनो हाथ रख कर उपर-नीचे होने लगी मुझे उसके ऐसा करने से बे-इंतेहा मज़ा मिल रहा था और मैने मज़े से आँखें बंद की हुई थी तभी कुछ झटको के बाद वो एक दम से मेरे उपर लेट गई और अपने रसीले होंठ फिर से मेरे होंठ पर रख कर चूसने लगी. मैं आँखें बंद किए लेटा रहा ओर

वो मेरे होंठ चुस्ती रही तभी उसने ज़ोर दार थप्प के साथ अपनी नितंब को मेरे लिंग पर दबाया और वो मेरे लिंग पर बैठ गई. जिससे मेरा पूरा लिंग उसकी नितंब मे एक दम से चला गया.

कुछ देर वो ऐसे ही पूरा लिंग अपनी नितंब मे लिए मेरे उपर लेटी रही और मेरे होंठ चुस्ती रही फिर धीरे-धीरे उसने हिलना शुरू किया और अब वो मेरे लिंग को टोपी तक बाहर निकालती और फिर से पूरा एक ही बार मे अंदर डाल लेती काफ़ी देर तक वो ऐसे ही करती रही फिर उसकी शायद टांगे थक गये थी इसलिए उसने अपने होंठ मेरे होंठों से हटा कर मुझे उपर आने को कहा तो मैं बिना कुछ बोले उसको कमर से पकड़ कर बैठ गया और फिर उसको ऐसे ही पलट दिया लिंग जैसे अंदर था वैसे ही रहा अब मैं उपर था और वो नीचे. अब मैने धीरे -धीरे झटके देने शुरू कर दिए कुछ देर वो झटके बर्दाश्त करती रही फिर शायद उसको दर्द होने लगा था इसलिए उसने खुद ही हाथ नीचे ले-जाकर लिंग को नितंब से बाहर निकाला और अपनी योनी मे डाल दिया. अब उसका इशारा समझते हुए मैने उसकी योनी मे झटके लगाने शुरू कर दिए उसने अपनी दोनो बाजू मेरी गर्दन पर लपेट ली और अपनी दोनो टांगे मेरी कमर पर रख ली जिससे हम दोनो एक दूसरे से चिपक से गये थे कुछ देर बाद ही मेरे झटको मे खुद ही तेज़ी आ गई और उसके मुँह से सस्सस्स सस्सस्स ऊहह आआहह जैसे लफ्ज़ निकलने लग गये कुछ तेज़ झटको के साथ पहले वो फारिग हुई और उसके कुछ ही देर बाद मैं भी उसके अंदर ही फारिग हो गया और उसके उपर ही लेटा साँस लेने लगा. हम दोनो पसीने से बुरी तरह नहाए हुए थे और दोनो की साँसे बहुत तेज़ चल रही थी. कुछ देर हम ऐसे ही एक दूसरे की आँखो मे देखते रहे सलमा बार - बार मुझे देखते हुए मेरे होंठों को चूम रही थी.

मैं : मज़ा आया...

सलमा : (बिना कुछ बोले आँखें बंद करके मेरे होंठ चूमते हुए) पूछने की ज़रूरत है

मैं : बताओ ना पिछे वाले मे आया कि नही...

सलमा : (अपनी आँखें खोलकर मेरा चेहरा अपने दोनो हाथो से पकड़ते हुए) मज़ा....मेरी जान निकल गई थी तुमको मज़े की पड़ी है. जानते हो कितना दर्द हुआ था.... अब फिर से करने को कभी मत कहना....जाने कहाँ से ऐसे उल्टे ख्याल तुमको आते है और तुम्हारी फरमाइश पूरी करने के चक्कर मे मेरी जान निकलने को हो जाती है.

मैं : हम करते हैं तो और लोग भी तो करते होंगे ना

सलमा : करते होंगे ! उनको करने दो पर हम नही करेंगे.

मैं : (रोने जैसा मुँह बनाते हुए) लेकिन क्यूँ....?

सलमा : (अपना हाथ नीचे ले जा कर मेरा लिंग पकड़ते हुए) इसका साइज़ देखा है जो लोग पिछे करते हैं उनके शौहर का ये इतना बड़ा नही होता समझे...

मैं : (उदास मुँह बनके) ठीक है नही करेंगे

सलमा : (चिड़ते हुए) जान तुम्हारी यही आदत मुझे पसंद नही या तो तुम्हारी हाँ मे हाँ मिलाओ... अगर ना बोलती हूँ तो गंदा सा मुँह बना लेते हो

मैं : हाँ तो मैने क्या कहा है ?ठीक है नही करेंगे ना बस बात ख़तम. (गुस्से जैसा मुँह बनाके उठ कर बैठ ते हुए)

सलमा : (उठ कर मेरी टाँग पर बैठ ते हुए मेरे चेहरा अपनी तरफ करके) मेरी जान मुझसे नाराज़ है

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) नही....

सलमा : अच्छा कर लेना जब दिल करे नही रोकूंगी. अब तो हँस कर दिखाओ तुम जानते हो तुम हँसते हुए ही अच्छे लगते हो (मुस्कुराकर)

मैं : (मुस्कुराकर सलमा के होंठ चूमते हुए) तुम भी हँसती हुई बहुत अच्छी लगती हो.

सलमा : जान चलो अब बहुत देर हो गई है नीचे चलते हैं.

मैं : रूको ना जान एक बार और करेंगे ना

सलमा : पागल हो गये हो आज नही...... वैसे भी हम बहुत देर से यहाँ है. जान बात को समझो ना मैं मना थोड़ी करती हूँ .बस अब काफ़ी वक़्त हो गया है और वैसे भी तुमने भी तो सुबह खेत पर जाना है ना अगर सोओगे नही तो बीमार पड़ जाओगे इसलिए अब हम दोनो जाके बस सोएंगे ठीक है. (मुस्कुराकर)

मैं : हमम्म ठीक है चलो कपड़े पहन लेते हैं और नीचे चलते हैं.....

उसके बाद हम दोनो ने कपड़े पहने ओर अपने-अपने कमरे मे आ गये सलमा ने अपने कमरे की कुण्डी खोली और मैं बस उसको अंदर जाते हुए देख रहा था उसने भी एक बार पलटकर मुझे देखा और एक प्यारी सी मुस्कान के साथ अपने होंठों को चूमने जैसे किया जैसे वो मुझे चूम रही हो और फिर जल्दी से अंदर चली गई मैं भी चुप-चाप अपने कमरे मे आया तो बाबा को सोता हुआ देखकर चुप चाप अपने बिस्तर पर आके लेट गया और जल्दी ही मुझे नींद ने अपनी आगोश मे ले लिया.

१६

अगली सुबह मैं उठा ओर रोज़ की तरह तैयार होके खेत चला गया.आज मैं अकेला ही खेत मे था,क्योंकि जास्मिन की नींद देर से खुली थी रात की दवाई की वजह से. इसलिए मैने उसे अपना साथ खेत पर लाना मुनासिब नही समझा और उसको घर पर ही छोड़ आया.ताकि वो और सलमा मिलकर मेरा कमरा तैयार कर सके और जास्मिन भी घर मे रहकर सलमा के कामो मे मदद कर सके. आज खेत मे मुझे भी कोई खास काम नही था.बस नयी फसल उगाने के लिए खेत को पानी लगाने का काम था .जो मैने दुपेहर तक मुकम्मल पूरा कर दिया और अब मैं खाली बैठा था.इसलिए मैने भी घर वापिस जाने का मन बना लिया और मैं भी जल्दी ही घर आ गया. अभी मैं घर आ ही रहा था कि मुझे दूर से घर के बाहर कुछ गाड़िया खड़ी नज़र आई. जाने क्यो लेकिन उन गाडियो का काफिला देखकर मुझे एक अजीब सी बेचैनी होने लगी और मैं तेज़ कदमो के साथ घर की तरफ बढ़ गया. घर मे जाते ही मुझे कुर्सी पर कुछ लोग बैठे नज़र आए.

उनमे से एक है इंस्पेक्टर उमेश चौहान.यह एक ईमानदार पुलिस वाला है.जो ज़ुर्म और मुजरिम से सख़्त नफ़रत करता है. इसकी जिंदगी का मकसद सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़ुर्म को ख़तम करना है.

चौहान : (मुझे देखकर) आइए जनाब !हमारी तो आँखें तरस गई आपके दीदार के लिए और आप यहाँ डेरा डाले बैठे हैं.

मैं : (कुछ ना समझने वाले अंदाज़ मे) जी आप लोग कौन है ?और यहाँ क्या कर रहे हैं?

चौहान : (कुर्सी से खड़े होते हुए) अर्रे क्या यार उस्मान ! अपने पुराने दोस्त को इतनी जल्दी भूल गये और ये क्या मूछे क्यो साफ करदी तुमने.... चलो अच्छा है ऐसे भी अच्छे दिखते हो. (मुस्कुराते हुए आँख मारकर)

मैं : जी कौन उस्मान ? किसका दोस्त ? मैं तो आपको नही जानता.

चौहान : हमम्म तो तुम उस्मान नही हो ? फिर ये कौन ? है.(टेबल पर पड़ी तस्वीरो की तरफ इशारा करते हुए)

मैं : (बिना कुछ बोले तस्वीरे उठाके देखते हुए) ये तो एक दम मेरे जैसा दिखता है (हैरान होते हुए और अपने चेहरे पर हाथ फेरते हुए)

चौहान : अच्छा ! ये नया नाटक शुरू कर दिया. ये तुम जैसा नही दिखता, तुम ही हो समझे !अब अपना ड्रामा बंद करो.

बाबा : साहब जी मैने कहा ना ये मेरा बेटा सुजल है. कोई उस्मान नही है.आपने जो तस्वीरे दिखाई है वो बस मेरे बेटे का हम शक़्ल है और कुछ नही. ये मासूम बहुत सीधा-साधा हैं कोई अपराधी नही है ये.

चौहान : आप चुप रहिए (उंगली दिखाते हुए) मैने आपसे नही पूछा.

मैं : (चौहान का कॉलर पकड़ते हुए)ओये तमीज़ से बात कर समझा.... अगली बार मेरे बाबा को उंगली दिखाई तो हाथ तोड़ दूँगा तेरा.

चौहान : (हँसते हुए)अर्रे इतना गुस्सा ! अच्छा भाई नही कहते कुछ आपके बाबा को..... देखो पांडु तेवर देखो इसके वही गुस्सा वही नशीली आँखें.... और ये लोग कहते हैं ये उस्मान नही है.

बाबा : सुजल हाथ नीचे करो ये बड़े साहब है.तमीज़ से पेश आओ (गुस्से से)

मैं : जी माफ़ कर दीजिए (नज़रे झुका कर हाथ कॉलर से हटा ते हुए)

चौहान कभी बाबा को और कभी मुझे बड़ी हैरानी से बार-बार देख रहा था और मुस्कुरा रहा था. लेकिन मुझे कुछ भी समझ नही आ रहा था.

चौहान : वाह भाई क्या रौब है. वो भी उस्मान पर....(हैरान होते हुए) मैने तो सुना था,वो आदमी पैदा नही हुआ जो उस्मान को झुका सके (अपने साथ वाले पुलिस वाले को देखते हुए)

मैं : (अपने हाथ जोड़ते हुए) देखिए जनाब मेरे बाबा की तबीयत ठीक नही है! आप मेहरबानी करके यहाँ से जाइए.

चौहान : चले जाएँगे मेरी जान. इतनी भी क्या जल्दी है.पहले तसल्ली तो कर लूँ.

मैं : कैसी तसल्ली ?

चौहान : अगर तुम उस्मान नही हो तो अपनी कमीज़ उतारो. क्योंकि हम जानते हैं कि उस्मान के कंधे के पिछे एक शेर का टट्टू गुदा हुआ है.

मैं : अगर नही हुआ तो फिर आप यहाँ से चले जाएँगे.

चौहान : जी बिल्कुल हज़ूर ! आप बस हमारी तसल्ली करवा दे.फिर हम आपको चेहरा तक नही दिखाएँगे.

मैं : ठीक है (कमीज़ उतारते हुए) देख लीजिए और तसल्ली कर लीजिए. (मैं नही जानता था कि मेरी पीठ पर इस क़िस्म का कोई निशान है भी या नही इसलिए मैने चौहान के कहने पर फॉरन कमीज़ उतार दी)

चौहान : (चारो तरफ मेरे गोल-गोल घूमते हुए) हमम्म (मेरे कंधे पर हाथ रखकर) तू शातिर तो बहुत है !लेकिन आज फँस गया बच्चे.तेरा शेर ही तुझे मरवा गया..... हाहहहहहाहा (तालियाँ बजाते हुए)

मैं : जी ! क्या मतलब ? (घूमकर चौहान की तरफ देखते हुए)

चौहान : तूने मुझे भी इन भोले गाँव वालो की तरह चूतिया समझा है, जो तेरी बातो मे आ जाऊंगा.

मैं : मैं आपका मतलब नही समझा.आप कहना क्या चाहते हैं.

चौहान : मतलब तो हवालात मे, मैं तुझे अच्छे से समझाऊंगा.

बाबा : (खड़े होते हुए) देखिए जनाब ये मेरा बेटा सुजल ही है. सिर्फ़ शक़्ल एक जैसी हो जाने से करम एक जैसे नही होते हैं.ये बिचारा तो खेत मे मेहनत करता है.बहुत सीधा

लड़का है.कभी किसी से ऊँची आवाज़ मे बात भी नही करता. मेरी हर बात मानता है.आप गाँव मे किसी से भी पूछ लीजिए, बहुत भला लड़का है इसने कोई गुनाह नही किया.

चौहान : (मुझे कंधो से पकड़कर घूमाते हुए) ये देखिए जनाब ! आप जिसे अपना बेटा कह रहे थे वो एक अंडरवर्ल्ड का मोस्ट वांटेड गैंगस्टर उस्मान है. इसने बहुत से लोगो का क़त्ल किया है .ये इतना शातिर है किसी इंसान की जान लेने के लिए इसको किसी हथियार की भी ज़रूरत नही. हर तरह का हथियार चला लेता है ये. इसका सटीक निशाना इसकी अंडरवर्ल्ड मे पहचान है. अब इस टॅटू और ये गोलियों के निशान को देखकर तो आपको तसल्ली हो गई होगी कि ये आपका बेटा सुजल नही बल्कि उस्मान है. जिसको हम इतने महीनो से ढूँढ रहे हैं.

बाबा : देखिए साहब ! मैं आपको सब सच-सच बता दूँगा. लेकिन आपको वादा करना होगा कि आप ये बात किसी को नही बताएँगे.

चौहान : (कुर्सी पर वापिस बैठ ते हुए) मैं सुन रहा हूँ कहिए क्या कहना है आपको.

जब बाबा ने इंस्पेक्टर चौहान को मेरे बारे मे बताना शुरू किया तो मैं भी उनके पास ही कमीज़ पहनकर बैठ गया. क्योंकि अक्सर मैं जब भी जास्मिन और सलमा से अपने बारे मे कुछ भी पूछता तो वो अक्सर टाल जाती और मुझे मेरे बारे मे सच नही बताती और मेरे सीने पर जो निशान थे वो गोलियो के थे ये बात भी मुझे आज ही पता चली थी. क्योंकि जास्मिन और सलमा ने मुझे यही बताया था कि मुझे आक्सिडेंट मे चोट लगने से ये सीने पर निशान मिले थे. अब आख़िर मुझे भी अपने आपको जानना था कि मैं कौन हूँ और मेरा सच क्या है. तभी बाबा ने पहले सलमा को और फिर जास्मिन को एक साथ आवाज़ देकर बाहर बुलाया. दोनो मुँह को ढक कर बाहर आ गई और जहाँ मैं बैठा था मेरे पिछे आके चुप-चाप खड़ी हो गई. मैने पलटकर दोनो को एक नज़र देखा और फिर सीधा होके बैठ गया.

बाबा : बेटा इंस्पेक्टर साहब को सुजल के बारे मे सब सच-सच बता दो.

सलमा : लेकिन बाबा वो....मैं...वो..... (कुछ सोचते हुए)

चौहान : जी आप घबराइये नही! खुलकर बताइए मैं जानना चाहता हूँ कि आप मुझे क्या सच बताना चाहती है.

सलमा : (एक लंबी साँस छोड़ते हुए) ठीक है साहब !लेकिन वादा कीजिए कि उसके बाद आप सुजल को कुछ नही कहेंगे.

चौहान : (अपना कोट सही करते हुए) मैं कोई वादा नही करूँगा लेकिन हाँ अगर ये बे-गुनाह है तो इससे कुछ नही होगा.

सलमा : ठीक है साब.....जास्मिन जाओ ! वो बॅग ले आओ जो हमने छुपा कर रखा था.

जास्मिन : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) अच्छा भाभी...

ये सुनकर मुझे भी झटका लगा कि ये कौनसे बॅग के बारे मे बात कर रही है.जिसके बारे मे मैं नही जानता और इन्होने मुझे कभी क्यो नही बताया. फिर सलमा ने बोलना शुरू किया "साब हमे नही पता सुजल का असल नाम क्या है और ये कौन है. हाँ ये सच है कि हमारा इससे ज़ाति कोई ताल्लुक नही है. हम को जब ये मिला तो ये बुरी तरह खून मे लथ-पथ था और इसे पाँच गोलियाँ लगी हुई थी और अपनी आखरी साँसे गिन रहा था.इसको हम इंसानियत के नाते घर ले आई फिर इसकी गोलियाँ निकाली और इसकी मरहम पट्टी करके इसका इलाज किया. तीन महीने तक ये बेहोश था उसके बाद इसको होश आया लेकिन तब तक ये अपनी याददाश्त खो चुका था और इससे अपने बारे मे कुछ भी याद नही था." (तभी जास्मिन एक काला बॅग ले आई)

जास्मिन : ये लो भाभी. (बॅग सलमा को देते हुए)

सलमा : (जास्मिन को देखते हुए) टेबल पर रख दो बॅग को.... (घूमकर चौहान से बात करते हुए) सहब हमें ये बॅग सुजल के कंधे पर लटका मिला था.ये बेहोश था इसलिए हमने इसकी अमानत को संभाल कर रख दिया था (बॅग खोलते हुए) जब हमने इसके बारे मे मालूम करने के लिए बॅग खोला तो इसमे ये हथियार और ये ढेर सारे पैसे पड़े मिले. ये देखकर हम एक बार तो घबरा गई थी कि जाने ये कौन है और इसके पास ऐसा समान क्या कर रहा है.लेकिन फिर भी इंसानियत के नाते हमारा ये फ़र्ज़ था कि हम इसकी जान बचाते

इसलिए हमने पुलिस मे खबर ना करके पहले इसको बचाना ज़रूरी समझा... हमने सोचा था क़ि जब ये होश मे आ जाएगा तो इसको हम जाने के लिए कह देंगे.

चौहान : (बॅग मे देखते हुए) वाआह !क्या बात है ! इतना सारा पैसा, ये ऑटोमॅटिक हथियार...और आप लोग कहते हैं कि ये उस्मान नही है.

सलमा : जनाब मेरी पूरी बात तो सुन लीजिए वही तो मैं आपको बता रही हूँ.... जब ये हमे मिला तो बहुत बुरी तरह ज़ख़्मी था मैं और जास्मिन (उंगली से जास्मिन की तरफ इशारे करते हुए) इसको उठाकर अपने घर ले आई थी ताकि इसकी जान बचाई जा सके. ३ महीने तक ये बेहोश पड़ा रहा. उसके बाद जब ये होश मे आया तब इसने पहला लफ्ज़ जो बोला वो था "बाबा आपका बेटा आ गया..." जब बाबा इसके पास गये तो इनके परिवार के बारे मे और इनका नाम पूछा. लेकिन इसको कुछ भी याद नही था .ये सब कुछ भूल चुका था, क्योंकि इसके सिर मे काफ़ी गहरी चोट आई थी इसलिए.

मेरे शौहर भी एक शराबी और जुवारि किस्म के इंसान है और वो आज कल जेल मे सज़ा काट रहे हैं. बाबा हमेशा मेरे शौहर से दुखी रहते हैं .लेकिन जब इसने मेरे ससुर को (बाबा की तरफ इशारा करते हुए) बाबा कहा तो बाबा का दिल पिघल गया और इन्होने सुजल को अपना बेटा बना लिया.बाबा ने हम से कहा कि इसको पिछला कुछ भी याद नही है और जाने ये कौन है ? तो क्यो ना इसको हम अपना लें और ये हमारे ही घर मे रहे. क्योंकि बाबा को इसमे अपना बेटा नज़र आता है, जैसा बेटा वो हमेशा से चाहते थे. तब से लेके आज तक ये इस घर का बेटा बनकर, एक बेटे के सारे फ़र्ज़ निभा रहा है. हमें नही पता कि इनके अतीत मे ये कौन थे और इन्होने क्या किया है. लेकिन आज की तारीख मे ये एक मेहनती इंसान है जो अपना खून-पसीना एक करके अपने परिवार का पेट भरने के लिए के लिए दिन रात खेत मे मेहनत करता है. आज ये एक मासूम इंसान है कोई अपराधी नही. जनाब आपका मकसद तो ज़ुर्म को ख़तम करना है ना ! तो इनके अंदर का उस्मान तो कब का मर चुका है क्या आप एक मासूम इंसान को एक अपराधी की सज़ा देंगे?

चौहान : आपने जो किया वो इंसानियत की नज़र से क़ाबिल-ए-तारीफ है. लेकिन जिसको आप एक भोला-भला मासूम इंसान कह रही हो वो एक पेशावर अपराधी है. आज मैं इसको छोड़ भी दूं तो कल अगर इसकी याददाश्त वापिस आ गई तो इसकी क्या गारंटी है कि ये अपनी दुनिया मे वापिस नही जाएगा और कोई गुनाह नही करेगा.आप नही जानती इसने कितने लोगो का क़त्ल किया है.ये आदमी बहुत ख़तरनाक है.इसको मैं ऐसे खुला नही छोड़ सकता.

बाबा : साहब मैं मानता हूँ कि औलाद के दुख ने मुझे ख़ुदग़र्ज़ बना दिया था. लेकिन ये बुरा इंसान नही है.... मैं आपसे वादा करता हूँ कि अगर अब ये कोई भी गुनाह करे तो आप मुझे फाँसी पर चढ़ा देना. सुजल मेरा बेटा है इसकी पूरी ज़िम्मेदारी मैं लेता हूँ (मेरा हाथ पकड़कर)

चौहान : (अपने सिर पर हाथ फेरते हुए) पता नही मैं ठीक कर रहा हूँ या ग़लत.लेकिन फिर भी मैं इसको एक मोक़ा ज़रूर दूँगा.

बाबा, जास्मिन, सलमा : (एक आवाज़ मे अपने हाथ जोड़कर) आपका बहुत अहसान होगा साहब.

चौहान : अहसान वाली कोई बात नही.बस इसको कल मेरे साथ एक बार शहर चलना होगा.मैं डॉक्टर से इसके दिमाग़ का चेक-अप करवाना चाहता हूँ साथ मे इसका लाइ डिटेक्टोर टेस्ट भी करूँगा. क्योंकि मुझे आप पर तो भरोसा है लेकिन इस पर नही.

सलमा : किस बात का चेक-अप साहब (हैरानी से) और ये लाई क्या है (सलमा को लाइ डिटेक्टोर कहना नही आया)

चौहान : लाइ डिटेक्टोर टेस्ट से हम ये पता कर सकते हैं कि इंसान झूठ बोल रहा है या सच और इसका चेक-अप मैं इसलिए करवाना चाहता हूँ कि मुझे जानना है इसकी याददाश्त कब तक वापिस आएगी.उसके बाद इसको मेरी मदद करनी होगी.

मैं : (जो इतनी देर से खामोश सब सुन रहा था) कैसी मदद साहब.

चौहान : तुमको क़ानून से माफी इतनी आसानी से नही मिलेगी इसके बदले मे तुमको हमारी मदद करनी होगी तुम्हारे बाकी गँग वालो को पकड़वाने मे.

मैं : ठीक है साहब अब जो भी है यही मेरे अपने है और इनके लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ.

चौहान : तो ठीक है फिर अभी मैं चलता हूँ. सुबह मुलाक़ात होगी तैयार रहना और हाँ अगर भागने की कोशिश की तो याद रखना मुजरिम को पनाह देने वाला भी मुजरिम ही होता है.

तुम्हारे घरवालो ने तुम्हारी गारंटी ली है.अगर तुम भागे तो तुम सोच नही सकते मैं इनका क्या हाल करूँगा.

बाबा : ये कही नही जाएगा साहब ! आप बे-फिकर होके जाए.... मैने कहा ना,मैं इसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ.

चौहान : ठीक है फिर मैं चलता हूँ.

मैं : चौहान साहब ये बॅग भी ले जाइए ये अब मेरे भी काम का नही है.

चौहान : (हैरान होते हुए) लगता है उस्मान सच मे मर गया.

उसके बाद चौहान और उसके साथ जो पुलिस वाले आए थे वो सब मेरा बॅग लेकर चले गये और हम सब उनको जाता हुआ देखते रहे. फिर बाबा ने मुझे अपने गले से लगा लिया और सलमा और जास्मिन मुझे देखकर मुस्कुरा भी रही थी और साथ मे रो भी रही थी. मैं भी उनको देखकर मुस्कुरा रहा था.

बाबा : बेटा हमें माफ़ करना हमने तुमसे तुम्हारी असलियत छुपाइ.

मैं : बाबा कैसी बात कर रहे हैं. माफी माँग कर शर्मिंदा ना करे मुझे. आपने जो मेरे लिए किया उसका अहसान मैं मरते दम तक नही चुका सकता.

बाबा : (मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे दुआ देते हुए) बेटा तुम हमेशा खुश रहो और आबाद रहो.

फिर बाबा अपने कमरे मे चले गये और मैं सलमा और जास्मिन के पास ही बैठ गया. वो दोनो मुझे लगातार देख रही थी लेकिन कुछ बोल नही रही थी.

मैं : ऐसे क्या देख रही हो तुम दोनो.

सलमा : कुछ नही आज एक पल के लिए लगा जैसे हमने तुमको खो दिया (फिर से रोते हुए)

मैं : अर्रे तुम रोने क्यो लगी (सलमा के दोनो हाथ पकड़ते हुए और जास्मिन की तरफ देखकर) जास्मिन पानी लेके आओ

जास्मिन : अभी लाई.

जास्मिन के जाते ही सलमा ने मुझे गले से लगा लिया और फिर से रोने लगी !

मैं : अर्रे क्या हुआ रोने क्यो लग गई.

सलमा : जान तुम नही जानते मैं बहुत डर गई थी.

मैं : इसमे डरने की क्या बात है. मैं हूँ ना तुम्हारे पास कहीं गया तो नही और फिकर ना कर. अब मैं कही जाऊंगा भी नही.अब सारी जिंदगी मैं सुजल ही रहूँगा.

इतने मे जास्मिन पानी ले आई और हम दोनो जल्दी से अलग होके बैठ गये. उसके बाद कोई खास बात नही हुई रात को हमने खामोशी से खाना खाया और सोने चले गये. जास्मिन की नींद की दवाई की वजह से तबीयत खराब हो गई थी. इसलिए सलमा ने दुबारा उसको वो गोली नही दी और उस रात हम सब सुकून से सो गये. बाबा ने मुझे जास्मिन के कमरे मे नही सोने जाने दिया और अपने पास ही सुलाया.

१७

अगले दिन सुबह जब मैं उठा तो सब जाग रहे थे. जास्मिन और सलमा रसोई मे थी और बाबा बाहर सैर कर रहे थे. मैं जब उठकर बाहर आया तो जास्मिन और सलमा नाश्ता बना रही थी और साथ ही सलमा जास्मिन के पास खड़ी उसको कुछ समझा रही थी.

मैं : अर्रे आज इतनी जल्दी नाश्ता कैसे बना लिया.

सलमा : अर्रे भूल गये ! तुमने आज शहर जाना है ना इसलिए,तुम्हारे लिए बनाया है. जाओ तुम जल्दी से नहा कर तैयार हो जाओ फिर मैं नाश्ता लगा देती हूँ.

मैं : लेकिन शहर जाना क्यों है ? मैं नही जाऊंगा शहर. मुझे खेत मे काम है.

सलमा : खेत की तुम फिकर ना करो एक दिन नही जाओगे तो आसमान नही टूट जाएगा. पहले तुम शहर जाओ और चौहान के साथ जाके अपना इलाज करवाओ.उनका सुबह आदमी आया था.वो कह रहा था कि चौहान साहब ८ बजे तुमको लेने आएँगे.

मैं : मुझे उससे कोई वास्ता नही रखना मैं नही जाऊंगा.

सलमा : बच्चों जैसे ज़िद्द ना करो सुजल. मैं भी तो हूँ तुम्हारे साथ.

मैं : तुम भी... क्या मतलब

सलमा : अर्रे मैं भी तुम्हारे साथ ही चलूंगी. वापसी मे हम दोनो साथ ही आएँगे.

जास्मिन : (बीच मे बोलते हुए) देखो ना सुजल ! मैं मना कर रही हूँ भाभी को.लेकिन ये सुन ही नही रही. इस हालत मे इनका शहर जाना ठीक है क्या ! मैने तो कहा है तुम्हारे साथ मैं अकेली ही चली जाऊंगी लेकिन नही मेरी बात ही नही सुन रही.

मैं : तुम दोनो ही खामोश हो जाओ और अपना काम करो. कोई शहर नही जाएगा ना तुम ना मैं ! समझी.

अभी हम बात ही कर रहे थे कि एक जीप हमारे दरवाज़े के सामने आके रुक गई. जिसमे से चौहान बाहर निकला और बाहर खड़ा होके दरवाज़ा खट-खटाने लगा.

मैं : कौन है (दरवाज़े की तरफ देखते हुए)

चौहान : जल्दी चलो लेट हो रहा है.

मैं : (रसोई से बाहर निकलते हुए) जी साहब आप

चौहान : अर्रे तुम अभी तक तैयार नही हुए ?

मैं : मुझे कही नही जाना मैं यही रहूँगा.

चौहान : अर्रे तुमको अरेस्ट नही कर रहा हूँ ! तुमको बस डॉक्टर को दिखाना है और शाम तक वापिस घर छोड़ जाऊंगा और कुछ नही. डरो मत कुछ करना होता तो कल ही तुम्हारा नंबर लग जाना था.

मैं : लेकिन चौहान साहब मैं एक दम ठीक हूँ. फिर आप मुझे शहर क्यो ले जा रहे हैं और वैसे भी बिना याददाश्त के मैं आपके किस काम का हूँ बताओ.

चौहान : अर्रे अजीब पागल आदमी है ये (जास्मिन की तरफ देखते हुए) अब आप ही समझाइये इसको मैं बाहर वेट कर रहा हूँ १० मिनिट मे तैयार होके बाहर आ जाओ.

जास्मिन : हाँ सुजल ये ठीक कह रहे हैं. ज़रा ये भी तो सोच तुम ठीक हो जाओगे इलाज करवाने से फिर तुमको जो घबराहट से चक्कर आते हैं वो भी आना बंद हो जाएँगे.

मैं : लेकिन जास्मिन अब भी तो मैं ठीक ही हूँ ना.

जास्मिन : बहस ना करो जैसा कहती हूँ चुप-चाप करो और फिर तुम डर क्यो रहे हो मैं भी तो चल रही हूँ तुम्हारे साथ.

चौहान : हाँ ये ठीक रहेगा आप भी साथ ही चलो.

जास्मिन : (खुश होते हुए) मैं अभी तैयार होके आती हूँ.चलो सुजल तुम भी जाओ और जाके तैयार हो जाओ.

इतने मे बाबा आ गये सैर करके जिनको चौहान ने अदब से सलाम किया और फिर बाबा को मेरे शहर ना जाने के बारे मे बताया तो बाबा के इसरार पर मैं शहर जाने के लिए राज़ी हो गया और फिर मैं और जास्मिन, इंस्पेक्टर चौहान के साथ उसकी जीप मे बैठकर शहर के लिए रवाना हो गया. सलमा दरवाज़े पर खड़ी मुझे देखती रही हो और मुस्कुराकर हाथ हिलाकर अलविदा कहती रही. जीप मे बैठ ते ही चौहान के सवाल-जवाब शुरू हो गये.

चौहान : यार उस्मान ! कल तुम्हारे पास इतना अच्छा मोका था तुम भागे क्यो नही.

जास्मिन : (बीच मे बोलते हुए) इनका नाम सुजल है, उस्मान नही. बेहतर होगा आप भी इनको सुजल कहकर ही बुलाए.

चौहान : जी माफ़ कीजिए...हाँ तो सुजल साहब रात को आप भागे क्यो नही.

मैं : साहब मैं मेरे परिवार को छोड़कर कैसे जा सकता था.

चौहान : परिवार....हाहहहाहा अच्छा है...वैसे तुम मेरे पहले इम्तिहान मे पास हो गये हो अब मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ.

मैं : जी कौनसा इम्तेहान

चौहान : कल मेरे आदमियो ने पूरे गाव को घेर रखा था. अगर तुम भागने की कोशिश भी करते तो वो लोग तुमको वही भुन देते. लेकिन तुम नही भागे! मुझे अच्छा लगा.

मैं : जब बाबा ने कहा था कि मैं नही जाऊंगा तो कैसे जाता.

चौहान : हमम्म !अब तो बस तुम एक बार ठीक हो जाओ.तो मैं तुम पर अपना दाँव खेल सकता हूँ.

मैं : कौनसा दाँव ?

चौहान: यार तुम जल्दी मे बहुत रहते हो.सबर करो धीरे-धीरे सब पता चल जाएगा.

मैं : अब हम कहाँ जा रहे हैं?

चौहान : पहले तुम्हारा लाइ डिटेक्टोर टेस्ट होगा उसके बाद तुम्हारे चेक-अप के लिए जाएँगे.

मैं : ठीक है.

उसके बाद कोई खास बात नही हुई.पिछे मैं और जास्मिन एक दूसरे के साथ बैठे थे.जास्मिन पूरे रास्ते मेरे कंधे पर अपना सिर रखकर बैठी रही और मेरा हाथ पकड़कर रखा. फिर हम को चौहान एक अजीब सी जगह ले आया जो बाहर से तो किसी दफ़्तर की तरह लग रहा था जहाँ बहुत से मुलाज़िम काम कर रहे थे. फिर हम चलते हुए एक दरवाज़े के पास पहुँच गये.जिसके सामने कुछ नंबर लिखे थे चौहान ने कुछ नंबर दबाए और गेट खुद ही खुल गया. अंदर अजीब सा माहौल था. वहाँ बहुत से लोग बंदूक ताने खड़े थे.मैं और जास्मिन सारी जगह को देखते हुए चौहान के पिछे-पिछे जा रहे थे.

तभी एक पुलिस वाला दौड़ता हुआ आया और मुझ पर हमला कर दिया.चौहान ने जल्दी से जास्मिन को अपनी तरफ खींच लिया जो मेरा हाथ पकड़े चल रही थी. मुझे समझ नही आ रहा था कि ये क्या हुआ. उस पोलिसेवाले ने लात और मुक्के मुझ पर बरसाने शुरू कर दिए.मैं कुछ देर ज़मीन पर लेटा रहा और मार ख़ाता रहा. फिर जाने मुझे क्या हुआ मैने उस पोलिसेवाले का पैर पकड़ लिया और ज़ोर से घुमा दिया. वो हवा मे पलट गया और धडाम से ज़मीन पर गीरा. फिर मैने अपनी दोनो टांगे हवा मे उठाई और झटके से दोनो पैरो पर खड़ा हो गया. इतने मे ३ पुलिस वाले मेरी ओर लपके जिसमे से एक ने मुझे पिछे से पकड़ लिया. बाकी जो २ सामने से आए उनको मैने गले से पकड़ रखा था. मैने सामने वाले दोनो आदमियो की दीवार की तरफ धक्का दिया और पिछे वाले के मुँह पर ज़ोर से अपना सिर मारा. जिससे वो अपना नाक पकड़कर वही बैठ गया. तभी एक और पुलिस वाला भागता हुआ आया, जिसके हाथ मे लोहे का सरिया था. जैसे ही वो मुझे सरिये से मारने लगा. मैने सरिया पकड़ लिया और घूमकर उसके कंधे पर वही सरिया ज़ोर से मारा.इतने मे एक पुलिस वाला जो ज़मीन पर गिरा पड़ा था. वो उठा और उसने एक काँच के बर्तन जैसा कुछ उठा लिया और पिच्चे से मेरे सिर मे मारा. मैं फॉरन उस ओर पलट गया और गुस्से से उसको देखने लगा.तभी मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरे सिर से खून निकल रहा है. मैने अपने सिर पर हाथ लगाया और अपने खून को उंगलियो पर लगाकर उसका मुक्का बना

लिया और ज़ोर से उस आदमी के मुँह पर मारा. फिर उसको कंधे पर उठाकर अलमारी पर फेंक दिया. जिससे अलमारी के दोनो दरवाज़े अंदर को धँस गये. फिर मैने पास पड़ी एक चेयर उठाई और सामने गिरे हुए दोनो पुलिस वालो को खड़ा करके उनके सिर वो चेयर मारी. जिससे चेयर टूट गई और मेरे हाथ मे उसका एक टूटा हुआ डंडा सा रह गया . अब मैने चारो तरफ देखा लेकिन मुझ पर हमला करने वाले तमाम लोग ज़मीन पर गिरे पड़े थे और दर्द से कराह रहे थे. मैं हाथ मे कुर्सी की टूटी हुई टाँग पकड़े और आदमियो के आने का इंतज़ार करने लगा, कि अब कौन आएगा लेकिन तभी पूरा कमरा तालियो की गड़-गड़ाहट से गूँज उठा. मैने पलटकर देखा तो ये चौहान था जो मुझे देखकर खुश हो रहा था और तालियाँ बजा रहा था.

चौहान : वाहह क्या बात है ! लोहा आज भी गरम है.

मैं : चौहान साहब ये कौन लोग है? जिन्होने मुझ पर हमला किया.

चौहान : ये मेरे लोग है.इनको मैने ही तुम पर हमला करने को कहा था.

मैं : लेकिन क्यो ?(गुस्से मे)

चौहान : (अपने नाख़ून देखते हुए) कुछ नही मैने उस्मान की ताक़त के बारे मे सुना था.देखना चाहता था. बस इसलिए.(मुस्कुराकर)

मैं : (गुस्से से चौहान को देखते हुए) हहूहह !ये कोई तरीका है किसी की ताक़त आज़माने का.

जास्मिन : (चौहान से अपना हाथ छुड़ा कर चिल्लाते हुए) तुम एक दम पागल हो कल बाबा ने कहा था ना कि ये पहले जैसे नही है.अब बदल गये हैं फिर भी तुमने इन पर हमला करवाया. देखो सिर से खून आ रहा है इनके (अपने दुपट्टे से मेरा सिर का खून साफ करते हुए) हमें कोई इलाज नही करवाना.सुजल चलो यहाँ से ये सब के सब लोग पागल है.

चौहान : देखिए माफी चाहता हूँ ! लेकिन इसको आज़माना ज़रूरी था .ब ऐसा नही होगा मैं वादा करता हूँ. चलिए आइए मेरे साथ.

इतना कहकर वो एक कमरे मे चला गया और हाथ से हम को भी पिछे आने का इशारा किया. हम बिना कुछ बोले उसके पिछे चले गये .जास्मिन ने अपना दुपट्टा मेरे सिर पर ही पकड़कर रख लिया और दूसरे हाथ से मेरा हाथ पकड़ लिया और हम दोनो चौहान के पिछे चले गये .जहाँ बड़ी-बड़ी मशीन पड़ी थी. तभी एक औरत मुस्कुराते हुए मेरे पास आई जिसने सफेद कोट पहना था और देखने मे डॉक्टर जैसी लग रही थी.

डॉक्टर : हल्लो माइ सेल्फ़ डॉक्टर नताशा. (अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए)

मैं : जी क्या ?

डॉक्टर : माफी चाहती हूँ मैं भूल गई थी आपको अँग्रेज़ी नही आती. मेरा नाम डॉक्टर नताशा है !और आप?.

मैं : (हाथ मिलाते हुए) सुजल

डॉक्टर : (कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए) बैठिए जनाब.

मैं : (बिना कुछ बोले कुर्सी पर बैठ ते हुए) आप मेरा इलाज करेंगी?

डॉक्टर : (मेरा चेहरा पकड़कर मेरे सिर का ज़ख़्म देखते हुए) हमम्म हंजी मैं ही करूँगी.लेकिन पहले आपके ज़ख़्म का इलाज कर दूं खून निकल रहा है (मुस्कुराते हुए)

फिर डॉक्टर नताशा ने मेरे जखम पर पट्टी बाँधी ओर मैं बस बैठा उसको देखता रहा. वो मुझे देखकर लगातार मुस्कुरा रही थी और मैं उसकी बड़ी-बड़ी नीली आँखो मे देख रहा था. एक अजीब सी क़शिष थी उसके चेहरे मे. मैं बस उसके चेहरे को ही लगातार देखे जा रहा था. फिर उसने मेरी बाजू पकड़ी और एक इंजेक्शन सा लगा दिया. जो मुझे लगा शायद मेरे सिर के दर्द के लिए होगा.लेकिन इंजेक्शन के लगते ही मुझ पर एक अजीब सा नशा छाने लगा और मेरी आँखो के आगे अंधेरा छाने लगा. मुझे बहुत तेज़ नींद आने लगी.जैसे मैं कई रातो से सोया ही नही हूँ. उसके बाद मेरी आँखों के सामने अंधेरा छा गया और मुझे जब होश आया, तो मैं एक बेड पर लेटा हुआ था.मेरे पास मेरा हाथ पकड़कर जास्मिन बैठी हुई थी और नताशा और चौहान मेरे सामने खड़े मुस्कुरा रहे थे.

मैं : मैं यहाँ कैसे आया मैं तो कुर्सी पर बैठा था ना.

चौहान : माफी ! सुजल जी माफी !आप सच कह रहे थे लाइ डिटेक्टोर टेस्ट के बाद हम को भरोसा हो गया जनाब (हाथ जोड़कर) लेकिन क्या करे भाई हमारी भी ड्यूटी है. शक़ करने की बीमारी सी पड़ गई है.अच्छा तुम अब रेस्ट करो कुछ चाहिए हो तो डॉक्टर रहना को बोल देना ठीक है.

फिर चौहान तेज़ कदमो के साथ कमरे से बाहर निकल गया और हम सब उसको देखते रहे. फिर मैने बिस्तर से खड़े होने की कोशिश की लेकिन मेरे हाथ पैर जवाब दे रहे थे, जैसे उनमे कोई जान ही ना हो.मैं चाह कर भी उठ नही पा रहा था. इसलिए मैने सबसे एक के बाद एक सवाल पूछने शुरू कर दिए.

मैं : लाइ डिटेक्टोर टेस्ट हो भी गये और मुझे पता भी नही चला. और अब मैं कहा हूँ और यहाँ आया कैसे?

नताशा : आपको हमारे लोग यहाँ लाए हैं. आप घबराइये नही.आप एक दम महफूज है (मुस्कुराते हुए)

मैं : क्या अब मैं घर जा सकता हूँ ?(बिस्तर से उठ ते हुए)

नताशा : अर्रे !लेटे रहिए. अभी दवा का असर है .तो कुछ देर बॉडी मे कमज़ोरी रहेगी हो सकता है चक्कर आए लेकिन थोड़ी देर मे ठीक हो जाओगे. तो आप घर चले जाना.

मैं : (जास्मिन का हाथ पकड़ते हुए) तुम ठीक हो ?

जास्मिन : (मुस्कुरा कर हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म !

मैं: हम कितनी देर से यहाँ है ?

जास्मिन : सुबह से.

मैं : अब वक़्त क्या हुआ है ?

जास्मिन : शाम होने वाली है.

मैं : क्या मैं इतनी देर सोया रहा.

नताशा : बाते बाद मे कर लेना पहले कुछ खा लो (मुस्कुराते हुए) बताओ क्या खाओगे ?

मैं : (जास्मिन की तरफ देखते हुए) तुमने खाना खाया

जास्मिन : नही ! तुम्हारे साथ खाऊँगी.

नताशा : आप बाते करो. मैं आपके लिए कुछ खाने को भेजती हूँ.

फिर नताशा चली गई और मैं उसको जाते हुए देखता रहा. तभी जास्मिन को जाने क्या हुआ वो अपनी जगह से खड़ी हुई और बेड पर मेरे उपर आके लेट गई और मुझे गले से लगा लिया.

मैं : जास्मिन क्या हुआ ?

जास्मिन : (ना मे सिर हिलाते हुए) कुछ नही! बस तुमको गले लगाने का दिल कर रहा था सो लगा लिया.

मैं : वो तो ठीक है. लेकिन वो डॉक्टरनी आ गई तो.

जास्मिन : एम्म्म बस थोड़ी देर फिर सही होके बैठ जाऊंगी.

मैं : जास्मिन एक पप्पी दो ना.

जास्मिन : (मेरी छाती पर थप्पड़ मारते हुए) खड़ा हुआ नही जा रहा फिर भी सुधरते नही बदमाश.

मैं: (हँसते हुए) लो यार अब तुमसे नही तो क्या डॉक्टरनी से पप्पी मांगू.

जास्मिन : (मेरा गला दबाते हुए) माँगकर तो दिखाओ किसी और से पप्पी.... तुम्हारा गला नही दबा दूँगी.बड़े आए डॉक्टर से पप्पी माँगने वाले (मुस्कुराते हुए)

मैं: तो फिर पप्पी दो ना.

जास्मिन : म्म्मम ..! ठीक है !लेकिन सिर्फ़ एक.

मैं : हाँ ठीक है एक ही दे दो बाकी घर जाके ले लूँगा. (मुस्कुराते हुए)

जास्मिन : तुम सुधर नही सकते ना (हँसते हुए)

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए और मुस्कुराते हुए) उउउहहुउऊ !

तभी गेट खट-खटाने की आवाज़ आई तो जास्मिन जल्दी से अपनी जगह पर बैठ गई. नताशा एक नर्स के साथ अंदर आई.नर्स के हाथ मे एक बड़ी सी ट्रे थी.जिसमे शायद वो हमारे लिए खाना लाई थी. जास्मिन ने खड़ी होके नर्स से प्लेट पकड़ ली और फिर नर्स और नताशा ने मिलकर मुझे बिस्तर पर बिठा दिया फिर एक कटोरे मे नताशा मुझे खिचड़ी खिलाने लगी जो शायद जास्मिन को अच्छा नही लग रहा था.इसलिए वो अजीब से मुँह बनाके कभी नताशा को कभी मुझे घूर-घूर के देख रही थी.

जास्मिन : डॉक्टरनी जी लाइए मैं खिला देती हूँ आप रहने दीजिए.

डॉक्टर : (मुस्कुराते हुए) ठीक है ये लो. (मुझे देखते हुए) सुजल आप आराम से खाना खा लो. उसके बाद आपके कुछ टेस्ट करने है.नर्स यही है ,जब आप खाना खा लो तो बता देना.फिर मैं आपके कुछ टेस्ट करूँगी ठीक है.

मैं : (खाते हुए हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म !

उसके बाद मैने और जास्मिन ने मिलकर खाना खाया. अब मैं काफ़ी बेहतर महसूस कर रहा था. कमज़ोरी भी महसूस नही हो रही थी. मैं अब बिना कोई सहारे के अपने पैरो पर खड़ा हुआ और नर्स हम को एक ठंडे से कमरे मे ले गई.जहाँ एक बड़ी सी मशीन थी और

उसके पास डॉक्टर नताशा फाइल्स हाथ मे लिए ही खड़ी थी. उसने एक नज़र मुझे मुस्कुराकर देखा और फिर मशीन पर लेटने का इशारा किया मैं चुप-चाप उस मशीन पर लेट गया.

डॉक्टर : सुजल कोई लोहे की चीज़ तो नही तुम्हारे पास मेरा मतलब है कोई घड़ी चैन या अंगूठी पहनी है तुमने इस वक़्त.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) जी नही !

डॉक्टर : अच्छा चलो अब अपनी आँखें बंद करके कुछ देर के लिए लेट जाओ.

फिर मैं आराम से वहाँ लेटा रहा और एक रोशनी मेरे सिर से लेके पैर तक बार-बार गुज़रती रही कुछ ही पल मे मुझे एक टीच की आवाज़ आई और उसके बाद अगली आवाज़ नताशा की थी जो मेरे कानो से टकराई.

डॉक्टर : बस हो गया सुजल ! अब आप उठ सकते हैं.

मैं : बस इतना ही था और कुछ नही.

डॉक्टर : (मुस्कुराकर ना मे सिर हिलाते) उऊहहुउ... चलो अब आप बाहर जाके बैठो. मैं चौहान से बात करके अभी आती हूँ

उसके बाद मैं वहाँ से खड़ा हुआ और नर्स मुझे और जास्मिन को एक कमरे मे छोड़ गई. जहाँ सामने पड़े सोफे पर हम दोनो बैठ गये और डॉक्टर नताशा का इंतज़ार करने लगे. कुछ देर बाद ही डॉक्टर नताशा और चौहान दोनो एक साथ कमरे मे आए. जिनके हाथ मे कुछ पेपर्स थे और वो आपस मे किसी बात पर बहस कर रहे थे. कमरे मे आते ही मेरे सामने दोनो नॉर्मल हो गये ओर मुझे मुस्कुराकर देखने लगे.

चौहान : चलिए जनाब आपको घर छोड़ आता हूँ.

मैं : बस इतना सा ही काम था.

चौहान : हंजी बस इतना सा ही काम था बाकी आपका और कुछ ज़रूरत होगी तो फिर आना पड़ेगा.

मैं : आ तो मैं जाऊंगा लेकिन मेरे खेत.

चौहान : अर्रे उसकी फिकर तुम मत करो कुछ दिन के लिए नये आदमी रख लो ना .

मैं : साहब आदमी रखने की हैसियत होती. तो मैं खुद काम क्यो करता?

चौहान : अर्रे तुम फिकर मत करो ! अब तुम मेरे साथ हो. पैसे की फिकर मत करो. तुमको जो भी चाहिए हो मुझे फोन कर देना तुम्हारा काम हो जाएगा.

उसके बाद उसने मुझे अपना कार्ड दिया जो मैने जेब मे डाल लिया.फिर नताशा ने जास्मिन को मेरे लिए कुछ दवाइयाँ भी साथ दी और साथ ही कुछ हिदायतें भी दी कि किस वक़्त मुझे कौनसी दवाई देनी है.

डॉक्टर : सुजल वैसे तो मैने जास्मिन को सब समझा दिया है. वो तुमको वक़्त पर दवा देती रहेगी फिर भी मैं हफ्ते मे एक बार या तो तुम खुद अपने चेक-अप के लिए यहाँ आ जाओ. या फिर मुझे तुम्हारे गाँव आना पड़ेगा बताओ कैसे करना पसंद करोगे.

मैं : जी मैं हर हफ्ते शहर नही आ सकता बेहतर होगा आप ही आ जाए.

डॉक्टर : (मुस्कुराकर) कोई बात नही !

फिर मैं चौहान और जास्मिन उसी दरवाज़े से बाहर निकल गये जहाँ से आए थे. लेकिन हैरत की बात ये थी कि सुबह जब हम यहाँ आए थे तो बाहर बहुत से मुलाज़िम काम कर रहे थे लेकिन अब वहाँ कोई आदमी मोजूद नही था पूरा दफ़्तर खाली पड़ा था

मैं : चौहान साहब यहाँ सुबह कुछ लोग काम कर रहे थे ना वो कहाँ गये.

चौहान : वो यही काम करते हैं.अब उनके घर जाने का वक़्त हो गया था इसलिए चले गये अंदर हमारा अपना सीक्रेट हेडक्वॉर्टर है. अंदर मेरी मर्ज़ी के बिना कोई नही जा सकता.

मैं : अच्छा ठीक है.

ऐसे ही बाते करते हुए हम बाहर निकल गये और जीप मे बैठ गये.चौहान ड्राइवर की साथ वाली सीट पर आगे बैठा था. जबकि मैं ओर जास्मिन फिर से पिछे ही बैठ गये. जास्मिन वापिस मेरे साथ चिपक कर बैठी थी और मेरे कंधे पर सिर रखा था पूरे रास्ते कोई खास बात नही हुई.

जब हम घर आए तो सलमा बाहर ही खड़ी थी. जो शायद हमारा ही इंतज़ार कर रही थी. जीप को देखते ही उसका चेहरा खुशी से खिल उठा और जीप के रुकते ही वो तेज़ कदमो के साथ हमारी तरफ आई और जीप के अंदर देखने लगी. फिर हम सब घर के अंदर चले गये जहाँ बाबा हॉल मे ही कुर्सी पर बैठे थे शायद वो भी मेरा ही इंतज़ार कर रहे थे.

बाबा : आ गये बेटा. (चौहान की तरफ देखते हुए हाथ जोड़कर) चौहान साहब आपका बहुत-बहुत शुक्रिया जो आपने मुझे मेरा बेटा वापिस कर दिया.

चौहान : बाबा जी आप बुजुर्ग है.शर्मिंदा ना करे हाथ जोड़कर (बाबा के हाथो को पकड़ते हुए) मैने आपसे कहा ही था कि अगर ये बे-गुनाह है तो इसे कुछ नही होगा.

सलमा : साहब आप बैठिए मैं चाय लेके आती हूँ (जास्मिन को इशारे से बुलाते हुए)

फिर मैं बाबा ओर चौहान वही हॉल मे ही कुर्सियो पर बैठ गये और चौहान मेरे बारे मे बाबा से पूछता रहा.

चौहान : बाबा जी मुझे आपसे अकेले मे कुछ बात करनी है.

बाबा : जी ज़रूर....(मेरी तरफ देखते हुए) बेटा जाके देखो चाय का क्या हुआ.

मैं : जी बाबा (और मैं उठकर रसोई मे चला गया)

चौहान और बाबा मे क्या बात हुई मुझे नही पता,लेकिन रसोई मे घुसते ही सलमा फिकर मंदी से मेरा मुँह पकड़कर मेरे सिर की चोट देखने लगी.उसको शायद आते ही जास्मिन ने सब कुछ बता दिया था. इसलिए उसके चेहरे पर भी मेरे लिए फिकर साफ झलक रही थी.

सलमा : ये चौहान कितना कमीना है ? देखो कितनी चोट लग गई.

मैं : अर्रे तुम तो ऐसे ही घबरा जाती हो. कुछ नही हुआ मैं एक दम ठीक हूँ. ज़रा सी खरोच है ठीक हो जाएगी.

सलमा : और कही तो चोट नही लगी.

मैं : (मुस्कुराकर ना मे सिर हिलाते हुए) उऊहहुउ....

फिर हम कुछ देर ऐसे ही रसोई मे खड़े रहे और जास्मिन दिन भर क्या-क्या हुआ वो सब सलमा को बताती रही.मैं बस पास खड़ा दोनो की बाते सुनता रहा और मुस्कुराता रहा .तभी मुझे बाबा की आवाज़ आई तो मैं फॉरन बाहर चला गया जहाँ बाबा और चौहान बैठे थे.

बाबा : बेटा चौहान साहब कह रहे हैं कि अब तुम आज़ाद हो लेकिन जब भी इनको तुम्हारी मदद की ज़रूरत होगी तो तुमको जाना पड़ेगा. तुमको कोई ऐतराज़ तो नही है.

मैं : बाबा आप हुकुम कीजिए ! आप जो कहेंगे वही मेरी मर्ज़ी होगी.

बाबा : ठीक है बेटा.... देखिए चौहान साहब मैने कहा था ना आपसे. (मुस्कुराकर)

चौहान : जी जनाब आप सही थे. मैं सोच भी नही सकता था कि उस्मान जैसा इंसान इतना बदल सकता है.आज सच मे मुझे बेहद खुशी है कि ये एक नेक़ इंसान की जिंदगी गुज़ार रहा है.

अभी हम बाते ही कर रहे थे कि एक काले रंग की कार हमारे दरवाज़े के सामने आके रुक गई. जिससे हम सब का ध्यान बाहर की तरफ गया. ये कार तो हीना की थी जिसमे मैं उसको कार चलाना सिखाता था. तभी कार के पिछे वाला गेट खुला और हीना बाहर निकली. मुझे देखते ही उसके चेहरे पर एक मुस्कान आ गई और वो सीधा ही अंदर चली आई. उसने आते ही अदब से सबको सलाम किया फिर बाबा से दुआ ली.

हीना : बाबा देख लो आज फिर सुजल नही आए मुझे गाड़ी सिखाने के लिए. (रोने जैसा मुँह बनाके)

बाबा : अर्रे बेटी वो आज कुछ काम था इसलिए शहर जाना पड़ा सुजल को.

चौहान : ये मोहतार्मा कौन है (घूरते हुए)

बाबा : ये हमारे गाव के सरपंच की बेटी हैं .जिनको सुजल कार चलानी सिखाता है.

चौहान : अच्छा ये तो बहुत नेक़ बात है. बाबा जी अब मुझे भी इजाज़त दीजिए फिर कभी मुलाक़ात होगी.

बाबा : अच्छा बेटा आते रहना.(मुस्कुराकर)

फिर चौहान और बाबा बाते करते हुए दरवाज़े तक चले गये और मैं हीना के पास ही बैठा रहा इतने मे जास्मिन चाय लेके आ गई और हीना को देखते ही उसका पारा चढ़ गया. लेकिन फिर भी उसने हीना को सलाम किया और टेबल पर चाय रख दी.

जास्मिन : आप यहाँ कैसे हीना जी.

हीना : वो आज सुजल जी हवेली नही आए तो मैने सोचा मैं ही चली जाती हूँ. यहाँ आई तो पता चला कि आप लोग भी अभी शहर से आए हो.

जास्मिन : जी अभी आए हैं और बहुत थके हुए हैं.

हीना : ये सिर मे क्या हुआ सुजल .

मैं : कुछ नही बस छोटी सी चोट लग गई थी (मैने हीना को कुछ भी नही बताया था अपने बारे मे इसलिए ये बात भी छुपानी पड़ी)

हीना : ख्याल रखा करो ना अपना. दिखाओ कितनी चोट लगी है.

जास्मिन : उसकी कोई ज़रूरत नही है.चोट लगी थी पट्टी हो चुकी है.अब क्या पट्टी खोलकर दिखाएँगे.

हीना : मेरा मतलब था कि इनका ठीक से ख़याल रखा करो.

जास्मिन : (गुस्से मे) हम ठीक से ही ख्याल रखते हैं.

हीना : हाँ वो तो मैं देख ही रही हूँ तुम कितना ख्याल रखती हो.तभी इतनी चोट लग गई है.

मैं : (दोनो को शांत करने के लिए) अर्रे तुम हर वक़्त लड़ने क्यों लग जाती हो. कुछ नही हुआ ज़रा सी खराश है बस और हीना मैं अगर तुमको कल गाड़ी चलानी सिखाउ तो कोई समस्या तो नही.

हीना : जी नही कोई समस्या नही है .पहले आप ठीक हो जाइए गाड़ी सीखने के लिए तो सारी उम्र पड़ी है.मुझे पता होता कि आपको चोट लगी है तो मैं डॉक्टर साथ ही लेके आती. (मेरा हाथ पकड़ते हुए)

मैं : नही उसकी कोई ज़रूरत नही. अब मैं एक दम ठीक हूँ (मुस्कुराते हुए)

जास्मिन को शायद हीना का इस तरह मेरा हाथ पकड़ना अच्छा नही लगा था. इसलिए उसने चाय का कप हीना पर गीरा दिया.

हीना : (दर्द से कराहते हुए) ससस्स आयईयीई....

जास्मिन : ओह्ह माफ़ करना कप हाथ से फिसल गया.

मैं : हीना ज़्यादा तो नही लगी (हीना के घुटने से सलवार पकड़कर झाड़ते हुए)

हीना : कोई बात नही. मैं ठीक हूँ (फीकी मुस्कान के साथ)

मैं : जास्मिन ! ये क्या किया तुमने ?

जास्मिन : मैं जान-बूझकर नही किया माफ़ कर दो.

हीना : कोई बात नही.... बाथरूम कहाँ है.

मैं : जास्मिन इनको बाथरूम ले जाओ और साफ करो अच्छे से.

जास्मिन : (गुस्से से मुझे देखते हुए हीना को अंदर लेके चली गई) इस तरफ आओ

तभी बाबा भी चौहान को रुखसत करके अंदर आ गये.

बाबा : ये हीना बेटी कहाँ गई अभी तो यही थी.

मैं : कुछ नही बाबा वो ज़रा जास्मिन के हाथ से कप फिसल गया था. इसलिए हीना पर चाय गिर गई बस वही धुलवाने लेके गई है.

बाबा : अच्छा... ये जास्मिन भी ना. इसको ख्याल रखना चाहिए घर आए मेहमान पर कोई चाय गिराता है भला.

मैं : कोई बात नही बाबा उसने जान-बूझकर तो गिराई नही और फिर ग़लती तो किसी से भी हो सकती है.

कुछ देर बाद हीना और जास्मिन बाहर आ गई और मैं हीना को देखकर हँसे बिना नही रह सका क्योंकि उसने मेरे कपड़े पहने थे जो उसको काफ़ी बड़े थे. हीना को देखकर बाबा भी हँसने लगे और हीना खुद भी मुस्कुराए बिना ना रह सकी. जास्मिन गुस्से से लाल हुई पड़ी थी और वो बिना कुछ बोले ही अंदर चली गई.

बाबा : अर्रे बेटी ये सुजल के कपड़े क्यो पहन लिए.

हीना : बाबा वो मेरे कपड़े खराब हो गये थे तो धोने से मेरी सारी सलवार गीली हो गई थी और मुझे अंदर इनके ही कपड़े नज़र आए तो मैने वही पहन लिए.

बाबा : कोई बात नही.

हीना : अच्छा बाबा मैं अब चलती हूँ (मुस्कुराते हुए)

बाबा : अच्छा बेटा....माफ़ करना वो जास्मिन मे थोड़ा बचपना है.इसलिए उसने तुम्हारे कपड़े खराब कर दिए.

हीना : कोई बात नही बाबा इसी बहाने मुझे सुजल के कपड़े पहने का मोक़ा मिल गया (हँसते हुए) ऐसा लग रहा है अब्बू के कपड़े पहने हो बहुत ढीले और बड़े है.

मैं : अर्रे कोई बात नही घर तक तो जाना है वैसे भी तुमने कौनसा पैदल जाना है. बाहर कार मे ही तो जाना है फिकर मत करो कोई नही देखेगा. (मुस्कुराते हुए)

हीना : कैसे जाऊ... आज तो लगता है पैदल ही जाना पड़ेगा.

मैं : (हैरानी से) क्यो बाहर कार है ना

हीना : सिर्फ़ कार ही है ड्राइवर नही है.मुझे लगा आप आज भी कार चलानी सिख़ाओगे इसलिए ड्राइवर को मैने तब ही भेज दिया था.

बाबा : अर्रे कोई बात नही बेटी सुजल तुमको गाड़ी मे घर छोड़ आएगा फिर तो ठीक है ना.

हीना : हाँ ये ठीक रहेगा. (मुस्कुराते हुए) चलो सुजल फिर चलते हैं !(कार की चाबी मेरी ओर बढ़ाते हुए)

मैं : (कार की चाबी पकड़कर) हाँ चलो... (मुस्कुराते हुए) बाबा मैं ज़रा हीना को घर तक छोड़कर अभी आता हूँ.

बाबा : अब बेटा जब जा ही रहे हो तो गाड़ी चलानी भी सीखा देना. इसी बहाने ये भी खुश होके जाएगी.

हीना : अर्रे वाह ये तो और भी अच्छा है. चलो आज मैं भी सुजल बनके ही गाड़ी चलाऊंगी. (हँसते हुए)

मैं : ठीक है पहले चलो तो सही.

१८

घर से निकलते हुए मैने पलटकर देखा तो जास्मिन मुझे रसोई मे खड़ी गुस्से से देख रही थी. जिसके गुस्से का मेरे पास कोई जवाब नही था. इसलिए मैने वापिस गर्दन सीधी की और हीना के साथ उसकी कार की तरफ चल पड़ा. आज जाने क्यो इस तरह जास्मिन का बर्ताव मुझे कुछ अजीब सा लग रहा था. क्योंकि वो एक खुश-मिज़ाज़ और तमीज़दार लड़की थी. लेकिन आज जाने उसको क्या हो गया था जो वो हीना के साथ ऐसे पेश आ रही थी. अभी मैं अपनी इन्ही सोच मे गुम था कि मुझे हीना की आवाज़ आई...

हीना : जनाब अब सारी रात कार के सामने ही खड़ा रहना है, या चलना भी है.

मैं : (हीना की तरफ चोंक कर देखते हुए) क्या..... ? हाँ चलो बैठो.

हीना : आप भी ना...(मुस्कुराते हुए)

मैं : मैं भी क्या....

हीना : कुछ नही जल्दी बैठो.

मैं : अच्छा !

उसके बाद मैं ओर हीना कार मे बैठे और मैने कार स्टार्ट कर दी और कुछ देर बिना कुछ बोले कार चलाता रहा.थोड़ी देर मे ही हम हवेली के पास आ गये.

हीना : अर्रे हवेली क्यो ले आए मुझे (रोने जैसी शक़ल बनाके)

मैं : घर नही जाना आपने.

हीना : बाबा ने कुछ और भी कहा था ना आप भूल गये क्या (मुस्कुराते हुए)

मैं : और क्या कहा था बाबा ने यही कहा था कि हीना को घर छोड़ आओ बस...

हीना : (अपने सिर पर हाथ रखते हुए) ओुंओ... बाबा ने ये भी तो कहा था कि कार चलानी भी सीखा देना मुझे... भूल गये क्या.

मैं : अर्रे हाँ मैं तो भूल ही गया था.

हीना : अब चलो गाड़ी घूमाओ मैदान की तरफ अभी इतनी जल्दी नही मैने घर जाना .

मैं : अच्छा.... (मुस्कुराते हुए)

उसके बाद मैने कार को मोड़ लिया और वही से ही हम मैदान की तरफ निकल गये. हीना मुझे बार-बार देखकर आज मुस्कुरा रही थी और काफ़ी खुश लग रही थी. मैने कार चलाते हुए देखा कि वो बार-बार मेरी पहनी हुई कमीज़ को देख रही थी...

मैं : एक बात बोलू हीना जी अगर आपको बुरा ना लगे तो...

हीना : आज तक आपकी कोई बात का बुरा माना है.जो अब मानूँगी बोलो...(मुस्कुराते हुए)

मैं : आप पर मेरे कपड़े बहुत अच्छे लग रहे हैं...(मुस्कुराते हुए)

हीना : अगर आपको बुरा ना लगे तो ये कपड़े मैं रख लूँ.

मैं : क्यो नही ज़रूर अगर आपको पसंद है तो.... लेकिन आप मेरे कपड़ो का करेंगी क्या...

हीना : शुक्रिया... पसंद भी आए हैं और....

मैं : और क्या...

हीना : इन कपड़ो मे आपकी महक भी है.जो मुझे बहुत पसंद है (नज़रे झुका कर मुस्कुराते हुए)

मैं : लेकिन आप इनका करेंगी क्या ये तो मर्दाना कपड़े है....

हीना : आप पास होते हो तो खुद को बहुत महफ़ूज़ महसूस करती हूँ... ये कपड़े जब मेरे पास होंगे तो ऐसा लगेगा आप मेरे पास हो.

मैं : अच्छा जैसा आपको अच्छा लगे (मुस्कुराते हुए)

हीना : सुजल दवाई तो टाइम पर ले रहे हो ना जो हमने शहर से ली थी.

मैं: कौनसी दवाई (कुछ सोचते हुए) अर्रे हाँ याद आया

हीना : शूकर है याद तो आ गया (मुस्कुराते हुए) अब बताओ दवाई ली या नही.

मैं : (उदास मुँह बनाके ना मे सिर हिलाते हुए) भूल गया.

हीना : उम्मम.... क्या करूँ मैं तुम्हारा (रोने जैसा मुँह बनाके)

मैं : कुछ नही करना क्या है (मुस्कुराते हुए) अब याद नही रहता तो क्या करू मैं भी.

हीना : अच्छा तुम एक काम कर सकते हो

मैं : क्या

हीना : कल से अपनी दवाइयाँ मुझे लाके दे दो मैं आपको रोज़ दवाई दे जाया करूँगी.

मैं: लेकिन अगर आप रोज़ घर आएँगी तो शायद जास्मिन और सलमा को अच्छा नही लगेगा.

हीना : (कुछ सोचते हुए) हम्म..ये तो है... ऐसा करूँगी सुबह आप खेत मे अकेले होते हो ना. दिन मे आपको खेत मे आके आपकी दवाई दे जाया करूँगी और शाम को कार मे दे दिया करूँगी फिर तो ठीक है....वैसे भी हम मिलते तो रोज़ ही है. (मुस्कुराते हुए)

मैं : हाँ ये ठीक रहेगा.

ऐसे ही बाते करते हुए हम कुछ ही देर मे हम उसी कच्चे रास्ते पर पहुँच गये जो रास्ता मैदान की तरफ जाता था. हीना भी उस रास्ते को देखकर एक दम खामोश हो गई.शायद उसको उस दिन वाली बात याद आ गई थी जब वो मेरी गोद मे बैठी थी और उसके उछलने से मेरा लिंग उसकी नितंब मे ज़ोर से चुभा था. मैने एक नज़र हीना की तरफ देखा और फिर गाड़ी उसी कच्चे रास्ते पर बढ़ा दी. कुछ देर उछलने के बाद हम मैदान मे आ गये इसलिए मैने कार रोक दी.

मैं : हीना जी मैदान आ गया अब आप मेरी सीट पर बैठ जाएँ और कार चलानी शुरू करें जैसा मैने आपको उस दिन सिखाया था.

हीना : उस दिन जैसे गाड़ी नही सीखा सकते.

मैं : उस दिन जैसे कैसे मैं समझा नही.

हीना बिना कुछ बोले मेरे दोनो हाथ स्टियरिंग व्हील से हटा कर धीरे से सरक कर मेरे पास आई और थोड़ी सी कार के अंदर ही खड़ी होके मेरी एक टाँग पर बैठ गई और फिर अपनी नितंब को थोड़ा सा खिसका कर मेरी दोनो टाँगो पर बैठ गई.

हीना : ऐसे सीखने को कह रही थी...

मैं : अच्छा ठीक है अब आप चलाओ.

हीना के मेरी गोद मे बैठ ते ही उसके नाज़ुक बदन का वही गरम अहसास मुझे अपनी टाँगो पर होने लगा. मैने अपने दोनो हाथ उसकी कमर से निकाले और वापिस स्टियरिंग व्हील पर उसके हाथो के उपर रखे दिए उसकी नरम और नाज़ुक टांगे मेरी टाँगो के साथ जुड़ी हुई थी. जो मुझे बेहद मज़ा दे रही थी. कुछ देर ऐसे ही कार चलाने के बाद उसने खुद ही मेरे हाथ स्टियरिंग व्हील से हटाकर अपनी जाँघो पर रख दिए. जिसे मैने फॉरन थाम लिया मेरे हाथो के छुने से शायद उसको झटका सा लगा.जिससे वो थोड़ा सा हिल गई लेकिन बिना कुछ बोले वो कार चलाती रही. अब मुझसे भी सबर नही हो रहा था इसलिए मैने धीरे-धीरे उसकी जाँघो पर हाथ फेरना शुरू कर दिया .जिससे उसने अपनी टांगे चौड़ी कर ली. मेरा चेहरा उसकी गर्दन पर था जिससे चूमने का मुझे बार-बार मन कर रहा था.इसलिए मैने अपने चेहरे को हल्का सा नीचे की तरफ झुकाया और अपने होंठ उसकी गर्दन पर रख दिए

.उसको भी शायद मेरे होंठों का अहसास अपनी गर्दन पर हो गया था लेकिन वो बिना कुछ बोले गाड़ी चलाती रही.नीचे से मेरे लिंग ने भी जागना शुरू कर दिया था जो उसके टांगे फैला लेने की वजह से सीधा उसकी योनी पर दस्तक दे रहा था. वो भी शायद मेरे लिंग को नीचे से महसूस कर रही थी.इसलिए बार-बार अपनी नितंब को हिला कर उसको अपनी योनी के उपर अड्जस्ट करने की कोशिश कर रही थी. तमाम अमल मे हम दोनो ही खामोश थे. मैं लगातार उसकी जाँघो पर हाथ फेर रहा था और वो बिना कुछ बोले गाड़ी चला रही थी. तभी उसकी धीमी सी आवाज़ मेरे कानो से टकराई....

हीना : एक हाथ से आप भी स्टियरिंग पकड़ लो. मुझसे अकेले संभाला नही जा रहा

मैं : (बिना कुछ बोले एक हाथ उसकी जाँघ से उठाकर स्टियरिंग पकड़ते हुए) हमम्म...

अब उसने अपना दायां हाथ नीचे कर लिया और मेरा बायां हाथ जो उसकी जाँघ पर था उस पर रख दिया. मुझे लगा शायद उसको मेरा छुना बुरा लगा है.इसलिए उसने अपना हाथ मेरे हाथ पर रखा है.इसलिए मैने अपना हाथ वही उसकी जाँघ पर ही रोक दिया और बिना कोई हरकत किए वही रखा रहने दिया. जबकि बाएँ हाथ से मैं गाड़ी चला रहा था. लेकिन मैं ग़लत था जब मैने हाथ रोका तो उसने खुद ही मेरे हाथ को पकड़कर अपनी जाँघ पर उपर-नीचे फेरना शुरू कर दिया और हाथ को उपर की तरफ ले जाने लगी. जिससे मेरा हाथ उसके पेट पर आ गया. मैने अपना हाथ उसके पेट पर फेरना शुरू कर दिया.तभी मुझे उसकी नाभि का छेद महसूस हुआ जिस पर मैने अपनी उंगली रोक दी और नाभि के चारो तरफ गोल-गोल घुमाने लगा. जिससे उसकी साँस एक दम तेज़ हो गई और उसने अपनी गर्दन उपर की तरफ करके अपना सिर मेरे कंधे पर रख दिया. अब उसने खुद ही बिना कुछ बोले अपना दूसरा हाथ भी स्टियरिंग से हटा लिया और अपनी कमीज़ थोड़ी सी उपर उठाके मेरा हाथ पकड़कर अपनी कमीज़ मे डाल दिया. उसके पेट का गरम और नाज़ुक लंज़ मेरे हाथो को मिलते ही मुझे बहुत अच्छा महसूस हुआ. उसका पेट बेहद नाज़ुक और किसी मखमल की तरह मुलायम था. अब मैं सीधा उसके पेट पर हाथ फेर रहा था और वो आँखें बंद किए मेरे कंधे पर सिर रखे बैठी थी.

धीरे-धीरे मेरा हाथ उपर की तरफ जाने लगा जिससे उसकी साँस और तेज़ चलने लगी.अब उसका गाड़ी चलाने पर कोई ध्यान नही था.इसलिए मैने गाड़ी को रोक दिया और बंद कर दिया लेकिन वो अब भी वैसे ही बैठी रही. मैने अपना दूसरा हाथ भी स्टियरिंग से हटा लिया और उसकी जाँघो (जाँघो) पर रख दिया और हाथ उपर से नीचे फेरने लगा. अब जो हाथ मेरा उसकी कमीज़ के अंदर था उसको मैने उपर की जानिब बढ़ाना शुरू किया और थोड़ा

सा उपर जाके मेरे हाथ उसकी ब्रा तक पहुँच गया जिसके उपर से ही मैने उसके दाएँ स्तन को थाम लिया और धीरे से दबा दिया. जिससे उसको एक झटका सा लगा और उसके मुँह से एक तेज़ सस्सस्स आअहह निकल गई. शायद मेरा हाथ उसको अपने स्तनों पर अच्छा लगा था. उसके स्तन काफ़ी बड़े थे जो मेरे एक हाथ मे पूरे नही आ रहे थे .लेकिन फिर भी स्तन जितना हाथ मे आ रहा था मैं उसको लगातार दबाए जा रहा था. तभी मैने अपना दूसरा हाथ उसकी जाँघो के दरम्यान योनी के उपर रख दिया .उसको मेरे इस हमले की उम्मीद नही थी.इसलिए उसने अपने दोनो हाथो से मेरे हाथ को पकड़ लिया और अपनी दोनो टांगे बंद कर ली. मैने अपने होंठों से धीरे-धीरे उसकी गर्दन को चूमना शुरू कर दिया और उसकी गर्दन से बढ़ते हुए मेरे होंठ उसके गालों पर आ गये और अब मैं वहाँ धीरे-धीरे चूम रहा था वो अपनी आँखें बंद किए मेरी गोद मे बैठी थी .मेरे कंधे पर सिर रख कर और मेरे हाथ उसके बदन पर अपना कमाल दिखा रहे थे.

कुछ देर बाद मैने धीरे से अपना हाथ उसकी सलवार के अंदर डालने की कोशिश की लेकिन अज़रबंद बँधा होने की वजह से हाथ अंदर नही जा पा रहा था. इसलिए उसने खुद ही अपना पेट अंदर की तरफ सिकोड लिया ताकि हाथ अंदर जाने की जगह मिल सके. अब मेरा हाथ धीरे-धीरे अंदर की तरफ जाने लगा और मेरी उंगलियों पर अब उसकी योनी के बाल टकराने लगे. अब मैने अपना हाथ थोड़ा और आगे को सरकाया तो मेरा हाथ उसकी नर्म और नाज़ुक योनी तक पहुँच गया जिससे उसको एक झटका सा लगा और उसके मुँह से सिर्फ़ सस्सस्स हमम्मम ही निकल पाया. मेरा अब एक हाथ उसके ब्रा के उपर से स्तनों को दबा रहा रहा और दूसरा हाथ उसकी सलवार मे घुसा उसकी योनी के साथ छेड़-छाड़ कर रहा था. उसकी योनी लगातार पानी छोड़ रही थी. जिससे मेरे पूरे हाथ की उंगलियाँ गीली हो चुकी थी. लेकिन मैं फिर भी उसकी योनी के दाने पर अपनी उंगली से कमाल दिखाता रहा. कुछ ही देर मे उसकी टांगे काँपने लगी उसने अचानक मेरी तरफ अपना चेहरा किया और मेरे गालो को हल्के-हल्के चूमना शुरू कर दिया और फिर अचानक जैसे उसकी साँस रुक गई हो उसने अपनी आँखें ज़ोर से बंद कर ली और अपनी नितंब को उपर की तरफ उठा दिया मेरा पूरा हाथ उसकी योनी के निकलने वाले पानी से भीग चुका था. अब कुछ देर नितंब को हवा मे उठाए झटके खाने के बाद एक दम से मेरी गोद मे वापिस गिर गई और तेज़-तेज़ साँस लेने लगी. मैने भी अपना हाथ उसकी योनी पर रोक लिया लेकिन दूसरे हाथ से हल्के-हल्के उसके स्तनों को दबाता रहा. अब वो आँखें बंद किए मेरे कंधे पर अपना सिर रखे बैठी और मुस्कुरा रही थी शायद वो फारिग हो गई थी. मैने अब अपना बायाँ हाथ उसकी सलवार मे से दायां हाथ उसकी कमीज़ मे से निकाल लिया और उसे उसकी कमर से पकड़कर थोड़ा उपर उठा दिया ताकि मैं उसकी सलवार खिचकर

थोड़ा नीचे कर सकूँ. जैसे ही मैने उसकी सलवार को थोड़ा नीचे की तरफ खिचा उसने मेरे दोनो हाथो पर अपने हाथ रख दिए और मेरी आँखो मे देखने लगी.उसकी आँखें उस वक़्त नशे और वासना से एक दम नशीली हुई पड़ी थी. अचानक उसने अपना दाया हाथ उपर किया और मेरे सिर के पीछे ले जाकर मेरे चेहरे को अपने चेहरे पर झुका दिया और मेरे होंठों पर उसने अपने होंठ रख दिए. उसके होंठ एक दम गुलाब की पंखुड़ियो के जैसे नाज़ुक और रस भरे थे. मैने फॉरन अपना थोड़ा सा मुँह खोलकर उसके दोनो नाज़ुक होंठों को अपने मुँह मे क़ैद कर लिया और जबरदस्त तरीके से चूसने लगा कुछ देर तो वो अपना मुँह सख्ती से बंद करके बैठी रही. फिर उसने भी अपना मुँह खोल दिया. जिससे मेरी जीभ को उसके मुँह मे जाने का रास्ता मिल गया. वो किसी भूखी शेरनी की तरफ मेरी जीभ पर टूट पड़ी और बहुत ज़ोर से मेरी ज़ुबान को चूसने लगी.

ऐसा नही था कि मैने पहले किसी के होंठ नही चूसे थे. लेकिन जो क़शिष उसके होंठ चूसने मे आ रही थी वैसा मज़ा ना सलमा के होंठों मे आया था ना ही जास्मिन के होंठों से. वो लगातार मेरे होंठों को बुरी तरफ चूस और काट रही थी. अचानक उसने खुद ही अपनी नितंब थोड़ी सी उपर की और मेरी गोद मे बैठे-बैठे ही अपनी सलवार को घुटने तक खींचकर उतार दिया. अब उसने खुद ही मेरा हाथ अपनी नरम और हद से ज़्यादा गोरी टाँगो पर रख दिया उसका बदन मेरी सोच से भी ज़्यादा गोरा था.हालाकी जहाँ हम थे वहाँ एक दम अंधेरा था. लेकिन फिर भी उसका बदन इस कदर चमक रहा था कि मुझे उसकी गोरी जांघे अंधेरे मे भी साफ नज़र आ रही थी. मैं उसकी योनी देखना चाहता था लेकिन उसने मेरी पहनी हुई कमीज़ को आगे की तरफ किया हुआ था जिससे मैं उसकी योनी नही देख पा रहा था. लेकिन उसकी नितंब नीचे से लगातार अपना कमाल दिखा रही थी.जिसने मेरे लिंग को एक दम लोहे जैसा खड़ा कर दिया था. अब की बार मैने उसकी जाँघो को सहलाते हुए अपना हाथ कमीज़ के अंदर लेजा कर अपना हाथ उसकी नरम और नाज़ुक किसी गुलाब के फूल की तरह खिली हुई योनी पर रख दिया .जो हद से ज़्यादा पानी छोड़ रही थी. मैने कुछ देर उसकी योनी को सहलाया जिससे उसके मुँह मे से एक म्म्म म सस्स्सस्स की आवाज़ निकली जो मेरे मुँह मे ही दब गई. अब मैने हीना को उसकी कमर से पकड़ा और थोड़ा उपर किया ताकि अपना पाजामा भी नीचे कर सकूँ. मेरे इशारे को समझते हुए उसने जल्दी से अपनी कमर को थोड़ा सा हवा मे उठा दिया. जिससे मैने जल्दी से अपना पाजामा और अंडरवेर नीचे कर दिया.

लिंग आज़ाद होते ही किसी भूखे शेर की तरह सिर उठाए खड़ा हो गया .जो किसी स्प्रिंग की तरह उपर को हुआ और सीधा हीना की योनी को चूम कर नीचे आ गया. मेरे लिंग का अपनी योनी पर अहसास होते ही उसने फिर से एक ऊऊऊओ किया सख्ती से मेरे बाजू

को पकड़ लिया जो मैने उसकी कमर पर डाला था. अब मैने उसकी कमीज़ को नितंब से थोड़ा उपर किया और उसे फिर से अपनी गोद मे बिठा लिया अब मेरा लिंग सीधा उसकी योनी के मुँह पर दस्तक दे रहा था और अंदर जाने के लिए मुझसे बग़ावत कर रहा था .शायद उस को मुझसे भी ज़्यादा जल्दी थी. इसलिए मैने भी उससे ज़्यादा इंतज़ार करवाना मुनासिब नही समझा और अपना हाथ नीचे ले जाकर उसकी और अपनी टाँगो को पूरी तरह फैला दिया ताकि लिंग और योनी का मिलन हो सके और साथ ही अपने लिंग को उसकी योनी पर रगड़ना शुरू कर दिया. हीना की योनी मेरी उम्मीद से भी ज़्यादा पानी छोड़ रही थी. जिसने कुछ ही पलो मे मेरे लिंग को एक दम गीला कर दिया. हम दोनो मे ये जो कुछ भी हो रहा था एक दम खामोशी से हो रहा था ना वो कुछ बोल रही थी ना मैं. जब कुछ देर तक मैं अपने लिंग को उसकी योनी पर रगड़ता रहा तो उसका सबर जवाब देने लगा और आख़िर उसने मेरे कान मे धीरे से कहा...

हीना : सुजल पिछे की सीट पर चले अब मुझसे और बर्दाश्त नही हो रहा.

मैं : हमम्म चलो.

उसके बाद हम दोनो आगे वाली सीट को थोड़ा नीचे करके कार के अंदर से ही पिछे वाली सीट पर आ गये. हीना को मुझसे ज़्यादा जल्दी थी इसलिए वो मुझसे पहले पिछे चली गई और जल्दी से अपनी कमीज़ उपर करके पिछे से अपनी ब्रा को भी खोल दिया और अपने बड़े-बड़े स्तनों आज़ाद कर दिया जो ब्रा की क़ैद से आज़ाद होते ही किसी खरगोश की तरह उच्छल कर बाहर आ गये. उनको देखकर मेरे भी मुँह मे पानी आ गया और मैं पिछे जाते ही उसके स्तनों पर टूट पड़ा. मैने उसका एक स्तन अपने हाथ से पकड़ लिया और दूसरा स्तन अपने मुँह मे लेके चूसने लगा और वो मेरे नीचे लेटी मेरे सिर पर हाथ फेर रही थी और अपने मुँह से सस्सस्स ऊऊऊहह आआआआहह नीईएर्र्र्र्र्ररर करते रहो हो और पता नही क्या-क्या बोले जा रही थी. मैं बारी-बारी उसके दोनों मम्मो के साथ इंसाफ़ कर रहा था क्योंकि मैं नही चाहता था कि दोनो मे से कोई भी मुझसे नाराज़ हो कि मैने किसी एक पर ज़्यादा मेहनत की और दूसरे पर कम मेहनत की.

उस वक़्त कार मे काफ़ी अंधेरा था. उपर से मेरी हाइट ज़्यादा होने की वजह से मैं कार मे पूरा भी नही आ रहा था. इसलिए मैने पिछे का दरवाज़ा खोल दिया और नीचे बैठकर उसकी योनी को देखने की कोशिश करने लगा. मैं चाहता तो था कि मैं उसके खूबसूरत बदन के एक-एक हिस्से के साथ खेलु लेकिन एक तो हमारे पास वक़्त कम था और दूसरा अंधेरा भी काफ़ी था. इसलिए मुझे कुछ भी नज़र नही आ रहा था. इसलिए मैं अंदाज़े से

उसकी टाँगो के बीच बैठ गया और उसकी योनी जिस पर थोड़े-थोड़े बाल उगे हुए थे उससे चूम लिया जिसका असर हीना पर काफ़ी हुआ और उसके मुँह से एक तेज़ सस्स्स्स्स्स्सस्स आआआआहह न्ईएरर्र्रर निकली. अब मैने उसकी टांगे थोड़ा फोल्ड की और उन्हे खोल दिया और नीचे बैठकर उसकी योनी को चूसने लगा अभी मुझे कुछ ही मिनिट हुए थे उसकी योनी को चूस्ते हुए कि उसने एक दम से मुझे बालों से पकड़ लिया और उपर की तरफ खींच लिया उसका पूरा बदन किसी सूखे पत्ते की तरह काँप रहा था. उसने अंदाज़े से मेरा चेहरा पकड़ा और फिर से मेरे होंठों को चूसना शुरू कर दिया और फिर मुझे अपने गले से लगा लिया साथ ही हीना की एक मीठी से आवाज़ मेरे कानो मे मुझे सुनाई दी.

हीना : सुजल मुझे अपनी बना लो. मैं तुम्हारे प्यार के लिए कब से तड़प रही हूँ.

मैं : पक्का....

हीना : (हां मे सिर हिलाते हुए) हमम्म पक्का... जल्दी करो मुझसे अब और बर्दाश्त नही हो रहा.

मैने भी उसे और इंतज़ार करवाना मुनासिब नही समझा और अपना एक हाथ नीच ले जाकर उसे उसकी योनी के मुँह पर रख दिया. लिंग का टोपा योनी पर टच होते ही हीना ने मुझे अपनी बाहों मे कस के पकड़ लिया और फिर से मेरे कान मे उसकी धीरे से आवाज़ आई.

हीना : सुजल आराम से करना मैं अब तक कुँवारी हूँ.

मैं : अच्छा.

उसके बाद मैं अपने घुटनो पर बैठ गया और अपने लिंग पर ढेर सारा थूक लगा लिया. वैसे तो उसकी योनी से इतना पानी बह रहा था कि मुझे मेरे लिंग को और गीला करने की कोई ज़रूरत नही थी. लेकिन फिर भी एहतियात के लिए मैने अपने लिंग को गीला कर लिया और उसकी योनी के मुँह पर रखकर हल्का सा ज़ोर लगाया.जिससे उसके मुँह से फिर एक सस्स्सस्स आराम से सुजल.... निकला. उसकी योनी काफ़ी तंग थी जिससे मेरा टोपा फिसल कर नीचे की तरफ चला गया. मैने फिर से अपना लिंग उसकी योनी के मुँह पर रखा और अंदाज़े से हल्का सा झटका लगाया जिससे लिंग का टोपा अंदर चला गया. साथ ही

उसके मुँह से फिर एक आआययययीीईईईई आराम से सुजल दर्द हो रहा है.... की आवाज़ निकली मैने उसकी तरफ कोई ध्यान ना देकर अपने टोपे को योनी मे ही रहने दिया और उसके कुछ नॉर्मल होने के इंतज़ार करने लगा. कुछ देर बाद जैसे ही वो थोड़ा नॉर्मल हुई मैं उसके उपर लेट गया और उसके होंठों को चूसना शुरू कर दिया .वो भी मेरा पूरा साथ देने लगी तभी मैने एक और झटका मारा और मेरा लिंग अंदर चला गया उसने जल्दी से मेरे मुँह से अपना मुँह हटाया और फिर से चीखना शुरू कर दिया साथ ही मुझे धक्का देकर अपने उपर से हटाने लगी..

हीना : आआययईीई..... सुजल बहुत दर्द हो रहा है.मुझसे नही होगा जल्दी से बाहर निकालो बहुत दर्द हो रहा है.

मैं : (उसके सिर पर हाथ फेरते हुए) बस हो गया थोड़ा सा बर्दाश्त कर लो फिर मज़ा आने लगेगा. अगला झटका मैं तब ही मारूँगा जब तुम खुद बोलोगि..... जब तक दर्द कम नही होता तब तक हम ऐसे ही रहेंगे.

हीना : और अंदर मत करना कुछ देर ऐसे ही रहो बहुत दर्द हो रहा है.

उसके बाद मैं कुछ देर वैसे ही रहा और उसके दोनो स्तनों को चूस कर उसका दर्द कुछ कम करने लगा .कुछ ही देर मे उसकी भी दर्द भरी चीखे आहो मे बदलने लगी और वो फिर से मुझसे अपने स्तन चुसवाकर गरम होने लगी साथ ही मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए मेरे सिर को अपने स्तनों पर दबाने लगी.

हीना : अब कुछ आराम है सुजल अब करो लेकिन धीरे करना अभी भी दर्द हो रहा है.

मैं : अच्छा !

उसके इतना कहते ही मैने अपने दोनो हाथ उसके मोटे स्तनों पर रखे और एक और ज़ोरदार झटका मारा जिससे मेरा लिंग उसकी योनी की सील तोड़ता हुआ आधे से ज़्यादा अंदर चला गया. इसके साथ ही उसने कार मे अपने पैर पटकने शुरू कर दिए लेकिन मेरे समझाने पर वो फिर से नॉर्मल हो गई और मैं उसका दर्द कम करने के लिए फिर से उसके स्तन चूसने लगा. कुछ देर बाद जब वो नॉर्मल हुई तो मैने अपना लिंग उसकी योनी से बाहर निकाला जो उसकी योनी के खून और ढेर सारे पानी से नहाया हुआ था.

मैं : हीना कोई गंदा कपड़ा होगा कार मे?

हीना : हाँ शायद होगा कार की सीट के नीचे चेक करो.

मैने अंधेरे मे अंदाज़े से कार की सीट के नीचे हाथ घुमाया तो मुझे एक कपड़ा मिल गया. अब जाने वो क्या था लेकिन मैने उससे अपना लिंग और हीना की योनी अच्छे से साफ की और फिर से अपने लिंग पर थूक लगाके हीना की योनी मे अपना आधा लिंग डाल दिया. जिससे उसके मुँह से फिर एक तेज़ आआआयययर्यीीई सस्स्स्स्सस्स आराम से करो दर्द हो रहा है..... की आवाज़ निकली जिस पर मैने ज़्यादा ध्यान नही दिया और फिर से उसके स्तन चूसने लगा कुछ ही देर मे उसे भी मज़ा आने लगा तो उसने भी नीचे से अपनी नितंब को उपर की तरफ उठाना शुरू कर दिया जिसके जवाब मे मैने भी अपना आधा लिंग उसकी योनी मे धीरे-धीरे अंदर बाहर करना शुरू कर दिया. कुछ ही देर मे हीना फिर से मेरा साथ देने लगी. अब मेरा लिंग हीना की योनी के अंदर बाहर हो रहा था और वो हल्के फुल्के दर्द और मज़े के साथ ठुकाई का मज़ा ले रही थी. साथ मे सस्स्सस्स आआअहह ऊऊओह जैसी आवाज़े निकाल रही थी. कुछ ही धक्को के बाद उसका बदन अकड़ने लग गया और उसने मुझे कस कर गले से लगा लिया. साथ ही फिर से मेरे होंठ चूसने शुरू कर दिए. अब वो भी अपनी नितंब उठा-उठाकर मेरा साथ दे रही थी इसलिए मैने भी अपने धक्को की रफ़्तार बढ़ा दी जिससे कुछ ही देर मे मेरा पूरा लिंग उसकी योनी के अंदर बाहर होने लगा. जैसे ही मेरा पूरा लिंग उसकी योनी मे गया उसकी योनी ने एक जबरदस्त झटके खाना शुरू कर दिया और कुछ ही धक्को मे वो झड गई. अब मैने उसकी योनी से लिंग बाहर निकाला और उसे डॉगी स्टाइल मे कर लिया और पिछे से अपना लिंग उसकी योनी पर अड्जस्ट करके उसकी योनी मे धक्के मारने लगा. उसकी मोटी नितंब अब मेरे हाथ मे थी और मेरा लिंग उसकी योनी की धज्जियाँ उड़ा रहा था. मैं उस वक़्त कार के बाहर खड़ा था और वो कार के अंदर डॉगी स्टाइल मे ठुकवा रही थी.साथ ही उसके मुँह से लगातार सस्सस्स आआअहह ज़ोर से करो न्ईएरररर....... जैसी आवाज़े निकाल रही थी. मैं अब पूरी रफ़्तार से उसकी योनी मे धक्के लगा रहा था और उसके नीचे की तरफ बड़े-बड़े स्तनों को पकड़कर मसल रहा रहा था. तभी उसका बदल फिर से अकड़ने लगा और उसकी सिसकारियाँ भी बढ़ने लगी .कुछ ही देर मे वो फिर से झड गई जिससे उसकी टांगे काँपने लगी और वो कार के अंदर ही पेट के बल लेटकर लंबे-लंबे साँस लेने लगी हम दोनो के ही बदन उस वक़्त पसीने मे नहाए हुए थे. अब वो फिर से सीधी होके पीठ के बल लेट गई और उसने खुद ही अपने दोनो हाथो से अपनी टांगे पकड़कर कार की छत से लगा दी मैने अब अपनी दोनो टांगे कार की सीट पर रखी और फिर से अपना लिंग उसकी योनी मे डाल दिया और धक्के मारने लगा.उसने मुझे फिर से अपने उपर खींच लिया और मेरे मुँह को

अपने स्तनों पर दबाने लगी मैं भी किसी भूखे बच्चे की तरह उसके स्तनों पर टूट पड़ा. अब मेरा मुँह उसके स्तनों पर कमाल दिखा रहा था और नीचे मेरा लिंग उसकी योनी मे अपना जलवा दिखा रहा था. तभी हमें दूर से एक हेड लाइट चमकती हुई नज़र आई और एक हॉर्न की आवाज़ सुनाई दी जिसे हीना ने फॉरन पहचान लिया.

हीना : ये तो अब्बू की जीप का हॉर्न है.

मैं : जल्दी से कपड़े पहनो

साथ ही मैने कार का दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया और हम दोनो जल्दी से अपने-अपने कपड़े पहनने लगे.

हीना जल्दी से उठकर कार के अंदर से ही आगे वाली सीट पर चली गई और जल्दी से अपनी सलवार पहनने लगी और अपने कपड़े ठीक करने लगी तब तक मैं भी अपने कपड़े पहन कर आगे वाली ड्राइविंग सीट पर आ चुका था...

हीना : ये तो अब्बू की जीप है ये यहाँ कैसे आ गये अब क्या होगा.

मैं : डर लग रहा है (मुस्कुरा कर)

हीना : जब आप साथ होते हो तब डर नही लगता (मुस्कुरा कर)

इतना मे वो जीप हमारे पास आके रुकी और उसमे से एक आदमी निकलकर बाहर आया.

आदमी : (गाड़ी के दरवाज़े पर हाथ से नीचे इशारा करते हुए) छोटी मालकिन आप अभी तक गाड़ी सीख रही है. बड़े मालिक आपको बुला रहे हैं उन्होने कहा है कि बाकी कल सीख लेना.

हीना : अच्छा... तुम चलो हम इसी कार मे आ रहे हैं

आदमी : जी जैसी आपकी मर्ज़ी मालकिन...

फिर वो आदमी वापिस जीप मे बैठ गया और हमने भी उसके पिछे ही अपनी कार दौड़ा ली. हीना पूरे रास्ते मेरे कंधे पर अपना सिर रखकर बैठी रही और मुझे देखकर मुस्कुराती रही और कभी-कभी मेरे गाल पर चूम लेती. कुछ देर मे हवेली आ गई तो बाहर खड़े दरबान ने हमारी कार देखते ही बड़ा दरवाजा जल्दी से खोल दिया. मैं गाड़ी हवेली के अंदर ले गया और गाड़िया खड़ी करने की जगह पर गाड़ी रोक दी. तभी सरपंच वहाँ आ गया. जिसे देखते ही हीना जल्दी से कार से उतर गई. हालाकी उसे चलने मे तक़लीफ़ हो रही थी लेकिन उसने अपने अब्बू पर कुछ भी जाहिर नही होने दिया.

सरपंच : बेटी आज तो बहुत देर करदी मुझे फिकर हो रही थी.

हीना : अब मैं बच्ची नही हूँ अब्बू... बड़ी हो गई हूँ ऐसे फिकर ना किया करो और वैसे भी सुजल मेरे साथ ही तो थे. (मुस्कुरा कर)

सरपंच : अर्रे ये किसके कपड़े पहने है. हाहहहहहाहा

हीना : वो मैं इनको लेने इनके घर गई थी तो वहाँ बाबा जी चाय पी कर जाने की ज़िद्द करने लगे .वहाँ चाय पकड़ते हुए मेरे हाथ से चाय का कप गिर गया था. जो मेरे कपड़ो पर गिर गया (हीना ने झूठ बोला) इसलिए इन्होने मुझे अपने कपड़े दे दिए पहन ने के लिए.... अच्छे है ना (मुस्कुराते हुए)

सरपंच : अच्छा...अच्छा अब तारीफे बंद करो और चलो मैने खाना नही खाया तुम्हारी वजह से. (हीना के सिर पर हाथ फेरते हुए)

मैं गाड़ी से उतरते हुए दोनो बाप बेटी को बाते करते हुए देख रहा था और उन दोनो की बाते सुनकर मुस्कुरा रहा था.

मैं : माफ़ कीजिए सरपंच जी आज थोड़ा देर हो गई. ये लीजिए आपकी अमानत की चाबी.

सरपंच : (चाबी पकड़ते हुए) कोई बात नही.... अर्रे ये तुम्हारे सिर मे क्या हुआ

मैं : कुछ नही वो ज़रा चोट लग गई थी.(अपने माथे पर हाथ फेरते हुए)

सरपंच : (मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए) अपना ख्याल रखा करो

मैं : जी ज़रूर...

हीना : अब्बू वो गाड़ी वाली बात भी तो करो ना इनसे.

सरपंच : अर्रे हाँ मैं तो भूल ही गया.... बेटा वो हीना कितने दिन से पिछे पड़ी है इसको नयी गाड़ी लेके देनी है... तो मुझे समझ नही आ रहा था कि कौनसी गाड़ी इसे लेके दूं तुम बताओ इसके लिए कौनसी गाड़ी अच्छी रहेगी.

मैं : कोई भी गाड़ी ले दीजिए... बस इतना ख़याल रखना कि गाड़ी छोटी हो जिससे इनको (हीना को) भी चलाने मे आसानी रहेगी.

हीना : अब्बू आप असल बात तो भूल ही गये ये वाली नही साथ जाने वाली बात पुछो ना.....

सरपंच : आप खुद ही पूछ लो महारानी साहिबा... (हीना के आगे हाथ जोड़ते हुए)

हीना : सुजल जी वो मैं सोच रही थी कि आप को हम से ज़्यादा समझ है गाडियो की तो आप भी हमारे साथ ही शहर चलें ना नयी गाड़ी लेने के लिए (मुस्कुराते हुए)

मैं : (चोंकते हुए) मैं... मैं कैसे.... नही आप लोग ही ले आइए मुझे खेतो मे भी काम होता है ना.

सरपंच : अर्रे बेटा मान जाओ ! नही तो ये सारा घर सिर पर उठा लेगी. जहाँ तक खेतो की बात है तो मैं अपने मुलाज़िम भेज दूँगा १-२ दिन के लिए. वो लोग तुम्हारे खेत का ख्याल रखेंगे जब तक तुम हमारे साथ शहर रहोगे.

मैं : ठीक है.. लेकिन एक बार बाबा से पूछ लूँगा तो बेहतर होगा.

सरपंच : तुम्हारे बाबा की फिकर तुम ना करो.मैं हूँ ना मैं कल ही जाके बात कर आऊगा फिर परसो हम शहर चलेंगे. अब तो कोई ऐतराज़ नही तुमको.

मैं : जी नही... अच्छा सरपंच जी अब इजाज़त दीजिए काफ़ी रात हो गई है सब लोग खाने पर इंतज़ार कर रहे होंगे.

सरपंच : ठीक है.... रूको तुमको रामसिंग छोड़ आएगा... रामसिंग... (अपने मुलाज़िम को आवाज़ लगाते हुए)

रामसिंग : जी मालिक (दौड़कर सरपंच के सामने आते हुए)

सरपंच : सुजल को उनके घर छोड़ आओ जीप पर.

रामसिंग : जी... ठीक है मालिक.

उसके बाद रामसिंग मुझे जीप पर घर तक छोड़ गया.

१९

मेरे घर आते ही जास्मिन मुझे खा जाने वाली नज़रों से घूर-घूर कर देखने लगी. लेकिन वो बोल कुछ नही रही थी और ऐसे ही गुस्से से मुझे घुरती हुई चुप-चाप सलमा के कमरे मे चली गई. तभी सलमा भी रसोई मे से आ गई...

सलमा : आ गये सुजल बहुत देर करदी.(मुस्कुराते हुए)

मैं : कुछ नही वो ज़रा हीना को गाड़ी सीखा रहा था तो देर हो गई.

सलमा : तुम्हारे इतनी चोट लगी है. एक दिन नही सीखते तो क्या हो जाना था.

मैं : नही वो बाबा ने हीना को बोल दिया था तो मैं मना कैसे करता इसलिए सोचा जब आ गया हूँ तो गाड़ी चलानी भी सीखा ही देता हूँ.

सलमा : वो सब तो ठीक है लेकिन कुछ अपना भी ख्याल रखा करो.

मैं : (चारो तरफ देखते हुए) तुम हो ना मेरा ख्याल रखने के लिए...(मुस्कुराकर)

सलमा : अच्छा अब ज़्यादा प्यार दिखाने की ज़रूरत नही है. चलो जाओ जाके नहा लो फिर साथ मे खाना खाएँगे.

मैं : अच्छा....

उसके बाद मैं नहाने चला गया और सलमा भी वापिस रसोई मे चली गई. कुछ देर बाद मैं जब नहा कर बाहर आया तो सलमा अकेली ही खाने का सब समान टेबल पर रख रही थी.

मैं : जास्मिन दिखाई नही दे रही वो कहाँ है.

सलमा : वो अंदर है कमरे मे कह रही थी भूख नही है इसलिए खाना नही खाएगी. अब तुम तो जल्दी आओ.मुझे बहुत भूख लगी है चलो आज हम दोनो खाना खा लेते हैं.(मुस्कुरा कर)

मैं : तुम खाना शुरू करो मैं ज़रा जास्मिन को देखकर आता हूँ.

सलमा : अच्छा...

मैं जब सलमा के कमरे मे गया तो जास्मिन अंदर उल्टी होके नितंब उपर करके लेटी थी और बार-बार तकिये को तोड़-मरोड़ रही थी. मैने एक नज़र उसको देखा और वापिस खाने के टेबल के पास आ गया.

मैं : सलमा ज़रा जास्मिन की खाने की थाली बना दो मैं अभी उसको खाना खिला कर आता हूँ.

सलमा : ठीक है...लेकिन वो तो कह रही थी भूख नही है.

मैं : तुम खाना तो लगाओ बाकी मैं खिला लूँगा उसको

सलमा : ठीक है.

फिर सलमा ने जास्मिन की खाने की थाली मुझे दे दी और मैं वो थाली लेके कमरे मे चला गया अंदर अभी भी जास्मिन वैसी ही उल्टी होके लेटी हुई थी.

मैं : लगता है आज बहुत गुस्सा हो (मुस्कुराते हुए)

जास्मिन : तुमसे मतलब...

मैं : अच्छा तो मुझसे गुस्सा हो...

जास्मिन : मैं क्यो किसी से गुस्सा होने लगी.

मैं : अच्छा... तो फिर खाना खाने क्यो नही आई...

जास्मिन : मुझे भूख नही है

मैं : ठीक है थोड़ा सा खा लो मैं तुम्हारे लिए खाना लेके आया हूँ.

जास्मिन : (उठकर बैठते हुए) किसने बोला था खाने लाने को .नही खाना मुझे तुम जाओ यहाँ से.

मैं : ऐसे कैसे जाऊ ! तुमको खाना खिलाए बिना तो नही जाऊंगा. (मुस्कुराते हुए)

जास्मिन : अब मेरे पास क्या लेने आए हो.जाओ उसी बंदरिया को जाके खाना खिलाओ जिसके साथ बड़ी हँस-हँस के बाते हो रही थी.

मैं : अच्छा....तो इसलिए नाराज़ हो...हाहहहहाहा

जास्मिन : हँसो मत मुझे बहुत गुस्सा चढ़ा हुआ है.

मैं : ठीक है गुस्सा मुझ पर उतारो ना फिर. खाने ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है .देखो कैसे मायूस होके थाली मे पड़ा है बिचारा.

जास्मिन : (हँसते हुए) सुजल तुम जाओ ना मुझे भूख नही है.

मैं : अच्छा चलो आज सुबह जैसे करते हैं.

जास्मिन : सुबह जैसे क्या

मैं : जैसे तुमने मुझे खाना खिलाया था अपने हाथो से.मैं भी तुमको वैसे ही खिलाता हूँ फिर तो ठीक है.

जास्मिन : तुम जाओ ना सुजल मुझे नही खाना.

मैं : (बेड पर बैठ ते हुए और थाली मे से रोटी का टुकड़ा तोड़कर जास्मिन के मुँह के सामने करते हुए) मैने तुमसे पूछा नही कि तुमको भूख है या नही चलो अब मुँह खोलो....

जास्मिन : (मुस्कुराकर मुँह खोले हुए) आपने खाया...

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए)

जास्मिन : क्या... चलो आप भी मुँह खोलो मैं खिलाती हूँ (मुस्कुराकर)

उसके बाद ऐसे ही हमने एक दूसरे को खाना खिलाया और एक दूसरे को प्यार से देखते रहे.

मैं : वैसे तुम हीना से किस बात पर गुस्सा थी.

जास्मिन : जानते हो उस कमीनी ने कौनसे कपड़े पहने थे मेरे चाय गिराने के बाद.

मैं : मेरे कपड़े पहने थे तो क्या हुआ.

जास्मिन : ना सिर्फ़ आपके कपड़े पहने थे बल्कि उसने वो कपड़े पहने थे जो मैने खुद आपके लिए बड़े प्यार से सिले थे. इसलिए मुझे गुस्सा आ रहा था.

मैं : कोई बात नही उसको कपड़ो से खुश हो लेने दो तुम्हारे पास तो तुम्हारा सुजल खुद है फिर किसी से जलन कैसी....है ना

जास्मिन : (खुश हो कर मुझे गले से लगाते हुए) अब गुस्सा नही करूँगी.

मैं : चलो अब जल्दी से खाना ख़तम करो फिर सोना भी है बहुत रात हो गई है ना.

जास्मिन : एक बात बोलूं बुरा नही मनोगे तो....

मैं : हाँ बोलो

जास्मिन : वो जब आपके साथ होती है. तो मुझे ऐसा लगता है जैसे आप मुझसे दूर हो गये हो.

मैं : किसी से बात कर लेने का मतलब ये नही होता जास्मिन कि मैं उसका हूँ... मैं सिर्फ़ और सिर्फ़ इस घर का हूँ बॅस मुझे इतना पता है.

जास्मिन : मतलब सिर्फ़ मेरे हो. (मुस्कुराते हुए)

मैं : अच्छा अब दूर होके बैठो सलमा देख लेगी तो क्या सोचेगी.

जास्मिन : (दूर होके बैठ ते हुए) ये तो मैने सोचा ही नही...हाहहाहा

मैं : इसलिए कहता हूँ .तुम मे अभी बचपना है !

जास्मिन : (नज़रे झुकाकर मुस्कुराते हुए)

मैं : अच्छा अब मैं चलता हूँ .ठीक है !बहुत रात हो गई है तुम भी सो जाओ अब.

जास्मिन : मेरे वाले कमरे मे जाके सोना आज ठीक है.

मैं : हम्म अच्छा... (थाली लेके खड़ा होते हुए)

जास्मिन : अर्रे ये आप क्यो लेके जा रहे हो छोड़ो मैं ले जाऊंगी (थाली मुझसे लेते हुए)

मैं : ठीक है !

उसके बाद मैं खड़ा हुआ और जैसे ही कमरे से बाहर जाने लगा जास्मिन की आवाज़ मेरे कानो से टकराई जिसने मेरे कदम रोक दिए.

जास्मिन : आज मुँह मीठा नही करना (मुस्कुरा कर)

मैं : करना तो है लेकिन....सलमा देख सकती है इसलिए अभी रहने देते हैं (मुस्कुराकर)

जास्मिन : सोच लो.... ऐसा मोक़ा फिर नही दूँगी (मुस्कुराते हुए)

मैं : कोई बात नही मुझे कुछ करने के लिए मोक़े की ज़रूरत नही सिर्फ़ मर्ज़ी होनी चाहिए.

इतने मे सलमा की आवाज़ आ गई तो हम दोनो चुप हो गये....

सलमा : (कमरे मे आते हुए) अर्रे जास्मिन ने खाना खाया या नही.

मैं : खा लिया (मुस्कुराते हुए)

सलमा : क्या बात है जब मैने बोला था तो नही खाया तुम आए तो खा भी लिया.

जास्मिन : ऐसा कुछ नही है भाभी वो बस ये ज़िद्द करके बैठ गये तो खाना पड़ा.

सलमा : अच्छा अब चलो रसोई मे थोड़ा काम करवा दो मेरे साथ.फिर सोना भी है.

जास्मिन : अच्छा अभी आई भाभी.

मैं : मेरे लिए और कोई हुकुम सरकार....(मुस्कुराते हुए)

सलमा : जी... आप जाइए और जाके अपने नये कमरे मे सो जाइए आराम से (मुस्कुरा कर)

मैं : जो हुकुम.... आज बाबा के पास नही सोना क्या.

सलमा : नही वो बाबा कह रहे थे कि अगर सुजल दूसरे कमरे मे सोना चाहे तो सुला देना. नही तो यहाँ भी (बाबा के कमरे मे) सोएगा तो मुझे कोई ऐतराज़ नही.

मैं : तो मैं कहा सोउ फिर...

सलमा : जहाँ तुम चाहते हो सो जाओ आज तो सारा दिन मैं अकेली ही लगी रही .जास्मिन भी तुम्हारे साथ शहर चली गई थी. तो मुझे भी बहुत नींद आ रही है.

जास्मिन : तो भाभी आप सो जाओ ना वैसे भी बाबा ने ज़्यादा काम करने से मना किया है ना आपको.

सलमा : तो फिर घर का बाकी बचा हुआ काम कौन करेगा.

जास्मिन : मैं हूँ ना संभाल लूँगी आप जाओ जाके सो जाओ.(मुस्कुराते हुए)

सलमा : अच्छा... ठीक है (मुस्कुराते हुए) जास्मिन सोने से पहले याद से सुजल को दूध गरम करके दे देना मैने उसमे दवाई डाल दी है.

जास्मिन : अच्छा भाभी.

उसके बाद जास्मिन रसोई मे चली गई और सलमा अपना बिस्तर करने लगी .मैं भी अपने नये कमरे मे जाके लेट गया और सोने की कोशिश करने लगा और दिन भर हुए सारे कामो के बारे मे सोचने लगा. थोड़ी देर मैं ऐसे ही बिस्तर पर लेटा करवटें बदलता रहा लेकिन मुझे नींद नही आ रही थी. कुछ देर बाद जास्मिन भी दूध का लेके मेरे कमरे मे आ गई.

जास्मिन : सो गये क्या.

मैं : नही जाग रहा हूँ क्या हुआ

जास्मिन : ये दवाई वाला दूध लाई हूँ आपके लिए पी लो.

मैने बिना कुछ बोले दूध पकड़ लिया और पीने लगा. और जास्मिन ऐसे ही मेरे पास खड़ी मुझे देखती रही और मुस्कुराती रही.

मैं : लो जी ये दूध तो हो गया अब आपके दूध की बारी है.

जास्मिन : (चोंकते हुए) मेरा कौनसा दूध ?

मैं : पास आओ

जास्मिन : (ना मे सिर हिलाते हुए) अब कोई शरारत मत करना भाभी जाग ना जाए.

मैं : जाके देख कर आओ अगर वो सो गई तो वापिस आ जाना. (मुस्कुराते हुए)

जास्मिन : मैं अभी देखकर आई हूँ. भाभी तो कब की सो गई है

मैने जल्दी से जास्मिन की बाजू पकड़कर अपनी तरफ खींचा.जिससे वो खुद को संभाल नही सकी और मेरे उपर आके गिरी जिसको मैने अपनी दोनो बाजू मे थाम लिए.

जास्मिन : क्या कर रहे हो छोड़ो मुझे भाभी जाग जाएगी.

मैं : नही जागेगी अभी तुम खुद ही तो देखकर आई हो.

जास्मिन : फिर भी जाग गई तो...मुझे डर लगता है छोड़ो ना

मैं : अच्छा मुँह मीठा करवाओ फिर जाने दूँगा.

जास्मिन : लेकिन सिर्फ़ एक बार.ठीक है!

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हम्म...

जास्मिन मेरे उपर लेटी हुई थी और उसने भी अपनी सहमति मे आँखें बंद कर ली. फिर मैने उसके चेहरे को अपने हाथ से पकड़ा और अपने होंठ उसके नाज़ुक और रसीले होंठों पर रख दिए. मेरे होंठ उसके होंठों के साथ मिलते ही उसने अपना पूरा बदन ढीला छोड़ दिया जिससे मैने उसके होंठ चूस्ते हुए अपने दोनो हाथ उसकी कमर पर रख दिए और सख्ती से उसको अपनी बाजू मे क़ैद कर लिया अब मैं कभी उसके नीचे वाला होंठ चूस रहा था कभी उसके उपर वाला होंठ चूस रहा था. वो बस अपनी आँखें बंद किए हुए मेरे उपर लेटी हुई थी और अपने दोनो हाथ मेरी छाती पर रखे हुए थे. मुझे उसका नाज़ुक और नरम बदन मदहोश सा करता जा रहा था.जिससे मैं खुद पर काबू नही कर पा रहा था.इसलिए मैने उसके होंठ चूस्ते हुए ही उसको पलटाया और बिस्तर की दूसरी तरफ गिरा दिया और खुद उसके उपर आ गया उसकी साँस लगातार तेज़ चल रही थी और अब वो भी मेरी पीठ पर अपने हाथ फेर रही थी. मैं हीना के साथ हुई ठुकाई से वैसे ही गरम था उस पर मुझे जास्मिन जैसा नाज़ुक बदन फिर से मिल गया इसलिए मैं बहुत जल्दी गरम हो गया.

अब मेरा एक हाथ जास्मिन की गर्दन पर घूम रहा था और दूसरा हाथ उसके सिर के नीचे था जिससे मैने उसके सिर को उपर उठा रखा था ताकि होंठ चूसने मे आसानी रहे. नीचे

मेरा लिंग भी पूरी तरह खड़ा हो चुका था जो जास्मिन की टाँगो के बीच मे फसा हुआ था अब मैने अपने एक हाथ जो उसकी गर्दन पर था उससे नीचे ले जाना शुरू किया और उसके एक स्तन को पकड़ लिया जिसे जास्मिन ने फॉरन अपने हाथ से झटक दिया. मैने फिर से अपना हाथ उपर ले जाकर दुबारा उसके स्तन को थाम लिया और दबाने लगा जिसे एक बार फिर जास्मिन ने पकड़ लिया और नीचे को झटक दिया साथ ही आँखें खोल कर मेरी आँखो मे देखा और ना मे इशारा किया. लेकिन मैं उस वक़्त इतना गरम हो गया था कि कुछ भी समझने की हालत मे नही था. इसलिए मैने एक बार फिर जास्मिन के स्तन को सख्ती से थाम लिया इस बार जास्मिन ने कुछ नही कहा और मेरी आँखों मे देखकर मुझे ना इशारा करती रही.

फिर मैने अपना हाथ नीचे ले जाकर जास्मिन की कमीज़ ज़रा उपर की और अपना हाथ अंदर डालने की कोशिश करना लगा. जिससे जास्मिन ने अपने होंठ मेरे होंठों से अलग किए और अपने दोनो हाथो से मेरा हाथ पकड़ लिया.

जास्मिन : मत करो ना

मैं : कुछ नही होता मेरा दिल है.

उसके बाद मैने जास्मिन के दोनो हाथो को अपने एक हाथ से पकड़ लिया और उपर कर दिया साथ ही दूसरा हाथ नीचे लेजा कर ज़बरदस्ती उसकी कमीज़ मे डाल दिया और उसके पेट पर फेरने लगा साथ ही दुबारा उसके होंठ चूसने लगा. मेरा हाथ जैसे ही उसकी ब्रा तक पहुँचा उसने अपना एक हाथ छुड़ा लिया और मेरे मुँह पर थप्पड़ मार दिया .साथ ही डर कर अपना एक हाथ अपने मुँह पर रख लिया.

जास्मिन : सुजल माफ़ कर दो मैने जान-बूझकर नही मारा वो ग़लती से हाथ उठ गया.

मैं : (जास्मिन के उपर से हट ते हुए) जाओ यहाँ से...

जास्मिन : सुजल माफ़ कर दो मैने जान बूझकर नही मारा.

मैं : (गुस्से मे) मैने बोला ना जाओ यहाँ से.

इतना बोलने के साथ ही मैने उसकी बाजू पकड़ी और अपने बिस्तर से उसको खड़ा कर दिया.

जास्मिन : सुजल ज़्यादा ज़ोर से लगा क्या.

मैं : जाओ यहाँ से.ग़लती मेरी थी जो तुम पर अपना हक़ जाता रहा था.

जास्मिन : (रोते हुए) ऐसा मत बोलो सुजल ग़लती तो मुझसे हो गई माफ़ कर दो. (मेरा हाथ पकड़ते हुए) मुझे वहाँ किसीने कभी छुआ नही इसलिए ग़लती से हाथ उठ गया. अब कुछ भी कर लो मैं कुछ नही कहूँगी.

मैं : मुझे बहुत नींद आई है तुम जाओ और जाके सो जाओ मुझे अब कुछ नही करना. जो मिला इतना काफ़ी है.(अपना हाथ जास्मिन के हाथ से झटकते हुए)

उसके बाद मैं वापिस अपने बिस्तर पर लेट गया और जास्मिन रोती हुई कमरे से चली गई. मुझे उस वक़्त सच मे बहुत गुस्सा आ गया था क्योंकि मैने जास्मिन से ऐसे-कुछ की कभी उम्मीद नही की थी लेकिन उसके इस तरह मुझ पर हाथ उठाने से जाने क्यो मुझे बहुत बुरा लगा. कुछ देर ऐसे ही मैं बिस्तर पर लेटा रहा ओर फिर थोड़ी ही देर मे मुझे नींद आ गई. लेकिन आधी रात को अचानक मुझे अजीब बैचैनि सी महसूस होने लगी और मेरी नींद खुल गई मेरा पूरा बदन पसीने से भीगा पड़ा था मेरे सिर मे बहुत तेज़ दर्द हो रहा था जैसे अभी फॅट जाएगा और मुझे बहुत तेज़ चक्कर भी आ रहे थे ऐसा लग रहा था जैसे पूरा कमरा घूम रहा हो. मेरा पूरा बदन टूटने लगा मैं हिम्मत करके उठा लड़खड़ाते हुए पास पड़े मटके से थोड़ा सा पानी पी लिया और कुछ अपने सिर मे भी डाल लिया थोड़ी देर बार मुझे एक उल्टी आई तो थोड़ा सुकून आया. उसके बाद मैं आके फिर से बिस्तर पर लेट गया. पानी पीने से मुझे कुछ सुकून मिला और कुछ ही देर मे मुझे फिर से नींद आ गई.

सुबह किसी के हिलाने से मेरी नींद खुली तो देखा सलमा मुझे उठा रही थी मेरे सिर मे अब भी तेज़ बहुत दर्द था और मेरा पूरा बदन टूट रहा था मुझसे आँखें खोली नही जा रही थी ओर उनमे तेज़ जलन हो रही थी. जब मैने आँखें खोली तो बाबा जास्मिन और सलमा मेरे पास ही खड़े थे. वो तीनो बड़ी फिकर-मंदी से मुझे देख रहे थे.

सलमा : सुजल तुम्हे तो बहुत तेज़ बुखार है

मैं : पता नही हो गया होगा मेरे सिर मे भी बहुत दर्द हो रहा है.

सलमा : ये लो दवाई खा लो ठीक हो जाओगे.

जास्मिन : मैं सिर दबा दूँ.

मैं : ज़रूरत नही है.

बाबा : आज बेटा खेत नही जाना और घर पर ही आराम करना.

मैं : जी बाबा.

उसके बाद मैने दवाई खाई और सबने मुझे खेत नही जाने दिया और घर मे ही आराम करने का बोल दिया. इसलिए अब मैं बाहर नही जा सकता था ओर दिन भर घर मे अपने कमरे मे ही बैठा रहा. कुछ देर सलमा मेरा सिर अपनी गोद मे रखकर दबाती रही जिससे मुझे काफ़ी आराम मिल रहा था फिर जब मुझे थोड़ा सुकून मिला तो मैने सलमा को रोक दिया और वो भी बाहर चली गई और घर के बाकी कामो मे लग गई. जास्मिन बार-बार मेरे सामने आ रही थी और अपने कान पकड़कर माफी माँग रही थी लेकिन रात का वाक़या याद आते ही मेरे चेहरे पर उसके लिए गुस्सा आ जाता और मैं उसकी तरफ देखता भी नही था. दुपहर को हीना मुझसे मिलने घर आ गई जिसे सलमा ने सीधा मेरे कमरे मे ही भेज दिया.

हीना : क्या हुआ सुजल आज खेत नही गये आप मैं तो आपको दवाई देने खेत गई थी.

मैं : कुछ नही वो ज़रा बुखार आ गया था इसलिए...

हीना : क्या.... ओर आपने मुझे बताना भी ज़रूरी नही समझा.

मैं : अर्रे इसमे बताने जैसा क्या था.हल्का सा बुखार था शाम तक ठीक हो जाएगा.

हीना : दवाई ली?

मैं : हाँ सुबह सलमा ने दे दी थी.

हीना : अच्छा आप आराम करो शाम को मैं फिर आउंगी.(मेरे हाथ पर अपना हाथ रखते हुए)

उसके बाद हीना चली गई और मैं उसको कमरे से बाहर निकलते हुए देखता रहा. सारा दिन ऐसे ही कमरे मे गुज़र गया और शाम को हीना अपने वादे के मुताबिक़ फिर आ गई लेकिन इस बार उसके साथ एक डॉक्टर भी था. कुछ देर वो लोग बाहर बाबा के पास बैठे रहे और फिर डॉक्टर , हीना, और सलमा कमरे मे आ गये. ये वही डॉक्टर था जिसके पास हीना मुझे शहर मे दिखाने के लिए लेके गई थी जिसको मैने देखते ही पहचान लिया. डॉक्टर ने आते ही पहले मेरा चेक-अप किया और फिर मुझ दी हुई दवाई के बारे मे पूछने लगा जो डॉक्टर नताशा ने मुझे रोज़ खिलाने के लिए दी थी.

डॉक्टर : आपको ये दवाइयाँ किसने दी है.

सलमा : जी शहर से इनके एक दोस्त आए थे उनके साथ एक डॉक्टर आई थी उसने दी है...क्यो क्या हुआ.

डॉक्टर : आप जानती है ये दवाई किस काम के लिए हैं.

सलमा : हंजी डॉक्टर ने इनकी याददाश्त के लिए इन्हे ये दवाइयाँ दी है ये हर बात भूल जाते हैं इसलिए....

डॉक्टर: (मुस्कुराते हुए) ये दवाइयाँ याददाश्त वापस लाने के लिए नही बल्कि दिमाग़ की तमाम याददाश्त को ख़तम करने के लिए है.

सलमा : (चोंकते हुए) क्या.....

डॉक्टर : ये तो अच्छा हुआ कि इनके ब्लड मे शराब इतनी ज़्यादा है जिस वजह से जब इन्होने दवाई खाई तो दवाई इनको सूट नही हुई और इनकी तबीयत खराब हो गई. नही तो ये अगर रोज़ ऐसे ही ये दवाई लेते रहते तो इनको जो अब थोड़ा बहुत याद है वो भी साफ हो जाना था.

ये बात हम सब के लिए किसी झटके से कम नही थी. सबके दिमाग़ मे एक ही बात थी कि क्यो डॉक्टर नताशा ने मुझे ग़लत दवाई दी. आख़िर क्यो चौहान जैसा नेक़ और ईमानदार इंसान मेरे साथ ऐसा कर रहा है. अब मेरी समझ मे आ रहा था कि रात को मुझे इतनी बचैनि क्यो हुई आख़िर क्यो मेरे सिर मे इतना जबरदस्त दर्द हुआ. ये सब डॉक्टर नताशा की दी हुई दवाई का ही कमाल था. अभी मैं इसी बात पर सोच ही रहा था कि हीना की आवाज़ आई.

हीना : ये कौनसे बेफ़्क़ूफ़ डॉक्टर के पास लेके गये थे आप लोग सुजल को. अगर इन्हे कुछ हो जाता तो कभी सोचा है.

सलमा : (परेशान होते हुए) मुझे तो खुद कुछ समझ नही आ रहा. नही तो इनका बुरा तो हम सोच भी नही सकते.

डॉक्टर : कोई बात नही अभी तो सिर्फ़ एक ही डोज अंदर गई थी इसलिए ज़्यादा कुछ असर नही हुआ. ये मैं आपको कुछ दवाई लिखकर देता हूँ आप लोग ले आइए और इन्हे देना शुरू कर दीजिए और बाकी ये वाली दवाई इन्हे दुबारा मत देना.

हीना : (दवाई की पर्ची पकड़कर हाँ मे सिर हिलाते हुए) कोई बात नही मैं किसी को भेज कर अभी शहर से मंगवा लेती हूँ.

सलमा : हमें माफ़ कर दो सुजल .हमे नही पता था कि उस खबीज ने तुमको ग़लत दवाई दी है. हम तो उससे नेक़ इंसान समझकर भरोसा कर बैठे.

मैं : कोई बात नही इसमे आपका क्या कसूर है. अब जवाब तो चौहान को देना है.

सलमा : अब घर मे घुसकर तो दिखाए कमीना टांगे तोड़ दूँगी उसकी.

मैं : कोई कुछ नही बोलेगा उसको... अभी मुझे ये बात जानने दो कि उसने ऐसा क्यो किया.

फिर डॉक्टर ने मुझे एक इंजेक्शन लगाया जिससे कुछ ही देर मे मेरा बुखार भी उतर गया उसके बाद हीना ने भी अपने ड्राइवर को डॉक्टर को शहर छोड़ने के लिए भेज दिया साथ ही वो दवाई की पर्ची भी उसको दे दी. जब तक ड्राइवर नही आया हीना और सलमा मेरे

पास ही बैठी रही लेकिन जास्मिन कमरे के बाहर ही खड़ी रही उसको सब अंदर बुलाते रहे लेकिन वो अंदर नही आई बस दरवाज़े पर खड़ी मुझे देखती रही.

मेरे दिमाग़ मे बस इंस्पेक्टर चौहान और डॉक्टर नताशा का ही ख़याल था मेरे दिमाग़ मे इस वक़्त एक साथ कई सवाल चल रहे थे. फिर अचानक इस डॉक्टर की कही हुई बात याद आई कि मुझे मेरे खून मे मिली शराब ने बचाया. लेकिन मैं तो शराब पीता ही नही फिर मेरे खून मे शराब कैसे आई. ऐसे ही कई सवाल थे जिनके जवाब मुझे चाहिए थे मुझे सिर्फ़ एक ही इंसान पता था जो मेरी बीती हुई जिंदगी के बारे मे जानता था.जिससे मैं अपने बारे मे जान सकता था कि मैं कौन हूँ ओर मेरी असलियत क्या है. इसलिए मैने सोच लिया था कि अब इंस्पेक्टर चौहान से ही अपनी असलियत पता करूँगा.

हीना और सलमा मेरे पास बैठी रही और मेरे बारे मे ही बाते करती रही लेकिन मैं बस अपने ही ख्यालो मे गुम था और आने वाले वक़्त के बारे मे सोच रहा था. जाने कब मुझे नींद आ गई और मैं सो गया मुझे पता ही नही चला. रात को जब मेरी नींद खुली तो मैं उठकर बैठ गया मेरे पास ही कुर्सी पर सलमा बैठी-बैठी ही सो गई थी. मैं उठ कर खड़ा हुआ तो मैने खुद को बहुत ताज़ा महसूस किया जैसे मुझे कुछ हुआ ही नही. मैने सलमा को उठाना सही नही समझा इसलिए उसको धीरे से सीधा करके कुर्सी पर बिठाया और एक बाजू उसकी गर्दन मे डाली और दूसरी उसकी टाँगो के नीचे से लेजा कर उसे गोद मे उठा लिया और बेड पर अच्छे से लिटा दिया. वो अब भी नींद मे थी और सोई हुई बहुत मासूम लग रही थी. उसके चेहरे पर आने वाली लट उसकी खूबसूरती को और निखार रही थी मैने उसके खूबसूरत चेहरे से वो बाल की लट को उंगली से साइड पर किया और उसके मासूम चेहरे को देखने लगा और दिन भर हुए सारे हालात के बारे मे सोचने लगा कि कैसे सलमा ने सारा दिन मेरी खिदमत की. वो शायद ठीक ही कहती थी कि दुनिया के लिए उसका शौहर अब्दुल था लेकिन असल मे वो मुझे अपना शौहर मानती थी. एक वफादार बीवी की तरह हमेशा मेरा इतना ख्याल रखती थी. मैने हल्के से उसके होंठों को चूम लिया जिससे उसकी आँखें खुल गई और वो मुस्कुरा कर मुझे देखने लगी.

सलमा : आप उठ गये जान... अब कैसा महसूस कर रहे हैं.

मैं: बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ जैसे कुछ हुआ ही नही मुझे. लेकिन तुम क्यों जाग गई सो जाओ अभी बहुत रात बाकी है.

सलमा : मैं तो आपके पास ही बैठी थी.... जान पता ही नही चला कब आँख लग गई.

मैं : कोई बात नही अब तुम आराम करो.

सलमा : नही आप यहाँ सो जाओ मैं अब उस कमरे मे जाके सो जाऊंगी.

मैं : क्यो यहाँ सो जाओगी तो कुछ हो जाएगा.

सलमा : होगा तो कुछ नही पर अभी आपको आराम की ज़रूरत है.

मैं : तुम्हारे उपर लेट जाता हूँ ना. इससे ज़्यादा आराम तो दुनिया मे नही होगा.

सलमा : (मेरे दोनो गाल पकड़ कर खींचते हुए)ठीक होते ही बदमाशी शुरू करदी (मुस्कुराते हुए) अब आप उपर लेटना तो भूल ही जाइए कुछ वक़्त के लिए.

मैं : क्यों.....

सलमा : वो इसलिए क्योंकि अब मेरे साथ कोई और भी है...मैं नही चाहती मेरे छोटे सुजल को आपकी किसी शरारत की वजह से तक़लीफ़ हो. (मुस्कुराते हुए) लेकिन हाँ साथ ज़रूर लेट सकती हूँ.

मैं : अच्छा मतलब अब प्यार करना भी बंद...(रोने जैसा मुँह बनाते हुए)

सलमा : सिर्फ़ कुछ महीनो के लिए उसके बाद जैसे चाहे प्यार कर लेना. (मेरे होंठ चूमते हुए)

उसके बाद हम ऐसे ही कुछ देर बाते करते रहे और फिर सलमा अपने कमरे मे जाके सो गई ओर मैं भी वापिस अपने बिस्तर पर आके लेट गया और कुछ देर मे दवाई के नशे की वजह से दुबारा सो गया.

२०

मेरे २-३ दिन ऐसे ही गुज़रे बाबा ने मुझे खेत पर भी नही जाने दिया और मैं सारा दिन घर पर ही बैठा रहता. लेकिन जास्मिन से अब मैं दूरी बनाके रखने लगा था.वो हर वक़्त मुझसे बात करने की कोशिश करती लेकिन मैं हर बार उसकी बात को अनसुना कर देता. हाँ इतना ज़रूर था कि रोज़ शाम को हीना मेरा पता लेने आती और मेरे साथ थोड़ा वक़्त गुज़ारती. मेरी वजह से वो नयी गाड़ी लेने भी नही गई क्योंकि वो चाहती थी कि मैं ठीक होके उसके साथ शहर चल सकूँ. जितने दिन मैं खेत नही गया उतने दिन हीना ने अपने मुलाज़िमो को मेरे खेत मे लगाए रखा ताकि मेरी गैर-मौजूदगी मे वो लोग मेरे खेत का ख्याल रखे.

मुझे अब घर मे पड़े हुए ३ दिन हो गये थे और फिर अगली सुबह डॉक्टर नताशा आ गई मेरा चेक-अप करने के लिए. उस वक़्त बाबा सैर करने गये हुए थे इसलिए सलमा ने और जास्मिन ने आते ही उसको सुनानी शुरू करदी. मैं भी उस वक़्त सो रहा था लेकिन सलमा और जास्मिन की ऊँची आवाज़ से मेरी नींद खुल गई और मैं उठकर अपने कमरे से बाहर चला गया तो वहाँ सलमा और जास्मिन डॉक्टर नताशा से झगड़ रही थी और नताशा नज़रे झुकाकर सब सुन रही थी.

मैं : क्या हुआ शोर क्यो मचा रखा है.(आँखें मलते हुए)

सलमा : तुम अंदर जाओ सुजल. मुझे बात करने दो. (गुस्से मे)

नताशा : अब आप कैसे हैं.

मैं : अर्रे डॉक्टर आप... जी मैं एक दम ठीक हूँ. (मुस्कुराते हुए)

सलमा : ये झूठी हमदर्दी अगर आप ना दिखाए तो ही अच्छा है. अगर आपको सुजल की इतनी ही फिकर होती तो आप उसको कभी ग़लत दवाई ना देती. हमने आप पर और इंस्पेक्टर चौहान पर इतना भरोसा किया और आपने हमारे साथ कितना फरेब किया. कभी आपने सोचा अगर आपकी ग़लत दवाई से इनको कुछ हो जाता तो....

नताशा : जी कुछ नही होता इनको.... आप लोग एक बार मेरी बात सुन लीजिए.

जास्मिन : हमे अब आपकी कोई बात नही सुननी मेहरबानी करके आप यहाँ से चली जाओ.

नताशा : (परेशान होके अपने पर्स से मोबाइल निकालते हुए) अच्छा ठीक है मैं चली जाऊंगी लेकिन एक बार मेरी बात सुन लीजिए..

जास्मिन : अब क्या झूठी कहानी सुननी है.

नताशा : (फोन पर नंबर डायल करते हुए) बस २ मिनिट दीजिए मुझे.

नताशा : (फोन पर) कहाँ हो तुम..... जल्दी से उस्मान के घर आओ.... मुझे नही पता.... हाँ ठीक है.... अच्छा..... ओके (फोन रखते हुए)

सलमा, जास्मिन और मैं हम तीनो नताशा के जवाब का इंतज़ार कर रहे थे और सवालिया नज़रों से उसकी तरफ देख रहे थे.

नताशा : देखिए मैने कोई भी काम ग़लत नही किया मैने वही किया जो मुझे इंस्पेक्टर चौहान ने कहा. सुजल जैसा अब है वैसा ही सारी उम्र रहे इसलिए इसकी पुरानी याददाश्त मिटनी ज़रूरी थी.क्योंकि अगर इसकी यादशत वापिस आती है तो फिर ये आज जैसा नही रहेगा. मुमकिन है फिर ये सुजल भी ना रहे और फिर से उस्मान बन जाए. क्योंकि इसकी पुरानी जिंदगी मे ये एक बहुत बड़ा अपराधी है. चौहान को भी इसकी ऐसे ही ज़रूरत है वो पुराने उस्मान पर भरोसा नही कर सकता लेकिन सुजल पर कर सकता है क्योंकि वो इसको एक ऐसे मिशन पर भेजना चाहता है.जहाँ ये जाएगा उस्मान बनकर लेकिन होगा सुजल ही.

सलमा : मेरी तो कुछ समझ नही आ रहा आप क्या कह रही है. (परेशान होते हुए)

नताशा : सुजल आज एक नेक़-दिल इंसान है.इसमे कोई शक़ नही. मैने ही इसका लाइ डिटेक्टर टेस्ट किया था.उसमे इसने मुझे वही सब बताया जो आप लोगो ने चौहान को बताया था. लेकिन इसके दिमाग़ की स्कॅनिंग करके मुझे पता चला कि इसकी याददाश्त वापिस आ सकती है अगर इसको इसकी पुरानी जिंदगी याद करवाई जाए तो और आज भी इसके दिमाग़ के सिर्फ़ एक हिस्से से याददाश्त ख़तम हुई है. अगर इसको इसकी पुरानी

INDIAN BEST TELEGRAM ADULT (18) CHANNELS

हिंदी Adult स्टोरी, Adult कॉमिक्स, सबसे अनूठे देसी मस्ती भरे XXX वीडियोज, हिंदी एडल्ट शायरिया, फन्नी एडल्ट जोक्स का अनूठा संगम..!! 🔞💯

(*Top To Click Here Join*)

X Night Clubs

Click Here

Adult Comics Club

Click Here

Adult Shayari & Stories

Click Here

Night Club Chat Group

Click Here

18 Vargin Girls

Click Here

जिंदगी मे वापिस लेके जाया जाए तो इसकी वो याददाश्त वापिस आ सकती है और इसी वजह से आज भी इसको अपनी पुरानी जिंदगी की काफ़ी चीज़े आज ही याद है . इसके दिमाग़ के इंटर्नल मेमोरी मे स्टोर है,इसलिए आज भी ये लड़ाई करना, गाड़ी चलाना, हथियार चलाना और बाकी काम जो ये बचपन से करता आया है इसको आज भी याद है. आज भी ये वैसे ही बहुत महारत के साथ सब काम कर लेता है .अगर ये वहाँ जाके उस्मान बन गया तो फिर ये हमारे किसी का काम नही रहेगा.

सलमा : इनको भेजना कहाँ है (सवालिया नज़रों से)

नताशा : वही तो मैं बता रही हूँ कि, चौहान इसको इसके गँग तक पहुँचा देगा जहाँ ये चौहान का इनफॉर्मर बनकर इसके गँग की खबर हम तक पहुँच जाए. इससे चौहान इसके सारे गँग को ख़तम कर सकता है.

अभी नताशा बात ही कर रही थी कि घर के सामने एक जीप आके रुकी और सब लोग एक साथ दरवाज़े के बाहर देखने लगे. जीप मे से चौहान उतरा और सीधा घर के अंदर आ गया सलमा और जास्मिन अब भी उससे गुस्से से देख रही थी.

नताशा : अच्छा हुआ तुम आ गये इनको दवाई के और मिशन के बारे मे बताओ. (गुस्से से)

चौहान : माफ़ कीजिए मैने आपसे कुछ बाते राज़ रखी लेकिन मैने आपके बाबा को सब बता दिया था और उनकी इजाज़त से ही इसको याददाश्त की दवाई दिलवाई थी.

सलमा : (हैरानी से) बाबा जानते थे ग़लत दवाई के बारे मे.

चौहान : जी जानते थे... मैने ही उनको मना किया था कि अभी किसी से कुछ ना कहे.

जास्मिन : आने दो बाबा को भी इनसे तो हम बात करेंगी. पहले तुम ये बताओ ये डॉक्टरनी क्या कह रही है सुजल के बारे मे.इनको कहाँ भेजना है तुमने.

चौहान : मैने आपसे पहले ही कहा था कि आज सुजल कुछ भी है.लेकिन इसके पुराने पाप इसको इतनी आसानी से नही छोड़ेंगे. इसको क़ानून की मदद करनी पड़ेगी तभी ये आज़ाद हो सकता है.

मैं : (जो इतनी देर से खामोश सबकी बाते सुन रहा था) क्या करना होगा मुझे.

चौहान : हमारी मदद करनी होगी तुम्हारे गँग का सफ़ाया करने मे.

मैं : गँग कौनसा गँग

चौहान : (अपने कोट का बटन बंद करते हुए) ये लोग हर बुरा काम करते हैं.ड्रग्स बेचने से लेके हथियार बेचने तक हर गुनाह मे इनका नाम है. इनके नाम अन-गिनत केस हैं लेकिन कोई सबूत नही है इसलिए हमेशा बरी हो जाते हैं.

मैं : तो आप मुझसे क्या चाहते हैं.

चौहान : मुझे सबूत चाहिए जो मुझे सिर्फ़ तुम ही लाके दे सकते हो.

मैं : मैं ही क्यो ?आपके पास तो इतने लोग है किसी को भी शामिल कर दीजिए उन लोगो मे....

चौहान : क्योंकि तुम इनके पुराने आदमी हो. तुम पर वो लोग आसानी से भरोसा कर लेंगे नये आदमी को वो अपने पास तक नही आने देते. तुम अपनी पुरानी जिंदगी मे ख्वाजा साहब या तुम्हारे लिए बाबा के राइट-हँड थे इसलिए जहाँ तुम पहुँच सकते हो मेरा कोई आदमी नही पहुँच सकता.

मैं : ठीक है लेकिन उसके लिए मेरी याददाश्त ख़तम करने क़ी क्या ज़रूरत थी. मैं तो वैसे भी आपका काम करने के लिए तैयार था.

नताशा : क्योंकि तुम्हारे दिमाग़ की स्क़ेनिंग करके मुझे पता चला कि अगर तुमको तुम्हारी पुरानी ज़िंदगी मे लेके जाया जाए तो तुम्हारी याददाश्त लौट सकती है.फिर ना तुम सुजल रहोगे ना ही ये तुम्हारे घरवाले. मतलब साफ है फिर तुम उन लोगो मे जाके हमारी मदद नही करोगे .अपनी पुरानी जिंदगी मे ही लौट जाओगे. बस इसलिए तुम्हारी पुरानी याददाश्त मिटा रहे थे ताकि तुमको तुम्हारे ये घरवाले ओर तुम्हारी नेक़ी याद रहे.

चौहान : सीधी सी बात है हम को सुजल पर ऐतबार है उस्मान पर नही.

तभी बाबा भी घर आ गये....

बाबा : अर्रे चौहान साहब आप कब आए.

चौहान : (अदब से सलाम करते हुए) जी बस अभी वो थोड़ा समस्या हो गया था.

जास्मिन : बाबा आपको सब पता था तो हम को क्यो नही बताया (गुस्से से)

बाबा : बेटी मैने जो किया इसके भले के लिए किया मैं नही चाहता था कि ये भी अब्दुल की तरह जेल मे अपनी जिंदगी गुज़ारे.

मैं : बाबा आपने जो किया ठीक किया .लेकिन मुझे इस दवाई की ज़रूरत नही है मैं आपका बेटा हूँ और आपका ही बेटा रहूँगा और यक़ीन कीजिए मैं चौहान का हर हालत मे साथ दूँगा.

चौहान : सोच लो.. तुम पर मैं बहुत बड़ा दाव खेलने जा रहा हूँ कुछ गड़बड़ हुई तो....

मैं : (बीच मे बोलते हुए) आप को मुझ पर भरोसा करना होगा.

चौहान : ठीक है... वैसे भी मेरे पास और कोई रास्ता है भी नही....

मैं : तो कब जाना है मुझे फिर...

चौहान : अर्रे इतनी जल्दी भी क्या है तुम अभी इस लायक़ नही हो कि वहाँ तक भेज दूँ उसके लिए पहले तुमको ट्रेन करना पड़ेगा हर चीज़ सीखनी पड़ेगी.

नताशा : क्यो ना आप कुछ दिन के लिए हमारे पास शहर आ जाए .वहाँ हम आपको सब कुछ सिखा भी देंगे.

सलमा : कितने दिन का काम है. (परेशान होते हुए)

चौहान : ज़्यादा नही बस कुछ ही दिन की बात है.

बाबा : चौहान साहब आपको हम से एक वादा करना होगा

चौहान : (सवालिया नज़रों से बाबा को देखते हुए) कैसा वादा जनाब...

बाबा : यही कि आपका मिशन पूरा हो जाने के बाद आप सही सलामत सुजल को वापिस भेज देंगे. अब ये हमारी अमानत है आपके पास.

चौहान : जी बे-फिकर रहिए. मेरा काम होते ही मैं खुद इसे आज़ाद कर दूँगा और यहाँ तक कि पुलिस रेकॉर्ड्स से इसका नाम भी मिटा दूँगा. उसके बाद पुलिस रेकॉर्ड्स मे उस्मान मर जाएगा और फिर ये सुजल बनके अपनी सारी जिंदगी चैन से आप सब के साथ गुज़ार सकता है.

बाबा : ठीक है.

चौहान : कुछ दिन के लिए सुजल को मेरे पास भेज दीजिए ताकि इसको मैं इसका काम सीखा सकूँ उसके बाद इसको मैं मिशन पर भेज दूँगा.

मैं : मेरे जाने के बाद इनका ख्याल कौन रखेगा.

चौहान : तुम इनकी बिल्कुल फिकर ना करो ये.अब मेरी ज़िम्मेदारी हैmइनको किसी चीज़ की कमी नही होगी ये मैं वादा करता हूँ.

मैं : ठीक है फिर मैं कल ही आ जाता हूँ

चौहान : जैसा तुम ठीक समझो. अच्छा जनाब (बाबा की तरफ देखते हुए) अब इजाज़त दीजिए.

बाबा : अच्छा चौहान साहब.

उसके बाद डॉक्टर नताशा और चौहान दोनो चले गये और मैं दोनो को जाते हुए देखता रहा. बाबा एक दम शांत होके कुर्सी पर बैठे थे जैसे वो किसी गहरी सोच मे हो.

मैं : क्या हुआ बाबा

बाबा : बेटा मुझे समझ नही आ रहा कि तुमको ऐसी ख़तरनाक जगह पर भेजू या नही.

मैं : अर्रे बाबा आप फिकर क्यो करते हैं अपने बेटे पर भरोसा रखिए कुछ नही होगा.

बाबा : एक तुम पर ही तो भरोसा है बेटा....लेकिन तुम्हारी फिकर भी है कही तुमको कुछ हो गया तो मुझ ग़रीब के पास क्या बचेगा.

मैं : कुछ नही होगा बाबा.

सलमा : बाबा आपको इतने ख़तरनाक काम के लिए चौहान को हाँ नही बोलना चाहिए था जाने वो लोग कैसे होंगे.

बाबा : शायद तुम ठीक कह रही हो बेटी लेकिन मैं भी क्या करता .एक बेटा आगे ही जेल मे बैठा है दूसरे को भी जेल कैसे भेज देता. इसलिए मजबूर होके मैने हाँ कहा था.

जास्मिन : लेकिन बाबा अगर वहाँ सुजल को कुछ हो गया तो....

सलमा : (बीच मे बोलते हुए) ऐसी बाते ना करो जास्मिन वैसे ही मुझे डर लग रहा है.

मैं : अर्रे आप सब तो ऐसे ही घबरा रहे हो कुछ नही होगा... मुझे बस आप लोगो की ही फिकर है.

बाबा : तुम बस अपना ख्याल रखना बेटा..... हमें और कुछ नही चाहिए (मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए)

ऐसे ही हम काफ़ी देर तक बाते करते रहे.शाम को हीना फिर से मेरा पता लेने आ गई मैने उससे कुछ दिन इलाज करवाने का बता कर शहर जाने का बहाना बना दिया. जिस पर पहले वो नाराज़ हुई लेकिन फिर वो मान गई और कुछ वक़्त उसके साथ बिताने के बाद वो भी चली गई.

२१

अगले दिन वादे के मुताबिक़ सुबह चौहान ने जीप भेज दी मुझे लेने के लिए. बाबा जास्मिन और सलमा ने मुझे बहुत सारी दुआएँ और भीगी आँखों के साथ रुखसत किया. मैं तमाम रास्ते जास्मिन. बाबा, सलमा और हीना के बारे मे ही सोचता रहा और इनके साथ बिताए वक़्त के बारे मे ही याद करता रहा. मुझे नही पता था कि जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ से वापिस आऊंगा या नही. लेकिन इन लोगो के साथ बिताए वक़्त ने मेरे दिल मे इन लोगो के लिए बे-इंतेहा प्यार पैदा कर दिया था. वैसे तो ये लोग मेरे कोई नही थे लेकिन फिर भी ये मुझे मेरे अपनो से बढ़कर थे और आज मैं जो कुछ भी करने जा रहा था इन लोगो के लिए ही करने जा रहा था. आज मेरे पास जो जिंदगी थी वो इन लोगो का ही "अहसान" था. ऐसी ही मैं अपनी ही सोच मे गुम्म था कि मुझे पता ही नही चला कब हम शहर आ गये और कब एक घर के बाहर गाड़ी रुकी.

मैं : ये कौनसी जगह है ? ये तो चौहान का दफ़्तर नही है.

ड्राइवर : आपको चौहान साहब ने यही बुलाया है.

मैं : अच्छा...

उसके बाद मैं जीप से उतरा और उस घर मे चला गया जो देखने मे सरपंच की हवेली जैसा बड़ा नही था लेकिन काफ़ी शानदार बना हुआ था. गेट के बाहर २ पुलिस वाले बंदूक थामे खड़े थे जिन्होने मुझे देखते ही छोटा गेट खोल दिया. मैं जब अंदर गया तो घर के चारो तरफ लगे खुश्बुदार फूलों ने मेरा स्वागत किया. सामने एक काँच का बड़ा सा गेट लगा था जिसे मैं धकेलता हुआ अंदर चला गया. घर काफ़ी खूबसूरती से सजाया गया था. मैं चारो तरफ नज़रें घूमाकर घर की खूबसूरती देख रहा था तभी एक मीठी सी आवाज़ मेरे कानो से टकराई....

नताशा : घर अच्छा लगा (मुस्कुराते हुए)

मैं : जी बहुत खूबसूरत घर है....क्या ये चौहान साहब का घर है (चारो तरफ देखते हुए)

नताशा : जी नही ये मेरा घर है...अर्रे आप खड़े क्यो हो बैठो.

मैं : लेकिन मुझे तो चौहान साहब ने बुलाया था

नताशा : अब कुछ दिन आपको भी यही रहना है. यही हम आपकी ट्रैनिंग भी मुकम्मल करवाएँगे और ये एक सीक्रेट मिशन है .इसलिए चौहान ने दफ़्तर मे किसी को भी इसके बारे मे नही बताया.

मैं : अच्छा... लेकिन चौहान साहब है कहा.

नताशा : आप बैठिए वो आते ही होंगे.

मैं : ठीक है.

नताशा : यहाँ आपको रहने मे कोई ऐतराज़ तो नही.

मैं : जी नही ! मुझे क्या ऐतराज़ होगा ? मैं तो कहीं भी रह लूँगा.

अभी मैं और नताशा बाते ही कर रहे थे कि चौहान भी अपने हाथ मे एक फाइल थामे हुए आ गया और आते ही टेबल पर फाइल फेंक दी और धम्म से सोफे पर गिर गया.

चौहान : हंजी जनाब आ गये

मैं : जी... बताइए अब मुझे क्या करना है

चौहान : यार तुम हर वक़्त जल्दी मे ही रहते हो क्या....

मैं : नही...वो आपने काम के लिए बुलाया था तो सोचा पहले काम ही कर ले.

चौहान : कुछ खाओगे....

मैं : जी नही मेहरबानी.

चौहान : यार शरमाओ मत अपना ही घर है....

मैं : जी नही मैं घर से खा कर आया था...

चौहान : चलो जैसी तुम्हारी मर्ज़ी... अच्छा ये देखो तुम्हारे लिए कुछ लाया हूँ.

मैं : (सवालिया नज़रों से चौहान को देखते हुए) जी क्या...

चौहान : (उठकर मेरे साथ सोफे पर बैठ ते हुए) ये तुम्हारे पुराने दोस्तो की तस्वीरे हैं जिनके साथ अब तुमको काम करना है. (फाइल खोलते हुए)

फिरोज ख्वाजा साहब उर्फ बाबा :- उम्र- ५८ साल, दिखने मे काफ़ी रौबदार इंसान, काम- गँग का मैं लीडर, उस्मान जैसे बाकी सब लोग इसके लिए ही काम करते हैं.

अनीस उर्फ छोटा ख्वाजा :- उम्र- ३२ साल, ख्वाजा का बेटा और एक ला-परवाह किस्म का इंसान इसलिए ख्वाजा कोई भी काम इसको सोंपना ज़रूरी नही समझता. हर वक़्त ड्रग्स के नशे मे और लड़कियो मे डूबा रहता है.

मुन्ना उर्फ करीम :- उम्र- २८ साल, उस्मान का जिगरी दोस्त है. करीम नाम से अंडरवर्ल्ड मे मशहूर, काम- ड्रग्स एजेंट और आर्म्स एजेंट के साथ डील फिक्स करना और फाइट क्लब मे उस्मान का पार्ट्नर.

सलमान :- उम्र-३४ साल, काम- उस्मान के बाद उस्मान का सारा काम यही संभालता है.

सूमा :- उम्र-२५ साल, काम- विदेशी क्लाइंट्स के साथ ड्रग्स और आर्म्स की डील फिक्स करना ओर तमाम एजेंट्स से पैसा कलेक्ट करके ख्वाजा साहब तक पहुँचना.

लाला और गानी :- उम्र-३४-२८ साल, काम- होटेल्स और क्लब्स संभालना.

मैं बड़े गोर से बारी-बारी सब लोगो की तस्वीरे देख रहा था और उनको पहचाने की कोशिश कर रहा था लेकिन मुझे किसी का भी चेहरा याद नही आ रहा था. तभी चौहान ने एक ऐसी तस्वीर टेबल पर फेंकी जिसको मैं उठाए बिना नही रह सका. ये तो मेरी तस्वीर थी लेकिन मैने उस तस्वीर मे मूछ रखी हुई थी. इसलिए मेरा हाथ खुद ही अपने चेहरे पर चला गया जैसे मैं अपने हाथ से अपने चेहरे का जायज़ा ले रहा हूँ कि क्या ये मेरी ही तस्वीर है.

चौहान : क्या हुआ कुछ याद आया अपने बारे मे.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) क्या ये मेरी तस्वीर है,?

चौहान : जी हुजूर !ये आपकी ही तस्वीर है और इन तस्वीरो को अच्छे से देख लो तुमको अब ऐसा ही फिर से बनना है.

मैं : लेकिन आपने बताया नही मैं वहाँ तक पहचूँगा कैसे.

चौहान : उसका भी एक रास्ता है

मैं : कौनसा रास्ता

चौहान : तुम्हारा पुराना दोस्त करीम जो फाइट क्लब संभालता है. वहाँ से तुम तुम्हारी दुनिया मे एंट्री कर सकते हो. वैसे भी उस्मान उस फाइट क्लब का सबसे फ़ेवरेट फाइटर हैं (मुस्कुराते हुए)

मैं : तो क्या मुझे वहाँ जाके लड़ना होगा.

चौहान : (मुस्कुराते हुए) ऐसा ही कुछ.

मैं : मैं समझा नही आप कहना क्या चाहते हैं.

चौहान : तुमको वहाँ जाके वहाँ के उनके लोगो को मारना होगा और उनका माल लूटना होगा ताकि उन लोगो का ध्यान तुम्हारी तरफ जाए और वो तुमको पहचान ले.

मैं : क्या मैं बिना कोई वजह उनसे लड़ाई करूँ.

चौहान : वजह मैं बना दूँगा. तुमको तो बस जाके लड़ाई करनी है.

मैं : ठीक है.

उसके बाद वो तस्वीरे मुझे देकर चौहान वापिस चला गया और अब मैं अकेला बैठा उन तस्वीरो को देख रहा था और अपनी पुरानी जिंदगी को याद करने की कोशिश कर रहा था लेकिन मुझे कुछ भी याद नही आ रहा था. ऐसे ही मैं अपनी सोच मे गुम्म बैठा हुआ तस्वीर देख रहा था कि मुझे पता ही नही चला कब डॉक्टर अंजली मेरे पास आके बैठ गई.

नताशा : कहाँ खो गये जनाब. (मेरे मुँह के सामने चुटकी बजाते हुए)

मैं : जी कही नही! बस वो मैं अपनी पुरानी जिंदगी के बारे मे याद करने की कोशिश कर रहा था. लेकिन कुछ भी याद नही आ रहा.

नताशा : कोई बात नही जैसे-जैसे तुम अपने बारे मे जानोगे तुमको याद आता जाएगा. वैसे तुमको सच मे तुम्हारे घरवालो के बारे मे भी कुछ नही याद.

मैं : (मुस्कुरा कर ना मे सिर हिलाते हुए) आपके घर मे कौन-कौन है.

नताशा : कोई भी नही मेरे माता पिता की कार आक्सिडेंट मे मौत हो गई थी तब से अकेली ही हूँ (मुस्कुरा कर)

मैं : कोई भी नही है. मेरा मतलब पति या बचे.

नताशा : नही....(मुस्कुरा कर) इन सब चीज़ो के लिए वक़्त तब ही मिल सकता है.जब ड्यूटी से फुरसत मिले. यहाँ तो सारा दिन हेड क्वॉर्टर मे लोगो का इलाज करने मे ही वक़्त निकल जाता है.

मैं : हाँ जब आपके लोग ऐसे ही किसी पर हमला करेंगे तो इलाज तो करना ही पड़ेगा उनका.

नताशा : अच्छा वो....हाहहहाहा नही ऐसी बात नही है वो तो चौहान ने तुम्हारा टेस्ट लेना था बस इसलिए.... और वैसे भी तुमने कौनसी कसर छोड़ी थी.

मैं : मैने क्या किया मैं तो बस हल्का फूलका उनको दूर किया था खुद से. (मुस्कुरा कर)

नताशा : रहने दो... रहने दो... उस दिन हेड क्वॉर्टर्स मे तुमने हमारे लोगो की क्या हालत की थी पता है मुझे. मैने ही इलाज किया था उनका बिचारे ५ लोगो के तो फ्रेक्चर तक आ गये थे बॉडी मे. ऐसा भी कोई किसी को मारता है.

मैं : (नज़रे नीचे करके मुस्कुरा कर)वो एक दम मुझ पर हमला हुआ तो मुझे कुछ समझ नही आया कि क्या करूँ इसलिए मैने भी हमला कर दिया.

नताशा : हंजी.... और जो हाथ मे आया उठा के मार दिया...हाहहहहहाहा

मैं : (बिना कुछ बोले मुस्कुरा दिया)

नताशा : चलो तुम बैठो मैं कुछ खाने के लिए लाती हूँ.

मैं : आप क्यो... कोई नौकर नही है यहाँ पर.

नताशा : जी नही !आपके चौहान साहब को किसी पर भरोसा भी तो नही है. इसलिए सारा काम मुझे ही करना पड़ेगा (रोने जैसा मुँह बनाके)

मैं : कोई बात नही मैं हूँ ना मैं आपकी मदद कर दूँगा.

नताशा : (हैरान होते हुए) तुमको खाना बनाना आता है.

मैं : जी फिलहाल तो खाना ही आता है लेकिन आप सिखाएँगी तो बनाना भी सीख जाऊंगा.

नताशा : हाहहहहाहा रहने दो तुम खाते हुए ही अच्छे लगोगे बना मैं खुद लूँगी.

उसके बाद नताशा रसोई की तरफ चली गई और मैं उसको जाते हुए देखता था. लेकिन मेरी शैतानी नज़र का मैं क्या करूँ जो ना चाहते हुए भी ग़लत वक़्त पर ग़लत चीज़ देखती है. नताशा को जाते हुए देखकर मेरी नज़र सीधा उसकी नितंब पर पड़ी जो उसके चलने से उपर नीचे हो रही थी उसकी जीन्स की फीटिंग से नितंब की गोलाई के उभार और भी वजह तोर पर नज़र आ रहे थे. जिससे मेरे लिंग मे भी हरकत होने लगी और वो जागने लगा. मैने अपने दोनो हाथो से अपने लिंग को थाम लिया और एक थप्पड़ मारा की हर जगह मुँह उठाके घुसने को तैयार मत हो जाया कर. वो डॉक्टर हैं हीना या सलमा नही जिसकी गहराई मे तू जब चाहे उतर जाए. लेकिन मेरा लिंग था कि बैठने का नाम ही नही ले रहा था मेरी नज़रों के सामने बार-बार नताशा की नितंब की तस्वीर आ रही थी और मेरा दिल चाह रहा था कि उसकी खूबसूरत उभरी हुई नितंब के दीदार मैं एक बार फिर से करूँ. इसलिए ना चाहते हुए भी मैं खड़ा होके रसोई की तरफ चला गया ताकि चुपके से नताशा की मोटी सी और बाहर को निकली हुई नितंब को जी-भरकर देख सकूँ.

अभी मैं रसोई के गेट तक ही पहुँचा था कि अचानक नताशा हाथ मे खाने की ट्रे लेके बाहर आ गई और मुझसे टकरा गई. जिससे सारी सब्जी की ग्रेवी मुझ पर और अंजली पर गिर गई और कुछ बर्तन भी ज़मीन पर गिरने से टूट गये. सब्जी की ग्रेवी उसके और मेरी दोनो की कमीज़ पर गिर गई थी. वो मेरे सामने प्लेट लेके अब भी खड़ी थी. हम दोनो ही इस अचानक टकराव के लिए तैयार नही थे .इसलिए जल्दबाज़ी मे मैने उसके सीने से ग्रेवी साफ करने के लिए अपने दोनो हाथ उसकी छाती पर रख दिए और वहाँ से हाथ फेर कर साफ करने लगा. मेरे एक दम वहाँ हाथ लगाने से अंजली को जैसे झटका सा लगा और पिछे हो गई साथ ही उसने अपने दोनो हाथ से ट्रे भी छोड़ दी जो सीधा मेरे पैर पर आके गिरी. ये सब इतना अचानक हुआ कि हम दोनो ही कुछ समझ नही पाए.

नताशा : आपको लगी तो नही.(फिकर मंदी से)

मैं : जी नही मैं ठीक हूँ माफ़ कीजिए वो मैने आप पर सब्जी गिरा दी.

नताशा : कोई बात नही.... (अपने हाथ से अपने टॉप से ग्रेवी झाड़ते हुए) लेकिन आप यहाँ क्या करने आए थे.

मैं : जी वो मैने सोचा आपकी मदद कर दूं इसलिए आ रहा था (नज़रे झुका कर)

नताशा : (मुस्कुराते हुए) कोई बात नही... इसलिए मैने आपको कहा था आप खाते हुए ही अच्छे लगेंगे. खाना तो सारा गिर गया अब क्या करे.

मैं : आप कोई फल खा लीजिए मैं तो पानी पीकर भी सो जाऊंगा. (मुस्कुराते हुए)

नताशा : पानी पी कर क्यो सो जाओगे. अब इतनी गई गुज़री भी नही हूँ कि खाना दुबारा नही बना सकती.

मैं : रहने दो नताशा जी दुबारा मेहनत करनी पड़ेगी आपको.

नताशा: खाना तो खाना ही है ना सुजल क्या कर सकते हैं. (कुछ सोचते हुए) म्म्माम चलो ऐसा करते हैं बाहर चलते हैं खाने के लिए .ठीक है?. (मुस्कुरा कर)

मैं : जैसी आपकी मर्ज़ी (मुस्कुराकर)

नताशा : चलो फिर तुम भी कपड़े बदल लो मैं भी चेंज करके आती हूँ.

मैं : अच्छा जी.

उसके बाद हम दोनो कपड़े पहनकर तैयार हो गये और मैं बाहर हॉल मे बैठकर नताशा का इंतज़ार करने लगा. कुछ देर बाद नताशा भी तैयार होके आ गई. उसने सफेद कलर का सूट पहन रखा था जिसमे वो किसी परी से कम नही लग रही थी. जैसे ही वो मेरे सामने आके खड़ी हुई तो उसके बदन सी निकलने वाले खुशबू ने मुझे मदहोश सा कर दिया.

नताशा : मैं कैसी लग रही हूँ. (मुस्कुरा कर)

मैं : एक दम परी जैसी (मुस्कुरा कर)

नताशा : हाहहहाहा शुक्रिया. अर्रे तुमने फिर से वही गाववाले कपड़े पहन लिए.

मैं : जी मेरे पास यही कपड़े हैं

नताशा : (अपने माथे पर हाथ रखते हुए) ओह्ह मैं तो भूल ही गई थी कि तुमको नये कपड़े भी लेके देने हैं.

मैं : नये कपड़ो की क्या ज़रूरत है मैं ऐसे ही ठीक हूँ.

नताशा : सुजल अब तुम उस्मान हो और उस्मान ऐसे कपड़े नही पहनता .चौहान ने मुझे बोला भी था तुम्हारे कपड़ो के लिए लेकिन मैं भूल ही गई. चलो पहले तुम्हारे लिए कपड़े ही लेते हैं उसके बाद हम खाना खाने जाएँगे ठीक है.

मैं : ठीक है.

फिर हम दोनो नताशा की कार मे बैठ कर बाज़ार चले गये. पूरे रास्ते मैं बस अंजली को ही देख रहा. उसके बदन की खुशबू ने पूरी कार को महका दिया था. उस खुशबू ने मुझे काफ़ी गरम कर दिया था. इसलिए मैं पूरे रास्ते अपने लिंग को अपनी टाँगो मे दबाए बैठा रहा ताकि नताशा की नज़र मेरे खड़े लिंग पर ना पड़ जाए. अब मुझे नताशा के साथ बैठे हुए हीना के साथ बिताए लम्हे याद आ रहे थे जब मैं उसको कार चलानी सीखाता था. थोड़ी देर बाद हम बाज़ार आ गये और वहाँ नताशा ने पार्किंग मे गाड़ी खड़ी की और फिर वो मुझे एक बड़ी सी दुकान (शोरुम) मे ले गई. जहाँ उसने मेरे लिए बहुत सारे कपड़े खरीदे. नताशा के ज़िद करने पर मैने बारी-बारी सब कपड़े पहन कर देखे और नताशा को भी अपना ये नया बदला हुआ रूप दिखाया जिसको देखकर शायद नताशा की भी आँखें खुली की खुली ही रह गई. मैं भी अपने इस नये रूप से बहुत हैरान था क्योंकि अब तक मैने गाँव के सीधे-शाधे कपड़े ही पहने थे. लेकिन खुद को आज ऐसे बदला हुआ देखकर मुझे एक अजीब सी खुशी का अहसास हो रहा था और मैं बार-बार खुद को शीशे मे देख रहा था और खुद ही मुस्कुरा भी रहा था.

मैं : कैसा लगा रहा हूँ नताशा जी.

नताशा : (मुस्कुरा कर मेरी जॅकेट का कलर ठीक करते हुए) ये हुई ना बात अब लग रहा है कि उस्मान अपने रंग मे आया है.

मैं : ये भी आपका ही कमाल है (मुस्कुरा कर)

नताशा : चलो अब खाना खाने चलते हैं.

मैं : हंजी चलिए. वैसे भी बहुत भूख लगी है

नताशा : भूख लगी है.....पहले क्यो नही बताया चलो चलें.

उसके बाद मैं और नताशा शॉपिंग बॅग्स उठाए अपनी कार की तरफ जा रहे थे कि अचानक ४ लोगो ने हम को घेर लिया और नताशा को अपनी तरफ खींचकर उसके गले पर एक नोकदार चाकू लगा दिया. मैं इस अचानक हमले को समझ नही पाया कि ये लोग कौन है ओर हम से क्या चाहते हैं.

मैं : कौन हो तुम लोग (गुस्से से)

एक आदमी : सीधी तरीके से सारा माल निकाल और हम को दे नही तो ये लड़की जान से जाएगी.

मैं : ठीक है ये लो सब तुम रख लो (अपने शॉपिंग बॅग उनकी तरफ फेंकते हुए) लेकिन इनको छोड़ दो.

वो आदमी : साले हम को चूतिया समझा ये कचरा नही पैसा निकाल.

मैं : मेरे पास पैसे नही है इनको जाने दो.

मेरा इतना कहना था कि उसने अपने चाकू का दबाव नताशा के गले पर बढ़ा दिया जिससे दर्द से अंजली की आँखें बंद हो गई और उसने कराहते हुए मुझे कहा....

नताशा : आअहह.... (दर्द से कराहते हुए) सुजल मारो इनको ये लोग चोर है.

नताशा का इतना कहना था कि मैं उन लोगो पर टूट पड़ा. जो मेरे सामने खड़ा था. मैं उसको गर्दन से पकड़ लिया और अपना सिर उसकी नाक पर ज़ोर से मारा और वो वही गिर गया. इतने मे साथ खड़े आदमी ने चाकू से मुझ पर हमला किया जिससे मैने उसकी कलाई पकड़कर नाकाम कर दिया और उसको अपनी तरफ खींचकर अपनी कोहनी उसके

सिर मे मारी और साथ ही उसका मुँह नीचे करके अपना घुटना उसके मुँह पर मारा वो भी वही गिर गया. तभी जिसने नताशा को पकड़ा था उसने नताशा को मुझ पर धकेल दिया और अपने बचे हुए १ साथी के साथ वहाँ से पार्किंग की तरफ भाग गया. मैने जल्दी से नताशा को थाम लिया और उससे गिरने से बचा लिया.

मैं : आप ठीक हो.

नताशा : (अपने गले पर हाथ रखकर हाँ मे सिर हिलाते हुए)

मैं : क्या हुआ आपको लगी है क्या. (उसका हाथ उसके गले से हटा ते हुए)

मैं : ये तो खून निकल रहा है. मैं उसको छोड़ूँगा नही ....

नताशा के कुछ कहने से पहले ही मैं उन लोगो के पिछे भाग गया वो लोग कार पार्किंग मे घुस गये थे. अब मैं उनको जल्दी से जल्दी पकड़ना चाहता था इसलिए मैं कारो के उपर से छलाँग लगाता हुआ उनके पिछे भागने लगा. वो दोनो पार्किंग की अलग-अलग दिशाओ मे भाग रहे थे.लेकिन मुझे दूसरे आदमी से कोई मतलब नही था मुझे उस आदमी पर सबसे ज़्यादा गुस्सा था जिसने नताशा के गले पर चाकू रखा था.इसलिए मैं उसकी तरफ उसके पिछे भागने लगा जल्दी ही पार्किंग ख़तम हो गई और वो एक दीवार के सामने आके रुक गया.मैने जल्दी से एक कार की छत से कूद कर उसके उपर छलाँग लगा दी जिससे मेरे दोनो घुटने उसके पेट मे लगे और वो वही गिर गया मैने फिर उसको खड़ा किया और उसका सर ज़ोर से दीवार मे मारा जिससे दीवार पर गोल-गोल खून का निशान सा बन गया.मैने फिर से उसको खड़ा किया और फिर उसको दीवार की तरफ धकेल दिया उसके फिर से सिर टकराया. ऐसे ही मैने कई दफ्फा उसका सिर दीवार मे मारा लेकिन अब वो बेहोश हो चुका था. इतने मे नताशा मेरे पिछे भागती हुई आई और मुझे पकड़ लिया.

नताशा : क्या कर रहे हो सुजल छोड़ दो वो मर जाएगा.

मैं : इसने चाकू कैसे लगाया गर्दन पर आपकी.

नताशा : (मुझे पिछे खींचते हुए) मैं अब ठीक हूँ! सुजल चलो यहाँ से.

उसके बाद लग-भाग खींचती हुई नताशा मुझे पार्किंग से बाहर ले आई. बाहर आके मैं रुक गया और अब मैं काफ़ी शांत हो चुका था. मैने रुक कर अपने दोनो हाथ नताशा की गर्दन की साइड पर रख दिए और उसकी गर्दन उपर करके उसका घाव देखने लगा वो भी किसी बच्चे की तरह मेरे सामने मासूम सा चेहरा लिए अपनी गर्दन उठाए खड़ी हो गई.

मैं : बहुत दर्द हो रहा है क्या.

नताशा : मैं ठीक हूँ सुजल.फिकर मत करो. (मुस्कुराते हुए)

मैं : चलो घर चलकर मरहम पट्टी करता हूँ आपकी.

नताशा : (बिना कुछ कहे मुस्कुराते हुए) हमम्म

फिर हम दोनो वापिस कार के पास आ गये और मैने अपने ज़मीन पर गिरे हुए शॉपिंग बैग उठाए और वो भी कार मे रख दिए.

मैं : कार मैं चलाऊ.

नताशा : (बिना कुछ बोले चाबी मेरी तरफ करके मुस्कुराते हुए) हमम्म.

फिर मैं और नताशा घर की तरफ निकल गये पूरे रास्ते हम खामोश थे. नताशा मुझे ही देखे जा रही थी और मुस्कुरा रही थी.

मैं : क्या हुआ ऐसे क्या देख रही हैं.

नताशा : कुछ नही..... एक बात पुछू....

मैं : हाँ पुछिये....

नताशा : तुमने उस आदमी को इतना क्यो मारा

मैं : मारता नही तो क्या प्यार करता.... आपकी गर्दन पर चाकू लगाया उसने और देखो कितना खून भी आ गया था.

नताशा : तुमने सिर्फ़ इसलिए उसको इतना मारा.

मैं : मार खाने वाले काम किए थे इसलिए मारा मैने उसको.

नताशा : इतनी फिकर मेरी आज तक किसी ने नही की. (रोते हुए)

मैं : (गाड़ी को ब्रेक लगाते हुए) अर्रे नताशा जी आप रोने क्यो लगी क्या हुआ.

नताशा : (अपने आँसू साफ करते हुए) कुछ नही...

मैं : (पिछे पड़ी पानी की बोतल नताशा को देते हुए) ये लो पानी पी लो.

नताशा : (बोतल पकड़ते हुए) शुक्रिया.

कुछ देर मे वो ठीक हो गई इसलिए मैने फिर कार स्टार्ट की और घर की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया. लेकिन नताशा अब भी मुझे ही देखे जा रही थी और मुस्कुरा रही थी. अचानक मुझे ख़याल आया.

मैं : नताशा जी....

नताशा : हमम्म

मैं : उन कमीनो के चक्कर मे खाना लेना तो भूल ही गये (मुस्कुरा कर)

नताशा : अरे हाँ... आपको तो भूख भी लगी थी....कोई बात नही यहाँ से लेफ्ट मोड़ लो. यहाँ भी एक अच्छा रेस्टोरेंट है. वहाँ से ले लेंगे.

मैं : ठीक है.

उसके बाद मैं और नताशा रेस्टोरेंट चले गये जहाँ से हमने खाना पॅक करवा लिया और फिर हम वापिस घर की तरफ चले गये. घर आके मैने पहले सारा समान कमरे मे रखा और फिर नताशा से मेडिकल बॉक्स लेकर उसके कमरे मे ही उसके जखम पर दवाई लगाने लगा. नताशा मुझे बस देख कर मुस्कुराती रही. फिर हम दोनो ने साथ खाना खाया. खाने के बाद नताशा मेरे साथ बैठकर टीवी देखने की ज़िद्द करने लगी इसलिए मैं भी उसके पास ही बैठकर टीवी देखने लगा. नताशा और मैं हम दोनो साथ मे बैठे टीवी देख रहे थे लेकिन कोई भी ढंग का प्रोग्राम नही आ रहा था इसलिए हमने कुछ देर टीवी देखने के बाद बंद कर दिया.

नताशा : तुमको नींद आ रही है क्या.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) आपको आ रही है.

नताशा : नही...चलो फिर बाते करते हैं....

मैं : अच्छा... जैसी आपकी मर्ज़ी.

नताशा : (कुछ सोचते हुए) तुमको डॅन्स आता है

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) मुझे एक ही तरीके से हाथ पैर चलाना आता है.वो अभी आप कुछ देर पहले देख ही चुकी है.

नताशा : चलो मैं सिखाती हूँ दूसरे तरीके से भी हाथ पैर हिलाए जा सकते हैं.(मुस्कुराते हुए)

उसके बाद नताशा ने एक म्यूज़िक चला दिया और मुझे अपने सामने खड़ा कर लिया.फिर मेरा एक हाथ अपनी कमर पर रख दिया और दूसरा हाथ अपने हाथ मे थाम लिया और उसने अपने एक हाथ मेरे कंधे पर रख लिया और नताशा ने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू कर दिया. मैं भी जैसे वो मुझे हिला रही थी हिलना शुरू हो गया.

जब नताशा मेरे साथ मुझसे चिपक कर खड़ी थी तब मुझे डॅन्स का नही उसके जिस्म का मेरे जिस्म के साथ जुड़े होना ज़्यादा मज़ा दे रहा था. वो बड़े प्यार मेरे कंधे पर हाथ फेर रही

और मेरा हाथ खुद-ब-खुद उसकी कमर को सहला रहा था मज़े से मेरी आँखें बंद हो गई थी और मैने उसे कमर से पकड़ कर अपने और करीब कर लिया. जिससे उसके नुकीले स्तन मुझे अपनी छाती पर चुभते हुए महसूस होने लगे इससे मुझे भी मेरी जीन्स पँट मे हलचल सी महसूस होने लगी. लेकिन जीन्स इतनी टाइट थी कि मेरा लिंग सही से खड़ा नही हो पा रहा था. बस जीन्स के अंदर ही मचल रहा था और बाहर आने का रास्ता तलाश कर रहा था. कुछ देर हम ऐसे ही एक दूसरे का हाथ थामे नाचते रहे फिर उसने मेरा हाथ छोड़ दिया और अपनी दोनो बाजू मेरे गले मे किसी हार की तरह डाल दी ऐसे ही मेरी आँखों मे देखती हुई अपना और मेरा बदन धीरे-धीरे हिलाने लगी.

नताशा : एक बात बोलूं

मैं : हमम्म

नताशा : तुम्हारी आँखें बहुत अच्छी है नशीली सी.. (मुस्कुराते हुए)

मैं : मुझे तो आपकी आँखें पसंद है. कितनी बड़ी-बड़ी है जैसे किसी हिरनी की आँखें हो.

नताशा : (शर्मा कर नज़रें झुकाते हुए) शुक्रिया

फिर कुछ देर के लिए हम दोनो खामोश हो गये और ऐसे ही डॅन्स करते रहे. डॅन्स तो उसके लिए था मैं तो उसके जिस्म की गर्मी का मज़ा ले रहा था. हम दोनो एक दूसरे से एक दम चिपके हुए थे.बस हम दोनो के चेहरे कुछ इंच के फ़ासले पर थे. लेकिन फिर भी हम एक दूसरे की साँसों की गरमी अपने चेहरे पर महसूस कर रहे थे. अब मुझसे भी और बर्दाश्त नही हो रहा था. इसलिए मैं आगे बढ़ने का सोच की रहा था कि अचानक लाइट चली गई और पूरे कमरे मे अंधेरा हो गया .जिससे हम दोनो का ध्यान एक दूसरे से हटकर अंधेरे की तरफ गया इसलिए मेरे ना चाहते हुए भी अंजली मुझसे अलग हो गई....

नताशा : अरे नही ! फिर से लाइट चली गई....तुम रूको मैं रोशनी के लिए कुछ लेके आती हूँ

मैं : रहने दो ना ऐसे ही ठीक है .अंधेरे मे क्या नज़र आएगा

नताशा : मुझे अंधेरे मे डर लगता है...बस २ मिनिट मे आ रही हूँ

मैं : ठीक है जल्दी आना...

नताशा : बस २ मिनिट ऐसे गई और ऐसे आई.

मैं क्या सोच रहा था और क्या हो गया.जैसे किसी ने मेरे अरमानो पर पानी फेर दिया हो .मैं अपने दिल मे बिजली वालो को गालियाँ निकाल रहा था कि हरामखोरो ने अभी लाइट बंद करनी थी. कुछ देर रुक जाते तो इनके बाप का क्या जाता था. पूरे कमरे मे चारो तरफ अंधेरा था. बस खिड़की से हल्की सी चाँद की रोशनी कमरे के अंदर आ रही थी. वो भी बहुत कम क्योंकि खिड़की के आगे परदा लगा हुआ था. मैने सोचा कि कमरे मे गरमी हो रही है इसलिए खिड़की से परदा हटा दूं ताकि ताज़ी हवा भी आ सके और रोशनी भी. अभी मैं परदा हटाने के लिए एक कदम ही आगे बढ़ाया था कि अचानक मुझे नताशा की चीख सुनाई दी मैने फॉरन चीख की तरफ भागता हुआ गया. एक तो अंधेरा था उपर से कुछ नज़र भी नही आ रहा था. इसलिए मैं नीचे पड़ी चीज़ो से टकराता हुआ दीवार को पकड़ कर आगे की तरफ बढ़ने लगा.

आवाज़ रसोई की तरफ से आई थी इसलिए मैं अंदाज़े से उस तरफ बढ़ रहा था. एक तो आज मेरा यहाँ पहला दिन था उपर से जगह भी मेरे लिए नयी थी इसलिए मुझे सही से रास्ते का अंदाज़ा नही हो रहा था.इसी वजह से जगह-जगह चीज़े मुझसे टकरा रही थी. कुछ देर बाद मैं नताशा को आवाज़ लगाता हुआ रसोई के पास आ ही गया.

मैं: नताशा जी कहाँ हो आप

नताशा : (कराहते हुए) मैं यहाँ हूँ .आयईयीई....ससिईईई....

मैं : क्या हुआ चोट लगी क्या

नताशा : (रोते हुए) हाँ बहुत ज़ोर से लगी है

मैं : (बर्तनो से टकराते हुए) क्या हुआ चोट कैसे लग गई.

नताशा : सुजल उस तरफ नही दूसरी तरफ आओ जहाँ तुम हो वहाँ बर्तन है....

मैं : (घूमते हुए) अच्छा...

नताशा : वो शाम को जो सब्जी गिरी थी, ना मैने बाज़ार जाने की जल्दी मे उठाई नही थी. बस उस पर ही पैर फिसल गया और मैं गिर गई. मुझसे उठा नही जा रहा.... (रोते हुए)

मैं जैसे ही नताशा के पास पहुँचा. मैने नीचे बैठकर अंधेरे मे हाथ इधर-उधर घुमाए तो नताशा के चेहरे से मेरा हाथ टकराया मैने जल्दी से बिना कुछ बोले उसको अपनी गोद मे उठा लिया और खड़ा हो गया.

नताशा : (कराहते हुए) अययईी.....आराम से...

मैं : अब जाना किस तरफ है

नताशा : तुम चलो मैं बताती हूँ

मैं : क्या पहेलिनुमा घर बनाया है

नताशा : (अपनी दोनो बाजू मेरे गले मे डालते हुए) मैने थोड़ी बनाया है.जैसा गवरमेंट ने मुझे दिया मैने ले लिया.

मैं : इससे अच्छा तो मेरा घर था.जहाँ कम से कम हाथ पैर तो नही टकराते थे अंधेरे मे.

नताशा : तुमको भी चोट लगी क्या

मैं : थोड़ी सी पैर मे लगी है. वो आप चिल्लाई तो मैं घबरा गया कि जाने क्या हुआ है. इसलिए जल्दी से आपकी आवाज़ की तरफ भागा बस इसी जल्दी मे मेज़ से पैर टकरा गया.

नताशा : ज़्यादा चोट तो नही लगी

मैं : पता नही मैने देखा नही.

नताशा : यहाँ से अब लेफ्ट घूम जाओ....मेरे कमरे मे चलकर मुझे दिखाओ कितनी चोट लगी है.

मैं : (हँसते हुए) देखोगी कैसे हाथ को हाथ नज़र तो आ नही रहा चोट क्या दिखेगी.

नताशा : फिकर मत करो यहाँ अक्सर लाइट चली जाती है फिर थोड़ी देर मे आ जाती है.

ऐसे ही हम बाते करते हुए धीरे-धीरे नताशा के कमरे मे आ गये ओर नताशा ने ही गेट खोला और फिर मैने अंजली को धीरे से उसके बेड पर रख दिया....

नताशा : (दर्द से कहते हुए) आयईीई... सुजल कमर मे और पीछे बहुत दर्द हो रही है हिला भी नही जा रहा.

मैं : अब अंधेरे मे तो कुछ कर भी नही सकते . लाइट आने दो फिर देखते हैं.

नताशा : अर्रे जिस काम के लिए गये थे वो तो किया ही नही.

मैं : कौनसा काम

नताशा : मोमबत्ती ! (हँसते हुए)

मैं : जाने दो कोई बात नही. मोमबत्ती के चक्कर मे इतना तमाशा हो गया अब ऐसे ही ठीक है. देखा मैने मना किया था ना लेकिन आप ही बोल रही थी कि २ मिनिट का काम है. अब देखो आपका ही काम हो गया (हँसते हुए)

नताशा : (मेरे कंधे पर थप्पड़ मारते हुए) एक तो मुझे चोट लग गई है उपर से मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो .जाओ मैं नही बोलती तुमसे.

मैं : अच्छा-अच्छा माफी डॉक्टरनी साहिबा.

नताशा : जाओ माफ़ किया... अच्छा ये तुम मुझे डॉक्टरनी साहिबा क्यो बुलाते रहते हो

मैं : अब आप डॉक्टरनी हो तो डॉक्टर ही बुलाऊंगा ना

नताशा : डॉक्टर मैं सिर्फ़ हेड-क्वार्टेर के मेरे क्लिनिक मे हूँ. यहाँ घर पर नही.

मैं : तो फिर मैं यहाँ आपको क्या बुलाऊ.

नताशा : म्म्म्मयम सिर्फ़ नताशा बुला सकते हो

मैं : अच्छा तो सिर्फ़ नताशा जी अब ठीक है (हँसते हुए)

नताशा : (हँसते हुए) सुजल तुम जानते हो आज बहुत मुद्दत के बाद मैने इतनी खुशी पाई है.तुम क्या आए मेरी जिंदगी मे ऐसा लगता है जिंदगी फिर से रोशन हो गई.

मैं : मैने भी आज पहली बार इतनी मस्ती की है.

नताशा : (कराहते हुए) आहह मेरी पीठ सस्सस्स

मैं : क्या हुआ बहुत दर्द है क्या.

नताशा : अगर कमर को हिलाती हूँ तो दर्द होता है.वैसे ठीक है!

मैं : रूको लगता है कमर अटक गई है.

नताशा : मुझे भी ऐसा ही लगता है.... एक काम करो मेरी कमर को झटका दो ठीक हो जाएगी.

मैं : ठीक है आप मेरा सहारा लेके खड़ी होने की कोशिश करे

नताशा : मैं गिर जाऊंगी सुजल

मैं : मैं हूँ ना !फिकर मत करो. इस बार पकड़ लूँगा आपको. नही गिरोगि बस मेरा हाथ मत छोड़ना.

नताशा : ठीक है

उसके बाद नताशा मेरे हाथ के सहारे बेड पर धीरे-धीरे घुटने के बल खड़ी होने लगी.लेकिन उसको खड़े होने मे दर्द हो रहा था .इसलिए मैने अपने दोनो हाथ उसकी कमर मे डाले ओर उसकी दोनो बाजू अपने गर्दन पर लपेट ली अब मैने झटके से नताशा को खड़ा किया...

नताशा : आअहह ससस्स

मैं : अब कैसा लग रहा है

नताशा : पहले से बेहतर है, लेकिन दर्द अभी भी हल्का हल्का हो रहा है.

मैने बिना नताशा से पुछे उसकी पिछे से कमीज़ उठाई और उसकी नंगी पीठ पर हाथ फेरने लगा. अंजली को शायद इस तरह मेरे हाथ लगाने की उम्मीद नही थी इसलिए उसको एक झटका सा लगा और वो मुझसे और ज़ोर से चिपक गई. अब मैं उसकी कमर को प्यार से सहला रहा था और वो खामोश होके मेरे गले मे अपनी बाहे डाले घुटने के बल खड़ी थी. कुछ ही देर मे हम दोनो की साँस तेज़ होने लगी और अंजली ने मेरे कंधे पर अपना सिर रख लिया उसकी तेज़ होती सांसो की गरमी मैं अपनी गर्दन पर महसूस कर रहा था. मैने भी इस मोक़े का फायेदा उठाना ही मुनासिब समझा और अपना हाथ उपर की जानिब बढ़ाने लगा. अब मेरा हाथ उसकी ब्रा के स्ट्रॅप के नीचे के तमाम हिस्से की सैर कर रहा था. शायद उसको भी मज़ा आ रहा था इसलिए वो खामोश होके बस मेरे कंधे पर अपना सिर रखकर लेटी हुई थी. उसके नाज़ुक होंठों का लांस मुझे अपनी गर्दन पर महसूस हो रहा था. मैं चाहता था कि वो मेरी गर्दन को चूमे लेकिन वो बस मेरी गर्दन से अपने होंठ जोड़े खड़ी थी और आगे नही बढ़ रही थी. इसलिए मैने ही पहल करना मुनासिब समझा .मैने अब अपने दोनो हाथ उसकी कमीज़ मे डाल लिए और दोनो को उसकी पीठ पर उपर-नीचे घुमाने लगा. साथ ही मैने अपनी गर्दन हल्की सी नीच को झुका कर अपने होंठ उसकी गालो पर रख दिया ओर धीरे-धीरे अपने होंठ उसकी गालो पर घुमाने लगा.ये अमल शायद उसको भी मज़ा दे रहा था. इसलिए उसने अपना चेहरा थोड़ा सा उपर की जानिब कर लिया ताकि मेरे होंठ अच्छे से उसकी गाल को च्छू सके.

कुछ देर ऐसे ही करने के बाद मुझसे बर्दाश्त करना मुश्किल हो गया था.इसलिए मैने धीरे-धीरे उसकी गाल को चूमना शुरू कर दिया. अब मेरे हाथ नीचे उसकी कमर पर अपना कमाल दिखा रहे थे और होंठ उसकी गाल पर. उसकी तरफ से कोई विरोध ना होने पर मैने आगे बढ़ने का सोचा और उसकी गाल से होता हुआ साइड से उसके होंठों को भी चूमने लगा. पहले तो उसने अपने होंठ सख्ती से बंद कर लिए लेकिन बार-बार मेरे वहाँ चूमने पर उसने भी अपने होंठों को थोड़ा सा खोल दिया. कुछ देर ऐसे ही करने के बाद मैने अपना एक हाथ आगे की तरफ किया और उसके पेट को सहलाने लगा. उसका नर्म-ओ-नाज़ुक पेट मुझे और भी मज़ा दे रहा था. मेरा ऐसा करना शायद उसके सबर के बाँध को तोड़ने के लिए काफ़ी था. उसने अपनी एक बाजू मेरी गर्दन से निकाली और मेरी कमर मे डालकर मुझे और ज़ोर से अपने से चिपका लिया. और अपनी गर्दन को दूसरी तरफ करके मेरे दूसरे कंधे पर रख लिया. शायद अब वो चाहती थी कि मैं उसकी दूसरी गाल को भी वैसे ही चुमू इसलिए मैने वही अमल उसके दूसरे गाल के साथ भी शुरू कर दिया. लेकिन इस बार वो खुद अपनी गाल को मेरे होंठों से जोड़ रही थी और कोशिश कर रही थी कि जल्दी से जल्दी मैं उसके होंठों तक आऊ. लेकिन मैं इस बार उसके गाल को ही चूम रहा था. नीचे मेरा लिंग पूरी तरह जाग गया था और जीन्स मे झटपटा रहा था बाहर निकलने के लिए. अब एक नयी चीज़ हुई उसने जो हाथ मेरी कमर पर रखा था पिछे से उसको मेरी टी-शर्ट मे डाल दिया और मेरी पीठ को सहलाने लगी. दूसरा हाथ उसका अब भी मेरी गर्दन पर ही लिपटा हुआ था. मैने मोक़े की नज़ाकत को समझते हुए अपना हाथ जो उसकी पीठ सहला रहा था उसको थोड़ा उपर की तरफ करने की कोशिश की लेकिन उसकी कमीज़ पेट से बेहद तंग होने की वजह से मेरा हाथ उपर की तरफ नही जा रहा था क्योंकि उसने टाइट फीतिंग का सूट पहना हुआ था. इसलिए मैने उसकी कमीज़ उतारने की कोशिश की लेकिन इस बार उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और गर्दन को नही मे हिलाया. लेकिन अब मुझसे सबर करना मुश्किल हो रहा था इसलिए मैने अपने एक हाथ से उसका चेहरा उपर किया और अपने चेहरे के सामने ले आया. अब हम दोनो की साँसे एक दूसरे के चेहरे से टकरा रही थी .मैने अपनी नाक उसकी नाक से हल्की सी टकराई और फिर पिछे को हो गया. उसने जल्दी से मेरा चेहरा अपने दोनो हाथो से पकड़ लिया और मेरे होंठों को पहले हल्के से चूम लिया और फिर बुरी तरह चूसने लगी. अब मैने अपने दोनो हाथ उसकी कमर पर रख लिया और उसने फिर से अपनी दोनो बाजू मेरे गले मे हार की तरफ डाल लिए और लगातार मेरे होंठों को चूसने लगी.उसके चूमने मे इतनी क़शिष थी कि मुझे साँस लेने मे भी तक़लीफ़ होने लगी थी. इसलिए मैने अपना चेहरा पिछे कर लिया लेकिन उसने फिर से मेरा चेहरा पकड़ लिया और मेरे होंठों पर टूट पड़ी. अब उसने अपने दोनो हाथ मेरी टी-शर्ट के गोल गले पर रख लिया जैसे अपने दोनो हाथो को मेरी टी-शर्ट के गले से लटका दिया हो.

मैं समझ चुका था कि अब वो मुकम्मल गरम हो चुकी है. इसलिए मैने एक बार फिर उसकी कमीज़ को उपर उठाने की कोशिश की .इस बार उसने मेरा हाथ नही पकड़ा लेकिन मेरे होंठों को चूस्ते हुए ही गर्दन को नही मे हिलाने लगी. मैने अपना मुँह पिछे कर लिया. उसने फिर से मेरे होंठ चूसने चाहे तो मैने गर्दन मोड़ ली. इस बार उसने ज़बरदस्ती मेरी गर्दन को अपने दोनो हाथो से पकड़ा और मेरे फिर से होंठ चूसने लगी. साथ ही मेरा एक हाथ पकड़ कर अपने दाएँ स्तन पर रख दिया. उसके स्तन को छुते ही मुझे और उसको भी जैसे करेंट सा लगा क्योंकि उसका स्तन हीना के स्तनों से भी बड़े थे .उनको दबाने से ही मम्मो की सख्ती का अंदाज़ा लगाया जा सकता था. मैं अब दोनो हाथो से उसकी कमीज़ के उपर से उसके स्तन दबा रहा था और वो मेरे होंठ चूस रही थी. तभी अचानक लाइट आ गई. लाइट आने का नतीज़ा ये हुआ कि जो नताशा पूरी-क़शिष से मेरे होंठ चूस रही थी और मुझसे स्तन मसलवा रही थी वो एक दम रोशनी हो जाने से घबरा गई और मुझसे दूर हो गई और बेड पर बैठकर अपने सिर पर हाथ रख लिया. मैं समझ नही पा रहा था कि नताशा को अचानक क्या हो गया अभी तो ये एक दम ठीक थी.

मैं : क्या हुआ नताशा

नताशा : (परेशान होते हुए)तुम जाओ यहाँ से.

मैं : लेकिन हुआ क्या

नताशा : (चिल्लाते हुए) मैने कहा ना तुम जाओ यहाँ से. एक बार मे बात समझ नही आती.

उसका इस तरह मुझ पर चिल्लाना मुझे अच्छा नही लगा. इसलिए मैं बिना कोई जवाब दिया उसके कमरे का गेट ज़ोर से दीवार पर मारता हुआ बाहर निकल गया और अपने कमरे मे जाके लेट गया. मेरा दिल बीजली वालो को हज़ार गालियाँ दे रहा था और खुद पर अफ़सोस भी हो रहा था कि मेरे पास इतने हसीन मोक़े आए जो मैने ऐसे ही ज़ाया कर दिए. साथ ही मुझे नताशा का बर्ताव भी परेशान कर रहा था. क्योंकि मैने उसको जब भी देखा था मुस्कराते हुए देखा था लेकिन आज अचानक उसको गुस्सा किस बात पर आया आख़िर क्यो उसने मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया. मुझे लगा शायद मैने जल्दी कर दी इसलिए वो नाराज़ थी और मेरी सबसे बड़ी ग़लती ये थी कि मैं हर लड़की को सलमा और हीना जैसा ही समझ रहा था. मुमकिन था वो मुझे पसंद नही करती. और आख़िर पसंद करती भी क्यो उसकी नज़र मे मैं एक अपराधी हूँ, अनपढ़-गवार हूँ जिसको कपड़े पहनने तक की अक़ल नही और वो खुद इतनी बड़ी डॉक्टर है इतनी खूबसूरत है... भला वो मुझे पसंद क्यो

करेगी इसलिए मैने वहाँ रहना मुनासिब ना समझा और अपना बॅग पॅक करने लगा साथ ही जल्दी से अपने गाँव वाले थैले मे से इंस्पेक्टर चौहान का कार्ड निकाला और बेड के पास पड़े फोन से चौहान का नंबर डायल कर दिया.

चौहान : हेलो...हाँ नताशा बोलो इस वक़्त कैसे फोन किया.

मैं : जी मैं सुजल बोल रहा हूँ.

चौहान : हाँ सुजल बोलो क्या हुआ कुछ चाहिए क्या.

मैं : जी आप मेरे रहने का इंतज़ाम कहीं ओर कर देंगे तो बेहतर होगा.

चौहान : अर्रे क्या हुआ नताशा ने कुछ कह दिया क्या.

मैं : जी नही उन्होने कुछ नही कहा. बस मेरा यहाँ दिल नही लग रहा. आप ऐसा करे मुझे मेरे गाँव ही भिजवा दे तो बेहतर होगा .यहाँ बड़े लोगो मे मुझे अजीब सा लगता है .मैं ठहरा ज़ाहील-गवार भला मेरा यहाँ क्या काम.

चौहान : कैसी बच्चों जैसी बात कर रहे हो. मैने वहाँ तुमको इसलिए रखा है कि कल से तुम्हारी ट्रैनिंग करवा सकूँ ना की तुमको वहाँ छुट्टियाँ बिताने के लिए समझे.

मैं : जी मुझे आपकी हर बात मंज़ूर है लेकिन अब यहाँ नही रहना चाहता आप चाहे तो मैं आपके दफ़्तर मे सोफे पर सो जाऊंगा लेकिन यहाँ मुझे नही रहना.

चौहान : तुम नताशा से बात करवाओ मेरी.

मैं : जी वो अपने कमरे मे सो रही है.

चौहान : ठीक है फिर सुबह होते ही उसको बोलना मुझसे बात करे. और सुजल यार आज की रात तुम कैसे भी वहाँ गुज़ार लो कल मैं तुम्हारा कही और इंतज़ाम कर दूँगा ठीक है.

मैं : जी शुक्रिया.

उसके बाद मैने फोन रख दिया और वही सोफे पर बैठा गर्दन नीचे किए आँखें बंद करके अपनी ग़लती पर पछताने लगा कि मैं यहाँ आया ही क्यो था. तभी मुझे कुछ गीलापन अपने पैर पर महसूस हुआ मैने आँखें खोलकर देखा तो नताशा मेरे पैरो के पास मुँह नीचे करके बैठी थी और शायद रो रही थी इसलिए उसके आँसू मेरे पैरो पर गिर रहे थे.

मैं : अर्रे नताशा जी आप...आप रो रही है....देखिए मैं अपनी ग़लती पर शर्मिंदा हूँ. आगे से ऐसी ग़लती नही होगी.

नताशा : (रोते हुए) हाँ ग़लती होगी भी कैसे. मुझे छोड़कर जो जा रहे हो.

मैं : जी...क्या?

नताशा : मैने सब सुन लिया है जो तुम चौहान को बोल रहे थे.

मैं : जी मेरी ग़लती थी इसलिए मेरा यहाँ रहना सही नही है. मुनासिब होगा मैं यहाँ से चला जाऊ. आप रोइए मत अगर आप कहेंगी तो मैं अभी चला जाऊंगा लेकिन आप रोइए मत.

नताशा : जाके भी दिखाओ.....(मेरे दोनो हाथ मज़बूती से पकड़ते हुए) मुझे माफ़ नही कर सकते सुजल (रोते हुए मेरे घुटने पर अपने चेहरा रखते हुए)

मैं : (कुछ ना समझने वाले अंदाज़ मे) जी आप क्या कह रही है. मुझे कुछ समझ नही आ रहा.

नताशा : मैं एक दम घबरा गई थी सुजल और उसी चक्कर मे तुम पर गुस्सा हो गई. तुमसे पहले कोई मेरे इतना करीब नही आया कभी इसलिए अचानक जब तुम पास आए तो मैं डर गई थी .ओर सब कुछ भूलकर तुम पर गुस्सा हो गई.

मैं : कोई बात नही वैसे भी ग़लती मेरी थी (मुस्कुराते हुए) आप नीचे क्यो बैठी है पहले आप उपर आके बैठो और रोना बंद करो

नताशा : (मेरे साथ बैठते हुए और बिना कुछ बोले मुझे गले लगाते हुए)आई एम सॉरी सुजल मैं अपनी ग़लती पर शर्मिंदा हूँ मुझे तुम पर इस तरह चिल्लाना नही चाहिए था.

मैं : कोई बात नही... वैसे मैं आपसे नाराज़ नही हूँ नताशा जी.

नताशा : फिर मुझे छोड़कर क्यो जाना चाहते हो.

मैं : (नताशा की बाजू अपने गले से निकालते हुए)ताकि वो ग़लती दुबारा ना हो.

नताशा : अगर कोई अब तुम्हारे बिना ना रह सकता हो तो....?और अब तुम कुछ भी कर लो मैं मना नही करूँगी. मैं डर गई थी सॉरी....

मैं : कोई किसी के बिना नही मरता नताशा जी.....और आपने ठीक किया. मेरे जैसा अनपढ़-गवार आपके किसी काम का नही.

नताशा : (फिर से मुझे गले लगाते हुए) मुझे नही पता तुम मे ऐसा क्या है. लेकिन अब मैं तुमसे दूर नही रह सकती. एक दिन मे जाने तुमने मुझ पर क्या जादू कर दिया है. मुझे छोड़कर मत जाओ प्लीज़....

मैं : लेकिन अब तो मैने चौहान को बोल दिया है

नताशा : उसकी फिकर तुम मत करो. मैं हूँ ना! चौहान को मैं देख लूँगी. बस कल तुम नही जाओगे समझे. यही रहोगे मेरे पास....

मैं : जैसी आपकी मर्ज़ी....लेकिन आज के बाद मैं आपके कमरे मे नही आऊंगा.

नताशा : ठीक है मत आना अब मैं भी उस कमरे मे नही जाऊंगी वही रहूंगी जहाँ तुम रहोगे. चलो अब मेरी कसम खाओ मुझे छोड़कर नही जाओगे.

मैं : आप जब जानती है कि जो चीज़ हो नही सकती फिर उसके लिए कसम क्यो दे रही है.

नताशा : तुम चौहान का काम कर दो फिर तुम आज़ाद हो. उसके बाद हम दोनो रह सकते हैं यहाँ हमेशा के लिए.

मैं : जी नही ! मैं यहाँ नही रह सकताmकाम होने के बाद मैं मेरे घर चला जाऊंगाm मेरे गाँव मे, मेरी ये जिंदगी अब उनकी दी हुई है. आज अगर मैं ज़िंदा हूँ तो ये उनका "अहसान" है मुझ पर.

नताशा : क्या मैं भी उस परिवार का हिस्सा नही बन सकती. मैं तुम्हारे लिए अपना सब कुछ छोड़ने को तैयार हूँ.

मैं : (हँसते हुए) कहना बहुत आसान है नताशा जी लेकिन करना बहुत मुश्किल.

नताशा : ठीक है फिर तुम चौहान का काम कर दो उसके बाद मैं भी ये नौकरी छोड़ दूँगी जहाँ तुम रखोगे जिस हाल मैं रखोगे मैं रहने को तैयार हूँ. और आज के बाद खुद को अनपढ़-गवार मत कहना.

मैं : लेकिन मेरे पास आपको देने के लिए कुछ भी नही है. अपना घर भी नही सब कुछ बाबा का है.

नताशा : कौन कहता है तुम्हारे पास कुछ नही. तुम्हारे पास इतना प्यार करने वाला दिल है और एक लड़की को इससे ज़्यादा कुछ नही चाहिए होता. तुम नही जानते सुजल इतने साल मैने कैसे गुज़ारे है आज मेरे पास सब कुछ होके भी कुछ नही है. बचपन मे ही माँ-बाप गुज़र गये फिर बड़ी हुई तो डॉक्टर बन गई और अब सारा दिन दूसरो का ख्याल रखती हूँ. लेकिन असल मे आज तक किसी ने मेरा ख्याल नही रखा.मैं बचपन से अकेली ही रहती आ रही हूँ. आज तुम आए मेरी जिंदगी मे और जैसे मेरा ख्याल रखा ऐसा कभी किसी ने नही किया मेरे लिए. अब मेरी किस्मत देखो एक इंसान मिला जो मेरी इतनी फिकर करता है.मेरे लिए लड़ता है और मैने उसको भी नाराज़ कर दिया और अब तुम भी मुझे छोड़कर चले जाओगे. (फिर से रोते हुए)

मैं : नही जाऊंगा अब रोना बंद करो चलो. (नताशा की गाल पर लगे आँसू साफ करते हुए)

नताशा : मेरी कसम खाओ.

मैं : अगर लौटकर वापिस आ गया तो नही जाऊंगा अगर नही आ सका तो....

नताशा : (मेरे मुँह पर हाथ रखते हुए) ऐसा मत बोलो (फिर से मुझे गले लगाते हुए)

मैं : अच्छा ठीक है नताशा जी काफ़ी रात हो गई है . अब आप सोने जाओ मैं भी सो जाता हूँ. सुबह चौहान ने बुलाया भी है.

नताशा : ठीक है.

वो बिना कुछ बोले उठी और मेरे बिस्तर पर जाके बैठ गई और मैं बस उसको देख रहा था.

मैं : नताशा जी आप यहाँ सोएंगी.

नताशा : (बिना कुछ बोले हाँ मे सिर हिलाते हुए)

मैं : ठीक है फिर मैं यहाँ सो जाता हूँ. (सोफे पर लेट ते हुए)

नताशा : चुप करके यहाँ आओ. नही तो मैं फिर से रोने लग जाऊंगी.

मैं : (सोफे से उठते हुए) अब क्या हुआ ?

नताशा : लाइट ऑफ करो और यहाँ आके लेटो मेरे साथ. (मुस्कराते हुए)

मैं : लेकीन....
नताशा : लेकिन-वेकीन कुछ नही चलो लाइट ऑफ करके यहाँ आओ.

मैं बिना कुछ बोले गया और लाइट ऑफ करके आ गया और बिना कुछ बोले नताशा के साथ लेट गया. नताशा मेरी तरफ मुँह करके लेटी थी और मुस्कुरा रही थी.

नताशा : सुजल अभी तक नाराज़ हो.

मैं : नही तो.....क्यो.

नताशा : पास आओ ना मेरे.

मैं : (करवट बदलकर नताशा के करीब जाते हुए) अब ठीक है

नताशा : (मेरे होंठ चूमते हुए) रात को भी जीन्स टी-शर्ट पहनकर सोने का मूड है.

मैं : तो क्या पहनु.तुमने ही तो गाँव वाले कपड़े पहन ने से मना किया था.

नताशा : अर्रे आज ही तो इतने सारे कपड़े लेके आए हैं जाओ जाके शॉर्ट्स पहन लो.

मैं : (कुछ ना समझने वाले अंदाज़ मे)शॉर्ट्स क्या...

नताशा : रूको मैं लेकर आती हूँ.

नताशा उठी और जाके मेरे शॉपिंग बॅग्स मे झाँकने लगी. ५-६ बॅग्स मे देखने के बाद उसने एक मे हाथ डाला और देखकर मेरी तरफ फेंक दिया.

नताशा : जाओ ये पहन आओ...रात को टाइट कपड़े पहनकर नही सोना चाहिए.

मैं : अच्छा... (उठकर बाथरूम मे जाते हुए)

जब मैं कपड़े बदलकर वापिस आया तो नताशा एक चद्दर लिए लेटी हुई थी.

मैं : अर्रे इतनी गर्मी मे चद्दर क्यो ली है.

नताशा : पास आओगे तो पता चलेगा ना...

मैं : (बिना कुछ बोले बेड पर लेट ते हुए) अब ठीक है.

नताशा : (मेरी छाती पर हाथ फेरते हुए) एम्म्म! बॉडी अच्छी बनाई है.

मैं : शुक्रिया.

नताशा : चलो अब तुम भी चद्दर मे ही आ जाओ.

मैं : क्यो...

नताशा : आओगे तो पता चलेगा ना.

मैं बिना कुछ बोले नताशा के साथ चद्दर के अंदर आके लेट गया और अंदर जाते ही मुझे एक झटका सा लगा क्योंकि नताशा ने अंदर कुछ नही पहना था और एक दम नंगी थी. वो मेरे चद्दर के अंदर आते ही मुझसे लिपट गई उसकी बड़ी और ठोस छातीया मेरे सीने मे धँसने लगी.उसके स्तनाग्र एक दम सख़्त हुए पड़े थे जो मुझे अपने सीने पर महसूस हो रहे थे. उसके नाज़ुक जिस्म का अहसास मिलते ही मुझ पर एक अजीब सी मदहोशी छाने लगी और मैने उसको अपनी बाहो मे जकड़ लिया. अब इस बार वो मेरे गाल को चूम रही थी और मेरी छाती पर हाथ फेर रही थी. धीरे-धीरे वो मेरे उपर आके लेट गई और मेरे चेहरे को चूमने लगी. नीचे मेरा लिंग फिर से जाग गया था और शॉर्ट्स मे टेंट बनाए खड़ा हो गया था. जिसको नताशा ने अपनी जाँघो मे क़ैद कर रखा था. अब वो धीरे-धीरे मेरी गालो से होते हुए मेरी गर्दन पर चूम रही थी और नीचे की तरफ जा रही थी कुछ ही देर मे वो मेरी छाती पर आ गई और चूमने लगी.

मुझ पर एक अजीब सा मदहोशी का नशा हावी हो रहा था. इसलिए मैने उसको कमर से पकड़ लिए और उपर की तरफ खींचा. मेरे इशारे को समझते हुए वो वापिस उपर आ गई और मेरी आँखों मे देखने लगी और मेरे होंठों को चूमने लगी. मैने जल्दी से उसे कमर से पकड़कर पलट दिया. अब वो मेरे नीचे थी और मैं उसके उपर. मैने उसके होंठ चूसने शुरू किए जिसका उसने भी भरपूर साथ दिया.उसका एक हाथ मेरी पीठ को सहला रहा था और दूसरा हाथ मेरे सिर के बालो से खेल रहा था. हम दोनो को ही इस वक़्त कोई होश नही था. उसके होंठ चूस्ते हुए मैने उसके एक स्तन को अपने हाथ मे थाम लिया और उसको दबाने लगा. कुछ देर मेरे होंठों को चूसने के बाद उसने मेरे सिर को अपने एक हाथ से नीचे की तरफ दबाया.शायद वो चाहती थी कि मैं अब उसके स्तनों को भी उसके होंठों की तरह चुसू. मैं जल्दी से नीचे जाके किसी जंगली की तरह उसके बड़े-बड़े स्तनों पर टूट पड़ा और उसके स्तनाग्र को ज़ोर-ज़ोर से चूसने लगा. वो किसी बिन पानी की मछली की तरह मेरे नीचे पड़ी तड़प रही थी और सस्सिईइ..... सस्सिईइ..... की आवाज़ निकल रही थी. वो कभी मेरा सिर पकड़ कर एक स्तन पर रखती तो कभी दूसरे स्तन पर. मैं भी उसके दोंनो स्तनों को बारी-बारी चूस्ता जा रहा था. थोड़ी देर स्तन चूसने के बाद मैं थोडा और नीचे की तरफ जाने लगा और उसके पेट पर चूमने और चूसने लगा. मैने जैसे ही अपनी ज़ुबान उसकी नाभि मे डाली उसको एक झटका सा लगा और उसने अपना पेट अंदर की तरफ खींच लिया और मेरा सिर पकड़ कर अपने पेट पर दबा दिया. शायद उसको भी मज़ा

आ रहा था. कुछ देर उसकी नाभि को चूसने ,चाटने के बाद मैं और नीचे जाने लगा और उसकी योनी के उपर जहाँ बाल थे वहाँ चूमने लगा. मेरा ऐसा करने से उसने अपनी दोनो टांगे आपस मे जोड़ ली. मैने एक झलक गर्दन उठाके उपर की तरफ देखा तो उसकी आँखें बंद थी. मैने उसकी दोनो जाँघो पर अपने हाथ रखे और धीरे-धीरे उन्हे खोलने लगा. मेरा इशारा मिलते ही वो किसी चाबी लगे खिलोने की तरह अपनी दोनो टांगे खोलती चली गई. उसकी योनी एक दम साफ और क्लीन थी. उस पर बाल का कोई नामो-निशान नही था .आज तक मैने जितनी भी योनी को ठोका था सब पर जंगल उगा हुआ था. यहाँ तक कि हीना की योनी पर भी थोड़े-थोड़े बाल थे.लेकिन नताशा की योनी एक दम साफ और गोरी चिट्टी थी. अब मैने अपना मुँह सीधा उसकी योनी पर रखा और वहाँ चूम लिया. उसकी योनी लगातार पानी छोड़ने की वजह से बहुत गीली हो गई थी और मेरे चूमने से कुछ पानी मेरे होंठों पर भी लग गया था. लेकिन मेरा योनी पर चूमना नताशा के लिए किसी झटके से कम नही था .वो एक दम उच्छल सी गई और अपना सिर उपर की तरफ उठा दिया. मैने अपना एक हाथ उसकी छाती पर रख कर उससे फिर से लिटा दिया और वापिस उसकी योनी को चूमने लगा. उसकी टांगे काँपने लगी थी और बार-बार वो अपनी टांगे बंद करने की कोशिश कर रही थी .लेकिन मैने उसकी दोनो टाँगो को मज़बूती से पकड़ रखा था.

कुछ देर बाद जब वो थोड़ी ठीक हो गई तो मैने अपना मुँह खोला ओर उसकी पूरी योनी को अपने मुँह मे भर लिया ओर चूसने लगा.उसके मुँह से एक जोरदार सस्स्स्सस्स ऊहह की आवाज़ निकली और उसने मेरा सिर अपनी योनी पर दबा दिया .साथ ही अपनी नितंब को उपर की तरफ उठाने लगी. मैं अब लगातार उसकी योनी को चूस रहा था और उसका एक हाथ ने सख्ती से मुझे मेरे बालो से पकड़ रखा था और अपनी योनी पर दबा रही थी. कुछ देर चूसने के बाद उसके जिस्म ने एक झटका खाया,फिर दूसरा झटका और ऐसे ही झटके खाती हुई उसने हवा मे अपनी नितंब उपर को उठा ली ओर कुछ देर ऐसे ही रहने के बाद वो एक दम से बेड पर गिर गई और तेज़-तेज़ साँस लेने लगी शायद वो फारिग हो गई थी.

अब उसने मुझे मेरे बालो से पकड़ा ओर उपर की तरफ खींचा. मैं जैसे ही उपर को हुआ वो फिर से मेरे होंठों पर टूट पड़ी और बेतहाशा मुझे चूमने और मेरे होंठ चूसने लगी. शायद उसको ऐसा करने से बे-ईतेहाँ मज़ा आया था.कुछ देर मुझे चूमने के बाद उसने अपने हाथ नीचे किया और पिछे से मेरी शॉर्ट्स को नीचे कर दिया और मेरी नितंब पर अपना हाथ फेरने लगी. फिर अपना हाथ आगे लाकर आगे से भी मेरे शॉर्ट्स को नीचे कर दिया और फिर अपने पैर की मदद से शॉर्ट्स को मेरी टाँगो से आज़ाद कर दिया. अब हम दोनो सिर्फ़ एक चद्दर मे क़ैद थे. उसने अपनी टांगे फैलाई हुई थी और मेरा लिंग सीधा उसकी योनी के मुँह पर अपनी दस्तक दे रहा था. उसके होंठ चूस्ते हुए ही मैने अपना हाथ नीचे किया और

अपना लिंग पकड़कर निशाने पर रख दिया. उसने जल्दी से अपना मुँह मेरे होंठों से आज़ाद किया और मेरे कान मे धीरे से बोली....

नताशा : सुजल आराम से करना मैने पहले कभी किया नही.

मैं : कभी भी नही.

नताशा : (मुस्कुरा कर ना मे सिर हिलाते हुए) उऊहहुउऊ.

मैने फिर से उसके होंठों को अपने होंठों मे क़ैद कर लिया ओर धीरे से अपने लिंग का दबाव उसकी योनी की छेद पर दिया.लेकिन उसकी योनी का छेद इतना तंग था कि मेरा लिंग फिसलकर उपर की तरफ चला गया.मैने फिर से अपने लिंग पर ढेर सारा थूक लगाया और फिर लिंग को निशाने पर रखा. लेकिन लिंग फिर से फिसल कर उपर को चला गया.

मैं : तुम पकड़कर खुद डालो.

नताशा : (मुस्कुरा कर) अच्छा...

नताशा ने मेरे लिंग को पकड़ा ओर धीरे से मेरे कान मे बोली.

नताशा : ये तो बहुत बड़ा है.अंदर कैसे जाएगा.

मैं : चला जाएगा !पहली बार तक़लीफ़ होगी. फिर आराम से चला जाएगा.

नताशा : मुझे मत सिख़ाओ मैं डॉक्टर हूँ. लेकिन सुजल ये सच मे बड़ा है और मोटा भी ज़्यादा लग रहा है बहुत दर्द होगा.

मैं : मैं आराम से करूँगा.

नताशा : ठीक है ! जल्दी मत करना प्लीज़्ज़्ज़.

फिर मैने अपने लिंग को निशाने पर रखा और इस बार ज़रा ज़ोर से झटका दिया. जिससे लिंग की टोपी अंदर चली गई और नताशा ने एक सस्स्सस्स के साथ अपनी आँखें बंद कर ली. अब मैं कुछ देर रुका और फिर से एक झटका दिया इस बार थोड़ा सा और लिंग अंदर गया और कही जाके अटक गया.मैं ज़ोर लगा रहा था लेकिन अंदर नही जा रहा था. मैने अपना लिंग बाहर निकाला उस पर फिर से थूक लगाया और इस बार ज़रा ज़ोर से झटका दिया. इस बार लिंग कुछ आगे चला गया लेकिन नताशा की दर्द से चीख निकल गई. सस्स्स्सस्स आआययईीई बहुत दर्द हो रहा है सुजल जल्दी बाहर निकालो (रोते हुए) मेरी जान निकल रही है प्लज़्ज़्ज़्ज़्ज़.... उसने अपने दोनो हाथो के बड़े-बड़े नाख़ून मेरे कंधो मे गढ़ा दिए. जिससे मुझे भी बेहद दर्द हुआ.

मैं : बस हो गया इतना ही दर्द था अब नही होगा.

नताशा : एक बार बाहर निकालो प्ल्ज़्ज़. मेरी दर्द से जान निकल रही है.

मैने बिना कुछ बोले लिंग बाहर निकाल लिया और नताशा लगातार रोए जा रही थी. मैं बस उसके उपर लेटा उसको चुप करवा रहा था और उसको चूम रहा था. वो काफ़ी देर ऐसे ही रोती रही.

नताशा : मेरा मुँह सूख रहा है प्यास लगी है.

मैने बिना कुछ बोले पास पड़ा पानी का ग्लास उठाया और पानी को मुँह मे भर लिया और अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिए वो दर्द से कराह रही थी और सस्स...सस्स कर रही थी. मैने अपने होंठ जैसे ही उसके होंठों पर रखे तो उसने अपनी आँखें खोल दी.अब मैं अपने मुँह वाला पानी उसके मुँह मे गिराने लगा और वो बिना कोई हरकत किए वो पानी पीने लगी. जब पानी ख़तम हो गया तो मैने ग्लास उसको दिया ताकि वो पानी पी सके.

नताशा : ग्लास से नही मुँह से पिलाओ.

मैं कुछ देर उसको ऐसे ही अपने मुँह मे भरकर पानी पिलाता रहा.उसको शायद मेरा ऐसा करना बहुत अच्छा लगा था. अब वो भी मुस्कुरा रही थी और आराम से पानी पी रही थी.

नताशा : बसस्स अब आगे भी ऐसे ही पानी पिया करूँगी (मुस्कुराते हुए)

मैं : अब दर्द ठीक है !

नताशा : दर्द अब पहले से कुछ कम है.लेकिन अभी भी बहुत तेज़ जलन हो रही है अंदर

मैं : एक बार पूरा डाल लोगि फिर दर्द नही होगा.

नताशा : मैने बोला भी था आराम से करना लेकिन तुम तो एक दम जंगली हो.

मैं बिना कुछ बोले उसको देखता रहा और उसके होंठ चूमकर अपना लिंग फिर से निशाने पर रखा और हल्का सा झटका दिया अब लिंग टोपी से थोड़ा और आगे तक बिना कोई रुकावट अंदर चला गया लेकिन नताशा को अभी भी दर्द हो रहा था.

नताशा : कुछ देर ऐसे ही रहो जब दर्द ठीक हो जाएगा फिर हिलाना अंदर.

मैं : अच्छा.

कुछ देर मैं ऐसे ही अंदर लिंग डाले उसके उपर पड़ा रहा और हम एक दूसरे के होंठ चूस्ते रहे. थोड़ी देर बाद उसने खुद ही नीचे से अपनी नितंब को हिलाना शुरू कर दिया तो मैं समझ गया कि अब उसका दर्द कम हो गया है. इसलिए मैने भी धीरे-धीरे लिंग को अंदर बाहर करने लगा लेकिन योनी अब भी काफ़ी तंग थी इसलिए मेरा आधे से थोड़ा कम लिंग भी अंदर फस-फस कर जा रहा था. कुछ देर धीरे-धीरे झटके लगाने के बाद जब उसके चेहरे पर से दर्द ख़तम हो गया तो मैने अपनी रफ़्तार कुछ तेज़ करदी और लिंग को भी और अंदर तक डालने की कोशिश करने लगा. लेकिन अब नताशा को इतना दर्द नही हो रहा था.या शायद वो दर्द को बर्दाश्त कर रही थी.

नताशा : और कितना रह गया है बाहर.

मैं : बस थोड़ा सा ही बाक़ी है.

नताशा : ऐसा करो एक ही बार मे पूरा डाल दो मैं दर्द बर्दाश्त कर लूँगी.

मैं : पक्का

नताशा : (बिना कुछ बोले मेरे होंठ चूमकर हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म.

मैं अपने लिंग को टोपी तक बाहर निकाला और एक ही बार मे जोरदार झटका योनी के अंदर मारा. लिंग पूरे से थोड़ा सा कम अंदर तक चला गया लेकिन कुछ लिंग अभी भी बाहर बाकी था. लेकिन नताशा के मुँह से एक बार फिर से ससस्स....आयईयीई....... की आवाज़े निकलने लगी.

नताशा : रुक जाओ सुजल. बस ऐसे ही रहो अब हिलना मत.

मैं : (उसके माथे पर हाथ फेरते हुए) ठीक है.

कुछ देर ऐसे ही लेटे रहने के बाद उसका इशारा मिलते ही मैं फिर से शुरू हो गया और इस बार मैं झटके भी थोड़े तेज़ लगा रहा था. अब नताशा का दर्द भी पहले से बहुत कम हो गया था और वो भी मेरा पूरा साथ दे रही थी. कुछ देर ऐसे ही झटके लगाने के बाद एक बार फिर से उसका जिस्म अक़ड गया और उसने अपनी नितंब को हवा मे उठा लिया और झटके खाने लगी और फिर बेड पर ढेर होके तेज़-तेज़ साँस लेने लगी. अब मैं उसको उपर से हट गया और उसको उठा कर उल्टा लिटा दिया और उसकी नितंब को उपर को उठाया. मेरा इशारा समझ कर वो घोड़ी के जैसे अपने हाथ और घुटनो के सहारे बेड पर खड़ी हो गई अब मैं उसके पिछे आ गया और अपना लिंग फिर से उसकी योनी के मुँह पर रखा और धीरे-धीरे लिंग को अंदर डालने लगा. उसको अब भी लिंग डालने पर दर्द हो रहा था. जिस वजह से उसके मुँह से एक सस्स्ससस्स की आवाज़ निकल रही थी. अब मैने एक हाथ से उसके बाल पकड़ लिए और दूसरा हाथ उसकी नितंब पर रख कर झटके लगाने ल.गा उसको शायद ऐसा करने से बहुत मज़ा आ रहा था इसलिए कुछ देर मे वो भी मेरा भरपूर साथ देने लगी .अब उसको अपने दर्द की कोई परवाह नही थी और मुझे बार-बार ज़ोर से करो सुजल .....ज़ोर से करो सुजल ..... बोल रही थी .मैं भी अब अपनी पूरी रफ़्तार से झटके लगा रहा था. उसको ठोकते हुए मेरा उसके बाल खींचना काफ़ी पसंद आया था. शायद इसलिए जब भी मैं उसके बालो से हाथ हटा लेता तो वो खुद ही मेरा हाथ पकड़ कर अपने बालो पर रख लेती. इसलिए मैं भी अब उसके बाल पकड़ कर तेज़-तेज़ झटके लगा रहा था पूरा कमरा उसकी सस्सस्स.....सस्स्सस्स.....आआहह.....ऊऊहह.....आयईयीई.... की आवाज़ो से गूँज रहा था. अब हम दोनो मज़े मे खोए हुए थे. मैं अब फारिग होने के करीब था इसलिए मैं अब अपनी पूरी रफ़्तार से झटके लगा रहा था. कुछ ही देर मे मैं अपनी मंज़िल पर आ गया और साथ ही एक बार फिर उसका जिस्म भी झटके खाने लगा और हम दोनो एक साथ ही फारिग हो गये. मैं फारिग होने के बाद बहुत थक गया था

इसलिए उसकी पीठ पर ही ढेर हो गया. वो भी वैसे ही बेड पर उल्टी ही लेट गई और अब हम दोनो अपनी सांसो को दुरुस्त करने की कोशिश कर रहे थे. मैं अपनी आँखें बंद किए नताशा के उपर लेटा था और वो अपने एक हाथ पिछे ले जाकर मेरे सिर पर अपने हाथ फेर रही थी. कुछ देर बाद जब हम दोनो की साँस ठीक हो गई तो मैं उसके उपर से हटकर साइड पर लेट गया. वो भी वैसे ही मुझसे लिपट कर सो गई. उस रात बहुत मज़े की नींद आई हम दोनो को ही होश नही था कि कहाँ पड़े हैं.

सुबह जब मेरी नींद खुली तो नताशा किसी मासूम बच्चे की तरह मेरे साथ लेटी थी ओर मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी.

मैं : (अपनी आँखें मलते हुए) सुबह हो गई.

नताशा : हंजी सुबह हो गई..... गुड मॉर्निंग स्वीटहार्ट.

मैं : तुम कब उठी.

नताशा : थोड़ी देर पहले.

मैं : मुझे उठाया क्यो नही.

नताशा : तुम सोए हुए इतने प्यारे लग रहे थे कि उठाने का दिल ही नही किया.

मैं : अर्रे चलो तैयार हो जाओ ! चौहान ने बुलाया था उसके पास भी जाना है.

नताशा : (मुझे गले लगाते हुए) एम्म्म आज कहीं नही जाना. आज मैं मेरी जान के साथ रहूंगी बस. आज कोई काम नही करना.

मैं : वो तो ठीक है लेकिन अगर नही जाएँगे तो चौहान गुस्सा हो जाएगा ना.

नताशा : मैं क्या करूँ मुझसे उठा ही नही जा रहा.

मैं : क्यो क्या हुआ ?

नताशा : (हँसते हुए) अच्छा क्या हुआ मुझे...कल रात क्या हुआ था... याद करो....चलो...चलो....

मैं : (कुछ सोचते हुए) अच्छा वो.... ज़्यादा दर्द हो रहा है.

नताशा : (मेरे होंठ चूमकर ना मे सिर हिलाते हुए) उऊहहुउऊ...

मैं : चलो फिर आज साथ मे नहाते हैं !

नताशा : हमम्म लेकिन नीचे जलन हो रही है.लगता है आज तो क्लिनिक जाना ही पड़ेगा.

मैं : क्यो क्लिनिक मे क्या है...

नताशा : वहाँ से एक क्रीम लानी है.वो लगाऊंगी तो ठीक हो जाएगी.

मैं : तुम आज आराम करो घर पर.मुझे बता दो कौनसी क्रीम है.मैं ले आऊंगा.

नताशा : हमम्म अच्छा और जब नर्स पुछेगि तो क्या बोलोगे.

मैं : बोल दूँगा नताशा ने मँगवाई है.

नताशा : हुह...रहने दो मैं खुद ही ले आउंगी...तुम तो जिसको नही भी पता चलना होगा उसको भी बता दोगे. (हँसते हुए)

मैं : चलो फिर तैयार हो जाते हैं. जाना भी है!

नताशा : ठीक है चलो. अच्छा सुनो हेड-क्वॉर्टर्स जाके किसी को हमारे बारे मे कुछ मत बताना अभी. मुनासिब वक़्त आने पर हम सबको बताएँगे ठीक है.अभी चुप रहना और हमारे बारे मे किसी से कोई बात ना करना.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म !

उसके बाद मैने जैसे चद्दर हटाई बेड पर एक खून का निशान लगा हुआ था जिसको मैं और नताशा दोनो देख रहे थे और मुस्कुरा रहे थे.नताशा से ठीक से चला नही जा रहा था. इसलिए वो अपनी टाँग को थोड़ी चौड़ी करके चल रही थी. उसके इस तरह चलने पर मैं अपनी हँसी रोक नही पाया और ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा.

नताशा : (मुस्कुराते हुए) हँसो मत सब तुम्हारा ही किया हुआ है.

मैं : मैने बोला था कपड़े उतार कर मेरे साथ सोने को.

नताशा : अच्छा...अच्छा...ठीक है अब मुझे बाथरूम तक लेके चलो दर्द हो रही है. (योनी को सहलाते हुए)

उसके बाद मैने उसको गोद मे उठाया और हम दोनो नहाने चले गये वहाँ हम दोनो साथ नहाए मेरा लिंग तो एक बार फिर से खड़ा हो गया था लेकिन नताशा की हालत देखकर मैं अपने जज़्बात काबू कर लिए और फिर हम दोनो तैयार होके हेडक्वॉर्टर्स चले गये.

२२

हेड क्वॉर्टर जाते ही चौहान मेरे सामने अपने सवालो की दुकान खोले खड़ा हो गया.

चौहान : आ गये जनाब !रात को क्या हुआ था ?

नताशा : कुछ नही ! घरवाले याद आ रहे थे जनाब को. मैने समझा दिया है अब सब सेट है.

चौहान : देख लो अगर कोई समस्या है तो,मेरे साथ तुम रह सकते हो.

मैं : नही कोई समस्या नही ! वो मुझे बस घरवालो की याद आ रही थी.

चौहान : (नताशा को देखते हुए)ये तुमको क्या हुआ पैर मे चोट लगी है क्या.

नताशा : हाँ रात को लाइट चली गई थी. मैं मोमबत्ती लेने गई तो वहाँ सब्जी पर पैर स्लिप हो गया और पैर मे मोच आ गई. सुजल नही होता तो मैं उठ भी नही सकती थी.

चौहान : अपना ख्याल रखा करो और तुमको मैने कितनी बार बोला है कोई नौकरानी रख लो.

नताशा : अर्रे अकेली तो हूँ मैं अब एक इंसान के लिए क्या नौकरानी रखू.

चौहान : चलो जाओ डॉक्टर साहिबा पहले अपना इलाज करो तब तक मैं थोड़ा सुजल साहब से बात कर लूँ.

नताशा : हमम्म.... (मेरी तरफ देखते हुए) जब तुम्हारा काम ख़तम हो जाए तो मेरे पास क्लिनिक मे आ जाना ठीक है.

मैं : अच्छा जी !

उसके बाद चौहान मुझे एक अजीब सी जगह ले गया. जहाँ बहुत सारी मशीन्स पड़ी थी. मेरे लिए ये जगह एक दम नयी थी. इसलिए मैं चारो तरफ बड़े गौर से देख रहा था.वहाँ काफ़ी सारे लोग हाथ मे छोटी-छोटी मशीन्स पकड़े बैठे थे और उसके साथ कुछ ना कुछ कर रहे थे.

मैं : चौहान साहब हम यहाँ क्यो आए हैं?

चौहान : यहाँ मैं तुमको हर क़िस्म का स्पाइ डिवाइस इस्तेमाल करना सिखाऊंगा. जो आगे जाके तुम्हारे काम आएगा. और इनकी मदद से तुम मुझ तक उस गँग की इन्फर्मेशन भी भेज सकते हो.

मैं : अच्छा...

उसके बाद पूरा दिन वो मुझे अलग-अलग क़िस्म की छोटी-छोटी मशीन्स के बारे मे बताता रहा और मुझे उनको इस्तेमाल करना भी सीखाता रहा. मैं हर चीज़ को बड़े ध्यान से समझ रहा था और उसको अपने दिमाग़ मे बिठाने की कोशिश कर रहा था. वहाँ बैठे लोग मुझे उन औज़ारो को इस्तेमाल करना भी सीखा रहे थे और मेरी ज़रूरत के मुताबिक़ मुझे वो समान दे भी रहे थे1.जिसको मैं खुद एक बार इस्तेमाल करके देख रहा था और फिर मैं एक छोटे से बॅग मे वो तमाम समान को डाल रहा था.

मेरा पूरा दिन वही डिवाइसस को देखने और वो कैसे काम करते हैं उसको समझने मे ही गुज़रा.उसके बाद शाम को मैं और नताशा घर आ गये. आते ही नताशा मुझ पर किसी भूखे जानवर की तरह टूट पड़ी और हम फिर से ठुकाई मे लग गये. अब ये हमारा रोज़ का रुटीन सा हो गया था कि दिन मे मैं चौहान से ट्रैनिंग लेता और शाम से लेकर सुबह तक हम को बस बहाना चाहिए था ठुकाई करने का अब नताशा मेरे बिना एक पल भी नही रहती थी. कुछ ही दिन मे वो मुझ से बहुत ज़्यादा जूड सी गई थी ओर मुझे बे-पनाह प्यार करने लगी थी. अक्सर जब भी मैं चौहान से ट्रैनिंग ले रहा होता तो नताशा किसी ना किसी बहाने से मेरे पास आ जाती. मुझे पता ही नही चला कि १५ दिन कैसे गुज़र गये और मेरी ट्रनिंग भी मुकम्मल हो गई.आखरी दिन चौहान ने ऐसे ही मुझे अपने कॅबिन मे बुलाया वहाँ उसके पास एक आदमी बैठा था. जो मुझे देखते ही खड़ा हो गया और हैरानी से घूरने लगा.

चौहान : बैठो-बैठो ! अब ये अपना ही आदमी है इससे डरने की ज़रूरत नही.

मैं : चौहान साहब आपने मुझे बुलाया था.

चौहान : हाँ सुजल अब तुम्हारी ट्रैनिंग तो पूरी हो ही गई है. इसलिए मैने सोचा तुम्हारे जाने का इंतज़ाम भी कर दूं.

मैं : (चोंकते हुए) जाने का...कहाँ जाना है मुझे.

चौहान : अर्रे भाई तुमको तुम्हारे गँग तक नही पहुँचना क्या....

मैं : ओह्ह्ह अच्छा हाँ... तो बताइए कब जाना है

चौहान : कल जाना है

मैं : (कुर्सी से खड़ा होते हुए) कलल्ल्ल.... इतनी जल्दी...

चौहान : क्यो क्या हुआ कल जाने मे कोई परेशानी है क्या.

मैं : जी नही एस बात नही है1.बस मैं एक बार वहाँ जाने से पहले अपने घरवालो से मिलना चाहता था.

चौहान : ठीक है! फिर तुम आज ही अपने गाव हो आओ और अपने घरवालो से मिल आओ. लेकिन सुबह तक वापिस आ जाना. क्योंकि मुझे खबर मिली है कि कल रात को तुम्हारे पुराने साथी लाला, गानी और सूमा शहर मे आ रहे हैं.ड्रग्स की डील करने के लिए और तुमको उनकी नज़रों के सामने लाना ज़रूरी है. तभी तुम उस गँग तक पहुँच पाओगे.

मैं : जी अच्छा... लेकिन मैं उनके सामने पहुँचुँगा कैसे.

चौहान : इसलिए तो तुमको यहाँ बुलाया है इनसे मिलो ये है साजिद (सामने कुर्सी पर बैठे उस आदमी की तरफ इशारा करते हुए)

साजिद : सलाम उस्मान भाई (मुझसे हाथ मिलाते हुए)

मैं : वालेकुम सलाम!

चौहान : ये पेशे से एक ड्रग डीलर है और हमारा खबरी भी है. तुम इसके साथ वहाँ डील करने जाओगे और वहाँ उनके लोगो का माल लूटोगे और उनके आदमियो को ख़तम

करोगे. बाकी सब काम मैने इसको समझा दिया है.

मैं : जी ठीक है.

चौहान : अब तुम गाव चले जाओ और अपने घरवालो से मिल आओ.

मैं : ठीक है.

चौहान : और सुनो... हमारे पास वक़्त नही है इसलिए सुबह तक याद से वापिस आ जाना. क्योंकि सुबह होते ही तुमको साजिद के साथ जाना है.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) जी अच्छा...

उसके बाद वो दोनो कमरे मे बैठे रहे और मैं बाहर आ गया. मुझे ये सब इतने जल्दी होने की उम्मीद नही थी. मैने तो सोचा था कुछ दिन और मैं अपने घरवालो के पास रह लूँगा. लेकिन यहाँ तो चौहान ने मुझे बस एक रात का ही वक़्त दिया है और अब तो नताशा भी है जो मुझे बे-इंतेहा मुहब्बत करती है.उसको मैं कैसे समझाऊंगा. मैं अपनी इन्ही सोच मे था कि मेरे कदम खुद ही नताशा के कॅबिन की तरफ मुझे ले गये.

मैं : क्या मैं अंदर आ सकता हूँ डॉक्टरनी साहिबा.

नताशा : (मुस्कुराते हुए) अर्रे तुम आज इतनी जल्दी फ्री हो गये. और ये क्या तुमको अंदर आने के लिए मुझसे इजाज़त लेने की ज़रूरत कब से पड़ने लग गई... चलो अंदर आओ.

मैं : वैसे ही सोचा तुम कोई काम कर रही होगी.

नताशा : (अपनी कुर्सी से खड़े होके मेरे पिछे आते हुए) मेरी जान तुम्हारे लिए तो वक़्त ही वक़्त है. बताओ क्या खिदमत करू मेरी जान की... (पिछे से मेरी गाल चूमते हुए)

मैं : मुझे तुमसे कुछ कहना है.

नताशा : क्या हुआ तुम परेशान लग रहे हो सब ठीक तो है.

मैं : मैं आज गाव जा रहा हूँ उसके बाद कल सुबह मुझे मिशन के लिए निकलना है.

नताशा : (मेरी कुर्सी को अपनी तरफ घूमाते हुए) क्या....इतनी जल्दी....

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हम्म...

उसके बाद हम दोनो खामोश हो गये और नताशा वापिस अपनी जगह पर जाके बैठ गई और अपना समान समेटने लगी. मुझे उसका इस तरह का बर्ताव अजीब सा लगा.

मैं : क्या हुआ नाराज़ हो.

नताशा : नही...नाराज़ क्यो होना है. बस थोड़ी सी उदास हूँ .सोचा नही था तुम इतनी जल्दी चले जाओगे.

मैं : उदास क्यो हो... अर्रे मैं जल्दी वापिस आ जाऊंगा ना.

नताशा : मैने सोचा था तुम कुछ दिन मेरे पास ही रुकोगे.

मैं : चौहान ने आज ही मुझे बताया. मैं भी क्या करू.

नताशा : (अपना सारा समान अपने बॅग मे डालते हुए) चलो चलें.

मैं : कहाँ चलें

नताशा : घर मे तुम्हारी पॅकिंग करने और कहाँ

मैं : और तुम्हारा काम....

नताशा : आज कोई काम नही. बस आज मैं तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ.

उसके बाद नताशा ने जल्दी छुट्टी लेली और हम दोनो घर के लिए निकल गये. नताशा पूरे रास्ते खामोश और उदास ही बैठी थी जो मुझे सच मे अच्छा नही लग रहा था.

मैं : क्या हुआ है नताशा अब ऐसे उदास मत बैठो .

नताशा : मैं ठीक हूँ (मेरे कंधे पर अपना सिर रखते हुए)

मैं : एक बात बोलू...

नताशा : हमम्म्म

मैं : तुम ऐसे उदास बैठी अच्छी नही लगती.

नताशा : तो क्या तुम्हारे जाने की खुशियाँ मनाऊ.

मैं : तुमको पता है, तुम जब हँसती हो तो बहुत कामुक लगती हो. मेरी तो नियत ही खराब हो जाती है.

नताशा : (हँसते हुए) उ्उउउ..... तंग मत करो ना सुजल . एक तो पहले मूड खराब कर दिया. अब हंसा रहे हो.

मैं : मैने क्या किया ? ये तो चौहान ने ही मुझे जो बोला मैने तुमको बता दिया.

नताशा : (रोने जैसा मुँह बनाते हुए)मत जाओ ना....सुजल .

मैं : जाना तो पड़ेगा ! क्या करे मजबूरी है.

नताशा : मैं तुम्हारे बिना कैसे रहूंगी कभी सोचा है.

मैं : एम्म्म चलो एक काम करते हैं तुम भी मेरे साथ ही चलो.

नताशा : कहाँ चलु...

मैं : मेरे गाव और कहाँ... रात वहाँ ही रहेंगे और सुबह तक वापिस आ जाएँगे.

नताशा : मैं....मैं कैसे...

मैं : क्यो गाँव जाने मे क्या परेशानी है

नताशा : परेशानी वाली बात नही है. तुम्हारे घरवाले मुझे पसंद नही करते. इसलिए उनको शायद मेरा वहाँ रहना अच्छा ना लगे.

मैं : अर्रे वो लोग बहुत अच्छे हैं . तुम फिकर मत करो कोई कुछ नही कहेगा.

नताशा : लेकिन...

मैं: लेकिन-वेकीन कुछ नही तुम साथ आ रही हो... मतलब आ रही हो... वैसे भी मेरे पास एक ही दिन बचा है. कल सुबह को तो मिशन के लिए निकलना है और मैं चाहता हूँ मैं अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त अपने चाहने वालो के साथ गुज़ारु जिनमे अब तुम भी हो.

नताशा : (मुस्कुराकर मेरी गाल चूमते हुए) अच्छा....ठीक है ! मैं भी चलती हूँ.

मैं : ये हुई ना बात

नताशा : तुमको पता है तुम बहुत ज़िद्दी हो.

मैं: हाँ हूँ...कोई ऐतराज़

नताशा : (मुस्कुरा कर ना मे सिर हिलाते हुए) उुउऊहहुउऊ....

मैं : अच्छा नताशा मैं सोच रहा था जाने से पहले घरवालो के लिए थोड़ा समान खरीद लू. तो क्या हम पहले बाज़ार चलें अगर तुमको ऐतराज़ ना हो तो.

नताशा : हाँ-हाँ ज़रूर ! क्यो नही. वैसे भी इतने दिन बाद घर जा रहे हो खाली हाथ थोड़ी ना जाओगे.

उसके बाद कोई खास बात नही हुई. हम हेड-क्वॉर्टर से सीधा मार्केट चले गये वहाँ.मैने जास्मिन,सलमा और बाबा के लिए बहुत सारा समान खरीदा. फिर हम घर आ गये और आते ही नताशा मुझ पर टूट पड़ी और पागलो की तरह मुझे चूमने लगी फिर हमने एक बार सहवास किया और उसके बाद मैं थक कर सो गया .लेकिन नताशा मेरी ओर अपनी पॅकिंग करने लगी रही. शाम को जब मैं सो कर उठा तो नताशा ने सब कुछ रेडी कर दिया था .उसके बाद मैं भी नहा कर तैयार हुआ और फिर हम दोनो गाव के लिए निकल पड़े.

२३

पूरे रास्ते मैं अपनी गाव के जीवन और गाव वालों के बारे मे नताशा को बताता रहा. कुछ ही घंटे मे हम मेरे गाव मे आ चुके थे. आज इतने दिन बाद अपने गाव मे आके मुझे बहुत खुशी हो रही थी. वैसे तो ये गाव मेरा नही था ,लेकिन जाने क्यो अब इस गाव से भी प्यार हो गया था. इसकी मिट्टी की खुशबू मुझे एक अजीब सा सुकून देती थी. कुछ ही देर मे मैने मेरे घर के सामने गाड़ी रोक दी जहाँ जास्मिन घर के बाहर बँधे पशुओ को चारा डालने मे मसरूफ़ थी. मैने जल्दी से कार बंद की और एक मुस्कुराहट के साथ गाड़ी का दरवाज़ा खोला. पहले तो जास्मिन मुझे गौर से देखती रही और जब उससे यक़ीन हो गया कि ये मैं ही हूँ तो वो चारे का टोकरा वही फेंक कर मेरी तरफ भागने लगी और आके मुझे गले से लगा लिया. जास्मिन को गले लगाके मैं भी ये भूल गया कि मैं जास्मिन से नाराज़ था. आज तो बस दिल खोलकर सबसे मिलना चाहता था.

जास्मिन : तुम कहाँ से टपक पड़े.....इतने दिन बाद कहाँ से याद आ गई हमारी.

मैं : अर्रे पागल लड़की आस-पास भी देख लिया कर.

जास्मिन : (नताशा को देखकर जल्दी से मुझसे अलग होती हुई) ओह्ह्ह माफ़ कीजिए डॉक्टरनी जी.... मैने आपको देखा नही.

नताशा : (हँसते हुए) कोई बात नई...जब कोई अपना बहुत दिन बाद मिलता है तो काबू नही रहता खुद पर. मैं समझ सकती हूँ.

मैं : अब सारी बातें यही करनी है या अंदर भी जाने दोगि.

जास्मिन : (अपने सिर पर हाथ मारते हुए) ओह्ह मैं तो भूल ही गई चलो अंदर आओ.

उसके बाद हम तीनो घर के अंदर आ गये और जास्मिन का शोर सुनकर सबसे पहले सलमा बाहर आई तो उसकी भी हालत कुछ जास्मिन जैसी ही थी. मुझे देखते ही उसका चेहरा खुशी से खिल उठा जैसे ही वो मेरे पास आने लगी तो मेरे साथ खड़ी नताशा को देखकर उसने अपने कदम वही रोक लिए और दरवाजे से ही मुझे ओर नताशा को सलाम किया. हम-दोनो ने भी सलमा को अदब से सलाम किया और इतना मे जास्मिन कमरे के

अंदर भाग गई जहाँ बाबा होते थे. मैने भी जल्दी से जास्मिन के पीछे-पीछे ही कमरे मे चला गया बाबा से मिलने के लिए. मुझे देखते ही बाबा का चेहरा भी खुशी से खिल उठा. मैं अब उनके पास जाके बैठ गया और अदब से उनको सलाम किया उन्होने ने भी मेरे माथे को चूम लिया.

मैं : कैसे हैं आप बाबा.

बाबा : बेटा अब तुम आ गये हो तो अब तंदुरुस्त हो गया हूँ. तुम क्या आ गये ऐसा लगता है घर मे रौनक आ गई. हमने तुमको बहुत याद किया बेटा.

मैं : (मुस्कुराते हुए) इस घर की रौनक तो आप से है बाबा. मैने भी आप सब को बहुत याद किया. ऐसा एक भी दिन नही गया जब आपकी याद ना आई हो.

बाबा : बेटा हमारा तो घर ही सूना हो गया था तुम्हारे जाने के बाद. वो पगली जास्मिन तो दरवाज़ा नही बंद करने देती थी कि सुजल ही ना आ जाए.

जास्मिन : क्या बात है ! आते ही बाबा के पास बैठ गये हो बाहर नही आना क्या जनाब... हम भी आपके इंतज़ार मे हैं.

मैं : हां बस... बाबा को मिलकर आता हूँ.

बाबा : चलो बेटा मैं भी तुम्हारे साथ बाहर ही चलता हूँ.

मैं : जी बाबा चलिए (बाबा को उठाते हुए)

बाबा : क्या बात है बेटा काम बहुत जल्दी ख़तम हो गया तुम्हारा. चौहान साहब भी आए हैं क्या.

मैं : जी नही बाबा चौहान साहब नही आए. और वो इतने दिन तो मैं ट्रैनिंग के लिए गया हुआ था. कल मुझे मेरे असल काम पर भेजा जा रहा था तो मैने सोचा जाने से पहले आप सब से मिलकर जाऊ. वैसे भी आप - सब की बहुत याद आ रही थी.

बाबा : (उदास होते हुए) अच्छा किया बेटा जो मिलने आ गये.... कल फिर से जा रहे हो बेटा.

मैं : जी बाबा !

जब मैं बाबा को लेके बाहर आया तो शायद नताशा ने मेरे जाने के बारे मे सलमा और जास्मिन को पहले ही बता दिया था इसलिए उनका खुश-हाल चेहरा फिर से उदास हुआ पड़ा था.

मैं : अर्रे क्या हुआ ? आप सबने मुँह क्यो लटका लिया.

सलमा : कल तुम फिर से जा रहे हो हमने तो सोचा था कि सारा काम ख़तम करके ही आए हो.

मैं : (कुर्सी पर बाबा को बैठते हुए) हंजी कल निकलना है ओर काम भी जल्दी ही ख़तम कर दूँगा फिकर मत करो.

जास्मिन : वापिस कितने दिन मे आओगे.

मैं : पता नही कुछ दिन लग सकते हैं इसलिए मैने सोचा की जाने से पहले सबसे मिलता हुआ चलूं. अच्छा बाबा ये डॉक्टर नताशा है जिनके पास मैं शहर मे रहता हूँ.

नताशा : (बाबा को अदब से सलाम करते हुए)

मैं : बाबा ये भी आज मेरे साथ यही रुक जाए तो आपको कोई ऐतराज़ तो नही. बिचारी इतनी दूर से मुझे छोड़ने आई हैं.

बाबा : नही नही बेटा. कैसी बातें कर रहे हो .भला मुझे क्या ऐतराज़ होगा ये भी तो हमारी जास्मिन जैसी ही है और ये तुम्हारा अपना घर है बेटा रहो जितने दिन तुम चाहो.

नताशा : जी शुक्रिया बाबा जी ! मैं बस कल सुजल के साथ ही चली जाऊंगी.

जास्मिन : वैसे बाबा सुजल पहले से काफ़ी बदला हुआ नही लग रहा.

बाबा : नही बेटा ये तो पहले जैसा ही है.

जास्मिन : उउउहहुउऊ....कपड़े तो देखो ना सुजल के बाबा (मुस्कुराते हुए) गुंडा लग रहा है ना.

सलमा : (मुस्कुरा कर) चुप कर पागल इतना अच्छा तो लग रहा है. वैसे भी शहर मे रहने का कुछ तो असर आएगा.

उसके बाद सारा दिन ऐसे ही गुज़रा.रात को बाबा अपनी आदत के मुताबिक़ जल्दी सो गये लेकिन जास्मिन,सलमा और नताशा को चैन कहाँ था वो तीनो मुझे पूरी रात घेरकर बैठी रही और मेरे गुज़रे १५ दिनो के बारे मे मुझसे पूछती रही. ऐसे ही सारी रात बातों का सिल-सिला चलता रहा. तीनो आज खुश भी थी और उदास भी थी. लेकिन मैं मजबूर था ना उनको मुकम्मल खुशी दे सकता था ना ही उनकी उदासी को दूर कर सकता था. बातें करते हुए जाने कब सुबह हो गई पता ही नही चला. अब मुझे अपने वादे के मुताबिक़ जाना था. मेरा बिल्कुल जाने का दिल नही था और ना ही घर मे किसी को मुझे भेजने का दिल था.लेकिन फिर भी बाबा की दी हुई ज़ुबान को मुझे पूरा करने के लिए जाना था. सुबह बाबा भी जल्दी उठ गये और उठ ते ही मुझे अपने कमरे मे बुला लिया मेरे पिछे-पिछे जास्मिन, सलमा और नताशा भी उसी कमरे मे आ गई.

मैं : जी बाबा आपने मुझे बुलाया था.

बाबा : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) बेटा अब तुम थोड़ी देर मे चले जाओगे.इसलिए वहाँ जाके अपना ख़याल रखना.

मैं : जी बाबा... आप सब लोग भी अपना ख्याल रखना

नताशा : (पिछे से मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए) सुजल तुम फिकर मत करो. मैं हूँ ना तुम्हारी गैर मोजूद्गी मे मैं यहाँ आती रहूंगी और इनको किसी चीज़ की कमी नही होगी. ये मेरा तुमसे वादा है.

मैं : (मुस्कुराकर) शुक्रिया ! बस अब मैं चैन से जा सकता हूँ.

सलमा : बाबा मुझे डर लग रहा है. पता नही वो लोग कैसे होंगे.... आप एक बार चौहान साहब से बात करके देखिए ना. उन्हे कह दीजिए कि हमे नही सुजल को नही भेजना.

मैं : बच्चों जैसी बात मत करो सलमा. तुम जानती हो बाबा ने वादा किया था और वैसे भी चौहान की मदद करके मैं भी तो हमेशा के लिए आज़ाद हो जाऊंगा फिर तो हमेशा के लिए यहाँ ही रहूँगा और रही मेरी बात तो उपर वाले का करम से मैं अकेला भी पूरी फ़ौज़ पर भारी हूँ.

जास्मिन : बस-बस....जब देखो लड़ने पर आमादा रहते हो. वहाँ जाके अपना खाने पीने का ख्याल रखना और हो सके तो हमे फोन करते रहना और अपनी खैर-खबर देते रहना.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) नही जास्मिन. मैं फोन नही कर पाऊंगा.

जास्मिन : (आँखें दिखाते हुए) क्यो... वहाँ फोन नही है क्या....

मैं : चौहान साहब ने बोला था कि वहाँ जाके जब तक मेरा मिशन पूरा नही हो जाता मैं किसी को नही जानता और मेरा कोई नही.

सलमा : क्यो कोई नही हम हैं ना....

मैं : (अपने सिर पर हाथ रखते हुए) अर्रे उन लोगो को मैं अपनी कोई कमज़ोरी नही दिखा सकता .उनकी नज़र मे तो मैं उस्मान ही हूँ ना. जिसका आगे-पिछे कोई नही.

बाबा : (अपने दोनो हाथ हवा मे उठाते हुए) मालिक मेरे बेटे की हिफ़ाज़त करना.... जास्मिन बेटा वो मैं जो ताबीज़ लेके आया था सुजल के लिए वो ले आओ ज़रा.

जास्मिन : अभी लाई बाबा !

मैं : कौनसा ताबीज़ बाबा ?

बाबा : बेटा ये बहुत मुबारक ताबीज़ है .बहुत दुआ के साथ बनाया गया है.ये तुम्हारी हर बुरी बला से हिफ़ाज़त करेगा.

जास्मिन : (तेज़ कदमो के साथ कमरे मे आके बाबा को ताबीज़ देते हुए) ये लो बाबा.

बाबा : (मेरे गले मे ताबीज़ बाँध कर मेरा माथा चूमते हुए) खुश रहो बेटा. अब तुम तैयार हो जाओ तुम्हारे जाने का वक़्त हो गया.

मैं : जी बाबा.

उसके बाद मैं और नताशा जल्दी से तैयार होने मे लग गये और जास्मिन और सलमा मेरे और नताशा के लिए नाश्ता बनाने लग गई. तैयार होके हम सब ने साथ मे नाश्ता किया और उसके बाद फिर वही ढेर सारे आँसू और बेश-कीमत दुवाओ के साथ मुझे विदा किया गया. कार मे नताशा भी खुद को रोने से रोक नही पाई और तमाम रास्ते वो भी मेरे कंधे पर सिर रख कर रोती रही. यक़ीनन इन सब के दिल मे जो मेरे लिए प्यार था वही मेरा जाना मुश्किल कर रहा था मेरा दिल चाह रहा था कि मैं ना कर दूं और मैं ना जाऊ. लेकिन मैं ऐसा चाह कर भी नही कर सकता था. इसलिए अपने दिल को मज़बूत करके मैने कार की रफ़्तार बढ़ा दी. अब मैं जल्दी से जल्दी शहर पहुँचना चाहता था. सब घरवाले और नताशा के बारे मे सोचते हुए जल्दी ही मैने कार को शहर तक पहुँचा दिया.

मैं : नताशा हम शहर आ गये हैं. अब बताओ तुम भी मेरे साथ हेड-क्वॉर्टर चलोगि या तुमको घर छोड़ दूँ.

नताशा : (अपने आँसू पोन्छते हुए) मैं भी तुम्हारे साथ ही चलती हूँ. ना घर मे कौन है जिसके पास जाऊ.

मैं : ठीक है.

उसके बाद हम हेड-क़्वार्टेर पहुँच गये जहाँ चौहान ओर साजिद हमारा पहले से इंतज़ार कर रहे थे. मैने नताशा को उसके कॅबिन मे जाने का इशारा किया लेकिन वो फिर भी मेरे पिछे-पिछे चौहान के कॅबिन मे ही आ गई. मेरे कमरे मे घुसते ही चौहान ने तालियो के साथ मे मेरा स्वागत किया.

चौहान : (ताली बजाते हुए) वाह भाई वा क्या ज़ुबान का पक्का आदमी है. देख साजिद तुझे बोला था ना ये सुबह आ जाएगा.

साजिद : साहब आपको पक्का यक़ीन है ये उस्मान ही है.

चौहान : मेरा दिमाग़ मत खराब कर. तुझे जो बोला वो कर. फालतू मे अपना दिमाग़ मत चला समझा.

साजिद : जी माफ़ कर दीजिए ग़लती हो गई.

नताशा : चौहान तुम सुजल को कहाँ भेज रहे हो.

चौहान : सॉरी मेडम ये सीक्रेट है .आपको नही बता सकता.

नताशा : (मुझे देखते हुए) अपना ख्याल रखना और जाते हुए मुझे मिलकर जाना.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) अच्छा.

उसके बाद नताशा कमरे से बाहर चली गई और मैं साजिद के साथ वाली कुर्सी पर आके बैठ गया. चौहान अपनी कुर्सी से खड़ा हुआ और जल्दी से तेज़ कदमो के साथ कमरे के बाहर खड़े गार्ड की तरफ गया और उससे दूर जाके खड़े होने का बोल दिया और फिर वापिस अपनी कुर्सी पर आके बैठ गया. मैं और साजिद दोनो चौहान को बड़े गौर से देख रहे थे. चौहान ने मुझे एक मुस्कान के साथ देखा और बोला...

चौहान : हाँ तो सुजल मिल आए घरवालो से.

मैं : जी मिल आया.

चौहान : अब मेरे काम के लिए तैयार हो.

मैं : हंजी एक दम तैयार हूँ

चौहान : बहुत खुंब... तो ठीक है फिर अभी थोड़ी देर मे निकलना है उससे पहले मेरे साथ आओ... साजिद तुम यही बैठो और हो सके तो अपने लिए चाय कॉफी मंगवा लेना.

साजिद : जी कोई बात नही मैं ठीक हूँ. आप अपना काम ख़तम कर ले.

चौहान : (मेरे कंधे पर हाथ मरते हुए) चलो मेरे साथ आओ.

मैं बिना कोई जवाब दिए अपनी कुर्सी से खड़ा हुआ और सवालिया नज़रों के साथ चौहान के पिछे-पिछे चलने लगा. चौहान मुझे एक कमरे मे ले गया जहाँ सिर्फ़ एक टेबल और दो कुर्सियाँ लगी हुई थी.

चौहान : तुम अंदर बैठो मैं अभी आता हूँ.

मैं : जी अच्छा.

कुछ देर इंतज़ार करने के बाद चौहान एक बॅग के साथ कमरे मे आ गया और बॅग को टेबल पर मेरे सामने रख दिया और मेरे देखते ही देखते बॅग खोल कर उसमे से समान निकालना शुरू किया.

चौहान : अपने जूते उतारो और ये जूते पहन लो.

मैं : क्यो... इनमे क्या खराबी है अभी नये ही लिए हैं.

चौहान : जो मैं जूते तुमको दे रहा हूँ ये फॅशन के लिए नही बल्कि इनमे ट्रांसमेटेर लगा है. इससे मुझे पता चलता रहेगा की तुम कहाँ हो.

मैं : (अपने जूते उतारते हुए) अच्छा पहन लेता हूँ.

चौहान : (टेबल पर एक हँड पिस्टल रखते हुए) ये गन है तुम्हारी सेफ्टी के लिए ज़रूरत पड़े तो ही चलाना. लेकिन याद रखना अब तुम सुजल हो और सुजल पेशेवर क़ातिल नही है.

मैं : (गन उठाते हुए) जी अच्छा.

चौहान : (एक लॉकेट निकालते हुए) ये देखने मे लॉकेट जैसा है. लेकिन असल मे कॅमरा है इससे पहन लो... तुम उन लोगो के साथ जहाँ भी जाओ अपने लॉकेट से खेलने के बहाने उनकी और नये लोगो की तस्वीरे लेते रहना.

मैं : ठीक है.

चौहान : जो तुमको ट्रैनिंग मे सिखाया था वो सब याद है ना.

मैं : जी सब याद भी है और मैं अब सब डिवाइस इस्तेमाल भी कर सकता हूँ.

चौहान : ठीक है.

मैं: लेकिन चौहान साहब वो तस्वीरें मैं आप तक पहुँचाऊँगा कैसे.

चौहान : मैं तुमको हर हफ्ते तुम्हारे फाइट क्लब पर मिलूँगा. वहाँ हर बार तुम अपना लॉकेट इस दूसरे लॉकेट से बदल देना.ताकि तुम्हारे लॉकेट से तस्वीरे लेकर मैं उनको डेवलप करवा सकूँ और तुम दूसरे लॉकेट से और नयी तस्वीर ले सको.

मैं : जी अच्छा.... लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि आप मुझे कब और कहाँ मिलोगे.

चौहान : तुम बस अपने फाइट क्लब मे आ जाया करना .वहाँ तुमको मेरा कोई ना कोई आदमी मिल जाएगा .जो तुमको मेरा मिलने का वक़्त और जगह बता देगा.

मैं : ठीक है.

चौहान : वहाँ जाके लड़की और ताक़त के नशे मे मत डूब जाना और जब भी मोक़ा मिले सबूत इकट्ठे करते रहना. ताकि मैं उन लोगो को सज़ा दिलवा सकूँ.

मैं : (हां मे सिर हिलाते हुए) जी अच्छा.

चौहान: अब तुम साजिद के साथ जाओ. वो तुमको तुम्हारी मंज़िल तक पहुँच देगा और एक ज़रूरी बात तुम मेरे लिए काम करते हो ये बात कभी ग़लती से भी किसी को मत

बताना.नही तो वो लोग तुमको वही ख़तम कर देंगे.

मैं: हमम्म

चौहान : अब तुम साजिद के साथ जाओ ओर उसके साथ जाके डील करो.याद रखना तुमको वहाँ जाके लड़ाई करनी है किसी भी बहाने से समझ गये.

मैं : हाँ सब समझ गया.

चौहान : कुछ भी समझ नही आया तो फिर से पूछ लो लेकिन वहाँ जाके कोई गड़बड़ मत करना. तुम नही जानते तुम पर मैं कितना बड़ा दाव खेल रहा हूँ .अगर तुमने कोई ग़लती की तो मेरी जान भी ख़तरे मे आ जाएगी क्योंकि उन लोगो की पहुँच का तुमको अंदाज़ा नही है. यहाँ मेरे स्टाफ मे भी उन लोगो ने अपने कुछ कुत्ते पल रखे हैं.इसलिए मैने तुम्हारी ट्रैनिंग को एक दम टॉप सीक्रेट और सिर्फ़ अपने भरोसे के आदमियो के साथ पूरा करवाया है.

मैं : आप फिकर ना करें सब वैसे ही होगा जैसा आप चाहते हैं. मुझे पर भरोसा किया है तो भरोसा रखिए और मेरे पिछे से मेरे घरवालो को कोई तक़लीफ़ नही होनी चाहिए.

चौहान : उनकी फिकर तुम मत करो.मैं खुद उनका ख्याल रखूँगा और देखूँगा कि उनको किसी भी चीज़ की कमी ना हो.

मैं : जी शुक्रिया.

उसके बाद मैं ओर चौहान वापिस चौहान के कॅबिन मे चले गये.जहाँ साजिद मेरा इंतज़ार कर रहा था.

मैं: चौहान साहब मैं एक मिनिट में आया जाने से पहले एक बार डॉक्टर साहिबा से मिल आऊ.

चौहान : जाओ लेकिन जल्दी आना.

उसके बाद मैं नताशा के कॅबिन मे चला गया जहाँ वो शायद मेरा ही इंतज़ार कर रही थी. मेरे कॅबिन मे आते ही उसने दरवाज़ा अंदर से बंद किया और मुझे गले लगा लिया.

नताशा : जा रहे हो.

मैं : हमम्म ! बस तुमको मिलने के लिए ही आया था.

नताशा : कहाँ जा रहे हो.

मैं : पता नही चौहान ने मुझे भी नही बताया. बस इतना पता है साजिद के साथ जाना है.

नताशा : ठीक है कोई बात नही. वहाँ अपना ख़याल रखना और अगर मुमकिन हो तो मुझे फोन कर लेना जब भी मोक़ा मिले.

मैं : अच्छा... ठीक है अब मैं जाऊ.

नताशा : हम्म जाओ

मैं : मुझे छोडोगी तो जाऊंगा

नताशा : रुक जाओ २ मिनिट ढंग से गले भी नही लगाने देते....(कुछ देर मुझे गले से लगा कर) हमम्म अब ठीक है अब जाओ (मेरे होंठ चूमते हुए)

मैं : तुम भी अपना ख्याल रखना और रोना मत.

नताशा : (मुस्कुरा कर हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म

उसके बाद मैं और नताशा चौहान के कॅबिन तक आ गये और चौहान के कॅबिन तक मुझे छोड़कर नताशा हाथ हिलाकर मुझे अलविदा कहती हुई वापिस अपने कॅबिन की तरफ चली गई. मेन गेट खोल कर चौहान के कॅबिन मे चला गया.

चौहान : तुम्हारा मिलना-मिलना हो गया.

मैं (हँसते हुए) जी हो गया जनाब.

चौहान : शूकर है...(हाथ जोड़ते हुए) चल भाई साजिद खड़ा हो जा और लग जा काम पर. इसको मैने सब समझा दिया है और तू भी कोई लफडा मत करना.

साजिद : जनाब आज तक कभी गड़-बड हुई है जो अब होगी.

चौहान : पहले तू अकेला होता था. इस बार ये भी तेरे साथ है.

साजिद : फिकर ना करे जनाब मैं साथ हूँ ना. सब संभाल लूँगा.

चौहान : इसको वहाँ पहुँचने के बाद मुझे फोन कर देना और मुझे इसके पल-पल की खबर चाहिए समझा.

साजिद : (अपना दायां हाथ सिर पर रखते हुए) ओके बॉस.... चलो भाई उस्मान आपको आपकी मंज़िल तक पहुंचाता हूँ.

उसके बाद मैं और साजिद एक कार मे बैठे और अपने नये सफ़र के लिए रवाना हो गये. मैं नही जानता था कि मुझे कहा भेजा जा रहा है और वो लोग कौन है और कैसे होंगे क्या वो मुझे अपने साथ लेके जाएँगे या नही. मुझे ये भी नही पता था कि जिस सफ़र पर मुझे भेजा गया है वहाँ से मैं ज़िंदा लौटूंगा भी या नही. ऐसे ही कई सवाल मेरे दिमाग़ मे चल रहे थे. लेकिन इस वक़्त मेरे पास किसी सवाल का जवाब नही था. लेकिन तेज़ी से गुज़रने वाले वक़्त के पास मेरे हर सवाल का जवाब था. अब मैं चुप-चाप बैठा अपनी आने वाली मज़िल का इंतज़ार कर रहा था जहाँ मुझे जाना था.

२४

साजिद गाड़ी को तेज़ रफ़्तार से भगा रहा था और मैं खिड़की से अपना चेहरा बाहर निकाले ठंडी हवा का मज़ा ले रहा था. मुझे नही पता कब मेरी आँख लग गई और मैं सो गया. जाने मैं कितनी देर सोता रहा, लेकिन साजिद के हिलाने से मेरी आँख खुल गई...

साजिद : उस्मान भाई एयरपोर्ट आ गया है उतरो...

मैं : (दोनो हाथो से आँखें मलते हुए) क्या....

साजिद : भाई !एयरपोर्ट आ गया. फ्लाइट पकड़नी है ना गाड़ी से उतरो....

मैं : (अपने दोनो हाथ अपने मुँह पर फेरते हुए) हाँ चलो...

उसके बाद मैं और साजिद गाड़ी से उतर गये.साजिद ने जल्दी से गाड़ी की पिछली सीट से उसका और मेरा सूट केस निकाला और मेरी तरफ बढ़ने लगा. मैने अपना सूट केस पकड़ लिया और उसने अपना. फिर हमने गाड़ी को वही छोड़ दिया और हम दोनो एयरपोर्ट के अंदर आ गये. ये जगह मेरे लिए एक दम नयी थी. मैं ठीक होने के बाद पहले कभी ऐसी जगह पर नही आया था. साजिद ने मुझे एक जगह की तरफ इशारा करके बैठने को कहा और खुद किसी से मिलने चला गया. मैं एयरपोर्ट पर एक खाली जगह पर बैठ गया और चारो तरफ देख रहा था वहाँ के लोग जो घूम रहे थे ओर सेक्यूरिटी गार्ड जो लोगो को चेक कर रहे थे. एक जगह पर सबके समान को एक मशीन (स्केनर) मे डाल कर चेक किया जा रहा था. इसलिए मुझे अपने समान की फिकर होने लगी क्योंकि इतना तो मुझे देख कर ही समझ आ गया था कि मेरा समान भी ज़रूर चेक होगा और मेरे पास पिस्टल भी थी और चौहान के दिए हुए ट्रांसमेटेर्स भी जिससे चौहान मुझ तक पहुँच सके. अभी मैं सोच ही रहा था कि साजिद दो गार्ड जिनके पास हथियार थे उनके साथ मेरी तरफ आ रहे थे. मुझे लगा शायद उन लोगो ने साजिद को पकड़ लिया. इसलिए मैने जल्दी से अपना एक हाथ जॅकेट मे डाल लिया जिस तरफ पिस्टल थी और अपना हाथ पिस्टल पर रख लिया.

साजिद : चलो भाई काम हो गया १० मिनिट बाद फ्लाइट है अपनी...

मैं : (चैन की साँस लेकर अपना हाथ जॅकेट से बाहर निकालते हुए) अच्छा... लेकिन ये लोग कौन है.

साजिद : भाई ये चौहान साहब के ही लोग हैं.हम को यहाँ कोई परेशानी ना हो इसलिए...

मैं : अच्छा... मैं तो समझा तुमको इन्होने पकड़ लिया.

साजिद : (मुस्कुरा कर) नही भाई सब ठीक है. आप बे-फिकर हो जाए.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म ! यार साजिद वैसे हम क्या शहर से बाहर जा रहे हैं.

साजिद : (हँसते हुए) भाई आपको चौहान साहब ने कुछ नही बताया.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए)

साजिद : कोई बात नही.... चलो चलें देर हो रही है.

उसके बाद कोई खास बात नही हुई.जल्दी ही हम रनवे पर आ गये जहाँ हमारा छोटा सा प्लेन ऑलरेडी तैयार खड़ा था. हम दोनो को वो दोनो लोग बिना सेक्यूरिटी चेक के एक छोटे से प्लेन तक छोड़ गये .जहाँ सिर्फ़ मैं और साजिद ही बैठे थे बाकी तमाम प्लेन खाली पड़ा था. मैं हर चीज़ को बड़ी हैरानी से देख रहा था क्योंकि ये सब कुछ मेरे लिए एक दम नया था. खैर कुछ ही घंटे के बाद हम हमारी मंज़िल तक पहुँच गये. फ्लाइट से उतरने के बाद मैं साजिद के पिछे-पिछे ही चल पड़ा क्योंकि मैं नही जानता था कि उसके बाद कहाँ जाना है. फ्लाइट से उतरने के बाद एयरपोर्ट पर एक कार पहले से मोजूद थी जिसमे मैं और साजिद बैठ गये. बाहर रात हो गई थी लेकिन इतनी ज़्यादा रोशनी और बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स थी जो मैने पहले कभी नही देखी थी.मैने जल्दी से कार का ग्लास नीचे किया और बाहर देखने लगा.

साजिद : भाई क्या कर रहे हो शीशा बंद करो कोई देख सकता है.

मैं : यहाँ हम को कौन जानता है . देखने दो ना अच्छा लग रहा है.

साजिद : भाई आपके लिए ये शहर अजनबी है. लेकिन आप इस शहर के लिए अजनबी नही हो. आपके इस शहर मे सिर्फ़ दोस्त ही नही दुश्मन भी बहुत है. मैं आपके लिए ही कह रहा हूँ.

मैं : (बिना कुछ बोले शीशा उपर करते हुए) ठीक है.... वैसे क्या तुम मेरे बारे मे सब कुछ जानते हो.

साजिद : भाई इस शहर मे शायद ही कोई ऐसा हो जिसने उस्मान भाई का नाम नही सुना हो.

मैं : वैसे अब हम जा कहाँ रहे हैं.

साजिद : होटेल मे जहाँ हमने रुकना है. फिर कल शाम को डील है तो वहाँ जाना है.

मैं : अच्छा...

उसके बाद हम दोनो कार मे खामोश बैठे रहे और कुछ देर बाद कार ने हम को एक बहुत ऊँची बिल्डिंग के सामने उतार दिया. ये एक बेहद शानदार होटेल था. अंदर साजिद के साथ मैं होटेल के अंदर चला गया वहाँ हम दोनो के लिए पहले से रूम बुक थे. साजिद मुझे शाम को तैयार रहने का बोलकर अपने कमरे मे चला गया. मैं भी सफ़र से थक गया था इसलिए रूम मे आते ही सो गया. सुबह मैं देर से उठा और नाश्ता मंगवाने के बाद मेरे पास अब करने को कोई काम नही था इसलिए अपना वक़्त टीवी देखकर गुज़ारने की कोशिश करने लगा. लेकिन आज मुझसे वक़्त काटे नही काट रहा था. मैं अकेला बहुत ज़्यादा बोर हो रहा था इसलिए वक़्त से पहले ही नहा कर तैयार हो गया और शाम को साजिद का इंतज़ार करने लगा. खैर शाम को साजिद ने मेरा दरवाज़ा खट-खटाया और इस बार उसके साथ कुछ और लोग भी थे. वो सब लोग मुझे बड़ी हैरानी से देख रहे थे. लेकिन मुझे किसी का भी चेहरा याद नही था. शायद साजिद सही था यहाँ के काफ़ी लोग मुझे जानते थे. हम सब तेज़ कदमो के साथ लिफ्ट की तरफ बढ़ने लगे. लिफ्ट मे साजिद के साथ खड़े लोग मुझे बड़ी हैरानी से देख रहे थे. कुछ देर बाद हम होटेल से निकले और कार मे बैठ गये. कार मे बैठने के बाद आगे जाने क्या होने वाला है ये सोच कर मेरी दिल की धड़कन काफ़ी तेज़ हो गई थी और मुझे घबराहट सी हो रही थी.इसलिए मैं पानी की बोटल से बार-बार पानी पी रहा था.

कुछ ही देर बाद गाड़ी एक अज़ीब सी जगह आके रुक गई. ये जगह बाहर से किसी खंडहर जैसी लग रही थी और काफ़ी पुरानी सी इमारत थी जो लगता था कि बहुत वक़्त से बंद पड़ी हो आस-पास काफ़ी कचरा जमा हुआ पड़ा था. मैं उस जगह को गौर से देखने लग गया. उसके बाद सब लोग गाड़ी से उतर गये लेकिन जब मैं भी गाड़ी से उतरने लगा तो साजिद ने मुझे रोक दिया.

साजिद : भाई आप कार मे ही बैठो.. अगर हम लोग १५ मिनिट मे वापिस नही आए तो आप अंदर आ जाना और जो भी मिले मिले ठोक देना साले को. और याद रखना आपको पैसे और ड्रूस दोनो उठाने हैं.

मैं : ठीक है ! याद रखूँगा.

फिर वो लोग चले गये और मैं गाड़ी मे बैठा हुआ अपनी घड़ी मे वक़्त देखने लगा. अब मुझे १५ मिनिट गुज़रने का इंतज़ार था. मैने जल्दी से एक बार फिर अपनी कोट की जेब मे हाथ डाला और पिस्टल को निकाल कर अपने हाथ मे पकड़ लिया और उसमे से मेग्ज़ीन निकाल कर गोलियाँ चेक की और फिर से मॅग्ज़िन को पिस्टल मे डाल दिया और अपनी पिस्टल को लोड कर लिया .साथ ही दूसरी जेब से साइलेनसर निकाल कर पिस्टल की नली पर लगा दिया ताकि गोली चलने की आवाज़ कम से कम हो. मैं अंदर से घबरा भी रहा था और उन लोगो से सामना करने के लिए बे-क़रार भी था. मैं कभी घड़ी की तरफ देख रहा था कभी उस टूटी सी इमारत की तरफ. अब मुझसे इंतज़ार करना मुश्किल हो रहा था. इसलिए मैने जल्द बाज़ी मे गाड़ी का गेट खोला और १० मिनिट होने पर ही अपनी पिस्टल हाथ मे लिए उस इमारत मे घुस गया लेकिन अंदर घुसते ही मुझे समझ नही आ रहा था कि किस तरफ जाना है क्योंकि वहाँ से ३ रास्ते निकल रहे थे और अंधेरा भी काफ़ी था क्योंकि रात होने लगी थी. थोड़ा आगे जाने पर मुझे सामने वाले रास्ते पर कुछ रोशनी नज़र आई इसलिए मैं दीवार का सहारा लेके सामने वाले रास्ते की तरफ बढ़ने लगा.

वहाँ मुझे सामने २ लोग नज़र आए जो मेरी तरफ पीठ करके खड़े थे. मैने अपनी बंदूक का पहला निशाना बाएँ तरफ खड़े आदमी की खोपड़ी पर लगाया और पिस्टल का ट्रिग्गर दबा दिया एक झटके के साथ पिस्टल से गोली निकली और उस आदमी के भेजे से आर-पार हो गई वो आदमी वही ज़मीन पर गिर गया. इतने मे दूसरा आदमी जो उसकी दूसरी तरफ खड़ा था उसको गिरता देख कर उसकी तरफ बढ़ा तो मैने अपना दूसरा निशाना उसके सिर मे लगाया लेकिन वो झुक कर थोड़ा उपर को देखने लगा और अपनी गर्दन चारो तरफ घुमाने लगा. इसलिए गोली उसके सिर की जगह उसके गले मे लगी जिससे वो ज़मीन पर

गिर गया और तड़पने लगा. मैं जल्दी से उसके पास गया और एक गोली और उसके सिर मे मार दी. उस आदमी के पास जाना ही मेरी सबसे बड़ी ग़लती थी. वहाँ जाते ही मेरी तरफ गोलियाँ चलने लगी. मैं जल्दी से खुद को बचाने के लिए दीवार के पिछे हो गया. कुछ देर गोलियाँ चलाने के बाद वो लोग रुक गये मैने धीरे से अपनी गर्दन बाहर निकाली ओो उन्न लोगो की पोज़ीशन चेक करने लगा. उनमे से ३ लोग जिस बँच पर ड्रग्स और पैसे पड़े थे उसके पिछे छुपे हुए थे और २ लोग एक खंबे के पिछे थे. जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से उन पर निशाना लगाना बहुत मुश्किल था. बाकी साजिद और जो लोग मेरे साथ कार मे यहाँ आए थे उनका कोई नाम-ओ-निशान नही था.

मेरी नज़रें साजिद और उसके साथ आए लोगो को तलाश कर रही थी. लेकिन वहाँ कोई भी मुझे नज़र नही आ रहा था. तभी उन लोगो ने फिर से गोलियाँ चलानी शुरू करदी. इसलिए मुझे फिर से दीवार के पिछे जाना पड़ा. अब मैं उस जगह पर अकेला था और वो ५ लोग थे मैं सोच रहा था कि इनको कैसे ख़तम करूँ इसलिए अपनी नज़र चारो तरफ दौड़ा रहा था कि लेकिन वहाँ मुझे कुछ भी ऐसा नज़र नही आ रहा था जिससे मैं उनको बाहर निकाल सकूँ. तभी मुझे ख्याल आया मैने ज़मीन से एक पत्थर उठाया और उपर बंद पड़े लटकते हुए पंखे पर निशाना लगा के ज़ोर से पत्थर मारा. पत्थर की टॅन्न्न्न की आवाज़ से सबकी नज़र उपर चली गई जिससे मुझे मेरी पोज़ीशन बदलने का मोक़ा मिल गया. मैने जल्दी से छलाँग लगाकर एक खंबे के पीछे चला गया. यहाँ से मैं सिर्फ़ २ लोगो पर सही निशाना लगा सकता था. मैने जल्दी से टेबल के नीचे बैठे आदमी पर निशाना लगाया और गोली चला दी गोली सीधा उसके पेट मे लगी और वो गिर गया और तड़पने लगा. उसके पास जो दूसरा आदमी वो अपने साथ वाले को गोली लगने से शायद डर गया इसलिए खड़ा होके अपने दूसरे साथी की तरफ भागने लगा. मैने जल्दी से अपना निशाना लगाया और उसको दूसरी तरफ पहुँचने से पहले ही ढेर कर दिया. अब मुझे बाकी ३ को भी मारना था. लेकिन जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से मैं उन तक नही पहुँच सकता था. इसलिए मैने गोलियाँ ज़ाया करना मुनासिब नही समझा और वही खड़े होकर उनकी अगली चाल का इंतज़ार करने लगा. तभी उनमे से एक की आवाज़ आई...

आदमी : ओये कौन है तू साले....क्यो गोली चला रहा है...पुलिसवाला है क्या...साले हर बार हड्डी पहुँचती तो हैं इस बार तुझे तेरा हिस्सा नही मिला जो यहाँ मुँह मारने आ गया है. साले हम ख्वाजा साहब के लोग है और ये माल भी उनका है. हम को जाने दे वरना तेरी लाश का भी पता नही चलेगा.

मैं खामोश रहा और चुप चाप उनके बाहर निकलने का इंतज़ार करने लगा. वो लोग कुछ देर ऐसे ही चिल्लाते रहे. काफ़ी देर बाद जब मेरी तरफ से कोई आवाज़ नही आई तो उन लोगो ने फिर से गोलियाँ चलानी शुरू करदी.अब की बार मैने जवाब मे कोई गोली नही चलाई और उनके बाहर निकलने का इंतज़ार करने लगा. कुछ देर बाद उनमे से एक आदमी खंबे के पिछे से बाहर आया और मेज़ के पास आके रुक गया और इधर-उधर देखने लगा. अब की बार मैने उसे पूरा मोक़ा दिया कि वो बॅग को बंद कर सके. फिर उसने अपने दूसरे साथी को भी हाथ से इशारा किया और वो भागता हुआ बंदूक ताने मेरी तरफ बढ़ने लगा. मैं यही चाहता था. मैं जल्दी से खंबे के पिछे से बाहर निकला और सबसे पहले जो मेरी तरफ आ रहा था उसके पैर मे गोली मारी.वो वही गिर गया और तड़पने लगा. इतमें मे जो दूसरा आदमी मेज़ के पास खड़ा उसने दोनो बॅग उठाए और खंबे की तरफ भागने लगा. मैने उसकी पीठ मे २ गोली मारी वो भी वही गिर गया.अब मैने अपना निशाना उस लेटे हुए आदमी पर लगाया जिसके पैर मे गोली लगी थी इस बार मैने सीधा उसके माथे पर गोली मारी. दोनो आदमी ख़तम हो चुके थे और अब सिर्फ़ एक आदमी बचा था और मेज़ के पास ही पैसे वाला और ड्रूस वाला बॅग गिरे पड़े थे. इस बार मैने आवाज़ लगाई...

मैं : मुझे पता है तू अकेला ही बचा है .अगर यहाँ से निकलना चाहता है, तो निकल जा. माल को भूलजा वो मेरा हुआ.

वो आदमी : लेकिन इसकी क्या गारंटी है कि तुम गोली नही चलाओगे.

मैं : साले मैं तुझे टीवी बेच रहा हूँ जो गारंटी चाहिए..... निकलना है तो निकल जा ,नही तो तुझे मार कर तो मैं ये माल हासिल कर ही लूँगा.

वो आदमी : ठीक है माल तुम रख लो लेकिन गोली मत चलना.

मैं : मंज़ूर है अपनी पिस्टल फैंक कर बाहर आजा.

उसके बाद उस आदमी ने मेज़ की तरफ अपनी पिस्टल फेंक दी और सिर पर हाथ रख कर बाहर आ गया. मैने जल्दी से थोड़ा सा बाहर निकलकर अपनी पिस्टल का निशाना उसके दिल पर लगाया और गोली चला दी वो आदमी भी वही ख़तम हो गया. उसके बाद मैं धीरे से बाहर आया और झुक कर धीरे-धीरे आगे मेज़ की तरफ बढ़ने लगा. जिसके पास दोनो बॅग गिरे पड़े थे. मैने चारो तरफ देखा वहाँ मुझे कोई भी नज़र नही आ रहा था. इसलिए मैने

जल्दी से दोनो बॅग उठाए और साजिद और उसके लोगो को ढूँढने लगा.लेकिन मुझे वो कही नज़र नही आए इसलिए मैं उस खंडहर से बाहर निकल आया. अब मैने चारो तरफ देखा लेकिन बाहर भी सिवाए गाड़ी के कोई नही था. मैने दोनो बॅग गाड़ी मे रखे ओर कार स्टार्ट की ताकि वापिस होटेल जा साकु. तभी कार के केबिनेट मे किसी फोन की घंटी की आवाज़ सुनाई दी जो शायद काफ़ी देर से बज रहा था. मैने जल्दी से केबिनेट खोला और फोन बाहर निकाला और फोन उठा कर अपने कान से लगाया दूसरी तरफ से जो आवाज़ सुनाई दी वो जानी-पहचानी सी लगी. ये तो चौहान था.....

मैं : हेल्लो....

चौहान : हां भाई उस्मान क्या खबर है.

मैं : चौहान साहब मुझे साजिद एक डील पर लेके गया था जहाँ एक समस्या हो गयी है

चौहान : वो सब मुझे पता है ये बताओ दोनो बॅग कहाँ है.

मैं : मेरे पास...

चौहान : उनमे से कोई ज़िंदा तो नही बचा.

मैं : नही मैने सबको ख़तम कर दिया...

चौहान : अच्छा किया.... अब तुम यहाँ से अपने होटेल चले जाओ जहाँ तुम रुके हुए हो.

मैं : लेकिन साजिद और उसके लोग जाने कहाँ चले गये हैं. मैने उनको सब जगह ढूँढ लिया है कोई भी नही मिला मुझे.

चौहान : कोई बात नही उनको मैने ही बोला था कि निकल जाने को वहाँ से.

मैं : ठीक है फिर अब मेरे लिए क्या हुकुम है.

चौहान : तुम बस अपने होटेल जाओ और कल रात तक इंतज़ार करो. साजिद खुद ही तुम्हारे पास आ जाएगा... वैसे तुम्हारा निशाना बहुत अच्छा है.

मैं : शुक्रिया... वैसे आपको कैसे पता कि मेरा निशाना अच्छा है.

चौहान : मैं तुमसे दूर ज़रूर हूँ लेकिन तुम्हारी पल-पल की खबर मेरे पास पहुचती है और वैसे भी ये तो पूरे अंडरवर्ल्ड मे मशहूर है कि उस्मान का निशाना कभी नही चुकता... नही तो पहली बार हथियार उठाने वाला आदमी ढंग से गोली भी नही चला सकता और तुमने सबको ८ गोली मे ही ख़तम कर दिया. ये जान कर अच्छा लगा कि तुम्हारा निशाना अब भी जबरदस्त है.

मैं : शुक्रिया.... जनाब ! ये पैसे और ड्रग्स का क्या करना है.

चौहान : अभी तुम इसको अपने पास ही रखो होटेल मे .जब कल रात को साजिद आएगा तो उसको दे देना और तुम अब मेरी इजाज़त के बिना होटेल से बाहर मत जाना.ये फोन भी मुझसे बात करने के बाद तोड़ देना समझ गये.

मैं : ठीक है.

उसके बाद चौहान ने फोन बंद कर दिया और मैने उस फोन को वही तोड़कर फैंक दिया. फिर मैं वापिस होटेल मे आ गया. अब मुझे अगले दिन तक सिर्फ़ इंतज़ार करना था क्योंकि और कोई काम मेरे पास करने को नही था. मैं बाहर भी नही जा सकता था क्योंकि चौहान ने मुझे बाहर जाने से मना किया था. ऐसे ही मैने अगला सारा दिन सिर्फ़ टीवी देख कर और सो कर ही गुज़ारा.

२५

अगली शाम को किसी ने मेरे रूम का दरवाज़ा खट-खटाया तो मैने जल्दी से पहले अपनी पिस्टल निकाली और उसको अपनी कमर के पिछे टाँग लिया और आहिस्ता से दरवाज़ा खोल दिया. सामने साजिद खड़ा था जिसके साथ २ और आदमी थे.

मैं : तुम हो... कल कहाँ चले गये थे.कुछ बताया भी नही.

साजिद : भाई चौहान साहब का औरडर था कि अगर वो लोग कुछ नाटक करे तो पैसे वही छोड़कर चले जाना.

मैं : ठीक है

साजिद : भाई वो दोनो बॅग कहाँ है.

मैं : (उंगली से इशारा करते हुए) बेड के नीचे पड़े है निकाल लो.

साजिद : (झुक कर बेड के नीचे देखते हुए) ठीक है.... भाई आप जल्दी से तैयार हो जाओ अभी निकलना है.

मैं : अब कहाँ जाना है.

साजिद : (दोनो बॅग बाहर निकलते हुए)भाई वो लोग जिनका ये माल है वो उस आदमी का चेहरा देखना चाहते हैं. जिसने उनका माल लूटा था और उनके लोग मारे थे.

मैं : मतलब मुझे... कुछ गड़-बॅड तो नही होगी.

साजिद : भाई फिकर मत करो आपके ही पुराने साथी हैं आपको क्या होना है. वैसे भी ख्वाजा साहब का माल हर कोई नही लूट सकता.

मैं : तो क्या मैं अब ख्वाजा साहब से मिलने वाला हूँ.

साजिद : नही भाई अभी तो आपको बस लाला भाई और गानी भाई ही मिलेंगे.

मैं : ठीक है... जाना कहाँ है?

साजिद : आपके पुराने क्लब मे जाना है भाई! !

मैं : ठीक है !

उसके बाद मैं जल्दी से बाथरूम मे गया और तैयार हो के बाहर आ गया. फिर मैं साजिद और बाकी वो २ लोग कार मे बैठ कर निकल पड़े. कुछ देर बाद कार पार्किंग वाली जगह पर रोक दी गई और हम सब बाहर निकल आए. साजिद मुझे एक अजीब सी जगह लेके गया जहाँ बहुत तेज़ म्यूज़िक बज रहा था. हमे वहाँ खड़े २ लोगो ने दूसरे गेट से अंदर जाने का इशारा किया .तो हम लोग दूसरी तरफ से अंदर चले गये. वहाँ गेट पर हम सबकी अच्छे से तलाशी ली गई और मेरी पिस्टल वही बाहर ही निकाल ली गई. अब मुझे सच मे डर लग रहा था, क्योंकि अब हम मे से किसी के पास भी हथियार नही थे. बढ़ते हुए हर कदम के साथ मेरे दिल की धड़कन भी बढ़ रही थी. लेकिन साजिद एक दम खुश और बहुत सुकून से मुस्कुराता हुआ चल रहा था जैसे कुछ हुआ ही ना हो. हम लोगो के पिछे ४ लोग गन्स लिए चल रहे थे उन्होने हमे एक कॅबिन मे बिठा दिया जिसके सामने वाली कुर्सी खाली पड़ी थी. हम चारो अपने सामने पड़ी कुर्सियो पर बैठ गये. मैं कमरे को देखने लगा जो काफ़ी शानदार तरीके से सजाया गया था .उसकी हर चीज़ काफ़ी कीमती लग रही थी. तभी साजिद की आवाज़ आई...

साजिद : भाई अब सब आपके उपर ही है.संभाल लेना.

मैं : भोसडीके वो जो बाहर तेरा बाप खड़ा था उसने मेरी पिस्टल ले ली हैं. अब इनको क्या मैं टेबल कुर्सी से संभालूँगा चूतिये....

साजिद : भाई आपके हाथ जोड़ता हूँ यहाँ हाथ मत उठाना नही तो बहुत समस्या हो जाएगा. हम मे से कोई भी ज़िंदा बाहर नही जाएगा.

मैं : तो साले यहाँ मेरी क्या क़ुर्बानी देने के लिए लाया है मुझे.

तभी पिछे से कॅबिन का गेट खुला और ५-६ लोग अंदर आए जिन्होने हम सबके सिर पर बंदूक तान दी इसलिए हम सब लोग हाथ उपर करके अपनी-अपनी जगह से खड़े हो गये. मैं अभी सोच ही रहा था कि इनको कैसे संभालू कि तभी दुबारा कॅबिन का दरवाज़ा खुला और २ और लोग अंदर आ गये. इनको मैं पहले देख चुका था ये लाला और गानी थे जो ख्वाजा के होटेल्स और क्लब्स संभालते थे. वो दोनो शायद भाग कर आए थे इसलिए उनकी साँस फूली हुई थी. आते ही वो दोनो मुझे बड़े गौर से देखने लगे और मेरे पास आके मेरे सिर पर लगी बंदूक को झटके से उधर कर दिया और जिसने मेरे सिर पर बंदूक तान रखी थी उसको थप्पड़ मार कर गालियाँ देने लगे....

गानी : भोसडीके इतना भी नही पता अपने लोगो पर बंदूक नही तानते ये तो अपना भाई है उस्मान (मुझे गले लगाते हुए)

लाला : (मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए) ओये तू कहाँ था यारा. इतने वक़्त से हम सब ने तुझे कितना ढूँढा. करीम तो तेरे पिछे पागल सा हुआ पड़ा था.ख्वाजा साहब भी परेशान हो गये थे.हमने तो सोचा तू मर गया होगा.

गानी : क्या हुआ यार ? तू हम को ऐसे क्यो देख रहा है.

साजिद : मैने अपना वादा पूरा किया अब माल मैं रख सकता हूँ.

लाला : ओये तू नही जानता तूने हम को हमारी ताक़त दे दी है .जा रख ले ख्वाजा साहब का इनाम समझ कर.

गानी : साजिद रुक ओये... तूने बताया नही हमारा माल लूटने की हिम्मत किसने की थी.

मैं : मैने....

लाला : ओये तूने.... वही मैं सोच रहा था ये शेर का शिकार कौन खा गया.

मैं : शेर का शिकार सिर्फ़ उस्मान ही खा सकता है.

गानी : सच कहा यार तूने....लेकिन यार तू इतने वक़्त तक था कहाँ पर.

साजिद : भाई जान इनको पिछला कुछ भी याद नही है. याददाश्त एक दम साफ हो चुकी है.

लाला : तुझे ये मिला कहाँ पर ये बता.

मैं : कुछ महीने पहले मैं एक ग़रीब किसान को मिला था. अधमरी और ज़ख्मी हालत मे जिन्होने ना सिर्फ़ मुझे बचाया बल्कि मेरी मरहम पट्टी भी की. मगर जब तक मुझे होश आया तो मुझे कुछ भी याद नही था. (मैने उनको वही बताया जो चौहान ने मुझे कहने को बोला था)

गानी : यार कहाँ रहता है वो ग़रीब किसान. हम को बता उसका घर भर देंगे नोटो से जिसने हमारे यार हम को लौटा दिया .उसकी ७ पुश्तो को काम नही करना पड़ेगा.

साजिद : वो अब इस दुनिया मे नही रहे भाई जान. इसलिए ये शहर आए थे काम की तलाश मे.मेरे एक आदमी ने इनको पहचान लिया तो हमने इनको अपने साथ काम पर लगा लिया.

लाला : (साजिद को धक्का देते हुए) ओये भोसडीके तुउउउ काम देगा उस्मान को... साले औकात क्या है तेरी... २ टके का डीलर है. गानी ठोक दे इस मादर जात को.

साजिद : (लाला के पैर पकड़ते हुए) माफी भाई जान ! मैं तो बस इनको आप तक ही पहुँचाना चाहता था और कुछ नही.

गानी : तेरा मकसद नेक़ था लेकिन तूने हमारा माल लूटने की और हमारे आदमी मरवाने की ग़लती कैसे की. इसको तो कुछ याद नही है लेकिन तू तो सब जानता था ना.

लाला : (मुझे कॅबिन से बाहर लेके जाते हुए) चल आ भाई तुझे तेरी असल जगह दिखाऊ. इसको गानी संभाल लेगा.

मैं : पहले इसको जाने दो. इसने कुछ नही किया.उन लोगो को मैने मारा था.

गानी : ठीक है भाई ! तू कहता है तो माफ़ किया (साजिद को लात मारते हुए) चल भाग जा भोसड़ी के और दुबारा नज़र मत आना मुझे... इस बार तू उस्मान की वजह से बच गया. अगली बार हमारे माल पर हाथ डालने के बारे मे सोचा भी याद रखना जो बख्शना जानते हैं वो जान लेना भी जानते हैं.

साजिद : (मेरे पैर पकड़ते हुए) आपका बहुत-बहुत शुक्रिया उस्मान भाई.

मैं : चल जा यहाँ से.

लाला : यार गानी तू उस्मान को लेके चल. मैं ये खुश खबरी अभी सबको देके आता हूँ.

उसके बाद मैं ओर गानी कॅबिन के बाहर क्लब मे उपर आ गये. जहाँ एक काँच के ग्लास से नीचे का तमाम नज़ारा दिखाई दे रहा था. मैं उस काँच के पास खड़ा होके नीचे नाचते लड़के-लड़कियो को देखने लगा जो म्यूज़िक की रिदम पर थिरक रहे थे.

गानी : (शराब का ग्लास मेरी तरफ करते हुए) ये ले भाई तेरे मिलने की खुशी मे

मैं : नही शुक्रिया मैं पीता नही हूँ.

गानी : (हैरान होते हुए) ओये मेरे दारू के टँकर ! तेरी तबीयत तो ठीक है .तू तो कूरली भी दारू से करता था तुझे क्या हो गया यार.

मैं : मुझे कुछ याद नही है और मैं जब से ठीक हुआ हूँ तब से मैने दारू को हाथ तक नही लगाया. इसको पीना तो दूर की बात है.

गानी : ठीक है भाई तेरी मर्ज़ी.... वैसे क्या देख रहा है नीचे.... कोई पाटोला (सुंदर लड़की) पसंद आया है तो बता उठा लेते हैं साली को.... (मेरे कंधे पर हाथ मारकर हँसते हुए)

मैं : नही यार मैं तो ऐसे ही देख रहा था (मुस्कुराते हुए)

तभी लाला भी वहाँ आ गया.

लाला : बता मेरे यार क्या सेवा करे तेरी... ओये तेरा हाथ अभी तक खाली है. यार गानी दारू दे भाई को.... इतनी मुद्दत बाद अपने ग़रीब खाने मे आया है उस्मान.

गानी : (ना मे सिर हिलाते हुए) साहब ने छोड़ दी है यार

लाला : हैंन्न्न्..... ओये साची... ज़रा मुँह इधर करना उस्मान...हाहहहहाहा

मैं : हाँ मैं दारू नही पीता

लाला : भाई शेर खून ना पीए तो हम मान सकते हैं. लेकिन उस्मान दारू ना पिए ये बात तो हमारी भी समझ से बाहर है... क्या यार उस बूढ़े ने हमारे यार का बेड़ा-गर्क कर दिया है.

मैं : दुबारा उस बुजुर्ग के लिए कभी ग़लत लफ्ज़ मत निकालना.... उस इंसान ने मुझे नयी जिंदगी दी है समझे...

गानी : अर्रे यार गुस्सा क्यो होता है भाई. लाला तो मज़ाक कर रहा था. चल अब नही बोलेगा जाने दे... माफ़ कर दे यार.

लाला : (कान पकड़ कर उठक-बैठक निकालते हुए) लेह भाई बसस्सस्स

तभी एक आदमी वहाँ आया और उसने गानी के कान मे कुछ कहा ओर चला गया.

गानी : यार उस्मान तुझे करीम और सूमा बुला रहे हैं.

मैं : कहाँ पर...

गानी : वही.... यार तेरी पुरानी मन-पसंद जगह पर और कहाँ....

लाला : तू भी ना गानी यार उसको कुछ याद नही है और तू लगा है अपनी चावल मारने. (मेरी बाजू पकड़ते हुए) चल भाई मैं तुझे लेके चलता हूँ.

मैं : ठीक है चलो. लेकिन यार मेरी गन तो वापिस कर दो तुम्हारे आदमियो ने तलाशी लेते हुए निकाल ली थी. (हँसते हुए)

गानी : अर्रे यार इतनी सी बात ये ले तू मेरा घोड़ा (गन) रख ले. मैने कल ही नया खरीदा है.अगर पता होता तू आ रहा है तो तेरे लिए भी एक ऐसी मंगवा लेता.

मैं : नही यार तूने अपने लिए मँगवाई है तो मैं ये नही ले सकता इसको तू ही रख.

गानी : अर्रे यार क्या लड़की जैसे नाटक कर रहा है. ये ले रख चला के देखना एक दम माखन है माखन. रेपिड फायर है.

जर्मन ऑटोमॅटिक १२ राउंड है जब तक सामने वाले की एक गोली निकलेगी तेरी ६ गोलियाँ निकल चुकी होंगी.... ये ले रख (ज़बरदस्ती मेरी बेल्ट मे फसाते हुए)

मैं : शुक्रिया गानी भाई....

गानी : ओये ये शरीफो के चोंचले कहाँ से सीख कर आया है. यार चल इधर आ यारो को शुकरिया ऐसे बोलते हैं... (मुझे गले लगाते हुए)

लाला : अगर तुम्हारा लैला मजनू का रोमॅन्स ख़तम हो गया हो तो हम लोग चलें.

मैं : हाँ...हाँ...चलो....

२६

मैं और लाला दोनो कार मे बैठ कर निकल पड़े. कुछ ही देर मे लाला मुझे आबादी से निकाल कर ऐसी जगह ले गया जहाँ ना तो कोई ऊँची बिल्डिंग थी ना हो कोई चका-चोंध थी. रास्ता एक दम सुनसान था अंधेरी रात अपने पूरे शबाब पर थी. सिर्फ़ हेड लाइट ही थी जिसकी रोशनी से हमे सामने का नज़र आ रहा था वरना आस-पास कही कोई आबादी नही थी इसलिए मुझसे रहा नही गया और मैने पूछ लिया...

मैं : लाला हम कहाँ जा रहे हैं?

लाला : भाई तुमको बताया तो था कि करीम और सूमा भी तुझसे मिलना चाहते हैं.

मैं : और कितना दूर है....

लाला : बस १५ मिनिट आँख बंद करके बैठ और समझ पहुँच ही गये (गाड़ी की स्पीड बढ़ाते हुए)

कुछ ही देर मे गाड़ी अपनी फुल स्पीड पर थी. ऐसा लग रहा था जैसे गाड़ी दौड़ नही रही बल्कि उड़ रही हैm लाला एक दम मेरे जैसे गाड़ी चला रहा था. शायद इसलिए मुझे भी ऐसी तेज़ गाड़ी चलाने की आदत थी. लाला ने १५ मिनिट से भी कम वक़्त मे एक बस्ती मे गाड़ी को घुसा दिया. जहाँ गलियाँ बेहद तंग थी लोग सड़को पर ही बैठ कर अपना समान बेच रहे थे. लाला को और मुझे देख कर सब लोग हैरान हो रहे थे और हाथ उठा कर मुझे सलाम कर रहे थे .मुझे बार-बार सबके सलाम का जवाब देना पड़ रहा था, इसलिए जब तक गाड़ी उस गली से गुज़रती रही मैने अपना हाथ हवा मे उठा कर ही रखा. कुछ ही देर मे एक ऐसी जगह लाला ने गाड़ी रोक दी जो बाहर से देखने मे किसी गॉडाउन जैसा लग रहा था लेकिन अंदर से बहुत शोर आ रहा था. मैं बड़े गौर से उस जगह को देखने लगा मुझे जाने क्यो वो जगह मुझे जानी-पहचानी सी लग रही थी.

मैं : लाला ये कौनसी जगह है...

लाला : चल भाई तुझे मर्दो वाला खेल दिखाता हूँ (कार रोकते हुए)

मैं : (कार का गेट खोलते हुए) चल....

उसके बाद मैं और लाला उस जगह के अंदर चले गये. वहाँ बहुत ज़्यादा भीढ़ थी यहाँ तक कि सही से खड़े होने की भी जगह नही थी.लोग एक दूसरे पर चढ़ रहे थे इतना बूरा हाल था.तभी लाला ने अपनी जेब से फोन निकाला और किसी को फोन किया....

लाला : हल्लो....भोसडीके ! बुलाने से पहले ये तो बता देता कि यहाँ दबा के मारना है हम को....

लाला : हाँ साथ ही आया है...यार कहाँ से आएँ यहाँ पैर रखने की जगह नही है....

लाला : साला इसी लिए मैं यहाँ आता नही हूँ....

लाला : अच्छा ठीक है....

लाला : ओके भाई ५ मिनिट मे मिलते हैं बस

उसके बाद उसने फोन काट दिया.....

लाला : चल भाई उस्मान. इसके बीच मे से ही निकलना पड़ेगा.... जानता है तेरी और करीम की ये मनपसंद जगह है. तुम दोनो सारा दिन यही पड़े रहते थे.... (हँसते हुए) यार तू यहाँ सारा दिन रहता कैसे था मुझे तो ये समझ नही आ रहा. ये भीढ़ मे निकलते हुए मेरी तो जान निकल जाएगी. तू पता नही कैसे जाता था.

लाला की ये बात सुनकर जाने मुझे ऐसा क्यो लगा कि मैं पहले भी हवा मे फायर निकाल कर रास्ता साफ कर चुका हूँ .इसलिए मैने फॉरन लाला से कह दिया...

मैं : तू बोले तो रास्ता मैं साफ करूँ....

लाला : (हैरान होते हुए) कैसे....

मैं : (अपनी गन निकालते हुए) तू बस देखता जा...

मैं उस गेट के सामने जाके खड़ा हो गया और सब लोग शोर मचा रहे थे. कोई जाने का रास्ता नही दे रहा था मैने २-३ बार आवाज़ लगाई लेकिन कोई नही सुना. इसलिए मैने गन को हवा मे उपर उठाया और एक फायर निकाल दिया. सबकी नज़र पिछे मेरी तरफ देखने लगी और मुझे देखते ही सब ने हाथ उठा कर उस्मान.... उस्मान.... उस्मान.... करने लगे और मेरे लिए रास्ता छोड़ दिया. मैने पलटकर लाला की तरफ देखा और बस मुस्कुरा दिया. जवाब मे वो भी मुझे देख कर मुस्कुराया और मेरे कंधे पर थपकी मारते हुए मुझे शाबाशी देने लगा. उसके बाद मैने जैसे ही चलना शुरू किया वहाँ पर कुछ लोगो ने हवा मे अपनी बंदूके तान ली और गोलियाँ चलानी शुरू कर दी साथ सारी भीढ़ मेरे नाम का नारा बुलंद करने लगी. मैं और लाला जब आगे गये तो सामने मुझे एक बड़ा सा पिंजरा नज़र आया जिसमे २ लोग आपस मे लड़ रहे थे. आगे जाते ही मेरे और लाला के लिए वहाँ बैठे लोगो ने कुर्सियाँ खाली करदी और सब लोग वहाँ मेरा हाल-चाल पूछने लगे. हम दोनो वहाँ कुर्सी पर बैठ कर उन दोनो लड़ने वाले आदमियो का मॅच देखने लगे. जाने क्यो मुझे यहाँ आके एक अजीब सी खुशी हो रही थीmजैसे मुझे गाँव जाते खुशी होती थी. मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अपने घर ही आ गया हूँ.

मैं कुर्सी पर आराम से बैठा था कि इतने मे एक घंटी की टॅनन्न की आवाज़ से फाइट शुरू हो गई. सब लोगो ने दोनो फाइटर्स पर अपना दाव लगाना शुरू कर दिया. मैं बड़े गौर से दोनो फाइटर्स को देख रहा था जो घंटी की आवाज़ से ही एक दूसरे पर टूट पड़े थे और लड़ना शुरू हो गये थे. कुछ देर फाइट ऐसे ही चलती रही तभी फाइट के बीच मे पिछे से मेरे कंधे पर किसी ने हाथ रखा. मैने पलट कर देखा तो ये करीम था जैसा की मुझे चौहान ने बताया था की इस पूरे गैंग मे यही मेरा सबसे जिगरी दोस्त था. मैं उसको देखते ही फॉरन अपनी कुर्सी से खड़ा हो गया और उसको मुस्कुरा कर देखने लगा. वो बिना कुछ बोले मुझे गौर से देख रहा था. वो मुझे देखकर रो भी रहा था और मुस्कुरा रहा था और फिर उसने मुझे अपनी तरफ खींच कर गले से लगा लिया.

करीम : (रोते हुए ओर मुस्कुराकर) भाई तू कहाँ चला गया था यार. तुझे कितना ढूँढा मैने.

मैं : बस यार क्या बताऊ जाने दे बहुत लंबी कहानी है फिर कभी बताऊंगा.

करीम : उस्मान तू यहाँ क्यो बैठा है चल उपर आजा अपने ऑफीस मे वहाँ से फाइट देखेंगे.

मैं : (लाला को देखते हुए) चल लाला चलते हैं.

उसके बाद हम तीनो वहाँ से उठे और सीढ़िया चढ़ते हुए एक आलीशान से कमरे मे आ गये जिसकी सामने की पूरी दीवार किसी काँच के ग्लास की बनी थी.जिससे हम आर-पार देख सकते थे. मैं कॅबिन मे घुसते ही ग्लास के पास जाके खड़ा हो गया और नीचे हो रही फाइट देखने लगा. उपर से नीचे का नज़ारा और भी शानदार दिखाई दे रहा था. तभी मुझे करीम की आवाज़ आई.

करीम : उस्मान भाई यहाँ क्यो खड़ा है ये ले ये टी.वी मे लाइव फाइट देख ले. (बड़ा सा टीवी ऑन करते हुए)

मैं : (पलटकर टीवी मे देखते हुए) ये तो और भी साफ नज़र आ रहा है.

करीम : भाई अब तू बैठ कर फाइट देख. मैं थोड़ा काम कर लूँ (परेशान होते हुए)

उसके बाद वो लोग बैठकर बाते करने लगे और मैं बैठा आराम से टीवी मे फाइट देखने लगा. फाइट ख़तम होते ही कुछ लोग करीम के कॅबिन मे आ गये और आते ही १ आदमी ने ज़ोर-ज़ोर से हँसना शुरू कर दिया. मैने नोट किया कि उन लोगो के आने से करीम कुछ और ज़्यादा परेशान हो गया था.

उनमे से एक आदमी करीम से : करीम भाई तेरा फाइटर आज फिर से हार रहा है.

करीम : छोड़ ना यार साली तक़दीर ही खराब है (कुछ काग़ज़ के टुकड़ो को फाड़ते हुए)

मैं : क्या हुआ करीम परेशान लग रहा है भाई

करीम : कुछ नही यार ये तो चलता रहता है. तू आराम से फाइट देख मैं थोड़ी देर मे आता हूँ. लाला इसका ख्याल रखना.

लाला : (हाथ हिलाते हुए) ओके....

मैं : क्या हुआ लाला ये परेशान क्यो लग रहा था सब ठीक तो है.

लाला : कुछ नही यार इसने अपना बेड़ा-गर्क खुद किया है. कितनी बार बोला है कि ये फाइट क्लब इसके बस का नही है. इस धंधे को छोड़कर मेरे साथ क्लब मे आ जाए लेकिन ये मानता ही नही.

मैं : ये बता समस्या क्या है.

लाला : होना क्या है यार अभी जो लोग आए थे ना उनके साथ इसकी बेट्टिंग चलती है. करोड़ो रूपिया दाव पर लगता है और हर बार इसका फाइटर हार जाता है. करीम इस वक़्त काफ़ी लॉस मे चल रहा है .अब अगले हफ्ते बाबा को हिसाब देना है बस इसलिए ये परेशान है.

मैं : क्या हम करीम की मदद नही कर सकते.

लाला : (अपनी कुर्सी मेरे पास करते हुए) मेरी जान अभी तो तू आया है इतनी जल्दी ये सब पंगे मे मत पड़ तू बस ऐश कर यार.

मैं : लेकिन यार जब मैं था तब भी क्या ये फाइट क्लब ऐसे ही लॉस मे चलता था?

लाला : नही यार जब तू था.... तब तो यही बाबा का टॉप बिजनेस होता था. उस वक़्त यहाँ सब अच्छा था लेकिन आज तेरे ही बनाए हुए सब फाइटर इकबाल के लिए काम करते हैं और उसकी तरफ से फाइट करते हैं. इसलिए तो करीम के पास लड़ने के लिए स्ट्राँग फाइटर नही है.

मैं : ये इकबाल कौन है.

लाला : वही बंदा जो अभी हँस रहा था पागलो की तरह.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) ठीक है... अच्छा मुझे फाइट के रूल्स बता .मेरे पास एक फाइटर है.

लाला : (ज़ोर से हँसते हुए) रूल्स कौनसे यार.... कोई रूल नही है. जब तक सामने वाला फाइटर अपने पैरो पर खड़ा होने लायक है.तब तक फाइट चलती रहती है.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) समझ गया... एक काम कर इकबाल को बोल एक और फाइट रख ले और यहाँ के मशहूर फाइटर को बुला ले जो भी उसके पास है.

लाला : (हैरानी से मुझे देखते हुए) भाई तू क्या करने वाला है.

मैं : हिसाब बराबर करने का वक़्त आ गया है.

लाला : (परेशान होते हुए और साथ ही फोन उठा कर किसी को फोन लगाते हुए) जल्दी उपर आ यार उस्मान को कुछ समस्या है...

उसके बाद कुछ देर कॅबिन मे खामोशी छाई रही और थोड़ी देर मे करीम उपर आ गया.

करीम : हाँ क्या हुआ

लाला : उस्मान भाई जान कुछ फर्मा रहे हैं.

करीम : (सवालिया नज़रों से मुझे देखते हुए) क्या बात है उस्मान....

मैं : इकबाल को बोल अपने बेस्ट फाइटर को लेके आए आज यहाँ फिर से फाइट होगी.

करीम : नही यार पहले ही बहुत पैसा हार चुका हूँ.बाबा मेरी जान ले लेंगे अगर उनको पता चल गया तो....

मैं : मुझे पर ऐतबार है तो फाइट रख ले तुझे हारने नही दूँगा.

करीम : तुझ पर तो जान से ज़्यादा ऐतबार है यार लेकिन ये तो बता फाइटर कौन है.

मैं : रिंग मे देख लेना... अभी जितना बोला है उतना कर.

उसके बाद करीम कुछ देर मेरे सामने खामोश खड़ा कुछ सोचता रहा और फिर बिना कुछ बोले वापिस नीचे चला गया और कुछ देर बाद उसके साथ इकबाल और उसके आदमियो के साथ दुबारा उपर आ गया.

इकबाल : (मुझसे हाथ मिलाते हुए) क्या हाल है उस्मान भाई. आपका नाम बहुत सुना था दर्शन पहली बार हुए हैं.

मैं : जनाब आज की एक फाइट और रख लेते हैं

इकबाल : आपका हुकुम सिर आँखो पर. लेकिन बाबा का हुकुम है कि यहाँ हफ्ते मे एक ही फाइट होगी. दूसरी फाइट की इजाज़त नही है मुझे बाबा से पूछना पड़ेगा.

मैं : बाबा से पूछने की ज़रूरत नही है.जब मैं कह रहा हूँ तो गारंटी भी मेरी है.

इकबाल : वो तो ठीक है ! लेकिन दाव पर क्या लगाओगे आप लोगो का आज का कलेक्शन तो करीम हार चुका है (मुस्कुराते हुए)

मैं : अगर मैं हार गया तो मैं सामने बैठा हूँ तुम्हारे. जो चाहे कर सकते हो लेकिन अगर जीत गया तो मेरे जीतने के बाद तुमने जो भी करीम से जीता है सब वापिस करना पड़ेगा.

इकबाल : (हँसते हुए) मैं इतना चूतिया लगता हूँ क्या जो एक जान का सौदा करोड़ो मे करूँगा.

करीम : (बीच मे बोलते हुए) अगर हम ये फाइट हार गये तो हमारा फाइट क्लब आपका.

इकबाल : ये हुई ना मर्दो वाली बात मुझे मंज़ूर है.

लाला : घंटा मंज़ूर है.... तुम दोनो पागल तो नही हो गये हो. इतना बड़ा दाँव खेल रहे हो वो भी बाबा से इजाज़त लिए बगैर.

करीम : जो होगा मैं देख लूँगा मुझे मेरे यार पर आज भी पूरा ऐतबार है (मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए)

लाला : तुम दोनो पागल हो गये हो करीम . एक बार फिर सोच ले बहुत लफडा हो जाएगा.

मैं : कुछ नही होगा ! भरोसा कर मुझ पर

लाला : (सिर झटकते हुए) तुम जो मर्ज़ी करो लेकिन याद रखना कुछ पंगा हुआ तो बाबा को जवाब तुम दोनो दोगे. मैने बोल देना है कि मैने मना किया था तुम दोनो को.

करीम : ठीक है.... जो होगा देखा जाएगा (मुस्कुराते हुए)

इकबाल : ठीक है फिर स्पेशल फाइट है तो स्पेशल रिंग भी होना चाहिए क्या कहते हो...

करीम : स्पेशल रिंग ही होगा इकबाल भाई (मेरी तरफ मुस्कुरा कर देखते हुए)

उसके बाद इकबाल वहाँ से चला गया और मैं और करीम नीचे रिंग मे चले गये जहाँ हमने एक स्पेशल फाइट अनाउन्स कर दी. जिसके जवाब मे वहाँ के लोगो ने शोर मचा कर अपनी खुशी का इज़हार किया. उसके बाद करीम अपने लोगो को कुछ समझाने चला गया और मैं वापिस उपर कॅबिन मे आके बैठ गया. आते ही लाला फिर से मेरे पास आ गया और मुझे समझाने मे लग गया.

लाला : एक बार फिर सोच लो. तुम बहुत जल्दबाज़ी कर रहे हो. कुछ समस्या ना हो जाए.

मैं : कुछ नही होगा ! फिकर मत कर.

लाला : लेकिन तुम जिस फाइटर पर इतना बड़ा दाँव खेल रहे हो वो फाइटर हैं कौन ?

मैं : (मुस्कुराकर) ले मिल ले फिर... फाइटर तेरे सामने बैठा है.

लाला : (हड-बडाकर खड़ा होते हुए) उस्मान तेरा दिमाग़ तो ठीक है .तू अभी इतनी बड़ी बीमारी से वापिस आया है.... नही...नही.... तू रहने दे तू इन फाइटर्स का मुक़ाबला नही कर पाएगा और वैसे भी करीम भी तुझे लड़ने की इजाज़त नही देगा.

मैं : तू फिकर मत कर कुछ नही होगा .मैं हूँ ना सब संभाल लूँगा और अपने यार को इतना कमज़ोर मत समझ....अपन ही जीतेंगे.... आज साला चंगेज़ खान भी क्यो ना आ जाए साला अपने पैरो पर चलकर नही जाएगा.

लाला : देख ! तू हमारा यार है इसलिए रोक रहे हैं. हमारा काम पैसा लगाना है.खुद रिंग मे उतरकर लड़ना नही है.

मैं : क्या मैने पहले कभी फाइट नही की इस रिंग मे?

लाला : की है यार बहुत फाइट की है और आज तक तू कभी हारा भी नही लेकिन पहले और अब मे बहुत फरक है . अब तो तुझे कुछ याद भी नही है तू कैसे लड़ेगा उसके फाइटर के साथ.

मैं : (कुछ सोचते हुए) अभी फाइट मे बहुत वक़्त है.... एक काम कर अगर मेरी पुरानी फाइट की कोई वीडियो पड़ी है तो लेके आ मैं देखना चाहता हूँ.

लाला : अच्छा अभी लाता हूँ

उसके बाद मैं अकेला कॅबिन मे बैठा था इसलिए वापिस शीशे के पास आके नीचे देखने लगा जहाँ करीम के तमाम लोग लगे हुए थे नया रिंग तैयार करने मे. मैं बस यही सोच रहा था कि मैने लड़ने के लिए हाँ तो बोल दिया है लेकिन क्या मैं लड़ भी सकता हूँ या नही. अंदर से मुझे भी डर लग रहा था लेकिन इन लोगो के दिल मे जगह बनाने का मेरे पास इससे अच्छा मोक़ा नही था. इसलिए मैने लड़ाई के लिए हाँ बोल दिया था. कुछ ही देर बाद लाला वापिस आया उसके हाथ मे एक बड़ा सा कार्टन था. जिसमे बहुत सी सी.डी पड़ी थी.

लाला : ले भाई तेरा काम कर दिया है.आज तक तूने जितनी भी फाइट लड़ी है, उन सब की वीडियो फुटेज इसमे मोजूद है. आराम से बैठ कर देखता रह.

मैं : ठीक है

लाला : और कुछ चाहिए....

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) शुक्रिया.

उसके बाद मैं वो कार्टन मे से वीडियो सीडी निकाल कर प्लेयर मे लगाने लगा ओर अपनी पुरानी जिंदगी को याद करने की कोशिश करने लगा. लेकिन अफ़सोस मुझे कुछ भी याद नही आ रहा था इसलिए मैं बस अपने दाव-पेच ही गौर से देखने लगा जो शायद मेरी फाइट मे काम आ सकते थे. मुझे नही पता था कि ये दाव- पेच मेरे किसी काम भी आ सकते हैं या नही लेकिन फिर भी मैं इस फाइट को जीतने के लिए सब को बड़े गौर से देख रहा था. उसके बाद फाइट शुरू होने का वक़्त आ गया. नीचे लोगो की भीढ़ भी बढ़ने लगी थी और सब तैयारियाँ भी मुकम्मल हो चुकी थी रिंग भी तैयार था और इकबाल का फाइटर और इकबाल भी नीचे आ चुके थे. लेकिन मैं अभी तक उन्ही वीडियो फुटेज को ही देख रहा था तभी लाला कॅबिन मे आ गया.

लाला : भाई सब कुछ रेडी है.

मैं : हाँ चलो मैं भी रेडी हूँ.

लाला : यार एक बात फिर सोच ले.तुझे ये फाइट लड़ने की कोई ज़रूरत नही है

मैं : ज़रूरत है लाला अपने लिए नही अपने यारो के लिएm आज उस्मान लड़ेगा और ना सिर्फ़ लड़ेगा बल्कि जीतेगा भी.

लाला : (मुझे गले लगाते हुए) कौन बोलता है तू पहले जैसा नही रहा.

उसके बाद मैने अपनी शर्ट उतार दी और सिर्फ़ जीन्स पेंट पहना हुआ सीढ़ियो से नीचे उतर गया. तब तक इकबाल का फाइटर भी रिंग मे आ चुका था जो इस रिंग का अब पसंदीदा बन चुका था और एक भी फाइट नही हारा था. मेरे नीचे उतरते ही रेफ़री ने मेरा नाम पुकारा जिस पर सब लोग ने हाथ हवा मे उठा कर मेरे नाम का नारा बुलंद कर दिया. लाला मेरे पिछे मेरा नाम पुकारते हुए आ रहा था लेकिन मुझे करीम कहीं भी नज़र नही आ रहा था. मेरी नज़रे चारो तरफ करीम को ढूँढ रही थी इसलिए मैने लाला को इशारे से करीम के बारे मे पूछा तो उसने रिंग के अंदर इशारा किया. उसके बाद मैं बिना कोई जवाब दिए रिंग की तरफ बढ़ गया जहाँ इकबाल और इकबाल का फाइटर मोजूद थे. मेरे रिंग के पास आते ही करीम मेरे पास आके खड़ा हो गया और मेरा एक हाथ पकड़ कर हवा मे उपर उठा दिया....

करीम : भाई आज दिखा दे पुराना उस्मान....

मैं : (मुस्कुरा कर करीम को गले लगाते हुए) कोशिश करूँगा...

उसके बाद मैं रिंग के अंदर चला गया. जहाँ इकबाल का फाइटर मेरे सामने आके खड़ा हो गया. वो क़द मे और शरीर मे मुझसे लग-भग दोगुना था लेकिन फिर भी वहाँ पर मोजूद तमाम लोग उस्मान...उस्मान....उस्मान..... नाम पुकार रहे थे जिससे मुझे बहुत होसला मिल रहा था.

फाइटर : इकबाल साहब ये लड़ेगा मेरे साथ.

इकबाल : हाँ भाई क्या करें कुछ लोगो को शहीद होने का शाँक होता है.

फाइटर : (हँसते हुए) लोगो ने तुझे शेर बोला और तू आ गया पिंजरे मे मरने के लिए, आज तो इस शेर की भी क़ुर्बानी होगी....

मैं : (हँसते हुए) हाथी कितना भी बड़ा हो जाए शेर का शिकार नही कर सकता मुन्ना और वैसे भी क़ुर्बानी बकरे की दी जाती है शेर की नही. शेर अपनी खुराक खुद ढूँढ लेता है.

फाइटर : देखते हैं आज कौन किसको खुराक बनता है .तेरे जैसे कितने ही आए और धुंल चाट कर चले भी गये. लेकिन मैं वही का वही खड़ा हूँ.

मैं : तू खड़ा है क्योंकि तेरा उस्मान से सामना नही हुआ था. आज तेरा ये खड़े रहने का वेहम भी दूर हो जाएगा क्योंकि फाइट के बाद तू खड़ा होना तो दूर की बात है. कीड़े की तरह रेंगने लायक भी नही बचेगा.

उसके बाद इकबाल और करीम रिंग से बाहर चले गये और रेफरी हम दोनो का नाम एलान करने के बाद वो भी रिंग से बाहर चला गया. अब रिंग का दरवाज़ा बाहर से बंद हो गया था और मैं घंटी बजने का इंतज़ार करने लगा तभी उपर से पानी बरसने लगा जैसे बारिश हो रही हो. मैने सिर उठा कर उपर देखा तो उपर बहुत सारे फुव्वारे लगे हुए थे जिनसे बारिश जैसे पानी निकल रहा था कुछ ही देर मे रिंग की ज़मीन पूरी तरह गीली हो गई. अब मैं और वो फाइटर दोनो रिंग के अलग-अलग कौने मे खड़े थे. तभी घंटी की टॅन से आवाज़ हुई

और वो फाइटर मेरी तरफ भागा और जंप लगाके मेरे उपर कूद पड़ा. उससे बचने के लिए मैने अपनी करवट बदल ली जिससे वो जाके लोहे की जाली से टकरा गया. मैने जल्दी से पलटकर एक टाँग हवा मे उठाई और उसकी पीठ मे मार दी. जब मैं दुबारा उसको टाँग मारने लगा तो वो पलट गया और उसने मेरी टाँग पकड़ ली इससे पहले कि वो कुछ कर पाता मैने अपनी बॉडी का सारा वेट उसी पकड़ी हुई टाँग पर डाल दिया और उसके हाथ पर खड़ा होके उपर को उछल गया साथ ही अपना घुटना उसके मुँह पर मारा जिससे उसकी नाक से खून निकलने लगा.

अब मैं उससे कुछ दूर खड़ा था और उसके अगले हमले का इंतज़ार कर रहा था. वो अपने हाथ से अपना नाक साफ करते हुए फिर से मेरी तरफ गुस्से से बढ़ने लगा. मैने गीली ज़मीन का फ़ायदा उठाया और जल्दी से नीचे ज़मीन पर फिसल गया जिससे मेरी दोनो टांगे उसकी टाँगो के सामने आ गई मैने अपनी एक टाँग उसके घुटने के जोड़ पर ज़ोर से मारी जिससे वो खुद को संभाल नही पाया और मेरे उपर ही गिर गया. मेरे उपर गिरते ही उसने मेरा गला पकड़ लिया और मेरा गला दबाने लगा. मैने काफ़ी कोशिश की लेकिन उसके हाथ की पकड़ काफ़ी मज़बूत थी. उसके गला दबाने से नीचे पड़े पानी से मुझे साँस लेने मे तक़लीफ़ हो रही थी. मैने जल्दी से अपने दोनो हाथ उसके मुँह पर रखे और अपने हाथ की २ उंगालिया उसकी आँखों पर मार दी जिससे कुछ पल के लिए उससे दिखना बंद हो गया. मेरे लिए इतना वक़्त काफ़ी था मैने जल्दी से उसको पलट दिया और खुद उसके उपर आ गया था. अब मैने उसकी एक हाथ से गर्दन पकड़ी और दूसरे हाथ से उसके चेहरे पर मुक्के मारने लगा लेकिन शायद मेरे मुक्को से उसके चेहरे पर कुछ खास असर नही हो रहा था .इसलिए मैने अपनी कोहनी को उसके सिर मे ज़ोर से मारा जिससे उसके सिर से खून निकलने लगा.

मुझे मेरा ये दाव काम का लगा इसलिए मैने बार-बार अपनी कोहनी उसके सिर मे मारनी शुरू करदी. ५-६ बार सिर मे चोट खाने के बाद उसने अपनी दोनो बाजू उपर कर लिए और अपना सिर बचा लिया अब मैने अपनी जगह बदली और उसका पैर पकड़ लिया और उल्टी दिशा मे घुमाने लगा. जिससे शायद उसको इंतेहा दर्द हुआ था इसलिए उसने अपना दूसरा पैर ज़ोर से मेरे पेट मे मारा और मैं दूर जाके गिर गया. मैं फिर से खड़ा हो गया और उसके खड़े होने का इंतज़ार करने लगा .इस बार उसने कुछ वक़्त लिया खड़ा होने मे और लोहे की जाली को पकड़ कर वो फिर से खड़ा हो गया. मैं अब उससे काफ़ी फ़ासले पर था. मैं अब सोच रहा था कि इसको कैसे दुबारा गिराऊ. तभी मुझे वीडियो फुटेज का एक मूव याद आया जो मैने काफ़ी वीडियो मे इस्तेमाल किया था. मैं दूर जाके खड़ा हो गया और किसी जानवर की तरह अपने दोनो हाथो पर और घुटनो पर बैठ गया वो पूरे गुस्से के साथ मेरी

तरफ बढ़ने लगा. वो जैसे ही मेरी तरफ भागा मैं भी नीचे झुक कर भागने लगा और हवा मे उच्छल कर किसी मेंढक की तरह उस पर कूद पड़ा. मेरा कंधा उसके पेट मे लगा जिससे वो वही ज़मीन पर गिर गया. अब मैं उसको उठने नही देना चाहता था. इसलिए जल्दी से उसके पास गया और उसका सिर अपनी दोनो टाँगो मे दबा कर ज़ोर से खींच दिया इससे डेथ लॉक कहा जाता है. वो कुछ देर अपने हाथ-पैर हिलाता रहा लेकिन अब उसकी साँस टूटने लगी थी. मैने जब देखा कि वो एक दम बेजान सा होने लगा है .तो मैने अपनी पकड़ से उसको आज़ाद कर दिया. इस बार वो खड़ा नही हो सकता था काफ़ी देर इंतज़ार करने के बाद भी जब वो खड़ा नही हुआ तो रिंग का गेट खुल गया और करीम और लाला रिंग मे आ गये और मुझे अपने कंधो पर उठा लिया. वो दोनो मेरे जीतने से बहुत खुश थे और बाहर लोगो की भीढ़ सिर्फ़ मेरा ही नाम पुकार रही थी. तभी रिंग मे इकबाल आ गया...

इकबाल : (फीकी हँसी के साथ) मुबारक हो उस्मान भाई

करीम : अब बोलो इकबाल भाई क्या कहते हो... अफ़सोस !!! आपका पैसा और आपका फाइटर दोनो काम से गये. अब अपना अगला पिछला सब हिसाब बराबर.

इकबाल : (अपने माथे से पसीना साफ करते हुए) ठीक है....

उसके बाद इकबाल अपने ज़मीन पर पड़े फाइटर को एक लात मार कर रिंग से चला गया और मेरे दोस्त मेरे आने की और जीतने की खुशी मे लग गये. फिर जैसे ही मैं रिंग से बाहर आया तो वहाँ पर खड़े लोगो ने मुझे उपर उठा दिया और पूरे फाइट क्लब मे मेरा नाम पुकारा जाने लगा. कुछ देर मैं ऐसे ही उन लोगो के साथ अपनी खुशी मनाता रहा फिर उपर से मुझे लाला ने इशारा किया और उपर आने को कहा तो मैं वहाँ के लोगो का शुक्रिया अदा करके वापिस उपर आ गया.

लाला : आजा मेरे शेर ! आज तो तूने कमाल कर दिया. यार तू नही जानता तूने इकबाल को कितना बड़ा लॉस दिया है.

मैं : मैने ये फाइट लॉस या प्रॉफिट के लिए नही दोस्ती के लिए की थी.

करीम : (ग्लास मे शराब डालते हुए) जानता हूँ यार. लेकिन कुछ भी बोल साले इकबाल की शक़ल देखने वाली थी. ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसकी इज़्ज़त लूट ली हो...

मैं : चल अब जो होना था हो गया. कल से तू यहाँ नये लड़के बुला जिनको मैं फिर से ट्रैनिंग दूँगा.

लाला : लेकिन यार तू कैसे.....

मैं : क्यो मुझे क्या है मैं अगर लड़ सकता हूँ तो लड़ना नही सीखा सकता क्या.

करीम : वो बात नही है !लेकिन पहले तू बाबा से इजाज़त ले लेगा तो बेहतर होगा.

मैं : हाँ !ये बाबा का नाम बहुत सुना है. कौन है ये बाबा इनसे कब मिलूँगा मैं.

लाला : उस्मान बाबा वो है जिन्होने तेरी मेरी हम सबकी परवरिश की है. ये सब कुछ बाबा का ही तो है.

मैं : क्या बाबा जानते हैं मैं वापिस आ गया हूँ.

करीम : मेरे दोस्त जो भी होता है वो सब कुछ बाबा को पता होता है.

मैं : तो मुझे बाबा से भी मिलवाओ !

लाला : अभी नही यार कुछ दिन तू हमारे साथ ही रह. फिर बाबा से भी मिल लेना. क्योंकि अभी बाबा मुल्क़ से बाहर गये हुए हैं.

उसके बाद मैं कुछ दिन वहाँ रहा और सब लोगो के साथ घुलने मिलने की कोशिश करने लगा. मैं वहाँ के तमाम लोगो का दिल जीत भी लिया था. लेकिन मेरा मकसद यहाँ से इन्फर्मेशन कलेक्ट करना था. इसलिए अब मेरा सारा दिन होटेल्स मे और रात फाइट क्लब मे गुज़रने लगी थी. मेरे बहुत कोशिश करने के बाद भी मैं किसी भी तरह की इन्फर्मेशन नही निकाल पा रहा था क्योंकि सब मुझे किसी मेहमान की तरह ट्रीट कर रहे थे वो लोग मुझे अपने जशन मे और पार्टीमे तो शामिल करते थे .लेकिन अपने बिजनेस की कोई भी बात मेरे सामने नही करते थे. कुछ दिन ऐसे ही गुज़रने के बाद एक दिन मुझे लाला से पता लगा कि छोटे ख्वाजा (ख्वाजा साहब का बेटा) वापिस आ रहा है और मुझसे मिलना

चाहता है. क्योंकि मुझे पिछला कुछ भी याद नही था इसलिए मैं उसे भी अपना दोस्त और हमदर्द ही समझ रहा था.यही आगे चलकर मेरी सबसे बड़ी ग़लती साबित हुई.

२७

मैं रोज़ की तरह अपने होटेल के रूम मे तैयार हो रहा था कि किसी ने मेरा रूम नॉक किया. जब दरवाज़ा खोला तो मुझे पता चला कि छोटा ख्वाजा ने मुझे नीचे लाला के कॅबिन मे बुलाया है. मैं फॉरन तैयार होके नीचे चला गया. नीचे जाते ही २ गार्ड ने मुझे रोक लिया और मेरी तलाशी लेने लगे. ये दोनो लोग मेरे लिए नये थे,क्योंकि लाला के सब आदमियो को मैं जानता था. मेरी तलाशी लेने के बाद उन्होने मेरी गन निकाल ली और मेरे लिए कॅबिन का दरवाज़ा खोल दिया और मैं बिना कुछ बोले चुप-चाप अंदर चला गया. अंदर कुर्सी पर एक आदमी बैठा जिसने टेबल पर अपनी दोनो टांगे रखी हुई थी और उसके पास ही लाला अपने दोनो हाथ बाँधे खड़ा था. सबसे अजीब बात तो ये थी कि आज वहाँ रोज़ की तरह लाला का एक भी आदमी मोजूद नही था.सब लोग हाथ मे हथियार पकड़े थे और सब नये चेहरे थे.

छोटा ख्वाजा : (अपनी सिग्रेट जलाते हुए) ओ हो...... तो मेरे आदमी सही कह रहे थे.उस्मान सच मे वापिस आ गया है भाई वाहह.

मैं : (अदब से सलाम करते हुए) जी... आपने मुझे याद किया था.

छोटा : अर्रे ये सलाम करना कब से सीख लिया अपन तो पुराने दोस्त हैं यार... चलो यहाँ आओ बैठो.

मैं : (कुर्सी पर बैठ ते हुए) जी शुक्रिया....

छोटा : तो तुमको पुराना कुछ भी याद नही है हमम्म.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) जी नही....

छोटा : हम्म.... तो ये बात है.... (अपने आदमियो को इशारा करते हुए)

मैं : (कुछ ना समझने वाले अंदाज़ मे) मुझे कुछ समझ नही आ रहा आपने बस मुझसे यही पूछना था.

छोटा : नही यार मैं तो तुम्हारे लिए एक तोहफा लाया था. सोचा तुमको पसंद आएगा.

मैं : जी कौनसा तोहफा

छोटा : चलो आओ तुमको तुम्हारा तोहफा दिखाऊ.... (मेरे पास आते हुए) तुम जानना नही चाहोगे तुमको गोली किसने मारी थी.

मैं : (चौंकते हुए) क्या.... आप जानते हैं.... कौन है वो कमीना. उस साले को तो मैं ज़िंदा दफ़न कर दूँगा जिसने मेरी ये हालत की है. (गुस्से से)

छोटा : भाई तुम्हारा दुश्मन हमारा दुश्मन.... मेरे आदमी तो उसको वही ठोक देते जहाँ वो हम को मिला था. फिर सोचा तुमको पहली बार मिल रहा हूँ ठीक होने के बाद खाली हाथ जाऊंगा तो तुमको अच्छा नही लगेगा. इसलिए तुम्हारे लिए इससे आला तोहफा नही हो सकता था ,इसलिए तुम्हारे लिए बचा के रखा है.

मैं : कौन है वो हरामखोर ? क्या नाम है उसका ?बताओ मुझे ख्वाजा साहब . आपका अहसानमंद रहेगा ये उस्मान.

छोटा : खुद ही चलकर देख लेना.

उसके बाद छोटा ख्वाजा,मैं और लाला साथ मे ख्वाजा के आदमी नीचे चले गये और फिर हमारे लिए कारआ गई. मैं, लाला और छोटा ख्वाजा एक गाड़ी मे बैठे थे .बाकी सब आदमी पिछे दूसरी गाडियो मे आ रहे थे. मेरे बार-बार पूछने पर भी छोटा ख्वाजा मुझे उस आदमी का नाम नही बता रहा था. इधर मेरे अंदर एक अजीब सा तूफान जाग गया था. मैं बे-क़रार हुआ जा रहा था उस आदमी को अपने हाथो से गोली मारने के लिए जिसने मेरा अतीत मेरी शक्सियत मुझसे छीन ली थी. आज अगर मुझे मेरे बारे मे कुछ भी याद नही था तो उसका ज़िम्मेदार वही आदमी था. अब मुझे इंतज़ार था उस पल का जब मेरा और उस आदमी का सामना होगा जिसने मुझे गोली मारी थी.

कुछ देर बाद हमारी कार एक आलीशान मकान के सामने रुक गई. गाड़ी के रुकते ही लोग गाड़ी से उतर गये.मैने अपनी कोट के साइड मे हाथ डाला ताकि मैं गन निकाल सकूँ और

जाते ही उस आदमी पर गोली चला सकूँ जिसने मेरी ये हालत की थी. लेकिन कोट मे हाथ डालते ही मुझे याद आया कि मेरी पिस्टल तो छोटे ख्वाजा के आदमियो ने ले ली थी.

मैं : (पलट ते हुए) ख्वाजा साहब मुझे मेरी गन चाहिए

छोटा : अर्रे भाई इतनी भी क्या बे-सबरी ,पहले अंदर तो चलो. तुमको तुम्हारी गन भी मिल जाएगी. फिर जो दिल चाहे कर लेना उसके साथ.

मैं : ठीक है

उसके बाद हम सब लोग घर के अंदर चले गये. अंदर जाने के बाद हम सब को ख्वाजा ने सोफे पर बैठने का इशारा किया और खुद अपने दो गार्ड्स के साथ सीढ़ियो से उपर चला गया. उस वक़्त इंतज़ार का एक-एक पल मेरे लिए कई साल के इंतजार जैसा हो रहा था. मैं चाहता था कि जल्दी से जल्दी वो इंसान मेरे सामने आ जाए और उसकी जान ले लूँ ताकि मेरे दिल को कुछ क़रार आ सके. मैं खामोश होके गर्दन नीचे लटकाए बैठा था.मेरे साथ लाला और करीम बैठे थे. बाकी के तमाम लोग सोफे के आस-पास खड़े हुए थे. कुछ ही देर मे छोटा ख्वाजा एक मुस्कान के साथ सीढ़ियो से नीचे उतरता हुआ नज़र आया. उसके पिछे कुछ लोग एक आदमी को पकड़ कर नीचे ला रहे थे. उसके चेहरे को एक काले नक़ाब से ढका हुआ था और देखने से लग रहा था. जैसे वो आदमी उसको घसीट कर नीचे ला रहे थे.ऐसा लग रहा था जैसे वो बेहोश हो. कुछ ही देर मे वो लोग उसको उठाके नीचे ले आए और एक कुर्सी पर बिठा दिया. तभी छोटा ख्वाजा मेरे पास आया और गन निकाल कर मुझे पकड़ा दी.

छोटा : (मुझे गन देते हुए) ले भाई उस्मान अपना तोहफा क़बूल कर और ठोक दे साले को.

मैं : (गन पकड़ते हुए) ख्वाजा साहब ! क्या मैं इस हरामखोर का चेहरा देख सकता हूँ एक बार. अगर आपको ऐतराज़ ना हो तो.

छोटा : ज़रूर यार क्यो नही..... (अपने आदमी को इशारा करते हुए) नक़ाब हटाओ इसका.

मैं : (चौंकते हुए) ये तो साजिद है ख्वाजा साब.

छोटा : ठीक पहचाना ये साजिद ही है .साला पुलिस का खबरी है. मुझे पता चला है कि इसी ने तुम्हारी इन्फर्मेशन पुलिस तक पहुँचाई थी.

मैं : (गन नीचे करते हुए) लेकिन ख्वाजा साहब यही तो मुझे यहाँ तक लेके आया था. ये कैसे पुलिस का खबरी हो सकता है.अगर ये पुलिस का खबरी होता तो मुझे पुलिस तक लेके जाता यहाँ क्यों लाता.... आपको किसी ने ग़लत इन्फर्मेशन दी है.

लाला : हाँ ख्वाजा साहब .उस्मान सही कह रहा है

छोटा : (अपनी गन निकालते हुए) मैने जो बोला वो करो... तुम लोग अपना भेजा मत चलाओ समझे.

मैं : ख्वाजा साहब आपको इतना यक़ीन कैसे हैं.

छोटा : (गुस्से से अपनी पिस्टल मेरे सिर पर रखते हुए) तुने सुना नही मैने क्या बोला.तू इसको ठोक नही तो मैं तुझे ठोक दूँगा. ३ गिनने तक का वक़्त देता हूँ तुझे... अगर तेरी गोली नही चली तो मेरी चलेगी.

मैं : ख्वाजा साहब मेरी बात सुनिए एक बार....

छोटा : १........

करीम : यार तू पागल हो गया है ठोक देना साले को. इसके लिए क्यो अपनी जान से खेल रहा है.

मैं गहरी सोच मे डूबा हुआ था और फ़ैसला नही कर पा रहा था कि साजिद को बचाऊ या खुद को. अगर मैं साजिद पर गोली नही चलाता तो ख्वाजा मुझे मार देता. लेकिन अब मैं कोई अपराधी नही था इसलिए चाह कर भी उस पर गोली नही चला सकता था. अभी मैं अपनी ही सोच मे गुम था कि ख्वाजा की आवाज़ मेरे कानो से टकराई.

छोटा : २........

मैं : (अपनी गन नीचे करते हुए)

ख्वाजा : तुझसे गोली नही चलेगी सुजल.... (मेरे हाथ से गन लेते हुए और साजिद को अपनी पिस्टल से गोली मारते हुए)

ख्वाजा ने मेरे सामने साजिद को मार दिया. लेकिन ये बात मेरे लिए किसी झटके से कम नही थी कि ख्वाजा को मेरी असलियत पता थी क्योंकि उसने मुझे उस्मान नही सुजल कहकर पुकारा था. इसका मतलब चौहान के दफ़्तर मे कोई था जो ख्वाजा का आदमी था और उसको मेरे बारे मे सब कुछ बता रहा था.

करीम : ख्वाजा साहब ! ये सुजल नही उस्मान है.

ख्वाजा : खा गये ना धोखा तुम सब भी.... जिसको तुम उस्मान समझ रहे हो वो उस्मान नही सुजल है. इसको हमारा काम तमाम करने के लिए ही पुलिस ने यहाँ भेजा है....

करीम : (चौंकते हुए) क्याआ.... नही... नही... ख्वाजा साहब आपको किसी ने ग़लत इन्फर्मेशन दी है. ये उस्मान ही है. मैं अपने दोस्त को पहचानने मे धोखा नही खा सकता....

ख्वाजा :(जोरसे हँसते हुए) जो गया था वो उस्मान था ! लेकिन अब जो वापिस आया है ये उस्मान नही सुजल है ..समझा...

लाला : लेकिन ये कैसे हो सकता है .उस्मान मर जाएगा लेकिन पुलिस का साथ कभी नही देगा .आप से ज़्यादा हम उस्मान को जानते हैं.

ख्वाजा : ठीक है अगर ये उस्मान है तो पुछो इसको बाबा की तिजोरी कहाँ है और उन्होने सारा सोना कहाँ रखा हुआ है... अब ये बात तो सिर्फ़ उस्मान ही जानता है ना... अगर ये उस्मान है तो इसको साबित करनी होगी ये बात.

मैं : मेरा यक़ीन करो ख्वाजा साहब. मैं उस्मान ही हूँ लेकिन मुझे पिछला कुछ भी याद नही है मैं सच कह रहा हूँ.

ख्वाजा : ठीक है फिर याद कर लो आराम से.जब तक तुमको याद नही आ जाता तब तक तुम इस घर से बाहर नही जा सकते (अपने आदमियो को इशारा करते हुए) डाल दो इसको साजिद की जगह पर और इसको तब तक मारो जब तक ये सब कुछ बता नही देता.

उसके बाद ख्वाजा के आदमियो ने मुझे पकड़ लिया और उपर एक कमरे मे ले गये जहाँ मुझे एक कमरे मे बंद कर दिया गया जिसका दरवाज़ा लोहे का बना था. मैं अंदर से चिल्लाता रहा और दरवाज़ा खोलने की नाकाम कोशिश करता रहा. लेकिन दरवाज़ा बंद होने के बाद किसी ने मेरी बात नही सुनी. अभी मुझे कमरे मे दाखिल हुए कुछ ही देर हुई थी कि दरवाज़े के नीचे से धुआँ आने लगा जिससे मुझे अज़ीब सी घुटन होने लगी और लगातार खाँसी आने लगी. वो अज़ीब किस्म की गॅस थी जिससे कुछ ही देर मे मेरी आँखो के सामने अंधेरा छा गया और मैं बेहोश हो गया. मुझे नही पता मैं कितनी देर वहाँ ज़मीन पर बेहोश पड़ा रहा लेकिन जब मुझे होश आया तो मैं कुर्सी से बँधा पड़ा था. मेरे चारो तरफ बहुत सारे लोग खड़े थे और एक अँग्रेज़ आदमी मेरी बाजू को रूई (कॉटन) से साफ कर रहा था.

मैं : कौन हो तुम और मुझे बाँधा क्यो है खोलो मुझे...

अँग्रेज़ : रिलॅक्स !!! अभी सब ठीक हो जाएगा. (दूसरे आदमी से एक इंजेक्शन लेते हुए)

मैं : हरामखोर खोल मुझे... (अपने आप को छुड़ाने की नाकाम कोशिश करते हुए)

अँग्रेज़ : काम डाउन !!! अभी सब ठीक हो जाएगा.

ख्वाजा : आखरी बार पूछ रहा हूँ बाबा की तिजोरी कहाँ है और उसको कैसे खोलते हैं बता नही तो कुछ देर बाद तू सब कुछ खुद ही बता देगा.

मैं : मैने बोला ना मुझे कुछ याद नही.तुम्हे बात समझ मे नही आती.

ख्वाजा : डॉक्टर यू कॅन कंटिन्यू ! ये ऐसे नही बताएगा साला बहुत पुराना पापी है.

उसके बाद वो अँग्रेज़ डॉक्टर ने मुझे वो इंजेक्शन लगा दिया जिससे मुझे एक अजीब सा नशा छाने लगा मेरे चारो तरफ की चीज़े मुझे गोल-गोल घूमती हुई नज़र आने लगी. मैं बोलना चाह रहा था लेकिन मुझसे बोला नही जा रहा था और बहुत तेज़ नींद आ रही थी.

अँग्रेज़ : (मेरे गाल थप-थपाते हुए) क्या नाम है तुम्हारा.

मैं : (अँग्रेज़ को गौर से देखते हुए) हमम्म्म...

अँग्रेज़ : क्या नाम है तुम्हारा.

मैं : कभी उस्मान, कभी सुजल ! मैं दोनो हूँ हाहहहहहहाहा

अँग्रेज़ : तुमको यहाँ किसने भेजा है ?

मैं : (ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए)

अँग्रेज़ : तुमको यहाँ किसने भेजा है.

मैं : तेरी माँ ने.... हाहहहहहहाहा

ख्वाजा : (मुझे थप्पड़ मारते हुए) डोज बढ़ाओ डॉक्टर...

अँग्रेज़ : (एक और इंजेक्शन मुझे लगाते हुए) तुमको यहाँ किसने भेजा है

मैं : बाबा ने (यहाँ मे गाव वाले बाबा का ज़िक्र कर रहा हूँ) हाहहहहहहाहा

ख्वाजा : (चौंकते हुए) तुमको बाबा ने किस लिए यहाँ भेजा है.

मैं : तेरी मारने के लिए भोसड़ी के.... हाहहहहहहाहा

उसके बाद मुझे कुछ याद नही क्योंकि मेरी आँखो के आगे अंधेरा छा गया और मैं फिर से बेहोश हो गया. जब आँख खुली तो मैं वापिस उसी कमरे मे था जहाँ मुझे पहले रखा गया

था और मेरे सामने करीम बैठा था और मेरे मुँह पर पानी मार रहा था.

करीम : उठ जा मेरे बाप साला कबसे सोया पड़ा है.

मैं : (अपनी आँखें साफ करते हुए) करीम तू यहाँ...

करीम : हाँ मैं... अब बात सुन मेरी ये सब साले पागल हो गये हैं.लेकिन मैं जानता हूँ तू मेरा भाई है मेरा उस्मान.

मैं : तू यहाँ कैसे आया.

करीम : वो सब छोड़ ये ले मेरी गन और ये कुछ पैसे रख ले तेरे काम आएँगे और ये ले मेरी गाड़ी की चाबी... अब तू यहाँ से निकल जा.तेरा यहाँ रहना ठीक नही वरना छोटा ख्वाजा और उसके आदमी तुझे ठोक देंगे.

मैं : लेकिन तू....

करीम : मेरी फिकर मत कर यार तेरे वैसे ही मुझ पर बहुत अहसान है .आज बहुत मुद्दत के बाद मोक़ा मिला है यारी का हक़ अदा करने का .अब तू यहाँ से जा और यहाँ चले जाना(एक पर्ची मेरे हाथ मे देते हुए) यहाँ तू एक दम सेफ रहेगा और तुझे तेरे हर सवाल का जवाब भी मिल जाएगा. जो तू अक्सर सबसे पूछता रहता है और इस जगह के बारे मे किसी को कुछ भी मत बताना.

उसके बाद मुझे कमरे के बाहर फायर की आवाज़ सुनाई देने लगी. मैं पूरी तरह होश मे तो नही था फिर भी चलने के क़ाबिल था. मुझे करीम ने पकड़कर जल्दी से खड़ा किया और अपनी कोट की जेब से एक और गन निकाल ली और मेरे आगे आके खड़ा हो गया. और कमरे के बाहर मेरा हाथ पकड़कर ले गया. बाहर नीचे बहुत से लोग थे ,जो फायर कर रहे थे. वही बाल्कनी मे कुछ करीम के लोग भी थे जो जवाब मे फायर कर रहे थे, लेकिन नीचे खड़े लोगो की तादाद बहुत ज़्यादा थी और उपर खड़े लोग गिनती मे बस ५-६ ही थे. तभी एक गोली आके करीम के पेट मे लगी. जिससे वो वही गिर गया.मैने उसको जल्दी से

संभाला और करीम की दी हुई पिस्टल से मैने भी नीचे खड़े लोगो पर फायर करना शुरू कर दिया.

करीम : तू रहने दे उस्मान ! तू जा यहाँ से. हम लोग संभाल लेंगे.

मैं : पागल हो गया तुझे गोली लगी है.तू चल मेरे साथ जो होगा देखा जाएगा.

करीम : नही यार अपना साथ यही तक था.अब तू जा. मैं इनको ज़्यादा देर नही रोक पाऊंगा और याद रखना छोटा ख्वाजा तुझ पर मेरा उधार है.जब हाथ लगे तो साले के भेजे मे गोली मारना मेरी तरफ से. यहाँ किसी पर भी भरोसा मत करना सब साले कुत्ते हैं मेरी बात याद रखना.

मैं : (रोते हुए) यार तू कैसी बात कर रहा है.तुझे कुछ नही होगा. तू चल मेरे साथ, इन सब को मैं अकेला ही देख लूँगा और ख्वाजा को तू खुद मारेगा.

करीम : (हँसते हुए) शेर की आँख मे आँसू अच्छे नही लगते. तू जा यहाँ से.

तभी एक गोली मेरी गर्दन को छू कर निकल गई जिससे मेरी गर्दन से खून निकलने लगा और दर्द की एक तेज़ लहर मेरे पूरे बदन मे दौड़ गई. ये देखकर जाने करीम को क्या हुआ उसने मुझे पिछे धक्का दे दिया जिससे मैं ज़मीन पर गिर गया और खुद खड़ा होके अँधा-धुन्ध नीचे खड़े लोगो पर गोलियाँ बरसाने लगा. नशे के इंजेक्शन की वजह से मैं चाह कर भी कुछ नही कर पा रहा था. इससे पहले कि मैं खड़ा होता करीम सीढ़ियो से नीचे उतरने लग गया और उन लोगो पर अपनी दूसरी पिस्टल से भी गोलियाँ चलाने लगा. जब तक मैं वापिस अपने पैरो पर खड़ा हुआ नीचे सब लोग मर चुके थे. और करीम सीढ़ियो मे पड़ा तड़प रहा था उसके पूरे बदन से पानी की तरह खून निकल रहा था. मैं दवाई के नशे मे लड़-खडाता हुआ सीढ़ियो से नीचे की तरफ आया और जाके करीम को देखा तो वो भी मुझे छोड़ कर जा चुका था. मैने आज अपनी जिंदगी का सबसे कीमती दोस्त खो दिया था .जिसने जिंदगी के हर मोड़ पर मेरा साथ दिया था. मेरी आँखो मे आँसू और दिल मे छोटे ख्वाजा के लिए बे-इंतेहा नफ़रत थी. मैने अपने आँसू साफ किए और अपने दोस्त करीम का स्कार्फ जो वो हमेशा अपने हाथ पर बांधता था उसे उतार कर अपने हाथ पर बाँध लिया और वहाँ से सीधा घर के बाहर निकल गया और जल्दी से करीम की कार मे बैठ गया.

मैने कार स्टार्ट की और अपनी जेब मे हाथ डाल कर करीम की दी हुई पर्ची को देखने लगा. उसमे लिखा पता देखा और अपनी कार को तेज़ रफ़्तार से दौड़ा दिया .मैं नही जानता था कि करीम ने मुझे कहाँ भेजा है. मैं काफ़ी देर से गाड़ी चला रहा था और अब मैं उस इलाक़े से काफ़ी दूर भी निकल आया था.अचानक मुझे याद आया कि आज के हुए इस हादसे के बारे मे चौहान को बता दूं और अब आगे क्या करना है ये भी पूछ सकूँ. लेकिन फिर मुझे साजिद की याद आई और इतना तो मैं समझ गया कि ज़रूर चौहान के ऑफीस मे ही कोई खबरी है जो मेरी पल-पल की खबर छोटे ख्वाजा तक पहुँचा रहा है. इसलिए मैने चौहान को भी उस ठिकाने के बारे मे बताना ठीक नही समझा. क्योंकि ये मुमकिन था कि कोई चौहान का फोन भी टॅप कर रहा हो. यही सब सोचता हुआ मैं लगातार गाड़ी को दौड़ाता रहा. कुछ घंटे की ड्राइव के बाद मुझे हाइवे पर एक पेट्रोल पंप नज़र आया वहाँ मैने रुक कर अपनी गाड़ी मे फ़्यूल भरवाया.

मैं : सुनिए यहाँ कोई टेलिफोन है ! मुझे एक फोन करना है.

लड़का : जी साहब अंदर है कर लीजिए फोन.

मैं : (गाड़ी से बाहर निकलते हुए) शुक्रिया.

लड़का : साहब आपको तो बहुत चोट लगी है और आपकी गर्दन से खून भी निकल रहा है.

मैं : कोई बात नही ये ठीक हो जाएगा मेरा छोटा सा एक्सीडेंट हुआ था.

लड़का : बुरा ना मानो साहब ,तो मेरा घर पास ही है. अगर आप चाहे तो मैं आपकी पट्टी करवा सकता हूँ.

मैं : नही कोई बात नही शुक्रिया.

उसके बाद वहाँ पड़े एक पानी के घड़े से पहले मैने अपना मुँह धोया और अपनी गर्दन पर लगा खून साफ किया. क्योंकि इस बात को अब काफ़ी वक़्त हो गया था इसलिए जखम से खून निकलना बंद हो गया था और मेरी गर्दन पर लगा खून भी सूख गया था. उसके बाद मैं पेट्रोल पंप के अंदर चला गया और चौहान का नंबर डायल किया.

चौहान : हल्लो....

मैं : हल्लो चौहान साहब ! मैं सुजल बोल रहा हूँ.

चौहान : सुजल तुम... ये किसका नंबर है

मैं : चौहान साहब ये एक पेट्रोल पंप का नंबर है और यहाँ बहुत गड़बड़ हो गई है

चौहान : क्या हुआ....

उसके बाद मैने सारी बात तफ़सील से चौहान को बता दी...

चौहान : हमम्म ! ये तो बहुत गड़बड़ हो गई है और तुम्हारी बात एक दम सही है.मुझे भी लगता है कोई ना कोई मेरे दफ़्तर मे ही है जो छोटा ख्वाजा से मिला हुआ है. उस कमीने खबरी की वजह से ही मेरे सबसे खास इनफॉर्मर साजिद की जान गई है. खैर कोई बात नही वो सब मैं संभाल लूँगा. अब तुम ये बताओ कि अब तुम कहाँ हो.

मैं : पता नही चौहान साहब अभी तो मैं उसी शहर मे हूँ (मैने झूठ बोला क्योंकि करीम ने मुझे उस जगह के बारे मे किसी को भी बताने से मना किया था)

चौहान : तुम कुछ दिन के लिए अंडर-ग्राउंड हो जाओ. कुछ दिन बाद मुझसे काँटॅक्ट करना और मेरे मोबाइल पर फोन करके बताना कि तुम कहाँ हो फिर मैं तुमको तुम्हारा अगला कदम बताऊंगा. तब तक छोटे ख्वाजा को भूल जाओ.

मैं : जी ठीक है...

उसके बाद मैने फोन बंद किया और बाहर आ गया जहाँ वो लड़का खड़ा मेरा ही इंतज़ार कर रहा था. मैने उसको फ़्यूल के पैसे दिए और वापिस अपनी कार मे आके बैठ गया. और वापिस अपनी कार को तेज़ रफ़्तार से दौड़ा दिया.

२८

मुझे मेरी मंज़िल पर पहुँचते-पहुँचते रात हो गई थी. करीम ने जहाँ का मुझे पता दिया था मैं नही जानता था कि उसने मुझे कहाँ भेजा है. इसलिए मेरे दिमाग़ मे अब भी कई सवाल घूम रहे थे. कुछ ही देर मे मैं अपनी मंज़िल पर पहुँच गया l,जो एक बस्ती सी लग रही थी. वहाँ काफ़ी घरो मे रोशनी नज़र आ रही थी लेकिन मुझे जितना पता दिया गया था वो सिर्फ़ उस बस्ती तक का ही था.आगे मुझे पता नही था कि कौनसे घर मे जाना है. क्योंकि वहाँ मुझे बहुत से घर नज़र आ रहे थे. मैं कार से उतरा और एक घर का दरवाज़ा खट-खटाया. कुछ ही देर मे दरवाज़ा खुल गया. उस घर मे से एक आदमी बाहर आया.

मैं : जी इतनी रात को आपको तक़लीफ़ देने के लिए माफी चाहता हूँ दर-असल मुझे सलमान से मिलना था.

अभी मैने अपनी बात भी मुक़ाम्मल नही की थी कि मेरे सामने खड़ा आदमी मुझे देख कर खुश हो गया और मेरे गले से लग गया.

आदमी : उस्मान भाई तुम ज़िंदा हो.

मेरे कुछ समझ नही आ रहा था कि ये आदमी मुझे कैसे जनता है.

मैं : क्या आप मुझे जानते हैं.

आदमी : कैसी बातें कर रहे हो भाई ! तुमको यहाँ कौन नही जानता.तुम तो हमारे अपने हो. बाहर क्यो खड़े हो अंदर आओ.

मैं : जी शुक्रिया.

मेरी कुछ भी समझ नही आ रहा था कि ये मेरे साथ क्या हो रहा है. ये आदमी मुझे कैसे जानता है. तभी एक औरत मेरी तरफ आई और अदब से मुझे सलाम किया और मेरे सामने पानी का एक ग्लास रख दिया और वापिस अंदर चली गई. उस ख़ातून ने नक़ाब किया हुआ था इसलिए मैं उसका चेहरा नही देख पाया. तभी वो आदमी मेरे पास आया.

आदमी : तुम यही बैठो! मैं सारी बस्ती को बताके आता हूँ कि हमारा उस्मान वापिस आ गया है और हमारी दुआ रंग ले आई है.

मैं : अच्छा लेकिन तुम्हारा नाम क्या है

आदमी : कमाल है ४ दिन हम से दूर क्या हुए अब तुम मेरा नाम भी भूल गये हो. मैं सलमान हूँ तुम्हारे बचपन का साथी. तुम बैठो मैं अभी आया.

मैं चुप-चाप वहाँ बैठा रहा साथ ही पानी पीने लगा और चारो तरफ नज़र दौड़ा कर उस घर को देखने लगा घर कुछ खास नही बना हुआ था एक दम मेरे गाव के घर जैसा था. तभी एक छोटा सा बच्चा मेरे पास आया.

बच्चा : आप उस्मान चाचा हो ना.

मैं : (उस बच्चे को उठा कर अपनी गोद मे बिठाते हुए) हंजी बेटा ! मैं उस्मान हूँ.लेकिन आप मुझे कैसे जानते हो.

बच्चा : (उंगली से एक कमरे मे इशारा करते हुए) अम्मी ने बताया मुझे कि आप मेरे उस्मान चाचा हो.

मैं : अच्छा.... ये तो बहुत अच्छी बात है और आपका नाम क्या है.

बच्चा : मेरा नाम अली है !

मैं : (हँसते हुए) अच्छा जी.... तुम तो बहुत प्यारी बाते करते हो.

अभी मैं उस बच्चे से बात ही कर रहा था कि बाहर मुझे लोगो का शोर सुनाई दिया. इसलिए मैने उस बच्चे को अपनी गोद मे उठाया और बाहर जाके देखने लगा. बाहर बहुत से लोग जमा हो गये थे जो मुझे बड़ी हैरानी से देख रहे थे. तभी उस भीड़ मे से एक बूढ़ी सी औरत मेरे सामने आके खड़ी हो गई और मुझे बड़े गौर से देखने लगी. फिर बड़े प्यार से मुझे गले से लगा लिया और मेरा माथा चूम लिया साथ ही मुझे दुआ देने लगी.

अम्मा : (रोते हुए) कहाँ चला गया था बेटा अपनी अम्मा को छोड़ कर और इतना वक़्त तू था कहाँ.जानता है हमने तुझे कितना याद किया और तेरी सलामती के लिए कितनी दुआएँ की थी.

मैं : मेरा आक्सिडेंट हो गया था जिससे मेरी याददाश्त चली गई थी. आप लोग कौन है और मुझे कैसे जानते हैं.

अम्मा : मुझे पहचाना नही उस्मान मैं अम्मा हूँ.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) मुझे यहाँ करीम ने भेजा है.

अम्मा : करीम.... है कहाँ वो ना-मुराद .तू वापिस आ गया है और उसने हमे बताना भी ज़रूरी नही समझा.

उसके बाद मैने अपनी सारी कहानी अम्मा को और वहाँ खड़े तमाम लोगो को सुना दी और साथ ही ये भी बता दिया कि करीम के साथ क्या हुआ. ये सुनकर सब लोग बेहद दुखी हो गये.

अम्मा : क्या तक़दीर मिली है हमे.एक बेटा वापिस मिला तो दूसरा बेटा दूर चल गया.

मैं : अम्मा मैने उससे बहुत कहा था साथ चलने के लिए लेकिन वो माना ही नही और खुद उन लोगो से मेरे लिया लड़ता रहा. मेरे लिए अपनी जान क़ुरबान कर दी.

अम्मा : ऐसा ही था वो. तुझ पर तो जान देता था और तुम दोनो की दोस्ती को कौन नही जानता.

मैं : (रोते हुए) अम्मा मुझे बहुत अफ़सोस है कि मैं करीम के लिए कुछ कर नही पाया.

उसके बाद काफ़ी देर वहाँ सब लोग खड़े रहे और सब लोग मुझसे तरह-तरह के सवाल पूछते रहे. रात काफ़ी हो गई थी इसलिए अम्मा ने सबको जाने का कह दिया और मुझे वापिस सलमान के साथ एक घर मे भेज दिया जो मुझे बताया गया कि ये मेरा ही घर है. उसके बाद मैं उस घर के अंदर चला गया और पूरे घर को बड़े गौर से देखने लगा. घर काफ़ी

शानदार था और वहाँ रखी हर चीज़ काफ़ी कीमती लग रही थी. उस घर की एक-एक चीज़ मुझसे जुड़ी थी लेकिन जाने क्यो मुझे कुछ भी याद नही था. मैं उस घर की एक-एक चीज़ को बड़े गौर से देख रहा था और पहचाने की कोशिश कर रहा था. कुछ देर यहाँ-वहाँ घूमने के बाद मैं अपने बिस्तर पर आके लेट गया और दिन भर हुए तमाम हादसो के बारे मे सोचने लगा. कुछ ही देर मे मुझे नींद आ गई और मैं सुकून की नींद सो गया.

सुबह अपनी आदत के मुताबिक़ मैं जल्दी उठ गया और नहा-धो कर तैयार हो गया. उसके बाद सलमान का बेटा अली मुझे उसके घर बुलाने के लिए आ गया. वहाँ मैने सलमान ने और अली ने साथ मिल कर नाश्ता किया. फिर सलमान मुझे वही बैठने का कह कर खुद कहीं चला गया. मैं भी अब एक दम फारिग था इसलिए अली के साथ खेलने मे लग गया. कुछ देर बाद सलमान वापिस आ गया.

सलमान : चलो उस्मान चलें.

मैं : कहाँ चलना है.

सलमान : तुम चलो तो सही बहुत से लोग हैं जो तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं.

मैं : अच्छा चलो....

सलमान : सुनो पहले ये कपड़े बदल लो और ये जूते और लॉकेट भी उतार दो.

मैं : लेकिन क्यो

सलमान : सबर करो! तुमको तुम्हारे सब सवालो का जवाब मिल जाएगा.

उसके बाद मैं कपड़े बदलकर और सलमान के दिए कपड़े पहनकर सलमान के साथ घर से बाहर निकल गया जहाँ बाहर एक कार हमारा इंतज़ार कर रही थी. हम दोनो चुप-चाप उस कार मे जाके बैठ गये. कुछ देर बाद कार ने हम को एक खंडहर के बाहर उतार दिया.

मैं : सलमान ! ये कौनसी जगह है ?

सलमान : (खुश होते हुए) तुम चलो तो सही.

मैं सवालिया नज़रों से सलमान को देखता हुआ उसके पीछे-पीछे चलने लगा. खंडहर के अंदर घुसते ही बाहर मुझे कुछ लोग खड़े नज़र आए ,जिनके हाथ मे बंदूकें थी. उनको देखते ही मैं अलर्ट हो गया और अपना हाथ पीछे अपनी गन के उपर रख लिया ताकि ज़रूरत पड़ने पर मैं जल्दी से गन निकाल सकूँ. लेकिन वहाँ तो सब उल्टा हो गया था वो लोग मुझे देखते ही खुश हो गये और बारी-बारी मुझसे गले मिलने लगे. वो सब लोग मुझे देख कर बहुत खुश थे. उसके बाद एक आदमी जल्दी से एक क़बर के सामने जाके खड़ा हो गया उसने एक नज़र मुझे मुस्कुरा कर देखा और फिर क़बर पर लगे एक पत्थर को घुमा दिया जिससे क़बर किसी दरवाज़े की तरह खुल गई फिर वो आदमी मुझे पिछे आने का इशारा करके नीचे उतर गया. मैं भी बाकी लोगो के साथ उस क़बर के अंदर उतर गया जो कि बाहर से क़बर जैसी लगती थी लेकिन अंदर से एक ख़ुफ़िया रास्ता थी. लेकिन मुझे ये नही पता था कि ये रास्ता जाता कहाँ है. मैं बस उनके पीछे-पीछे चल रहा था.

कुछ ही देर मे हम एक आलीशान जगह पर खड़े थे. वहाँ नीचे बहुत से लोग पहले से मोजूद थे. सब ने बारी-बारी आके मुझे गले से लगाया और करीम का अफ़सोस किया. उसके बाद वो लोग मुझे एक कमरे मे ले गये जहाँ एक बुजुर्ग बेड पर लेटे हुए थे जिनके एक तरफ खून की बोतल लगी थी. शायद वो बहुत ज़्यादा घायल थे और उनके बाजू मे सूमा, गानी और लाला भी बैठे थे. उनको वहाँ देख कर मैं बेहद हैरान था कि ये लोग यहाँ कैसे हैं.

मैं : तुम दोनो यहाँ कैसे.

लाला : सब बताते हैं ! पहले बाबा से तो मिल ले .

मैं : (चौंकते हुए) क्या ये बड़े ख्वाजा साहब है?

सूमा : हाँ भाई !

बाबा : (हाथ उठाकर मुझे पास आने का इशारा करते हुए) यहाँ आओ बेटा.

मैं : (बाबा का हाथ चूमते हुए) लेकिन छोटा तो बोल रहा था ये दुबई मे हैं.

INDIAN BEST TELEGRAM ADULT (18) CHANNELS

हिंदी Adult स्टोरी, Adult कॉमिक्स, सबसे अनूठे देसी मस्ती भरे XXX वीडियोज, हिंदी एडल्ट शायरिया, फन्नी एडल्ट जोक्स का अनूठा संगम..!! 🔞💯

(*Top To Click Here Join*)

X Night Clubs

Click Here

Adult Comics Club

Click Here

Adult Shayari & Stories

Click Here

Night Club Chat Group

Click Here

18 Vargin Girls

Click Here

बाबा : (मेरा हाथ पकड़ते हुए) यहाँ बैठो बेटा. मैं जानता हूँ तुम्हारे दिमाग़ मे बहुत से सवाल है और आज मैं तुमको तुम्हारे हर सवाल का जवाब दूँगा. उसने तुम्हारे साथ ही नही बल्कि हम सब के साथ भी धोखा किया है. लेकिन पहले ये बताओ तुम इतना वक़्त तक थे कहाँ पर और वो कौन फरिश्ते थे जिन्होने तुमको बचाया.

मैने बाबा को अपनी गुज़री हुई तमाम जिंदगी के बारे मे सच-सच बता दिया. उसके बाद मैं अपने सवालो के जवाब चाहता था इसलिए मैने बारी-बारी बाबा से सवाल पूछने शुरू कर दिए.

बाबा : अब पुछो बेटा ! क्या पूछना चाहते हो ?

मैं : बाबा आप तो छोटे के वालिद हैं ! फिर आपके साथ उसने धोखा किसलिए किया....

बाबा : वो इंसान किसी का वफ़ादार नही.उसका पैसा ही मज़हब है और मक्कारी ही ईमान है.

मैं : लेकिन बाबा आपकी ऐसी हालत कैसे हुई.

बाबा : बेटा मैं बहुत पहले जान गया था कि वो मेरी जगह लेने के लिए किसी भी हद तक गिर सकता है. इसलिए मैने अपनी कुर्सी का वारिस उसे नही बल्कि तुम्हे बनाना चाहता था. लेकिन उस को ये बात पता चल गई और उसने दुनिया को ये बताया कि मैं दुबई मे हूँ जबकि मुझे अपने ही क़िले मे क़ैद कर दिया.कुछ दिन बाद उसने मेरी तमाम दोलत के बारे मे मुझसे पूछा जब मैने नही बताया तो उसने मुझे भी गोली मार दी. अब मेरे बाद मेरे वारिस तुम थे इसलिए उसने तुम पर भी धोखे से हमला करवा दिया तुमको अपने रास्ते से हटाने के लिए. जिसमे तुम तो बच गये लेकिन तुम्हारी याददाश्त ख़तम हो गई. उपर वाले के करम से मैं भी बच गया . फिर मेरे ये बच्चे तुमको बहुत दिन तक तलाश करते रहे लेकिन तुम्हारी कोई खबर नही मिली... छोटे को शक़ ना हो इसलिए सूमा, लाला, गानी और करीम उसकी गँग मे काम करते रहे सिर्फ़ इसलिए कि उसकी सारी खबर मुझ तक पहुँचती रहे. फिर एक दिन अचानक से तुम भी वापिस आ गये.लेकिन तुमको किसी की कोई खबर नही थी.तुम्हारे वापिस आ जाने से छोटे की कुर्सी को सबसे बड़ा ख़तरा हो गया. इसलिए उसने हर तरीके से तुमको नुकसान पहुँचाने की कोशिश की... रिंग मे भी तुम्हारे खिलाफ जो फाइटर खड़ा हुआ था उसको तुम्हे मारने के लिए कहा गया था.लेकिन तुमने

उसे ही मार दिया.फिर तुम्हारी कार मे उसने बॉम लगवाया लेकिन तुम उस दिन घर से बाहर ही नही निकले और तुम फिर बच गये. जब करीम को ये बात पता चली तो उसने तुमको कभी अकेला नही छोड़ा. बहाने से हमेशा लाला या करीम तुम्हारे साथ रहे. उसके बाद करीम ने तुम्हे अपने साथ रख लिया और हर क़दम पर बिना तुम्हे पता चले तुम्हारी हिफ़ाज़त करता रहा.

मैं : लेकिन बाबा इन्होने तो मुझे भी कभी कुछ नही बताया.

बाबा : बेटा जैसे तुम वापिस आए थे तुमको ये सब बताना ख़तरे से खाली नही था क्योंकि तुम पर नज़र रखी जा रही थी. इसलिए मैने ही इनको तुम्हे कुछ बताने से मना किया था.

मैं : एक बात समझ नही आई आपको मेरा पता कैसे चला.

बाबा : (मुस्कुराते हुए) बेटा तुम लोगो को मैने पैदा नही किया तो क्या हुआ लेकिन तुमको मैने पाला है और तुम सब की मैं रग-रग जानता हूँ.

मैं : बाबा अब मेरे लिए क्या हुकुम है.

बाबा : (अपने तकिये के नीचे हाथ डाल कर गन निकालते हुए) एक म्यान मे दो तलवारे नही रह सकती उस्मान ! तुमको उसे ख़तम करना होगा और मेरी कुर्सी संभालनी होगी.

मैं : बाबा वो आपका बेटा है.

बाबा : मेरे बेटे इस वक़्त मेरे साथ मोजूद हैं. जिसको मैं तुम्हे ख़तम करने के लिए बोल रहा हूँ वो मेरा तो क्या किसी का भी बेटा नही है. मुझे अफ़सोस होता है ऐसी औलाद पर, एक तुम लोग हो जो सिर्फ़ मेरी परवरिश के लिए अपनी जान तक दाँव पर लगाने को तैयार रहते हो. मेरे लिए एक वो है जो कुर्सी के लिए अपने ही बाप को मारना चाहता है.

मैं : जी बाबा जैसा आप चाहेंगे वैसा ही होगा.

बाबा : (मुस्कुराते हुए) मुझे तुमसे यही उम्मीद थी बेटा.

उसके बाद बाबा को हमने आराम करने दिया और हम सब बाहर आके बैठ गये .आज मैं बहुत खुश था क्योंकि एक मुद्दत के बाद मुझे सुकून मिला था.मैं अब अपने बारे मे सब कुछ जान चुका था.

मैं : लाला ! तुम लोगो से मैं अक्सर इतने सवाल पूछता था. कभी तो मुझे बता देते.

लाला : यार हम क्या करते ? बाबा का हुकुम था ! जब तक तू ठीक नही हो जाता तुझे कुछ ना बताया जाए. जानता है अगर छोटे को तेरे बारे मे पता ना चलता तो अब भी तुझे हम लोगो ने कुछ नही बताना था. लेकिन अफ़सोस उस कमीने को तेरे बारे मे सब पता चल गया और इसी चक्कर मे करीम को अपनी जान गँवानी पड़ी.

मैं : यमैं सच कहता हूँ अगर मुझ पर नशे का असर नही होता तो मैं करीम को खरॉच भी नही आने देता.

सूमा : हम जानते हैं यार ! तू हम सब के लिए अपनी जान भी दाव पर लगा सकता है. लेकिन क्या करते दोस्त तू एक क़ोरा काग़ज़ बनके वापिस आया था. तुझे ये सब कुछ बताते भी तो कैसे.

मैं : कोई बात नही ! तुम लोगो ने ठीक किया.

उसके बाद बाकी का दिन ऐसे ही गुज़रा.लेकिन आज मैं बहुत खुश था और दिल को एक तसल्ली थी कि मेरा भी कोई है. और सबसे बड़ी बात मुझे मेरा सुकून मिल गया था. क्योंकि जो सवाल हमेशा मेरे दिमाग़ मे घूमते रहते थे और मुझे परेशान करते थे,उनसे आज मुझे निजात मिल गई थी. मेरा दिल चाह रहा था कि मैं अपनी ये खुशी बाबा, जास्मिन, सलमा, हीना और नताशा के साथ भी बांटु. लेकिन अफ़सोस मैं उन लोगो से बहुत दूर था. मेरा दिल चाह रहा था कि काश वो भी आज मेरे साथ होते तो ये देख कर कितना खुश होते कि मेरा भी एक परिवार है.जिसमे उन सब लोगो की तरह ये लोग भी बे-इंतेहा प्यार करते हैं. ऐसी सोच के साथ मेरा पूरा दिन गुज़र गया.शाम को सलमान हम सब के लिए खाना ले आया जो हम सब ने मिलकर खाया. उसके बाद मैं सलमान के साथ वापिस अपनी बस्ती मे आ गया और अपने घर मे जाके सुकून से सो गया.

२९

रात को मैं सुकून से सोया पड़ा था कि अचानक किसी ने मेरा दरवाज़ा खट-खटाया. जिससे एक दम से मेरी नींद खुल गई. मैं अपनी आँखें मलता हुआ दरवाज़े के पास पहुँचा और दरवाज़ा खोल दिया. सामने एक लड़की खड़ी थी जो मुझे आँखें फाडे घूर-घूर कर देख रही थी. उसके पिछे सलमान और बाकी कुछ और लोग खड़े थे. वो लड़की शायद कही बाहर से आई थी क्योंकि उसके हाथ मे एक छोटा सा बॅग था और बाकी के कुछ बड़े बॅग्स सलमान ने उठा रखे थे.

मैं : सलमान तुम इतनी रात को यहाँ... और ये कौन है...

सलमान : ये... वो... (नीचे देख कर मुस्कुराते हुए)

इससे पहले कि सलमान अपनी बात पूरी करता वो लड़की ने बिना कुछ बोले मुझे अपने गले से लगा लिया और रोना शुरू कर दिया. मुझे कुछ समझ नही आ रहा था कि ये लड़की कौन है और मुझे इस तरह गले लगाकर क्यो रो रही है.

सलमान : (अपनी आँखों पर हाथ रखते हुए) अहम्...अहम्... अच्छा उस्मान भाई सुबह मिलेंगे.

लड़की : (मुझे गले लगाए हुए ही) चलो अंदर....

मुझे कुछ भी समझ नही आ रहा था कि इतनी रात को ये कौन लड़की है जो इस तरह मेरे घर मे घुस आई है और मुझे पर इतना हक़ जता रही है. वो लड़की मेरे देखते-देखते घर के अंदर चली गई और मैं उसके बाकी बॅग्स उठा कर घर के अंदर ले आया. इससे पहले कि मैं उस लड़की से कुछ पूछता वो फिर से आके मुझसे चिपक गई और उसने एक साथ मुझसे कई सवाल पूछ लिए.

लड़की : (मेरा चेहरा पकड़कर चूमते हुए) कहाँ चले गये थे मुझे छोड़कर.मेरी याद नही आई तुमको.जानते हो तुमने मुझे कितना रुलाया है.क्या हुआ ऐसा क्यो देख रहे हो मुझे जैसे पहली बार देखा हो.

मैं : (उसको खुद से दूर करते हुए) ये क्या बेहूदगी है कौन हो तुम....

लड़की : अच्छा... तो अब मैं कौन हो गई हूँ.... शाबाश... क्या बात है कोई नयी ढूँढ ली है क्या. जो अब मुझे पहचानना भी बंद कर दिया है.

मैं : देखिए मुझे कुछ भी याद नही है. आक्सिडेंट के बाद से मेरी याददाश्त जा चुकी है.

लड़की : (बेड से उठकर मेरे पास आते हुए) हाए.... ये कैसे हो गया.

उसके बाद मैने उसको सारी बात फिर से बता दी जिसको वो बड़े गौर से सुन रही थी.

लड़की : उस्मान तुमको मैं भी नही याद.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) नही... मुझे पिछला कुछ भी याद नही है.

लड़की : (परेशान होते हुए) ऊओ..... माफ़ करना मुझे पता नही था... मुझे सिर्फ़ इतना ही बताया गया कि मेरा उस्मान वापिस आ गया है.तो मैं खुशी से पागल हो गई थी और मुझसे सुबह तक भी इंतज़ार नही हुआ इसलिए मैं फॉरन चली आई.

मैं : आपका नाम क्या है.

लड़की : मेरा नाम शहनाज है !

मैं : अच्छा... तुम करती क्या हो.

शहनाज : मैं यतीम बच्चों की देखभाल करती हूँ और उनको पढ़ाती हूँ.... तुम्हारे जाने के बाद यही मेरी जिंदगी थी.

मैं : क्या तुम मेरी बीवी हो.

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) कह तो तुम बहुत साल से रहे हो कि शादी करेंगे लेकिन अभी तक वो दिन आया नही है.

मैं : तुमने खाना खा लिया...

शहनाज : तुमको देखते ही सारी भूख मिट गई.... अब तो सुबह ही खाएँगे दोनो साथ मे... खैर जाने दो ये सब... अब काफ़ी रात हो गई है बाकी बातें सुबह करेंगे... मैं कपड़े बदलने जा रही हूँ उसके बाद सो जाते हैं ठीक है.

मैं : ठीक है

मेरे घर मे एक ही बेड था इसलिए मैने उसको अपने बिस्तर पर सुलाना ही मुनासिब समझा और खुद अपना बिस्तर सोफे पर लगा लिया. इतनी देर मे शहनाज भी कपड़े बदलकर आ गई थी जो मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी.

शहनाज : क्या कर रहे हो जनाब.

मैं : बिस्तर कर रहा हूँ अपना.

शहनाज : सोफे पर....

मैं : हंजी बेड पर आप सो जाना मैं सोफे पर सो जाऊंगा.

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) हाए..! तुम इतने शरीफ कबसे हो गये... कोई ज़रूरत नही सोफे पर सोने की चलो यहाँ आओ और मेरे साथ आके सो जाओ.

मैं : क्या पहले भी हम साथ मे सोते थे.

शहनाज : हां बाबा.... पहले भी साथ मे ही सोते थे. अब चलो आओ यहाँ और आके सो जाओ. मैं तुमको खा नही जाऊंगी.

मैं : ठीक है

उसके बाद मैं उसके साथ जाके लेट गया. वो मेरी तरफ मुँह करके लेटी हुई थी और मुझे ही देख रही थी और मुस्कुरा रही थी. मैं उसको बड़े गौर से देख रहा था और याद करने की

कोशिश कर रहा था. लेकिन अफ़सोस मुझे कुछ भी याद नही आ रहा था. लड़की देखने मे काफ़ी खूबसूरत थी बड़ी-बड़ी आँखें, पतले से होंठ, तीखा सा लेकिन बहुत छोटा सा नाक और गालो पर पड़ने वाली बालो की छोटी सी लट तो उउफफफ्फ़ एक दम जानलेवा थी. मैं काफ़ी देर उसको देखता रहा और वो मुझे देख रही थी और मुस्कुरा रही थी इसलिए मैने ही बात शुरू की.

मैं : क्या हुआ शहनाज.

शहनाज : (ना मे सिर हिलाते हुए) मुझे अपनी किस्मत पर यक़ीन नही हो रहा कि तुम वापिस आ गये हो. जानते हो तुम्हारे बिना एक-एक दिन मैने मौत जैसा गुज़ारा है.

मैं : अब तो वापिस आ गया हूँ ना

शहनाज : लेकिन अब तुम पहले जैसे नही हो.

मैं : क्यो पहले मे और अब मे क्या फरक पड़ा है ओर मैं पहले कैसा था.

शहनाज : एम्म्म... पहले बहुत बदमाश थे हमेशा मुझे सताते रहते थे अब तो....

मैं : अब तो क्या....

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) कुछ नही जाने दो... एक बात बोलूं अगर तुमको ऐतराज़ ना हो तो.

मैं : हमम्म बोलो.

शहनाज : तुमको गले लगने का बहुत दिल कर रहा है.अगर तुमको ऐतराज़ ना हो तो.

ये बात सुनकर जाने क्यो मैने खुद उसे गले लगा लिया. ये पहली बार था जब मैं खुद उसको अपने गले से लगाया था. मेरे बिना कुछ बोले इस तरह गले लगाने से वो भी बहुत खुश हो गई और उसने भी अपनी उपर वाली बाजू मेरी कमर मे डालकर मुझे ज़ोर से पकड़ लिया. कुछ देर वो ऐसे ही मेरे साथ गले लगी लेटी रही फिर अचानक मुझे ऐसा महसूस

हुआ जैसे वो रो रही हो. इसलिए मैने फॉरन उसका चेहरा अपने हाथो से पकड़कर उपर किया तो वो सच मे रो रही थी.

मैं : (उठकर बैठते हुए) क्या हुआ रो क्यो रही हो... मेरा तुमको गले लगाना बुरा लगा?

शहनाज : (आँसू साफ करते हुए और ना मे सिर हिलाते हुए) नही बहुत अच्छा लगा और ये तो खुशी के आँसू हैं... जानते हो इस पल का मैने कितना इंतज़ार किया है.

मैं : मुझे माफ़ कर दो. मैं भी तुमको छोड़ कर नही जाना चाहता था. लेकिन उस दिन जाने मे क्यो चला गया और उसके बाद मेरे साथ ये सब हो गया. मैं तो तुम्हारा दर्द भी नही बाँट सकता क्योंकि मुझे कुछ भी याद नही है.

शहनाज : कोई बात नही ! अब मैं आ गई हूँ ना तुमको सब याद आ जाएगा. और आगे से मुझे कभी छोड़कर कभी मत जाना.

मैं : (कान पकड़ते हुए) नही जाऊंगा.

उसके बाद हम दोनो फिर से लेट गये.इस बार वो मेरे उपर लेटी थी ओर मेरी गाल पर अपने नाज़ुक से हाथ फेर रही थी.

शहनाज : तुमने मूच्छे साफ करदी अपनी.

मैं : हमम्म ..! क्यो अच्छा नही लग रहा ?

शहनाज : नही... नही... बहुत अच्छे लग रहे हो. उल्टा मैं तो खुद तुमको इससे साफ करने को कहती थी. लेकिन तुम हमेशा ये कहकर मना कर देते थे कि मूछ के बिना शेर अच्छा नही लगेगा. अब खुद ही देखो मेरा शेर क्लीन शेव कितना सेक्सी लगता है. (मेरी गाल चूमते हुए)

मैं : (बिना कुछ बोले मुस्कुराते हुए) कमाल है आज तक तो लड़कियाँ ही कामुक होती थी. अब लड़के भी कामुक हो गये हैं...

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) तुम तो मेरे सब कुछ हो.... मेरी जान हो.

मैं : जानती हो मुझे दो दिन हो गये यहाँ आए हुए और तुम मुझे आज मिलने आई हो.

शहनाज : मैं क्या करती. मुझे सलमान भाई जान ने बताया ही आज है.नही तो तुमको क्या लगता है मैं रुकने वाली थी क्या. तुमको नही पता मैने तुम्हारे बिना ये वक़्त कैसे निकाला है .तुम साथ होते थे तो ऐसा लगता था मेरी हर खुशी मेरे पास है ,मैं हमेशा महफ़ूज़ हूँ .लेकिन तुम्हारे जाने के बाद तो जैसे मेरी दुनिया ही लूट गई थी. मैं सारा दिन रोती रहती थी और यही तुम्हारे घर मे ही पड़ी रहती थी. फिर एक दिन सलमान भाई जान की बीवी असमा भाभी ने मुझे समझाया ओर मैने तुम्हारे अधुरे सपने को ही अपना मक़सद बना लिया.

मैं : मेरा सपना.... कौनसा.

शहनाज : तुम्हारी ख्वाहिश थी कि तुम अपना एक यतीम खाना खोलो .जहाँ तमाम बे-घर बच्चो को अच्छी तालीम और अच्छा खाना पीना मिल सके .इसलिए मैने बाबा की इजाज़त से तुम्हारा सपना पूरा किया और तुम्हारे नाम से एक यतीम खाना खोल दिया. बस अब मैं सारा दिन उन्ही बच्चो को पढ़ती रहती हूँ.

मैं : ये तो तुम बहुत नेक़ काम कर रही हो.

उसके बाद हम सुबह तक ऐसे ही बातें करते रहे. सुबह कब हुई हम दोनो को पता ही नही चला. लेकिन एक रात मे मैं शहनाज के बहुत नज़दीक आ गया था. उसमे एक अजीब सा अपनापन था जिसने मेरे दिल मे उसके लिए जगह बना दी थी. कुछ देर ऐसे ही बातें करने के बाद हम दोनो सुबह जल्दी तैयार हो गये. क्योंकि हमे बड़े ख्वाजा साहब (बाबा) से मिलने भी जाना था.

हम सुबह बाबा से मिलने चले गये.वहाँ कोई ख़ास बात नही हुई. बाबा शहनाज से यतीम खाने के बारे मे पूछते रहे. बाबा हम दोनो को एक बार फिर साथ देखकर बहुत खुश थे. उसके बाद शहनाज मुझसे कही घूमने चलने की ज़िद्द करने लगी. इसलिए बाबा से मिलकर वहाँ से हम एक जीप मे बैठे और घूमने चले गये. मैं शहनाज से बातें करते हुए गाड़ी चला रहा था कि ,अचानक एक कार तेज़ रफ़्तार से मेरे पास से गुज़र गई और आगे जाके कुछ दूरी पर सड़क के बीच मे रुक गई .जिसने मुझे भी चोन्का दिया और मैने भी अपनी जीप रोक दी. इससे पहले कि मैं कुछ समझ पता सामने खड़ी कार का दरवाज़ा खुला और उसमे

से कुछ लोग निकले और मेरी जीप पर अँधा-धुन्ध गोलियाँ चलाने लगे. मैं इस अचानक हमले के लिए तैयार नही था. ना ही उनसे मुक़ाबला करने के लिए उस वक़्त मेरे पास कोई हथियार था. गोली जब जीप के सामने वाले काँच पर लगी तो मैने शहनाज को पकड़कर नीचे कर दिया ताकि गोली शहनाज को ना लग जाए और जीप को रिवर्स मे पिछे की तरफ चलाने लगा.

शहनाज : उस्मान ये कौन लोग है ? जो पागलो की तरह हम पर गोलियाँ चला रहे हैं.

मैं : पता नही शायद छोटे ख्वाजा के लोग हैं.

शहनाज इस तरह अचानक हुआ हमले से बहुत ज़्यादा डर गई थी इ.सलिए मैने वहाँ से निकलना ही मुनासिब समझा. मैं पूरी रफ़्तार से गाड़ी पिछे की तरफ दौड़ा रहा था और वो लोग लगातार हमारी जीप पर गोलियाँ चला रहे थे. अब हम उनसे काफ़ी दूर आ गये थे. इसलिए वो लोग वापिस कार मे बैठ गये और कार को हमारी तरफ भगाने लगे. मैने भी गाड़ी घुमा कर रोड की जगह जंगल मे जीप को घुसा दिया था. मैने अपनी जीप बंद की और शहनाज को जीप से उतारकर थोड़ी दूरी पर एक पेड़ के पीछे खड़ा कर दिया जिससे सामने से वो किसी को नज़र नही आ सकती थी.

मैं: तुम यही रूको मैं अभी आता हूँ.

शहनाज : कहाँ जा रहे हो उस्मान उनके पास हथियार है.

मैं : डरो मत कुछ नही होता. उनके पास हथियार है तो उस्मान खुद एक हथियार का नाम है.

शहनाज : मत जाओ ना... मुझे डर लग रहा है.

मैं : (उसका गाल को सहलाते हुए) कुछ नही होगा .फिकर मत करो.मैं बस अभी आ रहा हूँ.

तब तक वो कार भी जंगल के बाहर रुक चुकी थी और उसमे बैठे तमाम लोग जंगल के अंदर आ चुके थे. वो पांच लोग थे और सबके हाथ मे पिस्टल थी. इसलिए मैं सामने से

उनका मुक़ाबला नही कर सकता था. इसलिए मैने एक तरकीब सोची और एक पेड़ पर चढ़ गया जिसकी लताये नीचे ज़मीन पर लटक रही थी. मैने पेड़ पर चढ़ कर कुछ लताओ को पकड़ा और उनका एक फँदा बना लिया. पेड़ बहुत घना था इसलिए नीचे से मुझे कोई देख नही सकता था.लेकिन मैं सबको देख पा रहा था उनमे से २ लोग जल्दी से जीप के पास आए और अंदर देखने लगे जब जीप खाली मिली तो १ आदमी वही खड़ा हो गया और बाकी ४ लोग इधर उधर मुझे ढूँढने लगे. जो १ आदमी जीप के पास खड़ा था उस तक मैं आराम से पहुन्च सकता था. इसलिए मैने वो लताओ का बनाया हुआ फँदा नीचे फैंका और उस आदमी के गले मे डाल कर झटके से उपर खींच लिया वो आदमी वही मर गया. फिर मैने पेड़ से नीचे छलाँग लगाई और जीप के नीचे घुस गया और बाकी के लोगो का इंतज़ार करने लगा तभी २ लोग वापिस आते हुए नज़र आए. मुझे नीचे से सिर्फ़ ४ टांगे ही नज़र आ रही थी इसलिए मैने नीचे से वो दोनो लोगो की टाँगो को पकड़ कर खींच दिया जिससे वो दोनो गिर गये. मैं जल्दी से बाहर निकला और पूरी ताक़त के साथ अपने दोनो घुटने उन दोनो के सिर मे मारे जिससे वो दोनो भी वही ढेर हो गये. मैने जल्दी से उन दोनो को धकेल कर जीप के नीचे कर दिया ताकि उनके साथी उनको देख ना सके.

अब सिर्फ़ २ लोग बचे थे जो ना-जाने कहाँ चले गये थे. मैं वापिस पेड़ पर चढ़ कर उनका इंतज़ार करने लगा कुछ देर इंतज़ार करने के बाद जब कोई नही आया तो मैने पेड़ से नीचे उतरने का सोचा. तभी १ आदमी सामने से आता हुआ नज़र आया इसलिए मैं वही रुक गया. वो आदमी चारो तरफ देखने लगा शायद वो अपने साथियो को तलाश कर रहा था. मैं उस पर भी हमला करना चाहता था लेकिन वो आदमी मुझसे कुछ दूरी पर खड़ा था इसलिए उसको पास बुलाने के लिए मैने उस आदमी को नीचे फैंक दिया जिसको मैने लताओ का फँदा लगाके मारा था. मेरी ये तरकीब काम कर गई वो दौड़ता हुआ आया और अपने आदमी को देखने लगा. इससे पहले कि वो उपर देखता मैने उसके उपर छलाँग लगा दी. लेकिन इस अचानक हमले से उसकी गन से फायर निकल गया जिसकी आवाज़ पूरे जुंगल मे गूज़ गई. मैने जल्दी से उसकी गन पकड़ी और उसके मुँह मे उसकी पिस्टल डाल कर फायर कर दिया वो भी वही ढेर हो गया. लेकिन अब जो आखरी बचा था वो शायद अलर्ट हो गया था गोली की आवाज़ सुनकर इसलिए. मैं जानता था कि वो अपनी कार के पास ही भागेगा. इसलिए मैं फॉरन तेज़ी से भागता हुआ उसकी कार के पास चला गया. मैं उसको मारने के चक्कर मे ये भी भूल गया कि शहनाज मेरे साथ थी. जिसको मैने जंगल मे अकेला छोड़ दिया है. कुछ ही देर मे वो आदमी मुझे शहनाज के साथ नज़र आया उसने शहनाज के सिर पर गन लगा रखी थी ओर मुझे आवाज़ लगा रहा था.

आदमी : उस्मान जहाँ भी है ,बाहर आजा ! नही तो ये लड़की गई समझ.

मेरे पास भी अब एक पिस्टल थी.लेकिन मैं शहनाज की जान का जोखिम नही ले सकता था. इसलिए चुप-चाप बाहर आ गया ओर पिस्टल को पिछे अपनी बेल्ट मे सेट कर लिया ताकि उसको पिस्टल नज़र ना आए.

आदमी : सामने आके खड़ा होज़ा.

मैं : लड़की को छोड़ दे.

आदमी : नही तो क्या कर लेगा. अगर मैं चाहूं तो तुम दोनो को यही दफ़न कर सकता हूँ.

मैं : तेरे जैसे कितने ही आए और आज ज़मीन के ४ फीट नीचे पड़े हैं. इसलिए मुझे गुस्सा मत दिला और इसको छोड़ दे. तेरी जान बक्ष दूँगा नही तो साले तडपा-तडपा कर मारूँगा.

आदमी : (हँसते हुए) रस्सी जल गई लेकिन बल नही गया. गुस्सा आ गया तो क्या कर लेगा.... लगता है तुझे गोली मार कर ही यहाँ से लेके जाना पड़ेगा तू ज़िंदा तो चलेगा नही.

ये सुनकर शहनाज को जाने क्या हुआ.उसने उस आदमी की कलाई पकड़ी जिसमे उसने गन पकड़ी थी और झटके से घुमा दिया और भाग कर मेरी तरफ आ गई. अब वो आदमी अकेला था और उसके हाथ से गन गिर चुकी थी. मैने जल्दी से ज़मीन पर गिरी उसकी पिस्टल को ठोकर मार कर दूर फैंक दिया और उसकी तरफ गुस्से से बढ़ा और जाते ही मैने उसकी नाक पर अपने सिर की टक्कर मारी जिससे उसके नाक से खून निकलने लगा. अब मैने उसकी एक बाजू को पकड़ा और सीधा करके घुमा दिया और अपने घुटने के जोड़ मे फसा लिया और उल्टी तरफ खींच दिया. जिससे उसका हाथ टूट गया वो दर्द से चीख और चिल्ला रहा था. अब यही मैने उसके दूसरे हाथ के साथ भी किया और अब उसके दोनो हाथ टूट चुके थे. वो ज़मीन पर गिरा हुआ रो रहा था और चिल्ला रहा था. मैं जल्दी से उस पेड़ के पास गया जहाँ वो लताये लटक रही थी. वहाँ से मैने कुछ लताये तोड़ी और उनका एक फँदा बना लिया और वापिस आके उसके एक पैर मे डाल दिया.जबकि दूसरा सीरा मैने जीप के पिछे बाँध दिया. मैने शहनाज को साथ लिया और हम दोनो जल्दी से जीप मे बैठ गये. अब मैं तेज़ रफ़्तार से जीप चलानी शुरू कर दी और बँधा होने की वजह से वो आदमी भी सड़क पर घसीटता हुआ हमारे साथ आ रहा था. कुछ ही देर मे हम अपने इलाक़े मे

पहुँच चुके थ जहाँ सब लोग उसको गौर से देख रहे थे. तभी सलमान और मेरे कुछ लोग दौड़ते हुए मेरी जीप के पास आए.

सलमान : उस्मान ये आदमी कौन है.

मैं : मुझ पर हमला हुआ था आज... ५ लोग थे बस यही बचा है.

सलमान : क्या बात कर रहा है. तुम दोनो ठीक तो हो.

मैं : हम ठीक है.... लेकिन इसका क्या करना है अब.

सलमान : करना क्या है इसको तो मेरे हवाले कर दे.

शहनाज : भाई जान ज़्यादा मत मारना पहले ही उस्मान ने इसको बहुत मारा है.

सलमान : (हँसते हुए) अच्छा भाभी.... उस्मान तू खंडहर पर चला जाना बाबा के पास. इसको मैं देख लूँगा.

मैं : ठीक है...

उसके बाद मैने फिर से जीप दौड़ा दी और अपने घर के सामने लाके जीप को रोक दिया. फिर हम दोनो जैसे ही जीप से उतरे तो बाकी के लोग हमारे पास आ गये और हमारा हाल-चाल पूछने लगे. मैने शहनाज को अम्मा के पास छोड़ा और खुद खंडहर पर चला गया. वहाँ लाला पहले से मोजूद था.जिसने मुझे गले लगाकर मेरा इस्तक़्बाल किया. फिर हम दोनो बाबा के पास चले गये. बाबा को मैने तमाम हादसे के बारे मे बता दिया.

बाबा : हमम्म ..! तो वो ज़लील इंसान यहाँ तक पहुँच गया है. बेटा इसलिए मैं तुमको कहता था कि तुम अब अपनी कुर्सी संभाल ही लो ताकि ये रोज़-रोज़ का खून खराब तो बंद हो जाए. जब तक मेरी कुर्सी खाली रहेगी, कोई ना कोई उसको हासिल करने की कोशिश करता रहेगा.

मैं : तो बाबा मेरे लिए क्या हुकुम है.

बाबा : मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी कुर्सी को संभाल लो... पता नही अब मैं ओर कितने दिन हूँ मैं चाहता हूँ कि मेरे होते हुए ही तुम मेरी कुर्सी पर बैठ जाओ.

मैं : लेकिन बाबा अभी मैं ठीक कहाँ हुआ हूँ.मुझे कुछ भी याद नही है.

बाबा : नही ठीक हुए तो ना सही... तुम्हे अब तक का तो सब कुछ याद है ना. बस उतना ही काफ़ी है. बाकी मैं तुमको सब बता दूँगा.

लाला : हाँ उस्मान बाबा ठीक कह रहे हैं.

मैं : ठीक है बाबा.... जैसा आप बेहतर समझे.

मेरी ये बात सुनकर बाबा बहुत खुश हुए ओर मुझे गले से लगा लिया.

बाबा : लाला जाओ जाके मीटिंग का एलान करो ओर सबको यहाँ बुलाओ और बता दो कि मेरा वारिस आ गया है. अपनी कुर्सी संभालने के लिए.

लाला : जी बाबा ! अभी सबको फोन कर देता हूँ.

बाबा : उस्मान बेटा मेरे पास आओ और मैं तुमको हमारे बिजनेस का तमाम राज़ बता देता हूँ.लेकिन पहले जाके दरवाज़ा बंद करके आओ.

उसके बाद मैने दरवाज़ा बंद कर दिया और बाबा के पास जाके बैठ गया .बाबा ने मुझे तमाम बिजनेस के बारे मे बताया और ये भी बताया कि कौनसा बिजनेस कैसे चलाना है और उसको कौन आदमी बेहतर चला सकता है. साथ ही उन्होने मुझे तमाम दौलत और पैसे के बारे मे बताया. फिर उन्होने आज तक कमाए तमाम सोने के बारे मे मुझे बताया जिसके पिछे छोटा पड़ा था और मुझे बाबा ने ये भी बताया कि तमाम दौलत कहाँ पर पड़ी है और हर सेफ को खोलने का तरीका क्या है.

शाम होने तक हमारे धंधे से जुड़े तमाम लोग वहाँ मोजूद थे जिनमे छोटा ख्वाजा और इकबाल भी था. सबका इज़्ज़त के साथ इस्तक़्बाल हुआ और उनको हॉल मे बिठा दिया गया. मैं बाबा के साथ ही था. क्योंकि बाबा अब चल नही पाते थे इसलिए हमने उन्हे व्हील

चेयर पर बिठा दिया और मैं खुद व्हील चेयर को चला कर बाबा को हॉल तक लेकर गया. बाबा के आते ही सब लोग बाबा के लिए खड़े हो गये और बाबा ने हाथ के इशारे से सबको बैठने को कहा. कुछ देर सब लोग बाबा की तबीयत पूछते रहे. उसके बाद बाबा ने काम की बात शुरू की.

बाबा : आप सब इतने कम वक़्त मे यहाँ आए उसका शुक्रिया.

१ आदमी : बाबा लेकिन आपने आज इतने दिन बाद हम सब को एक साथ कैसे याद फरमाया.

बाबा : आप सब तो जानते ही हैं कि अब मुझ मे वो ताक़त नही रही कि मैं अपना इतना फैला हुआ बिजनेस संभाल सकूँ. इसलिए मैने अपना ये सारा बिजनेस आप मे से ही किसी एक को देने का फ़ैसला किया है.

छोटा : इसमे फ़ैसला क्या करना है बाबा आपका बेटा मैं हूँ .तो आपकी कुर्सी पर पहला हक़ भी मेरा है.

बाबा : बेटा हो जाने से काबिलियत नही आ जाती. मैं अपनी कुर्सी उसको दूँगा जो ना सिर्फ़ मेरी कुर्सी को संभाल सके, बल्कि मेरे बनाए बिजनेस को बढ़ा भी सके.

आदमी : अगर छोटा नही है तो फिर वो कौन है बाबा.

बाबा : आज के बाद से उस्मान ही मेरी कुर्सी संभालेगा. इसका हर हुकुम मेरा हुकुम है.अब से ये जिसको जो भी धंधा देगा उसको वही संभालना होगा और महीने की सारी कमाई लाके तुम सब पहले की तरह अब उस्मान को दोगे. जिसमे से उस्मान तुम लोगो का हिस्सा तुमको देगा.

मेरा नाम सुनते ही वहाँ बैठे तमाम लोग खुश हो गये और मेरे लिए तालियाँ बजाने लगे तभी इकबाल और छोटे का मुँह गुस्से से लाल हो गया.

छोटा : बाबा आप ये ठीक नही कर रहे. मेरा हक़ आप किसी और को कैसे दे सकते हैं.

बाबा : मुझे तुमसे सीखने की ज़रूरत नही है कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नही समझेm तुमको जो मिला है उसी से काम चलाओ ,क्योंकि तुम उसके ही लायक हो.

छोटा : (गुस्सा होते हुए) मुझे आपकी खैरात नही चाहिए जो आपने मुझे दिया है वो भी संभाल कर रखू .मैं जा रहा हूँ यहाँसे.आपको क्या लगता है आपकी कुर्सी पर अगर ये बैठ जाएगा तो ये मुझसे बेहतर बिजनेस को संभाल पाएगा.

बाबा : मुझे लगता नही है ,मैं जानता हूँ ! ये मेरा हर बिजनेस को दोगुना कर देगा.

छोटा : ज़िंदा रहेगा तब करेगा ना...

लाला : यहाँ से दफ्फा हो जा नही तो तेरा फ़ैसला मैं यही कर दूँगा.

बाबा : (हाथ से लाला को इशारा करते हुए) मैने जो कहा है वो मेरा आखरी फ़ैसला है .जिसको भी मेरा फ़ैसला मंजूर है वो यहाँ शाँक से बैठा रह सकता है. जिसको ऐतराज़ है वो छोटे के साथ जा सकता है.

बाकी के तमाम मोजूद लोगो ने एक आवाज़ मे एक साथ कहा " हमे आपके फ़ैसले से कोई ऐतराज़ नही है" उसके बाद बाबा के इशारे पर आज पहली बार मैं बाबा की कुर्सी पर जाके बैठ गया और मुझे जैसा बाबा ने समझाया था मैने सबको उनके हिस्से के बिजनेस चलाने को दे दिए.

कुछ देर वहाँ बैठने बाद बाबा आराम करने के लिए चले गये. इसलिए मैं उनको वापिस उनके कमरे मे छोड़ आया और खुद वापिस आके अपने बाकी लोगो के पास जाके बैठ गया और हम सब को उनके काम को चलाने के बारे मे समझाने लगा. रात को सब ज़िद्द करने लगे कि मेरे कुर्सी संभालने की खुशी मे जशन होना चाहिए इसलिए रात को लड़कियो को बुलाया जिन्होने महफ़िल मे चार-चाँद लगा दिए ओर तमाम आए मेहमानो को मदहोश कर दिया.

३०

ऐसे ही कुछ दिन गुज़र गये. अब मैं सारा काम सीख चुका था. हर काम को मैं बहुत अच्छे से मुक़ाम्मल कर रहा था. जिसे देख कर बाबा भी बहुत खुश हो रहे थे कि उनका फ़ैसला सही था. मैं सोच भी नही सकता था कि जहाँ मुझे एक इनफॉर्मर बनाके भेजा गया था, वहाँ के तमाम गिरोह का अब मैं हेड बन गया था. अब मैं मेरी मर्ज़ी का मालिक था इसलिए अपने तरीके से अपने बिजनेस को चलाने मे लग गया.कुछ ही दिन मे मैने बिजनेस को बढ़ाना शुरू कर दिया. मेरे बिजनेस मे जितनी भी रुकावट थी सबको मैने हटा दिया था .क्योंकि जो भी मेरे काम के बीच मे आ रहा था मेरे लोग उसे ख़तम करते जा रहे थे. अब तो ये आलम था कि छोटा और इकबाल भी डर कर कही अंडरग्राउंड हो गये थे. मेरी ताक़त दिन-ओ-दिन बढ़ती जा रही और मेरा गँग भी बड़ा होता जा रहा था जिसमे मैने हर काम के लिए स्पेशलिस्ट रखे हुए थे जो मेरे एक हुकुम के गुलाम थे. मैं ताक़त के नशे मे ये भी भूल चुका था कि मुझे चौहान ने किस मक़सद से यहाँ भेजा था. ना तो मेरे दिमाग़ मे जास्मिन थी ना ही हीना और नाही सलमा थी यहाँ तक की मुझे बेटा मानने वाले बाबा को भी मैं भूल गया. ऐसे ही मुझे काम करते हुए १ महीना हो गया था.

लेकिन महीने के आखरी दिन जब तमाम लोग अपने बिजनेस की कमाई मेरे पास लेके आए तो मैने उन सबको उनका हिस्सा वापिस दे दिया और बाकी का तमाम पैसा बाबा की ही तरह सेफ मे रखने चला गया ,जो नीचे बाबा के कमरे के नीचे जाती एक सुरंग मे बना हुआ था. जहाँ सिर्फ़ मैं ही जा सकता था क्योंकि बाबा ने सिर्फ़ मुझे ही वहाँ जाने का रास्ता बताया था. सबसे पहले मैं सारा पैसा लेके बाबा के पास गया और उनको हिसाब दिया.

मैं : बाबा ये तमाम महीने की कलेक्शन है.

बाबा : बेटा ये तो पहले से काफ़ी ज़्यादा लग रही है. तुमने सबको उनका हिस्सा तो दे दिया है ना.

मैं : जी बाबा सबको दे दिया है.

बाबा : ठीक है बेटा... अब मुझे नीचे लेके चलो और एक बार मेरे सामने तुम मुझे सेफ खोल कर दिखा दो तो मुझे भी तसल्ली हो जाएगी.

मैं : जी बाबा.

उसके बाद मैने बाबा को उनकी व्हील चेयर पर बिठाया और उनको नीचे बनी सुरंग मे ले गया और उनको तमाम सेफ खोल कर दिखा दिए. जिसे देखकर वो बहुत खुश हुए. बाबा तमाम सेफ के बारे मे मुझे साथ-साथ बताते भी जा रहे थे कि कहाँ कौनसी चीज़ पड़ी है. तभी एक छोटे से लॉकर पर मेरी नज़र गई.

मैं : बाबा उसमे क्या है.(छोटे लॉकर की तरफ इशारा करते हुए)

बाबा : बेटा उसमे हमारे बिजनेस की ही फाइल्स है. जिसमे हमारे तमाम दुश्मनो के नाम हैं .साथ ही कुछ फाइल्स ऐसी है जिसमे हमारे पुलिस मे कौन-कौन से लोग काम करते हैं उनके नाम हैं और बाकी कुछ हमारे विदेशो मे जो लोग कॉंटॅक्ट्स है उनकी डीटेल्स हैं.

मैं : तो बाबा अपने वो फाइल मुझे पहले क्यो नही दी दुश्मनो का भी इलाज कर देते.

बाबा : नही बेटा अभी वो लोग अंडरग्राउंड है तो रहने दो.तुम अपने काम पर ध्यान दो. जब वो लोग अपनी टाँग अड़ाएँगे तो उनको रास्ते से हटा देना.

मैं : जी बाबा जैसा आप कहे.... बाबा आपको ऐतराज़ ना हो तो क्या मैं वो लॉकर भी खोल कर देख लूँ. (छोटे लॉकर की तरफ इशारा करते हुए)

बाबा : (मुस्कुराते हुए) ऐतराज़ कैसा बेटा अब तो सब तुम्हारा है जो चाहे करो.

मैं : (खुश होते हुए) शुक्रिया बाबा.

उसके बाद मैने जल्दी से लॉकर खोला और अपने दुश्मनो की फाइल खोल कर देखने लगा. उसमे हर आदमी की फोटो के साथ तमाम डीटेल भी साथ दर्ज थी .जिनमे तक़रीबन लोगो को मेरे लोग ख़तम कर चुके थे. उसके बाद मैने दूसरी फाइल उठाई जिसमे हमारे दूसरे मुल्क़ो मे कहाँ-कहाँ कॉंटॅक्ट्स है उन सब के बारे मे था. लेकिन तीसरी फाइल वो थी जिसमे हमारे पुलिस मे कितने लोग काम करते थे उनके बारे मे लिखा था. मैने जल्दी से वो फाइल भी निकाली और १-१ पेज पलटकर देखने लगा .लेकिन एक पेज के आते ही मेरे

होश उड़ गये क्योंकि मैं कभी सोच भी नही सकता कि ये इंसान भी धोखेबाज़ निकलेगा. मतलब इसी ने साजिद की ओर मेरी खबर छोटे तक पहुँचाई थी.

मैं हैरान परेशान उस फाइल मे लगी तस्वीर को देख रहा था. मेरा सारा बदन ठंडा पड़ गया था और मैं समझ नही पा रहा था कि मेरे साथ ये क्या हो गया है. क्योंकि वो तस्वीर किसी और की नही बल्कि इंस्पेक्टर चौहान और नताशा की थी. इन दोनो पर ही मैने ऐतबार किया था और आज मुझे दोनो तरफ से एक साथ धोखे का झटका लगा था. क्योंकि चौहान वो इंसान था जिसने मुझे यहाँ भेजा था इस गैंग को ख़तम करने के लिए और नताशा वो थी जो मेरे लिए सब कुछ छोड़ने का दावा करती थी. मुझसे अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करने का दावा करती थी. अब मुझे सारी कहानी समझ मे आ रही थी कि क्यो नताशा मेरे इतने करीब आई क्यो चौहान ने मुझे नताशा के पास ही रहने को कहा और क्यो मुझे तैयार करके यहाँ भेजा गया. साजिद की मौत, क़ानून की वफ़ादारी, ज़ुर्म का ख़ात्मा सब नाटक था चौहान का. उन दोनो की तस्वीर देख कर मैं गुस्से से पागल हुआ जा रहा था लेकिन ये बात मैं बड़े ख्वाजा साहब (बाबा) को ज़ाहिर नही कर सकता था कि मैं उन दोनो को जानता हूँ और मुझे यहाँ एक इनफॉर्मर बनाके उन्होने ही भेजा है.

मेरा दिमाग़ सुन्न हो गया था कुछ समझ नही आ रहा था कि अब मैं क्या करूँ ,कहाँ जाऊ क्योंकि. मैं उनके बनाए हुए जाल मे फस गया था. ये एक ऐसा दल-दल था जहाँ रह कर ही मैं ज़िंदा रह सकता था क्योंकि अगर अब मैं इस गँग को छोड़ता तो मेरे लोग ही मुझे ख़तम कर देते.इनसे बच भी जाता तो अब मैं भी क़ानून का मुजरिम था क़ानून मुझे कभी माफ़ नही करता और ज़ाहिर सी बात है अब मुझे क़ानून से माफी मिलने का भी कोई रास्ता नही था. इसलिए जिन लोगो ने मुझे इस मुसीबत मे फसाया था उनको ख़तम करने के बारे मे सोचने लगा. अब मैं ये काम कर भी सकता था क्योंकि अब मैं इस गँग का लीडर था. लेकिन इनको अब मैं इनके ही हथियार से मारना चाहता था जैसा धोखा इन्होने मेरे साथ किया था वैसा ही धोखा इनको देना चाहता था. मैं अपने ही ख़यालो मे खोया हुआ था कि अचानक बाबा की आवाज़ मेरे कानो से टकराई...

बाबा : क्या हुआ बेटा कहाँ खो गये...

मैं : (चौंकते हुए) जी... जी कुछ नही बाबा.

बाबा : क्या सोचने लगे....

मैं : कुछ नही बाबा ! मैं बस तस्वीरे देख रहा था. क्या ये पुलिस मे सब काम करने वाले लोग हमारे हैं.

बाबा : बेटा किसी ज़माने मे ये सब लोग हमारे ही थे.लेकिन जब से छोटा अलग हुआ है गँग से तो उसके लोग उसके लिए काम करते हैं और हमारे लोग हमारे लिए.

मैं : क्या बाबा उस डिपार्टमेंट मे हमारे लोग भी है.

बाबा : हाँ बेटा अब भी हमारे लोग वहाँ मोजूद है.

मैने ये बात सुनते ही जल्दी से लॉकर बंद किया और वो फाइल उठा के ले आया जिसमे तमाम इनफॉर्मर्स की इन्फर्मेशन थी....

मैं : बताओ बाबा इसमे हमारे लोग कौन है.

बाबा : लेकिन तुम्हे आज पुलिस मे हमारे इनफॉर्मर की क्या ज़रूरत पड़ गई अचानक.

मैं : बाबा मैं हर जगह से गँग को मजबूत करना चाहता हूँ. कही कोई कमज़ोरी बाकी नही रहने देना चाहता. इसलिए जो छोटे के लिए काम करते हैं ,उनको ख़तम करवा दूँगा. जिससे छोटे का इन्फर्मेशन रॅकेट टूट जाएगा.

बाबा : (खुश होते हुए) ये हुई ना बात... तुमने ठीक कहा अगर उसका धंधा ख़तम कर दिया तो वो भी ख़तम हो जाएगा... लेकिन बेटा ये तुम करोगे कैसे.

मैं : बाबा आप बस देखते जाइए मैं क्या-क्या करता हूँ.

बाबा : (मुस्कुराते हुए) आज क्या बात है बहुत दिन बाद मुझे मेरे पुराना उस्मान नज़र आ रहा है तुम्हारे अंदर.

मैं : बस बाबा ! अब तो आपको पुराने उस्मान से भी क़ाबिल ओर ख़तरनाक बनके दिखौँगा.

उसके बाद मैने वो फाइल को पकड़ा और बाबा को उपर उनके कमरे मे ले गया और बेड पर लिटा कर खुद अपने ऑफीस मे आ गया. कुछ देर फाइल को अच्छे से देखने के बाद मैं याद करने लगा कि हेड क्वॉर्टर्स मे मैने इन सब लोगो मे से किसको देखा है जो हमारे लिए काम करता है. लेकिन अफ़सोस कोई भी चेहरा मेरे देखे हुए चेहरो से नही मिलता था सब नये ही चेहरे थे. इसका मतलब चौहान ने सिर्फ़ अपने लोगो से ही मुझे मिलवाया था जो उसके लिए काम करते थे. मैं अब आगे क्या करना है उसके बारे मे ही सोच रहा था. आज के इस हादसे ने कई राज़ खोल दिए थे. अब मुझे इतना तो पता चल ही गया था कि कौन मेरा अपना है ओर कौन अपना होने का दिखावा कर रहा है. एक तरफ चौहान और नताशा थे जो मुझसे ख्वाजा साहब की दौलत का पता निकलवाने के लिए इस्तेमाल कर रहे थे और मेरे सामने मेरे हम दर्द बन रहे थे.

दूसरी तरफ बाबा थे ,सलमा थी ,जास्मिन थी, हीना थी जिन्होने बिना किसी लालच के मेरी देख भाल की मुझे इतना प्यार दिया और मैं ताक़त के नशे मे चूर सब अहसान भूल गया .मेरे बिना जाने वो कैसे होंगे और मुझे कितना याद करते होंगे. मैं तो उन लोगो की ज़िम्मेवारी भी चौहान को दे आया था .जाने उन लोगो का मेरे बिना क्या हाल होगा. यहाँ आने के बाद मैने एक बार भी उनके बारे मे जानना ज़रूरी नही समझा ,ना ही चौहान ने मुझे उनके बारे मे कुछ बताया. अब मुझे खुद की खुद-गर्जी पर गुस्सा आ रहा था कि मैं उनका प्यार भूल गया उनके किए हुए मुझ पर अहसान भूल गया. फिर मुझे मेरी उनके साथ गुज़री हुई ज़िंदगी का एक-एक लम्हा याद आने लगा.

कैसे बाबा सलमा और जास्मिन ने मेरी जान बचाई .मेरी इतने वक़्त तक देख-भाल की. कैसे बाबा ने मुझे अपना बेटा बना लिया और मुझ पर अपने बेटे से भी ज़्यादा ऐतबार किया. कैसे जब मैं बीमार हुआ था तो हीना मेरे लिए शहर से डॉक्टर लेके आई थी और मेरे बीमार होने पर अपने अब्बू से झगड़ा करके अपने मुलाज़िम मेरे खेतो मे लगा दिए थे. वो सब कुछ किसी फिल्म की तरह मेरे आँखो के सामने चलने लगा. अब मैं अकेला बैठा रो भी रहा था और उन सब को याद भी कर रहा था. वो दिन मेरा उदासी के साथ ही गुज़रा मुझे अपनी ग़लती का अहसास हो रहा था कि जाने-अंजाने मैने उनको भी मुसीबत मे डाल दिया है. रात काफ़ी हो गई थी इसलिए मैने घर जाने का सोचा और अपनी सोच के साथ मैं गाड़ी मे बैठ गया. ड्राइवर ने मुझे मेरे घर के सामने उतार दिया. मैने बुझे हुए दिल के साथ दरवाज़ा खट-खटाया तो शहनाज ने जल्दी से दरवाज़ा खोला और एक दिल-क़श मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया.

शहनाज : आज बहुत देर कर दी तुमने कहाँ थे इतनी देर.

मैं : कही नही बस ऐसे ही बैठा था ऑफीस मे.

शहनाज : (मेरा हाथ पकड़कर मुझे घर के अंदर ले जाते हुए) क्या बात है ! आज मेरा शेर उदास लग रहा है कुछ हुआ क्या.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) बस ऐसे ही आज दिल उदास है

शहनाज : (मुझे बेड पर बिठा कर गले से लगते हुए) अगर तुमको बुरा ना लगे तो तुम मुझे अपनी परेशानी की वजह बता सकते हो. इससे मन हल्का हो जाएगा तुम्हारा.

मैं : नही ! कुछ नही हुआ ! बस वैसे ही सिर मे ज़रा दर्द है. (मैं शहनाज को अपना बीता हुआ कल नही बताना चाहता था इसलिए बात को घुमा दिया)

शहनाज : अच्छा ऐसा करो खाना खा लो फिर मैं तुम्हारा मूड और सिर दर्द दोनो ठीक कर दूँगी.

मैं : मुझे भूख नही है तुम खा लो.

शहनाज : अर्रे... ऐसे कैसे भूख नही है. भूखे रहने से भी सिर मे दर्द होता है जानते हो... तुम यही बैठो मैं खाना लेके आती हूँ तुम्हारे लिए आज मैं मेरी जान को अपने हाथो से खिलाऊंगी (मुस्कुराते हुए वो रसोई मे चली गई)

मैं कुछ देर उसको जाते हुए देखता रहा फिर मैं वापिस अपनी सोच मे गुम्म हो गया. कुछ ही देर मे शहनाज खाना ले आई और मेरे साथ आके बैठ गई और अपने हाथो से मुझे खाना खिलाने लगी. उसको इस तरह खाना खिलाता देख कर मुझे जास्मिन और सलमा की याद आ गई. क्योंकि जब मैं नाराज़ हो जाता था तो वो भी मुझे ऐसे ही खाना खिलाती थी. उसको इतने प्यार से खाना खिलाते देख कर मैं शहनाज को ना नही कह पाया और भूख ना होने के बावजूद मैं खाना खाने लगा साथ ही मैने भी रोटी उठाई ओर अपने हाथ से शहनाज को खिलाने लगा. ये पहली बार था जब मैं शहनाज को इतने प्यार से देख रहा था .वो मुझे इस तरह खाना खिलाते देख कर बहुत हेरान थी और बिना कुछ बोले वो भी खाना खाने लगी. अब हम दोनो एक दूसरे को खाना खिला रहे थे.

खाने के बाद मैं बिस्तर पर लेट गया और शहनाज हमेशा की तरह अपना नाइट गाउन पहनकर आ गई और मेरे साथ आके लेट गई. वो आज भी मुझे वैसे ही प्यार से देख रही थी जैसे पहले दिन मिली थी तब देख रही थी.

मैं : क्या देख रही हो.

शहनाज : देख रही हूँ तुम कितने बदल गये हो

मैं : क्या बदल गया.

शहनाज : पहले तुमने कभी मुझसे ये भी नही पूछा था कि मैने खाया या नही और आज तुमने खुद मुझे खाना खिलाया.

मैं : आज इसलिए खिलाया क्योंकि मेरा मन था तुमको खाना खिलाने का. मैं जानता हूँ तुम मेरे बाद ही खाना खाती हो.

शहनाज : (बिना कुछ बोले मुझे गले से लगते हुए) मुझे ये वाला उस्मान बहुत पसंद है और इसको मैं पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगी हूँ. मुझे तुम्हारी सबसे अच्छी बात जानते हो क्या लगी.

मैं : क्या....

शहनाज : तुम अब दूसरो का बहुत सोचते हो. पहले ऐसे नही थे.

मैं : शहनाज तुमको एक सवाल पुछू .अगर बुरा ना मानो तो...

शहनाज : तुम्हारी कभी कोई बात बुरी नही लगती मेरी जान. पुछो क्या पूछना है.

मैं : तुम मुझे इतना प्यार करती हो फिर भी कभी अपना हक़ नही जमाती मुझ पर. ना ही तुमने कभी मेरे काम के बारे मे पूछा. ना कभी ये पूछा कि मैं कहाँ था ,किसके साथ था ऐसा क्यो.

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) क्योंकि एक बार तुमने ही कहा थे कि अपनी औकात मे रहा करो.मैं कहाँ जाता हूँ क्या करता हूँ इससे तुमको कोई मतलब नही है और हर बात तुमको बतानी मैं ज़रूरी नही समझता .इसलिए तब से मैं हमेशा अपनी औकात मे ही रहती हूँ.

मैं : पहले जो भी बोला था उसको भूल जाओ और मुझे माफ़ कर दो... अब जो कह रहा हूँ वो याद रखना.तुम जब हक़ जमाती हो तो अच्छा लगता है.ऐसा लगता है मेरा भी कोई अपना है.

शहनाज : (खुश होके मुझे ज़ोर से गले लगाते हुए) हाए मैं मर जाऊ.... आज तुम मेरी जान लेके रहोगे.... ऐसी बाते ना करो कही मैं पागल ही ना हो जाऊ खुशी से.

मैं : (शहनाज का चेहरा अपने दोनो हाथो से पकड़ते हुए) तुम जब हँसती हो तो बहुत अच्छी लगती हो .इसलिए हँसती रहा करो.

शहनाज : (खामोश होके हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म

मैं : तुमको पता है तुम बहुत अच्छी हो... (शहनाज का माथा चूमते हुए)

शहनाज : (बिना कुछ बोले मेरे और पास सरकते हुए और अपनी आँखें बंद करते हुए) हमम्म

मैने अपना चेहरा उसके चेहरे के एक दम सामने कर दिया और हल्के से उसके गाल को चूम लिया उसने अपनी आँखें खोली और मुझे मुस्कुरा कर देखने लगी. मैने एक बार फिर से उसकी गाल को चूम लिया. इस बार उसने भी मेरा चेहरा अपने दोनो हाथो मे थाम लिया और बड़े प्यार से मेरे माथे पर और गालो को चूम लिया. अब मैने उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिए जिससे मैं एक दम मदहोश सा हो गया. हम दोनो की आँखें अपने आप बंद हो गई. कुछ देर हम दोनो एक दूसरे के होंठों के साथ अपने होंठ जोड़कर लेटे रहे फिर उसने धीरे-धीरे अपने होंठों को हरकत दी ओर हल्के से अपने होंठ खोलकर मेरे नीचे वाले होंठों को अपने होंठों मे समा लिया और धीरे-धीरे चूसने लगी. मैने भी धीरे-धीरे उसके उपर वाले होंठ को चूसना शुरू कर दिया.कुछ ही देर मे हमारे चूमने मे कशिश आने लगी हम दोनो एक दूसरे के शिद्दत से होंठ चूसने लगे. अब हम दोनो की साँसे भी तेज़ होने लगी थी.

हम दोनो ने एक दूसरे को इतनी कसकर गले से लगा रखा था जैसे एक दूसरे के अंदर समा जाना चाहते हो. उसके होंठ चूस्ते हुए मैने उसकी पीठ पर अपने हाथ फेरने शुरू कर दिए इस पर वो भी अपना एक हाथ मेरे गले मे डाले लेटी रही और दूसरा हाथ मेरी छाती पर हाथ फेरने लगी. साथ ही उसने अपनी दोनो टाँगो मे मेरी टाँगो को जकड़ लिया. कुछ देर ऐसे ही लेटे रहने के बाद वो मेरे उपर आके लेट गई और फिर से मेरे होंठ चूसने लगी. मैं मज़े से मदहोश हो गया था इसलिए अपने पूरा जिस्म ढीला छोड़ दिया. अब शहनाज मुझे प्यार कर रही थी. वो कभी मेरे पूरे चेहरे को चूमती कभी होंठों को. उसने मेरे उपर बैठे-बैठे ही अपना गाउन उतार दिया अब वो सिर्फ़ ब्रा और अंडरवेर मे थी. कुछ देर मुझे चूमने के बाद उसने मेरे सिर के नीचे अपना हाथ रखा और मुझे थोड़ा सा उपर की तरफ उठा दिया. उसका इशारा समझते हुए मैं जल्दी से उठ गया उसने मेरे होंठ चूस्ते हुए ही मेरी शर्ट के बटन खोले और फिर दुबारा मेरी छाती पर हाथ रख कर नीचे को दबा दिया जिससे मैं वापिस बेड पर लेट गया. अब वो दुबारा मेरे चेहरे को चूम रही थी और नीचे के तरफ आ रही थी. मेरे चेहरे को चूमते हुए पहले वो गर्दन तक आई ओर फिर मेरी छाती पर आके चूमने और चूसने लगी. मैं मज़े से मधहोश हुआ पड़ा था. मुझे उसके छाती पर चूमने और चूसने से बे-इंतेहा मज़ा आ रहा था. अब वो ओर नीचे की तरफ बढ़ रही थी. अब उसके हाथ मेरी पेंट बेल्ट पर थे लेकिन उसके होंठ मेरे पेट पर अपना कमाल दिखा रहे थे. उसने जल्दी से मेरी पेंट की बेल्ट का बक्कल खोला ओर फिर एक ही झटके मे बेल्ट को खींच का पेंट से जुदा कर दिया और उसको बेड से नीचे फेंक दिया.

अब उसने जल्दी से मेरी पेंट के हुक्क खोले और झटके से पेंट को घुटने तक नीचे कर दिया. अब वो अंडरवेर के उपर से ही मेरे लिंग को चूम रही थी और उस पर हाथ फेर रही थी. मैं मज़े की दुनिया मे सैर कर रहा था. तभी उसने मेरे पेट पर चूमते-चूमते जीभ फेरना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे नीचे को आने लगी. अब उसने अपने दोनो हाथो की उंगालियाँ मेरे अंडरवेर मे फसा ली और उसको धीरे-धीरे नीचे की तरफ खींचने लगी. कुछ ही देर मे मेरा अंडरवेर भी घुटने तक आ गया था. मेरा लिंग लोहे की तरह सख़्त हुआ पड़ा था. वो मेरे लिंग के चारो तरफ चूम रही थी और अपनी जीभ फेर रही थी जिससे मुझे बेहद मज़ा आ रहा था. उसके बाद उसने एक हाथ से मेरे लिंग को पकड़ा और लिंग की टोपी पर हल्के-हल्के चूमने लगी. मैने मज़े से अपना हाथ उसके सिर पर रख दिया ताकि वो मेरे पूरे लिंग को मुँह मे ले सके लेकिन उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और वापिस बेड पर रख दिया वो ऐसे ही कुछ देर तक मेरे लिंग को चूमती रही. अब उसने अपना थोड़ा सा मुँह खोला और टोपी के चारो तरफ ज़ुबान को गोल-गोल घुमाने लगी. कुछ देर ऐसे ही करने के बाद उसने अपने एक हाथ से मेरे लिंग को पकड़ा और एक दम से अपना मुँह खोल के मेरा आधा लिंग अपने मुँह मे डाल लिया जो उसके हलक तक जा रहा था.कुछ देर वैसे ही रहने

के बाद उसके लिंग को थोड़ा मुँह से बाहर निकाला और मुँह के अंदर भी वो लिंग पर अपनी ज़ुबान को गोल-गोल घुमाने लगी. साथ ही अपने मुँह को भी अब उसने हिलाना शुरू कर दिया था. कुछ देर ऐसे करने के बाद वो तेज़-तेज़ मेरे लिंग को चूस रही थी और अपने दोनो हाथ मेरी छाती पर फेर रही थी. मैं मज़े की वादियो मे खो चुका था. इसलिए मुझे नही पता कब उसने अपनी ब्रा और अंडरवेर उतार दी थी.

कुछ देर मेरा लिंग चूसने के बाद शहनाज वापिस मेरे उपर आके लेट गई और फिर से मेरे होंठ चूसने लगी. साथ ही अपनी योनी को मेरे लिंग के उपर रगड़ने लगी. मैने जल्दी से अपने हाथ नीचे किया और लिंग को पकड़ कर योनी की छेद पर अड्जस्ट किया लेकिन शहनाज ने फिर से मेरा हाथ पकड़ लिया और होंठ चुस्ते हुए ही ना मे सिर हिला दिया. उसकी योनी लगातार पानी छोड़ रही थी जिससे मेरा लिंग भी पूरा गीला हो गया था. अब शायद उससे भी बर्दाश्त करना मुश्किल हो गया था इसलिए उसने खुद अपना एक हाथ नीचे ले जा कर मेरे लिंग को पकड़ा और उसको अपनी योनी के छेद पर सेट कर दिया और वापिस मेरे गाल को चूमने लगी साथ ही उसके होंठ मेरे कान के एक दम पास आ गया. इतने वक़्त मे ये पहला अल्फ़ाज़ था जो उसके मुँह से निकला था.

शहनाज : आराम से डालना धीरे-धीरे. झटका मत मारना.

मैं : हमम्म्म

शहनाज : जब मैं रुकने को कहूँ तो रुक जाना. ठीक है !

मैं : हमम्म !

उसके बाद उसने मेरे लिंग पर अपनी योनी का दबाव बढ़ाना शुरू कर दिया और खुद साथ-साथ उपर नीचे भी होने लगी लेकिन उसकी रफ़्तार बहुत धीरे थी. कुछ ही देर मे मेरा आधा लिंग उसकी योनी मे उतर चुका था. वो आधे लिंग को ही धीरे-धीरे अंदर बाहर कर रही थी. अब मुझसे बर्दाश्त करना मुश्किल हो रहा था इसलिए उसके मना करने के बावजूद मैने अपने दोनो हाथ उसकी नितंब पर रख दिए और एक जोरदार नीचे से झटका मारा जिससे मेरा लिंग जड़ तक पूरा उसकी योनी मे उतर गया. साथ ही एक तेज़ सस्सस्स आअहह आययययर्यीईई शहनाज के मुँह से निकल गई.

शहनाज : कहा था ना झटका मत मारना... जंगली कही के....

मैं : (मुस्कुराते हुए) सॉरी.... मुझसे बर्दाश्त नही हो रहा था.

वो बिन कुछ बोले वापिस मेरे होंठ चूसने लगी और अब वैसे ही मेरे लिंग पर बैठी थी .अब वो सिर्फ़ मेरे होंठ चूस रही थी नीचे से अपनी नितंब नही हिला रही थी. मेरा पूरा लिंग उसके अंदर ही था जिसको उसकी योनी की दीवारो ने सख्ती से जकड़ा हुआ था. थोड़ी देर ऐसे ही रहने के बाद अब उसने धीरे-धीरे हिलना शुरू कर दिया जिससे मेरा लिंग भी उसकी योनी मे अंदर बाहर होने लगा. अब वो मेरी छाती को बार-बार चूम रही थी और साथ मे अपनी नितंब भी हिला रही थी. अब उसने मेरे दोनो हाथो को अपने हाथो से पकड़ा और मेरे हाथ अपने स्तनों पर रख दिए जिन्हे मैने थाम लिया और दबाने लगा अब उसका उछलना भी तेज़ हो गया था. शायद वो फारिग होने के करीब थी इसलिए उसने तेज़-तेज़ अपनी नितंब को हिलाना शुरू कर दिया उसके मुँह से निकलने वाली सस्सस्स सस्सस्स भी अब काफ़ी तेज़ आवाज़ मे निकल रही थी. मैने भी उसके स्तनों को छोड़कर सिर्फ़ उसके स्तनाग्र को पकड़ लिया और अपनी उंगलियो से दबाने और मरोड़ने लगा. कुछ देर ऐसे ही उपर नीचे होने के बाद शहनाज का पूरा बदन झटके खाने लगा और उसका मुँह खुल गया.कुछ देर के लिए वो फिर से मेरे उपर बैठ गई और हिलना बंद कर दिया थोड़ी देर ऐसे ही रहने के बाद वो मेरे उपर लेट गई और तेज़-तेज़ सांस लेने लगी साथ ही मेरी छाती पर अपना हाथ फेरने लगी. मुझे अपने लिंग पर पहले से ज़्यादा गीलापन महसूस हो रहा था. अब उसने मेरे दोनो हाथ जो उसके स्तनों पर थे वहाँ से उठा कर अपनी कमर पर रख दिए और खुद घूम कर बेड पर आ गई और मुझे उपर आने का इशारा किया. मैं बिना योनी से लिंग को बाहर निकाले वैसे ही घूम कर उसके उपर आ गया. अब उसने फिर से मेरे होंठों पर हमला कर दिया और बुरी तरह से मेरे होंठ चूसने लगी.

कुछ देर होंठ चूसने के बाद उसने मुझे अपने उपर से उठा दिया जिससे लिंग बाहर निकल गया. मुझे समझ नही आया कि उसने लिंग क्यो बाहर निकाल दिया इसलिए सवालिया नज़रों से उसकी तरफ देखने लगा. उसने एक नज़र मुझे मुस्कुरा कर देखा और फिर वो भी बेड पर उठ कर बैठ गई और मेरे देखते ही देखते अब वो किसी जानवर की तरह अपने दोनो हाथो और दोनो घुटनो के बल बेड पर खड़ी हो गई. मैं उसको खड़ा देख रहा था कि अब वो क्या करती है. उसने अपनी गर्दन को पिछे घुमाया और एक मुस्कान के साथ मुझे पिछे आने का इशारा किया. मैं मुस्कुरा कर उसके पिछे आ गया और जल्दी से अपनी शर्ट-पेंट और अंडरवेर को अपने जिस्म से आज़ाद किया. अब मैने अपना पूरा लिंग पिछे से एक ही झटके मे उसकी योनी मे डाल दिया और उसको कमर से पकड़ कर झटके मारने लगा

अब वो बुलंद आवाज़ मे सस्सस्स ससस्स कर रही थी. कुछ देर ऐसे ही रहने के बाद उसने मेरा एक हाथ अपनी कमर से हटाया और अपने सिर पर रख दिया साथ मे मेरे हाथ मे अपने बाल पकड़ा दिए अब मैं समझ चुका था कि वो क्या चाहती है. इसलिए मैने उसको बालो से पकड़ लिया और तेज़-तेज़ झटके मारने लगा... उसकी ससस्स... ससस्स... अब आआहह ऊऊओ आाायईयीई मे बदल चुकी थी पूरे कमर मे उसकी आवाज़ और झटको की थप्प्प.... थप्प्प... की आवाज़ ही गूँज रही थी. अचानक उसको ठोकते हुए मुझे याद आया कि सलमा को ठोकते हुए भी, मैने यही तस्वीर देखी थी. इसलिए मैने अपना दूसरा हाथ जो उसकी कमर पर था उसकी नितंब पर रखा और एक ज़ोर दार थप्पड़ उसकी नितंब पर मारा. उसने हैरानी से मेरी तरफ पलटकर देखा और एक क़ातिलाना मुस्कान के साथ मुझे सिर हिला कर दुबारा मारने को कहा.

अब मैने एक हाथ से उसके बाल पकड़े हुए थे और दूसरी हाथ से उसकी नितंब पर थप्पड़ की बरसात कर रहा था कुछ ही देर मे वो दूसरी बार भी फारिग हो चुकी थी. इसलिए हाफ्ते हुए वो बेड पर गिर गई थी. मैं भी उसके उपर ही लेटा हुआ था हम दोनो का जिस्म पसीने से नहाया हुआ था. कुछ देर मे जब उसकी साँस दुरुस्त हो गई तो मैने उसके उपर लेटे लेटे ही झटके मारने शुरू कर दिए.इसलिए उसने उसी पोज़ीशन मे अपनी दोनो टांगे फैला ली ताकि लिंग जड़ तक पूरा अंदर जा सके. इस पोज़ीशन मे मुझे और शहनाज दोनो को बेहद मज़ा आ रहा था.इसलिए मैने तेज़ रफ़्तार से झटके लगाने शुरू कर दिया. कुछ ही देर मे मैं भी अपनी मंज़िल के करीब पहुँच गया और मेरे साथ ही शहनाज तीसरी बार फिर से फारिग हो गई. मेरे लिंग पूरे प्रेशर से उसकी योनी मे मेरा माल छोड़ रहा था. हम दोनो अब बुरी तरह थक चुके थे और एक दूसरे के उपर पड़े अपनी साँस को दुरुस्त कर रहे थे. हम दोनो ही इतनी जबरदस्त ठुकाई से इतना ज़्यादा थक चुके थे कि दोनो मे से किसी की भी कपड़े पहन ने कि हिम्मत नही थी. इसलिए हम दोनो ऐसे ही एक चद्दर अपने उपर लेकर लेट गये. शहनाज बहुत खुश थी और मुझे मुस्कुरा कर देख रही थी.मैने उसको एक बार फिर से गले से लगा लिया. वो गले लगी हुई ही मेरे उपर आके लेट गई.अब हम दोनो ही खामोश थे और थके हुए थे इसलिए कुछ ही देर मे ही शहनाज मेरे उपर ही सो गई मुझे गले लगाके और मैं भी उसकी कमर पर हाथ फेरता हुआ जाने कब नींद की वादियो मे खो गया.

३१

हम दोनो सुकून से सोए पड़े थे कि ,किसी ने आधा रात को हमारा दरवाज़ा खट-खटाया.जिससे शहनाज की नींद खुल गई.उसने फॉरन मुझे उठाया और कपड़े पहनने को कहा.मैने जल्दी मे सिर्फ़ पेंट पहनी और दरवाज़ा खोलने चला गया. इतनी देर मे शहनाज ने ज़मीन पर बिखरे अपने कपड़े उठाए और बाथरूम मे भाग गई. मैं आँखें मलता हुआ दरवाज़ा खोला तो सामने सलमान और मेरा ड्राइवर खड़े थे.

मैं : क्या है ? इतनी रात तुमको क्या काम पड़ गया इतनी अच्छी नींद आ रही थी बेकार मे खराब कर दी.

सलमान : भाई ! बाबा की तबीयत बहुत खराब हो गई है. वो आपको बुला रहे हैं.

ये बात सुन कर मेरी झटके से आँखें खुल गई और मैं बिना कुछ बोले अंदर शर्ट पहन ने चला गया. तब तक शहनाज भी कपड़े पहनकर बाहर आ चुकी थी.

शहनाज : (दरवाज़े पर देखते हुए) कौन है बाहर उस्मान....

मैं : सलमान है... बाबा की तबीयत खराब हो गई है. इसलिए मुझे याद कर रहे हैं

शहनाज : ओह्ह्ह.... मैं भी चलती हूँ आपके साथ.

मैं : नही तुम रहने दो मैं थोड़ी देर मे आ जाऊंगा.तुम दरवाज़ा बंद करके आराम से सो जाओ

शहनाज : कोई सीरीयस बात तो नही है ना

मैं : ये तो वहाँ जाके ही पता चलेगा.

शहनाज : ठीक है... अगर मेरी ज़रूरत हो तो ड्राइवर को भेज देना.

मैं : (शहनाज का सिर चूमते हुए) ठीक है !अब तुम आराम करो और सो जाना.

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) हमम्म ठीक है.

उसके बाद मैं तेज़ कदमो के साथ घर से बाहर निकल गया और सलमान के साथ गाड़ी मे बैठ कर जल्दी से अपने ठिकाने पर पहुँच गया. वहाँ लाला, गानी और सूमा पहले से मोजूद थे. मैं जल्दी से जाके बाबा के पास बैठ गया.

बाबा : आ गया तू उस्मान...

मैं : जी बाबा... आप आराम कीजिए मैं डॉक्टर से बात करके आता हूँ (डॉक्टर को देखते हुए) क्या हुआ है बाबा को?

बाबा : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) अच्छा...

डॉक्टर : इनको साँस लेने मे तक़लीफ़ हो रही है

मैं : ये ठीक तो हो जाएँगे ना.... अगर आप कहे तो मैं शहर से और डॉक्टर बुलवा लेता हूँ.

डॉक्टर : उसकी कोई ज़रूरत नही है. आप ज़रा मेरे साथ आइए आप से बात करनी थी.

मैं : (डॉक्टर को कमरे से बाहर लेके जाते हुए) चलिए....

उसके बाद मैं और डॉक्टर बाहर हॉल मे आ गये मेरे पिछे-पिछे लाला, गानी और सूमा भी आ गये जबकि सलमान बाबा के पास ही बैठ गया.

मैं : कहिए डॉक्टर क्या बात है.

डॉक्टर : देखिए मैं आपको कोई झूठा दिलासा नही देना चाहता, इसलिए आपको सच बता रहा हूँ. इनके बॉडी मे काफ़ी गोलियाँ लगी थी कुछ वक़्त पहले आपको तो पता ही होगा.

मैं : ये तो हम जानते हैं इसमे नयी बात क्या है.

डॉक्टर : शायद आपको पता नही है लेकिन ६ गोलियो मे से ५ गोलियाँ तो ऑपरेशन से निकाल दी थी लेकिन १ गोली इनके दिल के पिछे चली गई थी अगर वो गोली निकलते तो उनकी जान को ख़तरा हो सकता था. इसलिए डॉक्टर्स ने वो गोली नही निकाली.अब इतने दिन से वो गोली वहाँ रहने की वजह से पूरी बॉडी मे ज़हर फैल गया है.इसलिए अब इनका बचना बहुत मुश्किल है. माफ़ कीजिए लेकिन अब इनके पास अब ज़्यादा वक़्त नही है.

मैं : देखिए डॉक्टर साहब आप पैसे की फिकर मत कीजिए पानी की तरह पैसा बहा दूँगा. लेकिन वो जो अंदर लेटा है वो मेरे लिए मेरा बाप है.उनको कैसे भी करके बचा लीजिए. मैने आज तक किसी के सामने हाथ नही जोड़े लेकिन आज जोड़ रहा हूँ प्लीज़्ज़्ज़.

डॉक्टर : सॉरी मैं कुछ नही कर सकता.अब काफ़ी देर हो गई है.

मैं : अगर बाबा को कुछ हुआ तो तू भी नही बचेगा ये बात समझ ले... लाला ले जा . साले को और इसको डॉक्टरी सीखा.

उसके बाद हम वापिस मायूस दिल के साथ बाबा के पास आके बैठ गये.

बाबा : क्या कहा डॉक्टर ने.

मैं : बाबा आप ठीक हो जाएँगे कुछ नही होगा

बाबा : (मुस्कुराते हुए) तुझे झूठ बोलना भी नही आता. किसको झूठ बोला रहा है उस्मान. मुझे तेरी रग-रग पता है. मैं जानता हूँ कि अब मेरा आखरी वक़्त आ गया है.इसलिए अब जो मैं कहूँगा वो बहुत ध्यान से सुनना तुम सब.

मैं : (रोते हुए) ऐसा मत बोलो बाबा.आप बहुत जल्द अच्छे हो जाओगे... एह सलमान फॉरन दूसरे डॉक्टर का इंतज़ाम कर.

सलमान : हाँ अभी जाता हूँ.

बाबा : उसकी कोई ज़रूरत नही है. मेरे पास बैठो तुम सारे.

मैं : (बाबा का हाथ पकड़ कर उनके पास बैठ ते हुए) जी बाबा हुकुम कीजिए.

बाबा : बेटा उस्मान अब ये सब कारोबार ये सारे लोग सब तेरी ज़िम्मेदारी है.मैं तेरे कंधो पर ये सब कुछ छोड़ कर जा रहा हूँ.

मैं : जी बाबा...

बाबा : लाला, सलमान, सूमा और गानी आज से तेरे दोस्त नही भाई हैं.इनका ख़याल तुझे रखना है बस्ती मे जो लोग हैं वो भी तेरे अपने हैं .उनको कभी किसी चीज़ की कमी ना होने पाए.

मैं : जी बाबा....

बाबा : तुम चारो भी इसकी हर बात मानना.जो ये कहेगा वो मेरा हुकुम समझ कर हर बात की तामील करना. हमेशा इसका साथ देना. हमेशा इसके साथ वफ़ादार रहना.

सलमान, लाला, गानी ओर सूमा : जी बाबा.... हम हमेशा हर कदम पर उस्मान के साथ हैं.

इतनी बात करके बाबा की साँस उखड़ने लगी और मेरी आँखो के सामने आखरी कलमा पढ़ते हुए मुस्कुराकर वो दुनिया से रुखसत हो गये. हम उनके पास बैठे रात भर रोते रहे लेकिन अब कुछ भी नही हो सकता था. जो चला गया वो अब वापिस नही आ सकता था .आज हम सब एक बार फिर से यतीम हो गये थे.क्योंकि जिसने सारी उम्र हम को पाला था इस क़ाबिल बनाया था ,वो इंसान हम को छोड़ कर जा चुका था और उनके जाने की वजह उपर वाला नही था बल्कि उनका ही बेटा छोटा था ये बात याद आते ही मेरा खून खोलने लगा. बाबा के पास बैठे तमाम लोग रो रहे थे लेकिन वो वक़्त रोने का नही खुद को संभालने का था. इसलिए मैने अपनी आँख से आँसू साफ किए और सब को होसला देने लगा और चुप करवाने लगा.

सुबह हमने उनका कफ़न दफ़न का इंतज़ाम किया और उनको आखरी कदम देके रोते हुए वापिस आ गये उनके जनाज़े मे सारी बस्ती के लोग मोजूद थे.एक-एक बड़ा और एक-एक बुजुर्ग रो रहा था क्योंकि आज वो इंसान उनको छोड़ कर चला गया था ,जो हमेशा उनका ख़याल रखता था. अब हर इंसान मुझे एक उम्मीद की नज़र से देख रहा था. और ये बात अब सच भी थी क्योंकि बाबा की जगह अब मैं था उनके सारे काम अब मुझे ही पूरे करने

थे हमारे तमाम दुश्मनो को अब मुझे ही ख़तम करना था. अपनी इन्ही सोच के साथ मैं वापिस ठिकाने पर आ गया और अकेला उनके बेड के पास आके बैठ गया और बाबा की सिखाई हुई बातो को याद करने लगा.

कुछ देर बाबा के कमरे मे गुज़ारने के बाद मैं वापिस लाला, सूमा, गानी और सलमान के पास आके बैठ गए.वो लोग अब भी बुरी तरह रो रहे थे इसलिए सबको चुप करवाता रहा. हमारे कुछ दिन ऐसे ही मातम मे गुज़रे. इस वजह से हम सबका ध्यान अपने-अपने धंधो से हट गया था जिसका फायदा छोटे ने उठाया. एक दिन मुझे फोन पर मेरे आदमी ने खबर दी कि हमारे विदेश के तमाम क्लाइंट्स ने हमारा माल खरीदने से मना कर दिया है। क्योंकि अब वो तमाम गन्स और ड्रग्स का बिजनेस हमारे साथ नही बल्कि छोटे के साथ करेंगे. बाबा के जाने की वजह से हम वैसे ही टूट चुके थे उपर से छोटे ने मोक़े पर ऐसी चाल चल कर हम सब का बिजनेस भी ख़तम कर दिया था. मुझे जिस दिन ये खबर मिली मेरे दिल मे दबी हुई नफ़रत और गुस्सा उफान पर पा पहुँच गये लेकिन इस वक़्त मैं जोश मे आके कोई कदम नही उठाना चाहता था इसलिए अपने दिमाग़ से काम लिया. मैं चाहे कुछ भी था लेकिन बाबा जो ज़िम्मेदारी मुझे सौंप कर गये थे उसे अब मुझे ही पूरा करना था. मैने फॉरन सारे गँग को खंडहर पर बुलाया. कुछ ही देर मे गँग के तमाम लोग जो हमारे साथ थे वो वहाँ मोजूद हो गये. मैने सबको एक नज़र देखा और फिर जाके अपनी कुर्सी पर बैठ गया। मेरे बैठने के बाद सब लोग अपनी-अपनी कुर्सियो पर जाके बैठ गये. उसके बाद मैने बोला शुरू किया.

मैं : मैने ये मीटिंग इसलिए बुलाई है कि, जितने दिन हम सब मातम मे थे छोटे ने हमारा सारा बिजनेस टेक-ओवर कर लिया है. हमारे तमाम विदेशी क्लाइंट्स ने हम से माल खरीदने से मना कर दिया है .क्योंकि छोटा उनको हम से कम कीमत मे माल सप्लाइ कर रहा है.

सलमान : साला कमीना अपने बाप की मौत का भी लिहाज नही रख सका. मैं सोच भी नही सकता था छोटा इतना गिर सकता है.

मैं : सलमान जो इंसान अपने ही बाप पर गोली चला सकता है. उसके घटियापन की हद का अंदाज़ा तुम तो क्या कोई भी नही लगा सकता.

सूमा : भाई हमारे लिए बाबा की जगह अब तुम ही हो... तुम बस हुकुम करो कि क्या करना है... हम सब लोग तुम्हारे एक इशारे पर मौत बन कर छोटे और उसके गँग पर टूट पड़ेंगे

और आज ही साले का किस्सा ख़तम कर देंगे.

मैं : नही सूमा... छोटा अभी तक चुप है क्योंकि वो जानता है कि बाबा के मरते ही हम लोग उस पर पूरी ताक़त के साथ अटॅक करेंगे . इसलिए जब हम वहाँ जाएँगे तो वो भी हमारा ही इंतज़ार कर रहा होगा. अगर हम अभी गये तो हम मे से कोई भी वापिस नही आएगा. बाबा ने सिखाया था अगर दुश्मन को ख़तम करना है तो उसकी ताक़त ख़तम करदो फिर दुश्मन भी ख़तम हो जाएगा. हम को इंतज़ार करना होगा सही वक़्त का.

सलमान : तो तुम क्या चाहते हो ? वो साला वहाँ बाबा की मौत का जशन मनाए, हमारा सारा बिजनेस ले जाए और हम यहाँ मातम मनाते रहे हिजड़ो की तरह.

मैं : सबसे पहले ये पता करो कि उसके पास माल आया कहाँ से है .जहाँ तक मुझे पता है अफ़ीम के सारे खेत तो हमारे क़ब्ज़े मे है .ओर दूसरा कौन है जो उसको माल दे रहा है.

लाला : मैने सब पता करवा लिया है.उसका एक खास आदमी है पुलिस मे जो उसको हमारा ही पकड़ा हुआ माल सप्लाइ करता है.

मैं : कौन है वो आदमी...

लाला : पता नही कोई इंस्पेक्टर चौहान करके है. नारकोटिक्स डिपार्टमेंट मे उसकी अच्छी चलती है. साला हमारा पकड़ा हुआ माल ही उसको बेच रहा है और छोटा वही माल आगे विदेशो मे बेच रहा है.

सलमान : यार हम को क्या, वो साला किसी से भी माल खरीदे. हमारे धंधे की तो ऐसी-तैसी हो गई ना .अब आगे क्या करना है ये सोच.

मैं : अगर चौहान ख़तम हो गया तो समझो छोटे को माल मिलना भी बंद हो जाएगा.इसलिए हम को पहले चौहान को ख़तम करना होगा.

सूमा : उस्मान सही कह रहा है .साले इस चौहान का ही कुछ करना पड़ेगा.

सलमान : उस्मान भाई हुकुम करो ! मैं जाता हूँ इस चौहान को ठोकने के लिए.

मैं : (उंगली से ना का इशारा करते हुए) तुमको क्या लगता है चौहान अकेला होगा और तुम को बोलेगा आओ भाई मैं तुम्हारे बाप का माल हूँ मुझे ठोक दो.... तुम मे से कोई कही नही जाएगा. तुम लोग सिर्फ़ बचा हुआ धंधा सम्भालो ओर उसको ठोकने मैं खुद जाऊंगा.

लाला : ठीक है लेकिन उसके साथ पुलिस वाले भी तो होंगे ना.तू उसको मारेगा कैसे.

मैं : फिकर मत कर वो पुलिस वाला अभी तक पैदा नही हुआ जो उस्मान को ठोक सके.उस हरामखोर को तो मैं ही मारूँगा.उसका भी तोड़ मैने सोच लिया है और इस काम के लिए मैं आज ही निकालूँगा.

सलमान : ठीक है जैसा तुम ठीक समझो.

उसके बाद कुछ देर ऐसे ही बाते चलती रही फिर आख़िर तय ये हुआ कि बाकी सब लोग धंधा संभालेंगे और मैं चौहान को मारने जाऊंगा. उसके बाद मैने मीटिंग बर्खास्त की और सब को उनके काम पर लगा दिया और खुद अपनी कार मे बैठकर घर आ गया जहाँ मैने जल्दी से कपड़े पॅक करने लगा. अचानक मुझे शहनाज का ख्याल आया जो घर मे नही थी उसको बताए बिना जाना मुझे सही नही लगा इसलिए मैने सोचा जाते हुए उससे भी मिल कर जाऊंगा.मैं जानता था वो दिन भर कहाँ होती है. इसलिए मैने जल्दी से अपने कपड़े बॅग मे डाले और साथ मे कुछ हथियार और पैसे भी रख लिए. फिर मैं घर के बाहर आ गया जहाँ गँग के तमाम लोग मोजूद थे और मेरा ही इंतज़ार कर रहे थे.

सलमान : ये क्या उस्मान तुम अभी ही जा रहे हो.

मैं : हां मुझे अभी जाना है लेकिन पहले मैं शहनाज से मिलना चाहता हूँ उसके बाद जाऊंगा.

लाला : ठीक है ! फिर हम भी तुम्हारे साथ ही चलते हैं.

उसके बाद मैं अपनी गाड़ी मे आके बैठ गया और मेरे पिछे तमाम गाडियो का क़ाफ़िला चल पड़ा. कुछ ही देर मे हम यतीम खाने के बाहर थे. वहाँ कुछ बच्चे इधर-उधर घूम रहे थे. मैने

बच्चो को देख कर बाकी सब लोगो को बाहर ही रुकने का इशारा किया और खुद यतीम खाने के अंदर चला गया. जहाँ बाहर बच्चों को पढ़ाया जा रहा था वहाँ बहुत सी लड़कियाँ और औरते बच्चों को पढ़ा रही थी. मैने चारो तरफ नज़र घुमाई तो एक पेड़ के नीचे कुछ बच्चों को पढ़ाती हुई मुझे शहनाज नज़र आई. शहनाज को देखकर मेरे चेहरे पर एक मुस्कान आ गई. उस वक़्त उसका चेहरा ब्लॅकबोर्ड की तरफ था मैं चुप चाप जाके बच्चों के साथ बैठ गया जिस पर सब बच्चे मुझे देख कर हँसने लगे. शहनाज बच्चों को कुछ पढ़ा रही थी और मैं बस खामोशी से बैठा उसको देख रहा था तभी उसकी आवाज़ आई.

शहनाज : सबको समझ आ गया ना.

मैं : मुझे समझ नही आया मेडम जी...

शहनाज : (पलट ते हुए) उस्मान तुम यहाँ....

मैं : मेडम मुझे समझ नही आया दुबारा समझाओ.

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) आप ऑफीस मे चलिए मैं अभी आती हूँ.

मैं : (सल्यूट करते हुए) यस मेडम....

मेरी इस हरकत पर सब बच्चे हँसने लग गये और शहनाज मुझे आँखें दिखाने लग गई .इसलिए मैं चुप चाप वहाँ से उठा और जाके उसके ऑफीस मे बैठ गया. ऑफीस मे घुसते ही सामने बाबा की तस्वीर लगी थी. मैं उनके नूरानी चेहरे को देख रहा था तभी अचानक एक हाथ मेरे कंधे पर आके रुक गया साथ ही एक मीठी सी आवाज़ मेरे कानो से टकराई.

शहनाज : आज क्या बात है. सूरज कहीं ग़लत साइड से तो नही निकल गया.जो तुमने यहाँ दर्शन दे दिए.

मैं : ऐसी कोई बात नही है. मैं बस तुमसे मिलने के लिए आया था.

शहनाज : (मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए) नियत तो ठीक है जनाब की... आज दिन मे भी बड़ा रोमेंटिक मूड बना हुआ है.

मैं : (हँसते हुए) नही यार मूड वाली कोई बात नही आक्च्युयली मैं कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा था. सोचा तुमसे मिल कर नही जाऊंगा तो तुमको बुरा लगेगा.

शहनाज : (अपनी कुर्सी से खड़ी होके मेरे गाल खिचते हुए) हाए मेरी जान ! बड़ा ख़याल रखने लग गये हो मेरा.

मैं : (अपने गाल छुड़ाते हुए) क्या कर रही हो यार बच्चे देखेंगे तो क्या सोचेंगे.

शहनाज : आए... हाए तुम कबसे लोगो की परवाह करने लग गये.

मैं : ज़्यादा शहद मत टपकाओ और मेरी बात सुनो तुमको हर वक़्त मज़ाक ही सूझता है.

शहनाज : अच्छा मुझे मज़ाक सूझता है... और वो जो तुम बाहर करके आए हो वो बड़ी सयानी हरकत थी ना यस मेडम...यस मेडम..... तब बच्चों ने नही देखा होगा क्या.

मैं : (कान पकड़ते हुए) अच्छा बाबा ग़लती हो गई माफ़ कर दो.आगे से नही करूँगा.

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) दयाट्स लाइक आ गुड बॉय.... अच्छा बताओ यहाँ कैसे आना हुआ.

मैं : मैं कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ

शहनाज : (उदास होते हुए) फिर से जा रहे हो.

मैं : अर्रे मैं हमेशा के लिए नही जा रहा.बस कुछ दिन की बात है. फिर वापिस आ जाऊंगा.

शहनाज : मोबाइल साथ लेके जा रहे हो ना.

मैं : हम्म... क्यो...

शहनाज : ठीक है जल्दी वापिस आ जाना और अपना ख़याल रखना और मुझसे रोज़ बात करनी पड़ेगी.

मैं : (हाथ जोड़ते हुए) और कोई हुकुम सरकार.

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) अब जल्दी से इधर आओ और पप्पी दो फिर जाओ... बस इतना ही....

मैं : (हैरान होते हुए) अभी.... यहाँ पर....

शहनाज : क्यो यहाँ कोई परेशानी है क्या.

मैं : नही परेशानी तो नही है लेकिन कोई बच्चा देख सकता है ना...

शहनाज : (अपनी कुर्सी से उठ ते हुए) एक मिनिट रूको...

शहनाज ने जल्दी से जाके दोनो पर्दो को दरवाज़े के आगे कर दिया जिससे बाहर से कोई भी हम को नही देख सकता था फिर वो जल्दी से आके मेरी गोद मे बैठ गई और अपनी दोनो बाजू मेरे गले मे हार की तरह डाल ली.

मैं : इरादा क्या है सरकार.

शहनाज : (मुस्कुराते हुए) कुछ खास नही तुम्हारी पप्पी लेने का दिल कर रहा है.

मैं : मुझसे तो ऐसे पूछ रही हो जैसे मैं नही कर दूँगा तो नही लोगि....

मेरे इतना कहते ही उसने अपने होंठ मेरे होंठों से जोड़ दिए और एक दिल-क़श अंदाज़ से मेरे होंठ चूसने लगी मैने भी अपनी दोनो बाजू उसकी कमर मे लपेट ली और उसको अपने साथ अच्छी तरह चिपका लिया जिससे उसके स्तन मुझे मेरी छाती पर चुभने लगे. हम दोनो बड़ी शिद्दत से एक दूसरे के होंठ चूस रहे थे और हम दोनो की मज़े से आँखें बंद थी.

अचानक मुझे ख़याल आया कि सब लोग बाहर मेरा इंतज़ार कर रहे हैं. इसलिए ना चाहते हुए भी मैने शहनाज को खुद से अलग किया. शहनाज कुछ देर वैसे ही मेरे गले मे अपनी दोनो बाजू डाले मेरी छाती पर सिर रख कर बैठी रही. फिर वो मेरे उपर से उठ गई और साइड पर खड़ी हो गई. उसके बाद मैं अपनी कुर्सी से खड़ा हुआ और एक बार फिर से

शहनाज को गले से लगा लिया .उसके बाद हम दोनो अलग हुए और बाहर आ गये जहाँ बच्चे इधर-उधर भाग रहे थे. शहनाज ने सबको डाँट कर उनकी जगह पर वापिस भेज दिया और खुद मेरे साथ यतीम खाने के गेट तक बाहर आ गई जहाँ पर सब लोग मेरा इंतज़ार कर रहे थे. उसके बाद सबसे गले मिलने के बाद सबको उनके हिस्से का काम दुबारा याद करवा दिया फिर आख़िर मे मैं शहनाज के पास आया और उसको भी गले लगा लिया.

शहनाज : जल्दी आ जाना मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगी.

मैं : हमम्म ! अपना ख़याल रखना.

शहनाज : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) तुम भी अपना ख़याल रखना और मुझे फोन करते रहना.

मैं : (मुस्कुराते हुए) ठीक है.

उसके बाद सबको अलविदा कह कर मैं वापिस अपनी गाड़ी मे आके बैठ गया और अपने सफ़र के लिए रवाना हो गया. शहनाज गेट पर खड़ी मुझे जाता हुआ देखती रही.

३२

आज इतने वक़्त के बाद मैं वापिस उसी जगह जा रहा था जहाँ मुझे नयी जिंदगी मिली थी. मुझे अपने गाँव गये पूरे सवा साल हो चुके थे और इन सवा सालो मे जाने क्या-क्या बदल गया होगा. मैं तेज़ रफ़्तार से गाड़ी भगा रहा था.साथ मे बाबा, सलमा, जास्मिन और हीना के बारे मे भी सोच रहा था जाने वो लोग मेरे बिना कैसे होंगे. रास्ता लंबा था और वक़्त था जो बीतने का नाम ही नही ले रहा था. एक-एक पल मेरे लिए एक सदी जैसा हो गया था. मैं गाड़ी भी चला रहा था और अपनी बीती हुई जिंदगी को भी याद कर रहा था. अचानक मेरी नज़र उसी पेट्रोल पंप पर पड़ी जिस पेट्रोल पंप से मैने पेट्रोल भरवाया था और जब मैं घायल था तो वहाँ पर खड़े लड़के ने मेरी मदद करने की कोशिश भी की थी. वहाँ कुछ लोग तोड़-फोड़ कर रहे थे. मैने उन लोगो को देख कर गाड़ी वही रोक दी और गाड़ी से बाहर निकल आया. वहाँ पर कुछ लोग उस लड़के को बुरी तरह मार रहे थे. मैं तेज़ कदमो के साथ वहाँ गया और जाते ही सामने खड़े हुए आदमी को लात मारी ,जो उस लड़के को बुरी तरह पीट रहा था मेरी लात खाते ही वो दूर जाके ज़मीन पर गिर गया.

आदमी : कौन है ओये तू...

मैं : क्यो मार रहे हो इस लड़के को....

आदमी : साले ने हम से ब्याज पर पैसा लिया था अपनी माँ के इलाज के लिए .अब इसकी माँ को मरे को इतना वक़्त हो गया है और अभी तक हमारा पैसा वापिस नही किया.

मैं : कितना पैसा है...

आदमी : २०,००० और उपर से १५,००० ब्याज.

मैने बिना कोई सवाल जवाब किए अपने जेब मे हाथ डाला और ५०,००० रुपये के नोट का बंडल उस आदमी के मुँह पर फैंक दिया.

मैं : (अपनी जेब से गन निकाल कर उसको लोड करते हुए) अब दफ़ा हो जाओ यहाँ से. नही तो तुम मे से कोई भी अपनी टाँगो पर चल कर यहाँ से नही जाएगा.

आदमी : बादशाहो ! हम को हमारे पैसे मिल गये .अब हमने इससे क्या लेना है... शुक्रिया.

मैं : (उंगली से जाने का इशारा करते हुए) दफ़ा हो जाओ.

उसके बाद मैने नीचे पड़े उस लड़के को उठाया और पेट्रोल पंप के अंदर ले गया.

मैं : (घड़े से पानी भरते हुए) तुम ठीक हो.

लड़का : जी साहब मैं ठीक हूँ... मुझे समझ नही आ रहा आपका ये अहसान मैं कैसे उतारूँगा.

मैं : मैने तुम पर कोई अहसान नही किया. यही समझ लो तुम्हारी अम्मी ने तुम्हारे लिए पैसे भेजे थे.

लड़का : शुक्रिया साहब.

मैं : (लड़के को पानी देते हुए) क्या नाम है तुम्हारा.

लड़का : (पानी पीते हुए) जी... विशाल....

मैं : एक बात समझ नही आई तुम्हारा तो ये पेट्रोल पंप है ना फिर तुम्हारे पास पैसे की क्या कमी है.

लड़का : साहब ये पेट्रोल पंप मेरा नही उस्मान भाई जान का है.मैं तो यहाँ मुलाज़िम हूँ.

मैं : (हैरान होते हुए) क्या उस्मान का है ये पेट्रोल पंप.

लड़का : जी साहब पहले ख्वाजा साहब का होता था लेकिन आज कल इस पेट्रोल पंप के मालिक उस्मान भाई जान हैं.

मैं : (मुस्कुराते हुए) तुमने देखा है उस्मान को.

विशाल : जी नही साहब... बस नाम ही सुना है... बाबा के जनाज़े पर दूर से देखा था एक बार .उसके बाद कभी नही देखा.

मैं : (मुस्कुराते हुए) तो अब नज़दीक से भी देख लो....

विशाल : (अपनी जगह से खड़ा होते हुए) आप उस्मान भाई हो साहब जी...

मैं : (हां मे सिर हिलाते हुए) दुनिया तो यही कहती है...

विशाल : (हाथ जोड़ते हुए) आप एक दम बाबा जैसे हो. साहब बाबा ने मुझे रोज़ी दी और आपने आज मेरी जान बचाई. मेरी ये जान आज से आपकी अमानत है. अगर कभी मैं आपके काम आ सकूँ तो अपनी खुश नसीबी समझूंगा..

उसके बाद हम कुछ देर बाते करते रहे फिर वहाँ से पेट्रोल भरवा कर उसको कुछ पैसे दिए पेट्रोल पंप की मरम्मत के लिए और कुछ पैसे उसके खुद के इलाज के लिए. फिर मैं अपने सफ़र के लिए वापिस निकल पड़ा. मैं करीब ९ घंटे से लगातार गाड़ी चला रहा था.इसलिए बुरी तरह थक गया था और मुझे भूख भी बहुत लग रही थी .लेकिन आस-पास कही भी कोई होटेल या ढाबा नही खुला था जहाँ मैं खाना खा सकूँ .सलिए मैने गाड़ी चलाते रहना ही मुनासिब समझा मैं सुबह तक लगातार गाड़ी चलाता रहा.

सुबह मैं उस शहर मे आ गया था जहाँ हीना अक्सर मुझे इलाज के लिए लाया करती थी. इसलिए गाड़ी को मैने उसी शॉपिंग माल के सामने रोक दिया जहाँ से हिना ने मुझे कपड़े दिलवाए थे .मैने जल्दी से गाड़ी को पार्क किया और उस मॉल मे चला गया. सुबह का वक़्त था इसलिए पूरा मॉल खाली नज़र आ रहा था. वहाँ कोई भी नही था बस दुकान वाले ही आए हुए थे जो अपना-अपना माल सेट कर रहे थे. मैने एक दुकान मे जाके जास्मिन, सलमा, हीना और बाबा के लिए नये कपड़े लिए और कुछ और समान लेके वापिस गाड़ी मे आके बैठ गया और फिर से अपना सफ़र शुरू कर दिया. उस शहर से मेरा गाँव पास ही था. इसलिए जल्दी ही मैं अपने गाव की सरहद मे घुस चुका था. जहाँ से मेरा गाव शुरू होता था.

कुछ ही देर मे मैं मेरे गाव के काफ़ी करीब तक पहुँच गया था. लह-लहाते खेत और ताज़ी हवा ने मेरी सारी थकान को एक दम गायब कर दिया. गाव की ताज़ी हवा मे साँस लेते ही जैसे मेरा रोम-रोम खिल उठा. मैने गाड़ी साइड पर रोक दी और कुछ देर बाहर आके गाव

की ताज़ा हवा और खेतो की हरियाली का मज़ा लेने लगा.वही पास ही एक साफ पानी का ट्यूब-वेल था जहाँ मैने पानी पीया और चेहरे को धो कर वापिस अपने सफ़र के लिए निकल पड़ा. अब कुछ ही दूरी रह गई थी और अब मैं किसी भी वक़्त मैं मेरे गाव तक पहुँच सकता था इसलिए अब मैने अपनी गाड़ी की रफ़्तार भी बढ़ा दी . मुझे गाव मे घुसते ही एक अजीब सी खुशी महसूस हो रही थी एस लग रहा था जैसे मैं अपने घर वापिस आ गया हूँ. कुछ ही दूरी पर मुझे मेरा खेत नज़र आया जहाँ मैं काम किया करता था. मैने फॉरन गाड़ी रोकी और सबसे पहले अपने खेत मे चला गया वहाँ गन्ने की फसल एक दम तैयार खड़ी थी. मैं कुछ देर अपने खेत मे रुका और फसल का जायेज़ा लेने लगा और सोचने लगा की ज़रूर ये फसल जास्मिन और सलमा ने उगाई होगी. फिर वापिस आके अपनी गाड़ी मे बैठ गया और अपनी गाड़ी को अपने घर की तरह दौड़ा दिया. आज मैं बेहद खुश था इसलिए बार-बार अपने घरवालो के लिए खरीदे हुए समान को बार-बार देख रहा था और चूम रहा था.

कुछ ही देर मे मैने मेरी गाड़ी मेरे घर के सामने रोक दी. मैं जल्दी से गाड़ी से उतरा और अपना बॅग और घरवालो के लिए खरीदा हुआ समान निकाला और तेज़ कदमो के साथ अपना घर के दरवाज़े के बाहर खड़ा हो गया. मैं बेहद खुश भी था और डर भी रहा था कि जाने इतने वक़्त के बाद सब लोग मुझे देख कर कैसा बर्ताव करेंगे. सलमा तो ज़रूर मुझसे नाराज़ होगी और जास्मिन तो ज़रूर मेरे साथ झगड़ा तक कर लेगी लेकिन हाँ बाबा ज़रूर मेरा साथ देंगे और उन दोनो को चुप करवा देंगे. ऐसे ही कई अन-गिनत ख़याल और अपने ज़ोर-ज़ोर से धड़कते दिल के साथ मैने दरवाज़ा खट-खटाया. कुछ देर बाद एक औरत ने दरवाज़ा खोला और मेरे सामने आके खड़ी हो गई.

औरत : हाँ क्या काम है.

मैं : जी मैं सुजल हुन्न...

औरत : (बेरूख़ी से) कौन सुजल ... किससे मिलना है तुमको.

मैं : आप कौन हो ओर यहाँ क्या कर रही हो.

औरत : अरे अजीब आदमी हो. मेरे घर मे मुझ से ही पूछ रहे हो कि यहाँ क्या कर रही हूँ... तुम हो कौन और किससे मिलना है.

मैं : जी आप बाबा ,जास्मिन या सलमा मे से किसी को भी बुला दीजिए वो मुझे जानते हैं.

औरत : यहाँ इस नाम का कोई नही है. दफ़ा हो जाओ यहाँ से.

इतना कह कर उसने मेरे मुँह पर दरवाज़ा बंद कर दिया. मुझे कुछ भी समझ नही आ रहा था कि ये क्या हुआ .सब लोग कहाँ गये और ये कौन औरत थी जो इतनी बेरूख़ी से मुझसे बात कर रही थी. बाबा कहाँ है, सलमा कहाँ है, जास्मिन कहाँ है ऐसे ही कई सवाल एक साथ मेरे दिमाग़ मे चल रहे थे जिनका मुझे जवाब ढूँढना था. मैं वापिस उदास और परेशान हालत मे वापिस अपनी गाड़ी के पास आ गया और सारा समान वापिस गाड़ी मे रख दिया. कुछ देर गाड़ी मे बैठने के बाद मैं सोचने लगा कि अब मैं कहा जाऊ और किससे पुछु इन्न सब लोगो के बारे मे तभी अचानक मुझे याद आया कि हीना मुझे इन सबके बारे मे बता सकती है.

मैने फॉरन गाड़ी स्टार्ट की और गाड़ी को हीना की हवेली की तरफ घुमा दिया. मैं उस वक़्त काफ़ी परेशान था इसलिए बहुत तेज़ रफ़्तार से गाड़ी चला रहा था. कुछ ही मिनिट मे मैने गाड़ी को सरपंच की हवेली के सामने रोक दिया. सामने मुझे २ दरबान बैठे नज़र आए. मैं फॉरन गाड़ी से उतरा और उन दोनो के पास जाके खड़ा हो गया. इन दोनो दरबानो को मैं जानता था. इसलिए उनको देखते ही मैने फॉरन पहचान लिया.

दरबान : कौन हो भाई क्या काम है.

मैं : अर्रे मुझे भूल गये क्या ? मैं सुजल हूँ याद आया.

दरबान : (सवालिया नज़रों से मुझे देखते हुए) कौन सुजल ... क्या काम है.

मैं : यार भूल गये मैं तुम्हारी छोटी मालकिन को गाड़ी चलानी सिखाता था ! याद है ?

दरबान : (कुछ याद करते हुए) हाँ... हाँ... याद आ गया तुम हैदर बाबा के छोटे बेटे हो ना.

मैं : हाँ मैं उन्ही का बेटा हूँ... मुझे तुम्हारी मेमसाहब से मिलना है

दरबान : (हँसते हुए) पागल हो क्या ? खुद भी मार खाओगे, हम को भी मार खिलवाओगे .उनसे मिलने की इजाज़त किसी को नही है.

मैं : लेकिन समस्या क्या है ? पहले भी तो मैं उनसे मिलता ही था ना.

दरबान : आज छोटी मालकिन की शादी है .इसलिए आज उनसे मिलने की इजाज़त किसी को नही है.

मैं : क्या... आज हीना की शादी है.

दरबान : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हाँ

मैं : देखो मेरा उससे मिलना बहुत ज़रूरी है. मेरी मजबूरी को समझो.

दरबान : (आपस मे बात करते हुए) ठीक है लेकिन इसमे हमारा क्या फ़ायदा.

मैं : (अपनी जेब से कुछ पैसे निकाल कर दरबान को देते हुए) अब तो मिल सकता हूँ ना.

दरबान : (खुश हो कर नोट गिनते हुए) कितना वक़्त लगेगा.

मैं : बस १०-१५ मिनिट ज़्यादा से ज़्यादा नही.

दरबान : ठीक है लेकिन ज़्यादा वक़्त मत लगाना. ये मेरा साथी तुमको पिछे के रास्ते से हवेली मे ले जाएगा. लेकिन अगर किसी ने तुमको पकड़ लिया तो हम तुमको नही जानते, तुम हम को नही जानते .बोलो मंज़ूर है.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) मंज़ूर है अब चलो जल्दी.

उसके बाद एक दरबान मुझे हवेली के पिछे की तरफ ले गया. जहाँ से एक छोटा सा दरवाज़ा था.जिस पर ताला लगा हुआ था.उसने मेरे सामने जल्दी से ताला खोला और फिर हम दोनो अंदर चले गये. वो चारो तरफ देखता हुआ और लोगो की नज़रों से बचा कर उपर तक ले आया और उंगली से हीना के कमरे की तरफ इशारा कर दिया.

दरबान : (उंगली से इशारा करते हुए) ये वाला कमरा है छोटी मालकिन का ! अब जल्दी जाओ ओर ज़्यादा वक़्त मत लगाना क.ही कोई आ ना जाए नही तो दोनो मरेंगे.

मैं : शुक्रिया... मैं जल्दी आ जाऊंगा.

मैं दबे पाँव हीना के कमरे मे चला गया और कमरे को अंदर से कुण्डी लगा ली ताकि कोई भी बाहर का अंदर ना आ सके. मैं जैसे ही कमरे मे घुसा मुझे सामने बेड पर हीना लेटी हुई नज़र आई.जिसकी हालत देख कर अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि या तो वो बीमार है या फिर वो सो रही है. उसके पास ही मेरा कुर्ता पाजामा पड़ा था जो उसको मैने पहनने के लिए दिया था .जिसे मैने फॉरन पहचान लिया. मैं जल्दी से उसके पास गया और उसको कंधे से हिला कर उठाया.

मैं : (दबी हुई आवाज़ मे)उठो हीना.... हीना.... हीना

हीना : (बिना मेरी तरफ देखे) दफ़ा हो जाओ यहाँ से. मैने कहा ना मैं ये शादी नही करूँगी.

ये बात सुनकर मुझे भी झटका लगा कि ये हीना क्या कह रही है. लेकिन मैं जानना चाहता था कि असल माजरा क्या है .हीना क्यो शादी से मना कर रही है.

मैं : (हीना को पकड़कर उठाते हुए) हीना मैं हूँ देखो मुझे एक बार...

हीना : (थप्पड़ मारने के लिए अपना हाथ उठाते हुए) सुजल तूमम्म... तुम वापिस आ गये.

मैं : (मुस्कुराते हुए) हाँ मैं वापिस आ गया हूँ. ! क्या हुआ है... तुमने ये क्या हालत बना रखी है अपनी. (अपने हाथ से हीना के बिखरे हुए बाल संवारते हुए)

हीना : (रोते हुए मुझे गले लगाकर) मुझे ले चलो यहाँ से सुजल. मैं यहाँ एक पल भी अब रहना नही चाहती.

मैं कुछ समझ नही पा रहा था कि हुआ क्या है. इसलिए बिना उससे कोई और सवाल किए मैं उसको चुप करवाने लगा. कुछ देर रोने के बाद वो चुप हो गई फिर मैने पास पड़े ग्लास से उसको पानी पिलाया.

मैं : अब ठीक हो.

हीना : (पानी पीते हुए हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म.....

मैं : अब मुझे बताओ क्या हुआ है यहाँ.

हीना : तुम्हारे जाने के बाद तुम नही जानते यहाँ बहुत कुछ हो गया है.मेरे साथ भी और तुम्हारे घरवालो के साथ भी.

मैं : क्या हुआ है बताओ तो सही...

हीना : तुम्हारे वालिद और सलमा अब इस दुनिया मे नही हैं.

मैं : (हैरानी से) क्या... कब हुआ ये सब कैसे हुआ.

हीना : तुम्हारे जाने के बाद बाबा की तबीयत बहुत खराब रहने लगी थी इसलिए मैने और जास्मिन ने मिलकर उनको हॉस्पिटल अड्मिट करवा दिया. बिचारी जास्मिन ने बहुत उनकी खिदमत की आखरी वक़्त मे.लेकिन उपर वाले की मर्ज़ी के आगे किया भी क्या जा सकता है.वो जास्मिन और सलमा को रोता हुआ छोड़ कर चले गये.

मैं : (अपनी आँख से आँसू साफ करते हुए) और सलमा...

हीना : बाबा के जाने के कुछ दिन बाद ही अब्दुल जेल से रिहा होके वापिस आ गया और आते ही उसने दोनो लड़कियो पर ज़ुल्म करने शुरू कर दिए. वो पैसे के लिए रोज़ सलमा को मारता था. उस बेगैरत को इतना भी तरस नही आया कि सलमा माँ बनने वाली है.उसने तो यहाँ तक इनकार कर दिया था कि वो बच्चा उसका नही है और वो सलमा पर गंदे-गंदे इल्ज़ाम लगा के रोज़ उसको मारता था. ऐसे ही एक बार उसने सलमा के पेट मे लात मार दी जिससे उसकी तबीयत बहुत ज़्यादा खराब हो गई.बिचारी जास्मिन भागी-भागी मेरे पास आई हम दोनो मिलकर उसको शहर लेके गये लेकिन डॉक्टर ने कहा कि सलमा को बचना बहुत मुश्किल है और बच्चे की जान को भी ख़तरा है.इसलिए ऑपरेशन करना पड़ेगा लेकिन ऑपरेशन के बाद बच्चा तो बच गया लेकिन सलमा को डॉक्टर बचा नही सके. लेकिन उसकी निशानी आज भी जास्मिन के पास है. सलमा के कफ़न दफ़न के बाद अब्दुल ने मकान और खेत पर क़ब्ज़ा कर लिया उसके बाद उसने एक तवायफ़ से शादी कर ली

बिचारी जास्मिन उस बच्चे को भी संभालती थी और दिन भर घर का काम भी करती थी. बदले मे उसको २ वक़्त का खाना भी पूरा नही दिया जाता था.अब्दुल की नयी बीवी रोज़ जास्मिन को बहुत मारती थी. फिर एक दिन उस बद-ज़ात औरत ने जास्मिन को भी घर निकाल दिया. अब्दुल के पास जब पैसे ख़तम हो गये तो.उसने तुम्हारे खेत मेरे अब्बू को बेच दिए.

मैं : (रोते हुए) जास्मिन और सलमा का बच्चा कहाँ है.

हीना : (अपने आँसू पोंछते हुए) यही हैं मेरे पास जास्मिन अब हवेली मे ही काम करती है.

मैं : क्या मैं मिल सकता हूँ उन दोनो से.

हीना : हाँ ज़रूर मिल सकते हो लेकिन मुझे नीचे जाने की इजाज़त नही है तुम रूको मैं किसी को भेज कर जास्मिन को बुलवाती हूँ.

उसके बाद हीना ने मुझे पर्दे के पिछे छुपने को कहा और खुद बाहर खड़े दरबान से जास्मिन को बुला कर लाने का कहा और वापिस आके गेट बंद कर लिया और फिर से आके मेरे पास बेड पर बैठ गई.

मैं : हीना मुझे समझ नही आ रहा मैं ये तुम्हारा अहसान कैसे उतारूँगा. तुम नही जानती तुमने मेरे लिए क्या किया है.

हीना : पागल हो क्या मैने कुछ नही किया... ये तो मेरा फ़र्ज़ था.तुम्हारे बाद उनका ख़याल मुझे ही तो रखना था ना.

मैं : (हीना के दोनो हाथ चूमते हुए) शुक्रिया... तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया.अगर मैं कभी तुम्हारे किसी काम आ सकूँ तो खुद को बहुत खुशनसीब समझूंगा.

हीना : सुजल जानना नही चाहोगे मेरी शादी किससे हो रही है.

मैं : (सवालिया नज़रों से हीना को देखते हुए) किस के साथ..?

हीना : इंस्पेक्टर चौहान....

ये मेरे लिए एक और बड़ा झटका था क्योंकि उसी को तो मैं यहाँ मारने आया था.

मैं : क्या$$$आ...

हीना : मैं उस बेगैरत इंसान से शादी नही करना चाहती. सुजल क्योंकि मैं तुमसे प्यार करती हूँ.उस कमीने ने मेरे अब्बू को भी पता नही कैसे शादी के लिए राज़ी कर लिया है. जानते हो जिस कमीने पर तुम अपने परिवार की ज़िम्मेदारी छोड़ कर गये थे उसने एक बार भी आके ये नही देखा कि वो लोग ज़िंदा है या मर गये. बस डॉक्टर नताशा कभी-कभी आती थी जो जास्मिन और सलमा को कुछ पैसे दे जाया करती थी घर खर्च के लिए .उसके बाद उसने भी आना बंद कर दिया सुना है उसकी किसी कार आक्सिडेंट मे मौत हो गई थी. मुझे वो इंसान बिल्कुल पसंद नही है जो इंसान अपनी ज़िम्मेदारी ठीक से नही संभाल सकता.क्या गारंटी है कि वो मेरा ख़याल रख लेगा.

मैं : तुम मुझसे प्यार करती हो हीना...??

हीना : (नज़रें नीचे करके हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म... क्या तुम्हारी जिंदगी मे कोई और लड़की है.

मैं : (मुझे कुछ भी समझ नही आ रहा था कि मैं क्या जवाब दूं लेकिन हीना का मुझ पर अहसान था इसलिए मैने बिना कुछ सोचे समझा उसको हाँ कहने का फ़ैसला कर लिया) नही ऐसी कोई बात नही ह. मुझे भी तुम बहुत पसंद हो. लेकिन तुम मेरी जिंदगी के बारे मे कुछ नही जानती एक बार मेरा सच सुन लो उसके बाद जो तुम्हारा फ़ैसला होगा मुझे मंज़ूर होगा.

हीना : मुझे कुछ नही पता.मुझे सिर्फ़ इतना पता है कि मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ .तुम मुझे जिस हाल मे भी रखोगे मैं रह लूँगी और बहुत खुश रहूंगी तुम्हारे साथ.

मैं : लेकिन मैं एक गैंगस्टर हूँ .और मेरा नाम सुजल नही उस्मान है.

हीना : तो क्या हुआ गैंगस्टर शादी नही करते क्या. मुझे उससे कोई फरक नही पड़ता. मैं बस तुमसे प्यार करती हूँ इससे ज़्यादा मुझे कुछ नही पता .अब बोलो मुझसे शादी करोगे या नही.

मैं : (बिना कुछ बोले हीना का चेहरा पकड़ कर उसके होंठ चूमते हुए) मिल गया जवाब.

हीना : (आँखें फाड़-फाड़ कर मुझे देखते हुए) हाँ....

तभी किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया तो हम लोग दूर होके बैठ गये. हीना ने मुझे दुबारा पर्दे के पिछे छुप जाने का इशारा किया और खुद दरवाज़ा खोलने चली गई. उसके बाद मुझे २ आवाज़े सुनाई देने लगी क्योंकि मैं पर्दे के पिछे था इसलिए कुछ भी देख नही पा रहा था. इनमे से एक आवाज़ हीना की थी और दूसरी जास्मिन की थी.

जास्मिन : अपने मुझे बुलाया छोटी मालकिन.

हीना : कहाँ थी इतनी देर चल अंदर आ तेरे लिए एक तोहफा है मेरे पास.

जास्मिन : कौनसा तोहफा मालकिन?

हीना : पहले तू अंदर तो आ फिर दिखाती हूँ और आते हुए दरवाज़ा बंद कर देना अंदर से.

जास्मिन : अच्छा.

उसके बाद कुछ देर कमरे मे खामोशी छा गई फिर मैं बाहर निकलने का इंतज़ार करने लगा कि कब हीना मुझे आवाज़ दे और मैं बाहर निकलु.

जास्मिन : बंद कर दिया दरवाज़ा छोटी मालकिन.

हीना : तुझे एक जादू दिखाऊ.

जास्मिन : कौनसा जादू.

हीना : शर्त लगा ले तेरी आँखें बाहर आने को हो जाएँगी मेरा जादू देख कर.

जास्मिन : मैं कुछ समझी नही मालकिन.

हीना : समझती हूँ रुक... अब देख मेरा जादू... १.... २.... ३.....

३ कहने के साथ ही झटके से हीना ने मेरे सामने आया हुआ परदा हटा दिया. जास्मिन मुझे आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगी और मैं भी इतने वक़्त के बाद जास्मिन को देख रहा था. इसलिए उसी जगह पर किसी पत्थर की तरह खड़ा उसको देखने लगा. जास्मिन पहले से बहुत कमज़ोर हो गई थी और शायद रो-रो कर उसके आँखो के नीचे काले दाग पड़ गये थे. हम दोनो की ही आँखों मे आँसू थे और बिना पलक झपकाए एक दूसरे को देख रहे थे. जास्मिन बिना कुछ सोचे समझे भाग कर मेरे पास आई और मेरे गले से लग कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी. मैं भी उसके सिर पर हाथ फेर कर उसको चुप करवाने लगा. मुझे समझ नही आ रहा था कि उसको क्या कहूँ और कहाँ से बात शुरू करू. वो किसी छोटे बच्चे की तरह लगातार सिसक-सिसक कर मुझसे लिपट कर रो रही थी. मैने हीना को इशारा से पानी लाने को कहा तो ,वो भागती हुई बेड के पास पड़ा आधा ग्लास पानी ही उठा ला.ई मैने वो पानी जास्मिन को पिलाया और चुप करवाया और उसको पकड़ कर बेड तक ले आया और उसको बेड पर बिठा दिया और खुद भी उसके साथ बैठ गया. काफ़ी देर रोने के बाद जास्मिन का मन हल्का हो गया था इसलिए अब वो बेहतर लग रही थी.

जास्मिन : तुम कहाँ थे इतने दिन सुजल ? तुम नही जानते तुम्हारे पिछे हमारे साथ क्या-क्या हो गया.बाबा और सलमा भाभी... (उसने फिर से रोना शुरू कर दिया)

मैं : मैं सब जान गया हूँ जास्मिन मुझे हीना ने सब बता दिया है. फिकर मत करो मैं अब आ गया हूँ ना ! तुम्हारे साथ जो बुरा होना था हो गया. अब रोने की उनकी बारी है ,जिन्होने हमारे परिवार को इतना रुलाया है.

हीना : जास्मिन अकेली आई हो सुजल कहाँ है.

मैं : तुम्हारे सामने तो बैठा हूँ.

हीना : (हँसते हुए) तुम नही हमारा छोटा सुजल .

मैं : (सवालिया नज़रों से हीना को और जास्मिन को देखते हुए) छोटा सुजल ...???

हीना : सलमा के बेटे का नाम भी हमने सुजल ही रखा है. क्योंकि ये नाम हमने नही बल्कि खुद सलमा ने ही रखा है. वो चाहती थी कि उसका बेटा बड़ा होके तुम जैसा बने.

जास्मिन : (अपने आँसू साफ करते हुए) मैं अभी लेके आती हूँ.

हीना : यहाँ मत लेके आना उसको... तुम ऐसा करो हवेली के पिछे वाले रास्ते पर पहुँचो हम दोनो अभी वही आ रहे हैं.

मैं : अभी नही शाम को जाएँगे.

हीना : पागल हो गये हो शाम को चौहान और उसके लोग यहाँ आ जाएँगे.तब निकलना ना-मुमकिन होगा.

मैं : कुछ नही होगा मुझ पर भरोसा रखो आज चौहान को मारे बिना मैं भी यहाँ से जाने वाला नही हूँ.

हीना : वो पुलिस वाला है .उसको मारोगे तो सारे पुलिस वाले हमारे पिछे पड़ जाएँगे.

मैं : वो पुलिस वाला है तो अब मैं भी कोई मामूली आदमी नही हूँ.पुलिस के हर रेकॉर्ड मे हमारा नाम शान से मोस्ट वांटेड की लिस्ट मे टॉप पर लिखा जाता है (मुस्कुरा कर) अब चाहे कुछ भी हो जाए उसको मारे बिना मुझे चैन नही आएगा .या तो मर जाऊंगा या उस हरामखोर को मार दूँगा. हीना मैने मेरे परिवार के २ अज़ीज़ लोग खोए हैं और वो सब उस कमीने की वजह से. क्योंकि मैं जाने से पहले अपने परिवार की ज़िम्मेदारी उसको देके गया था. वैसे भी उसके साथ मेरा कुछ पुराना हिसाब भी है.वो नुकसान तो मैं उसको माफ़ भी कर देता अगर उसने मेरे परिवार का ख़याल रखा होता. लेकिन यहाँ आके जो मुझे पता चला है उसके बाद अगर मैने उसको ज़िंदा छोड़ दिया तो लानत है मुझ जैसे बेटे पर जो अपने बाप की मौत का बदला भी नही ले सका.

हीना : मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ.

जास्मिन : सुजल तुमको क्या लगता है सिर्फ़ चौहान ही दोषी है बाबा की और सलमा भाभी की मौत का.... तुम नही जानते अब्दुल ने भी हम पर कम ज़ुल्म नही किए आज अगर सलमा भाभी हमारे बीच नही है तो वो सिर्फ़ उस कमीने की वजह से नही है.

मैं : (जास्मिन का हाथ पकड़कर उसको खड़ा करते हुए) चलो पहले ये हिसाब ही बराबर कर लेते हैं.

हीना : अब तुम कहाँ जा रहे हो.

मैं : मैं ज़रा अब्दुल से मिल कर आता हूँ... तब तक तुम किसी से कुछ मत कहना बस शादी के लिए तैयार हो जाओ.

हीना : ठीक है लेकिन शाम तक तुम आ जाओगे ना.

मैं : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म... फिकर मत करो.

हीना : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) ठीक है जैसे तुम कहो.

मैं : जास्मिन तुम नीचे जाओ और छोटे सुजल को लेके तुम मुझे हवेली के पिछे वाले गेट पर मिलो.

जास्मिन : अच्छा...

उसके बाद जास्मिन और मैं हीना के कमरे से बाहर निकल आए. जास्मिन वापिस तेज कदमो के साथ सीढ़ियो से नीचे उतर गई और मैं उस दरबान के साथ दूसरी सीढ़िया उतरता हुआ हवेली के दरवाज़े के पिछे के रास्ते पर आ गया.

दरबान : क्या भाई कितनी देर लगा दी तुमने मेरी तो जान निकल रही थी डर से.

मैं : तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया तुमने मेरी बहुत मदद की है (अपनी जेब से कुछ और पैसे निकालते हुए) ये लो रखो.

दरबान : नही भाई तुमने पहले ही काफ़ी पैसे दे दिए हैं

मैं : अर्रे रख ले ! तेरे काम आएँगे.

दरबान : (नज़रे नीचे करके मुस्कुराते हुए) शुक्रिया... और कोई काम हो तो याद कर लेना.

मैं : फिकर मत करो शाम को ही तुमसे एक और काम है मुझे.

दरबान : अच्छा...

उसके बाद हम दोनो पिच्चे के रास्ते से हवेली के बाहर निकल गये और वापिस हवेली के सामने वाले दरवाज़े पर आ गये .वहाँ से मैं अपनी गाड़ी मे बैठ गया और वो दरबान अपनी जगह पर जाके बैठ गया. मैने गाड़ी स्टार्ट की और वापिस हवेली के पिछे के दरवाज़े की तरफ ले गया. वहाँ जास्मिन पहले से खड़ी मेरा इंतज़ार कर रही थी उसने एक छोटे से बच्चे को भी पकड़ रखा था. मैने जल्दी से गाड़ी का दरवाज़ा खोला और उसको अंदर आने का इशारा किया वो बिना कुछ बोले मुस्कुरा कर गाड़ी के अंदर बैठ गई.

जास्मिन : (मुस्कुराते हुए) ये देखो हमारा छोटा सुजल ... सुंदर है ना

मैं बिना कुछ बोले उस बच्चे को अपने गोद मे उठाया और उसको देखने लगा .बहुत ही मासूम और खूबसूरत था उसका नाक एक दम सलमा जैसा था और आँखें एक दम मेरे जैसी. आख़िर था भी तो मेरा खून. उसको मैं जी भर के देखता रहा और खुशी से मेरी आँखो मे आँसू आ गये .मैने उसको अपने चेहरे के करीब किया और उसका माथा चूम लिया और वापिस जास्मिन को पकड़ा दिया. उसके बाद मैने गाड़ी को अपने पुराने घर की तरफ वापिस घुमा दिया जहाँ अब अब्दुल रहता था.

जास्मिन : हम कहाँ जा रहे हैं सुजल .

मैं : हम अब्दुल से मिलने जा रहे है.

जास्मिन : नही मैं वहाँ कभी नही जाऊंगी. उस ज़लील इंसान का मैं मुँह भी नही देखना चाहती.

मैं : तुम्हारे सामने ही सारा हिसाब बराबर करके जाऊंगा मैं.

जास्मिन बिना कुछ बोले नज़रे झुका कर बैठ गई. कुछ ही देर मे मैने घर के सामने गाड़ी को रोक दिया.

मैं : जास्मिन तुम यही बैठो मैं अभी आता हूँ.

जास्मिन : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) अच्छा.

उसके बाद मैं गाड़ी से उतरा और जाके घर के दरवाज़े के सामने खड़ा हो गया. मैने १-२ बार दरवाज़ा खट-खटाया जब किसी ने दरवाज़ा नही खोला तो मैने एक जोरदार लात दरवाज़े पर मारी ,जिससे झटके से दरवाज़े का एक हिस्सा टूट गया और हवा मे लटकने लगा दरवाज़ा खुल गया था. मैं बिना कुछ बोले अंदर चला गया और चारो तरफ देखने लगा. पूरा घर वैसे का वैसा था लेकिन समान काफ़ी बदल गया था टूटी-फूटी चीज़ो की जगह नयी और महँगी चीज़े आ गई थी. अभी मैं घर को देख ही रहा था कि एक औरत मेरी तरफ भाग कर आई.

औरत : कौन है तू और इस तरह मेरे घर मे घुसने की तेरी हिम्मत कैसे हुई.

मैं : (उस औरत को गर्दन से पकड़ कर उपर हवा मे उठाते हुए) जिस घर को तू अपना कह रही है वो मेरा घर है. मेरे बाबा का घर जिस पर तू और तेरे मादर जात शौहर ने क़ब्ज़ा किया है.अब या तो तू उसको बाहर निकाल नही तो मैं तेरी जान ले लूँगा.

औरत : (हवा मे पैर चलाते हुए और उंगली से बाबा के कमरे की तरफ इशारा करते हुए) उधर... उधहाअ...उधाअरररर....

मैं : (बिना कुछ बोले उस औरत को छोड़ते हुए) अब्ददुललल्ल..... बाहर निकल.

मेरे ज़ोर से उसका नाम पुकारने पर अब्दुल शराब के नशे मे धुत्त लड़-खडाता हुआ बाहर आया. उसके हाथ मे अब भी शराब की बोतल थी.

अब्दुल : कौन है ओये... सुजल तू यहा....

मैं : मेरे घरवाले कहाँ है अब्दुल.

अब्दुल : क्या बताऊ यार सब मर गये. मैने उनको बचाने की बहुत कोशिश की, बाबा तो मेरे आने से पहले ही गुज़र चुके थे .सलमा और जास्मिन भी एक दिन मर गई.

मैं : (गुस्से मे तेज़ कदमो के साथ अब्दुल के पास जाके उसके मुँह पर थप्पड़ मारते हुए) मादर जात झूठ बोलता है. तूने मारा है मेरी सलमा को ,तूने घर से निकाला जास्मिन को दर-दर की ठोकर खाने के लिए.साले शरम आती है कि तू उस फरिश्ते जैसे इंसान का बेटा है.

अब्दुल : मैं... मैं... मैं क्या करता मुझे नबीला से प्यार जो था और वैसे भी सलमा बहुत गिरी हुई लड़की थी.साली मेरे जेल जाने के बाद दूसरो के साथ सोती थी हरामजादी.

मैं : भोसडीके एक बार और तूने सलमा को गाली निकली तो यही गाढ दूँगा तुझे.

अब्दुल : साली बाज़ारु को बाज़ारु ही कहूँगा ना पता नही किसका पाप मेरे गले डाल रही थी कमीनी.... अच्छा हुआ मर गई. (हँसते हुए)

मैं : (बिना कुछ बोले अपनी गन निकाली और उसके सिर मे २ फायर कर दिए) मादर जात.... अब बोल... बोल हरामख़ोर सलमा के बारे मे क्या बोलेगा तू.... (अब्दुल की लाश को लात मारते हुए) ऐसे ही लात मारी थी ना सलमा को अब मार लात दिखा कितनी ताक़त है तुझ मे दिखा मुझे.

मैं गुस्से मे पागल हो चुका था और लगातार उसके पेट मे ठोकर मार रहा था.मुझे इस बात की भी परवाह नही थी कि वो मर चुका है. तभी मुझे जास्मिन की आवाज़ सुनाई दी...

जास्मिन : (रोते हुए) बस करो सुजल वो मर चुका है.

मैं : हरामख़ोर सलमा को बाज़ारु बोलता है.

जास्मिन : चलो यहाँ से तुमको मेरी कसम है चलो.

मैं बिना कुछ बोले हाथ मे गन पकड़े वहाँ से चलने लगा तभी मेरी नज़र उस औरत पर पड़ी जो ज़मीन पर गिरी पड़ी थी मुझे देखते ही वो रेंगते हुए मेरे पास आ गई और मेरे पैर पकड़ लिए.

औरत : मुझे माफ़ कर दो मुझे जाने दो मैने तो कुछ नही किया.

जास्मिन : (उस औरत को लात मारते हुए) अब्दुल को इंसान से जानवर बनाने वाली तू ही है कमीनी.

मैं : (बिना कुछ बोले अपनी गन को दुबारा लोड करते हुए) चलो जास्मिन... (ये बोलते ही मैने १ गोली उस औरत के सिर मे भी मार दी और जास्मिन को लेके घर से बाहर निकल आया)

उसके बाद हम दोनो गाड़ी मे आके बैठ गये और जास्मिन ने बच्चे को अपनी गोदी मे रख लिया और फिर से मेरे कंधे पर सिर रख कर रोने लगी.

मैं : चुप हो जाओ जास्मिन सब ठीक हो जाएगा मैं हूँ ना.

जास्मिन : मुझे समझ नही आ रहा.मैं क्या कहूँ सुजल एक तुम हो जो गैर होके भी हमारे अपने से बढ़कर निकले और एक ये अब्दुल था जो मेरा सगा भाई होके भी इतना बेगैरत निकला.

मैं : (जास्मिन के आँसू साफ करते हुए) चलो चुप हो जाओ और मुझे बाबा और सलमा के पास ले चलो उनको मिट्टी देना.तो मेरे नसीब मे नही था कम से कम एक बार उनको देख कर आना चाहता हूँ.

जास्मिन : (चुप होते हुए) चलो गाँव के पुराने कब्रस्तान की तरफ गाड़ी घुमा लो.

उसके बाद हम दोनो पुराने कब्रिस्तान की तरफ चले गये वहाँ बाबा और सलमा की कब्र के पास बैठ कर मैं काफ़ी देर तक रोता रहा. कुछ देर जी भर के रो लेने के बाद अब काफ़ी बेहतर महसूस कर रहा था. मैने उनके लिए खरीदे हुए कपड़े उनकी क़ब्र पर ही रख दिए और जास्मिन के पास वापिस आ गया. जास्मिन गाड़ी के पास खड़ी थी और बच्चे को चुप

करवा रही थी क्योंकि शायद बच्चा गोली की आवाज़ से डर गया था और लगातार रो रहा था.

जास्मिन : सुजल बहुत भूखा है.काफ़ी देर से इसको दूध नही मिला है इसलिए.

मैं : तो अब क्या करे.

जास्मिन : हमें हवेली वापिस जाना होगा वहाँ मेरे कमरे मे इसकी दूध की बोतल है.

मैं : ठीक है हम पहले हवेली ही चलते हैं.

उसके बाद मैं ओर जास्मिन वापिस हवेली के पिछे वेल गेट पर चले गये वहाँ मैने अपनी गाड़ी खड़ी की और जास्मिन के पीछे-पीछे उसके कमरे तक आ गया. हवेली का पिछला हिस्सा एक दम खाली रहता था.इसलिए वहाँ किसी के आने का भी डर नही था. इसलिए हम बे-ख़ौफ्फ होके जास्मिन के कमरे मे चले गये. जास्मिन का कमरा कुछ ख़ास नही था बहुत छोटा सा कमरा था और एक चारपाई के अलावा गिनती का समान था और एक पुराना सा संदूक था. जिसमे शायद जास्मिन और बच्चे के कपड़े थे. मैं जाके सामने पड़ी चारपाई पर बैठ गया और जास्मिन बच्चे को बोतल से दूध पिलाने लगी. दूध पी कर कुछ ही देर मे वो सो गया. इसलिए जास्मिन ने बच्चे को चारपाई पर मेरे साथ ही लिटा दिया.

मैं : जास्मिन मुझे भी भूख लगी है. कुछ खाने को मिल सकता है.

जास्मिन : (यहाँ वहाँ देखते हुए) तुम रूको मैं अभी तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाती हूँ.

उसके बाद मैं वहाँ आराम से बैठ गया अपने बच्चे को देखने लगा और जास्मिन के आने का इंतज़ार करने लगा. कुछ ही देर मे जास्मिन एक प्लेट के साथ कमरे मे वापिस आ गई.

जास्मिन : (मुस्कुराते हुए कमरे मे घुसते हुए)ये लो जी खाना आ गया.

मैं : (बिना कुछ बोले मुस्कुरा कर जास्मिन से प्लेट लेते हुए) बहुत भूख लगी है कल रात से कुछ नही खाया मैने.

जास्मिन : (मुझसे प्लेट लेते हुए) हटो... मैं खिलाती हूँ.

जास्मिन ने मुझसे प्लेट लेली और खुद मुझे अपने हाथो से खाना खिलाने लगी. मैने भी प्लेट से एक रोटी उठाई और सालान के साथ रोटी लगाकर जास्मिन को खिलाने लगा. हम दोनो मुस्कुरा रहे थे और एक दूसरे को खाना खिला रहे थे. खाना खाने के बाद जास्मिन ने बर्तन चारपाई के नीचे रख दिए और हम हाथ मुँह धो कर वापिस चारपाई के पास आ गये और बच्चा सोया हुआ था इस वजह से मैं ज़मीन पर ही लेट गया.

जास्मिन : अर्रे ज़मीन पर क्यो लेट रहे हो.

मैं : बच्चा जाग जाएगा इसलिए...

जास्मिन : रूको मैं नीचे चद्दर बिच्छा देती हूँ फिर तुम आराम से लेट जाओ.

उसके बाद जास्मिन ने ज़मीन पर मेरे लिए पुरानी सी चद्दर बिछा दी और मैं उस पर लेट गया कुछ देर बाद जास्मिन भी मेरे साथ आके लेट गई और मुझे गले से लगा लिया. मैने बिना कुछ बोले उसको एक नज़र देखा और उसकी कमर मे हाथ डाल कर उसको अपने उपर लिटा लिया वो बिना कुछ बोले मेरे उपर आ गई और मेरे चेहरे को देखने लगी.

जास्मिन : सुजल तुम इतना वक़्त कहाँ थे.

मैं : (मैने अपनी सारी असलियत जास्मिन को बता दी)

जास्मिन : हमम्म तभी मैं सोचु इतनी आसानी से गोली कैसे चला दी तुमने.

मैं : क्या तुम मुझसे नाराज़ हो.

जास्मिन : क्यो नाराज़ क्यो होना है.

मैं : मैने अब्दुल को मार दिया इसलिए...

जास्मिन : मेरे बस मे होता तो मैं उसको कब की मार चुकी होती और तुमने कोई ग़लत काम नही किया .उसके जैसे घटिया इंसान को जीने का कोई हक़ नही था. लेकिन सुजल एक परेशानी हो सकती है.

मैं : क्या....

जास्मिन : आज हीना की शादी है तो यहाँ बहुत से पुलिस वाले आएँगे .अगर किसी को पता चल गया कि तुमने अब्दुल को मारा है .तो वो लोग तुमको पकड़ लेंगे ना...

मैं : (मुस्कुराते हुए) आज कोई भी आ जाए मुझे पकड़ नही पाएगा और तुम देखना शाम को तुम्हारे सामने कितने पुलिस वालों को मार कर जाऊंगा मैं यहाँ से.

जास्मिन : अपना भी ख़याल रखा करो. तुमको कुछ हो गया तो तुम्हारे बाद मेरा इस दुनिया मे कौन है बताओ...

मैं : (मुस्कुराते हुए) क्यो ये छोटा सुजल है ना...

जास्मिन : मज़ाक मत करो ना. तुम्हारी जगह वो थोड़ी ले सकता है. अच्छा हाँ याद आया तुम तो मुझसे नाराज़ थे ना.

मैं : किस बात पर नाराज़ था मुझे तो याद नही.

जास्मिन : भूल गये....

मैं : (सवालिया नज़रों से जास्मिन को देखते हुए) नही... मुझे नही याद...

जास्मिन : तुमको मैने थप्पड़ मारा था अब याद आया.

मैं : (कुछ याद करते हुए) हाँ ! मैं तो भूल ही गया .मैं अब भी तुमसे नाराज़ हूँ.

जास्मिन : अच्छा जी तो मनाने के लिए क्या करना पड़ेगा.(मेरे सिर मे अपनी उंगालिया घूमाते हुए)

मैं : जो पहले करती थी. (मुस्कुरा कर)

जास्मिन : तुम कभी नही सुधर सकते ना...

मैं : अब क्या करे फ़ितरत ही कुछ एसी है.

जास्मिन : अच्छा ठीक है लेकिन सिर्फ़ एक मिलेगा.

मैं : ठीक है तुम एक ही दे दो बाकी मैं खुद ले लूँगा.

जास्मिन : पहले अपनी आँखें बंद करो मुझे शरम आती है.

मैं : (आँखें बंद करते हुए) ठीक है....

उसके बाद जास्मिन ने बिना कुछ कहे अपने रसीले होंठ मेरे होंठ पर रख दिए धीरे-धीरे मैने अपने होंठ थोड़े से खोले और उसके होंठों को अपने मुँह मे आने का रास्ता दे दिया और धीरे-धीरे उसके होंठ को चूसने लगा. साथ ही अपने दोनो हाथ उसकी कमर पर रख दिए. हम काफ़ी देर एक दूसरे के होंठ चूस्ते रहे. जास्मिन की और मेरी दोनो की साँसे काफ़ी तेज़ हो गई थी.इसलिए हमारे चूमने मे भी शिद्दत सी आ गई थी. हम दोनो एक दूसरे मे समा जाने को तैयार थे लेकिन वो जगह ऐसी नही थी कि मैं उसके साथ कुछ कर सकता इसलिए ना चाहते हुए भी मैने खुद को काबू किया और उसका चेहरा पकड़ कर खुद से अलग किया.लेकिन जास्मिन की आँखें बंद थी और वो बहुत ज़्यादा गरम हो गई थी.इसलिए बार-बार मेरे हाथ अपने चेहरे से हटा कर मेरे होंठ चूस रही थी. इसलिए मुझे भी खुद को काबू करना मुश्किल हो रहा था.नीचे से मेरा लिंग भी पेंट फाड़ने को तैयार था . मैने जास्मिन को कमर से पकड़ कर नीचे लिटा दिया और खुद उसके उपर आ गया. अब मैने उसको शिद्दत से चूम रहा था. वो मुझे चूम रही थी और बॅड-बड़ा रही थी.

जास्मिन : मैने बहुत इंतज़ार किया है तुम्हारा अब मुझसे कभी दूर मत जाना.

मैं : (जास्मिन के होंठ चूमते हुए) नही जाऊंगा.

उसके बाद मैने जास्मिन का चेहरा चूमना शुरू कर दिया और चेहरे से होते हुए मैं उसके गले को चूमने और चूसने लगा. उसने एक नज़र मुझे देखा और खुद ही मेरा एक हाथ अपने स्तन पर रख दिया और फिर से आँखें बंद कर ली. उसके बाद मैं उसके गले को चूस्ते हुए उसके स्तन दबाने लगा जास्मिन की सांस अब काफ़ी तेज़ हो गई थी और वो अपने दोनो हाथो से मेरे चेहरे को अपने स्तनों पर दबा रही थी. मैने एक हाथ से कंधे के एक साइड से उसकी कमीज़ को नीचे कर दिया और उसके कंधे को चूमने और चूसने लगा साथ ही अपने एक हाथ उसकी कमीज़ के अंदर डाल कर उसके पेट पर अपना हाथ फेरने लगा. कुछ ही देर मे मेरा हाथ बढ़ते हुए उसके स्तनों के उपर आ चुका था.अब मैं उसकी ब्रा के उपर से ही उसके स्तनों को दबा रहा था. जास्मिन नीचे से अपनी नितंब उठा कर मेरे लिंग पर अपनी योनी को रगड़ रही थी जिससे मेरा लिंग भी खड़ा होने की वजह से दुखने लगा था. मैने अपना दूसरा हाथ भी उसकी कमीज़ मे डाल दिया और उसकी ब्रा को एक झटके से कमीज़ के अंदर से उपर कर दिया जिससे उसके आधे स्तन बाहर आ गये. उसके स्तनाग्र किसी तलवार की तरह एक दम सख़्त हो चुके थे मैने अपनी एक उंगली से उसके एक स्तनाग्र को हल्का सा हिलाया और फिर अपनी उंगली और अंगूठे की मदद से उसके स्तनाग्र को पकड़ लिया और मरोड़ने लगा. इससे शायद जास्मिन को बहुत मज़ा आया था इसलिए उसके मुँह से एक तेज़ आआहह निकल गई. उसने जल्दी से दोनो हाथ मेरी पीठ पर रखे और पिछे से मेरी कमीज़ को पेंट मे से बाहर खींचने लगे थोड़े से खिचाव से मेरी कमीज़ पेंट से बाहर आ गई. अब उसने अपने दोनो हाथ मेरी कमीज़ के अंदर डाल कर मेरी पीठ पर अपने दोनो हाथ फेरने और नाख़ून मारने शुरू कर दिए. मैने जल्दी से उसकी कमीज़ सामने से उपर करदी जिसमे जास्मिन ने अपनी नितंब उठा कर मेरी मदद की .

कमीज़ उपर होते ही उसके गोल-गोल स्तन बाहर आ गये. जिस पर किसी भूखे बच्चे की तरफ मैं टूट पड़ा और उन्हे चूसना शुरू कर दिया. जास्मिन आअहह ओह्ह्ह सस्स्सिईइ करती हुई मेरा सिर अपने स्तनों पर दबा रही थी. मैं उसकी स्तनाग्र को चूस और काट रहा था. मुझे उसके स्तनाग्र चूसने मे परेशानी हो रही थी. इसलिए मैने अपने हाथ दोनो पिछे ले जाकर उसकी ब्रा के स्टाप को खोल दिया और फिर से उसके स्तनाग्र चूसने मे लग गया. मैं जाने कितनी देर तक उसके स्तनों को चूस्ता रहा तभी उसने अपना एक हाथ मेरे कंधे पर रखा और मुझे रुकने का इशारा किया. मैने अपने चेहरा उपर करके उसको देखा और रुक गया ओर उसके उपर से उठ गया.मेरे साथ ही वो भी उठ गई और मेरे चेहरे को पकड़ कर फिर से मेरे होंठ चूसने लगी और साथ ही मेरी शर्ट के बटन खोलने लगी उसका एक हाथ मेरी शर्ट के बटन खोल रहा था और दूसरा हाथ मेरी छाती पर घूम रहा था. शर्ट खुलते ही उसने झटके से मेरी शर्ट उतार दी और मेरी छाती पर चूमने लगी.

मैने भी उसकी कमीज़ के दोनो सिरों को पकड़ा और उपर की तरफ खींचा जिस पर उसने अपनी दोनो बाज़ू हवा मे उपर उठा दी पिछे से ब्रा खुली होने की वजह से उसकी कमीज़ के साथ उसकी ब्रा भी उतर गई. उसने एक नज़र मुझे देखा और नज़रे नीची करके अपने दोनो हाथ अपनी छाती पर रख लिए ओर फिर से नीचे लेट गई और अपनी आँखें बंद कर ली. मैं वापिस उसके उपर लेट गया और उसके दोनो हाथ उसकी छाती से हटा कर अपनी पीठ पर रख लिए अब उसके दोनो स्तन मेरी छाती के नीचे दबे हुए थे और उसके तीखे स्तनाग्र मुझे अपनी छाती पर चुभ रहे थे. मैं उसका चेहरा चूम रहा था. कुछ देर बाद मैं फिर से नीचे की तरफ बढ़ने लगा और उसके कंधो को चूमने और चूसने लगा. उसका अब एक हाथ मेरी पीठ पर था और दूसरा हाथ पिछे से मेरे सिर को सहला रहा था. उसके स्तनाग्र इस वक़्त एक दम सख़्त हुए पड़े थे और बाहर को निकले हुए थे. मैने अपना एक हाथ उसके एक स्तन पर रखा और उसके स्तनों को अपने हाथ से पकड़ लिया. अब मैने पकड़े हुए स्तन पर अपना चेहरा रखा और उसे शिद्दत से चूसने लगा मैं उसके स्तनाग्र को मुँह से पकड़ कर चूस रहा था और अपने मुँह मे अंदर की तरफ खींच रहा था.जिसकी वजह से उसको इंतेहा मज़ा आ रहा था और उसके मुँह से सस्सस्स सस्स्सस्स निकल रहा था. नीचे से उसने अपनी दोनो टांगे मेरी कमर पर रख ली थी और अपनी टाँगो की मदद से मेरी कमर को जकड लिया था. अब पेंट के उपर से मेरे लिंग का निशाना उसकी योनी के उपर था जिसको कि वो अपनी गीली हुई योनी से बुरी तरह से रगड़ रही थी. इधर मेरा लिंग भी अब बाहर निकलने का रास्ता तलाश कर रहा था. इसलिए मैने अपनी कमर को थोड़ा सा उपर उठा कर अपनी बेल्ट और पेंट के बटन को एक साथ खोल दिया .जिसको जास्मिन ने अपनी टाँगो की मदद से मेरे घुटने तक नीचे कर दिया. मेरे लिंग ने आज़ाद होते ही अंडरवेर मे एक टेंट सा बना लिया था जो सीधा जास्मिन की सलवार के उपर से उसकी योनी पर ठोकर मार रहा था. जास्मिन को शायद इस ठोकर से बे-इंतेहा मज़ा मिल रहा था. इसलिए उसने अपने दोनो हाथ मेरी नितंब पर रखे और मेरी नितंब को अपनी योनी पर दबाने लगी. मैने धीरे से जास्मिन के कान मे कहा....

मैं : सलवार भी उतार दूं....

जास्मिन : (बिना कुछ बोले हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म

उसके बाद मैने जल्दी से अपना अंडरवेर और पेंट दोनो को अपनी टाँगो से आज़ाद किया और उसकी सलवार को नीचे खींचने लगा. जास्मिन ने भी अपनी नितंब उठा कर सलवार उतारने मे मदद की. अब मैं और जास्मिन दोनो एक दम जनम-जात वाली हालत मे थे. जास्मिन के उपर दुबारा लेट ते ही मुझे ऐसा लगा जैसे लिंग को पानी मे डुबो दिया हो

क्योंकि जास्मिन की योनी बुरी तरह पानी छोड़ रही थी और पूरी गीली हुई पड़ी थी जिसमे मेरे लिंग के उपर वाले हिस्सो को भी अपनी पानी से नहला दिया था मैने थोड़ी सी अपनी नितंब उपर की और अपने लिंग को योनी की छेद पर सेट किया और जास्मिन की तरफ देखने लगा.

जास्मिन : दर्द नही होगा ? मैने सुना है पहली बार बहुत दर्द होता है?

मैं : हमम्म पहली बार दर्द होता है .उसके बाद सब ठीक हो जाता फिर भी तुमको दर्द हो तो बता देना मैं रुक जाऊंगा. ठीक है !

जास्मिन : अच्छा....

उसके बाद मैने वापिस अपने लिंग को योनी के निशाने पर रखा और योनी की छेद पर लिंग से दबाव बनाने लगा. योनी सच मे बहुत टाइट थी. मेरे लिंग की टोपी भी अंदर नही जा रही थी.लिंग बार-बार फिसल कर उपर को चला जाता था. इसलिए मैने जास्मिन की दोनो टाँगो को फैला दिया और लिंग पर ढेर सारा थूक लगा कर योनी पर थोड़ा सा जोरदार निशाना लगाया जिससे लिंग की टोपी अंदर चली गई और जास्मिन के मुँह से एक तेज़ सस्स्स्सस्स की आवाज़ निकली. मैं कुछ देर रुक गया और जास्मिन का दर्द कम होने का इंतज़ार करने लगा. साथ ही जास्मिन का चेहरा चूमने लगा. कुछ ही देर मे उसका दर्द गायब हो गया और वो फिर से मेरे होंठों पर टूट पड़ी और बुरी तरह चूसने लगी. जब मैने उसे बेहतर हालत मे महसूस किया तो मैने थोड़ा जोरदार एक और झटका मारा जिससे लिंग अंदर दाखिल हो गया.उसने फिर से दर्द के मारे अपनी आँखें बंद कर ली और मेरे कंधे पर हाथ रख कर मुझे रुकने का इशारा किया. मैं फिर से कुछ देर रुक गया और उसके स्तनाग्र को चूसने लगा कुछ ही देर मे वो थोड़ी बेहतर लगने लगी और नीचे से नितंब हिलाने लगी. जिससे मुझे अंदाज़ा हो गया कि अब उसको पहले से बहुत कम दर्द हो रहा है. अब मैं आगे को ज़ोर दे रहा था लेकिन लिंग आगे नही जा पा रहा था. इसलिए मैने अपना लिंग बाहर निकाल लिया और फिर से ढेर सारा थूक लिंग पर लगाया और लिंग को योनी मे दाखिल कर दिया लिंग के अंदर जाते ही उसके मुँह से फिर से एक दर्द भरी सस्स्सस्स आयईयीई की आवाज़ निकली.लेकिन अब पहले जितना दर्द नही था .अब मैं अगले झटके के लिए कुछ देर रुक गया और उसके नॉर्मल होने का इंतज़ार करने लगा

जब उसका दर्द पहले से काफ़ी कम हो गया तो मैने अपने होंठ उसके होंठ पर रख दिए और उसके होंठ चूसने लगा. क्योंकि मैं नही चाहता था कि अगले झटके से वो चीख पड़े और उसकी आवाज़ बाहर कोई सुन ले इसलिए मैने उसको होंठों को अपने होंठों से जकड लिया और नीचे लिंग का एक जोरदार झटका मारा जिससे लिंग उसकी योनी की सील को तोड़ता हुआ अंदर दाखिल हो गया.अब करीब आधे से ज़्यादा लिंग उसकी योनी के अंदर था और योनी की दीवारों ने उसे बुरी तरह जकड रखा था. मेरा अंदाज़ा सही था लिंग के अंदर जाते ही उसने चीखना चाहा था लेकिन मेरे होंठ उसके होंठ के उपर होने की वजह से उसकी आवाज़ मेरी मुँह मे ही दब गई. वो मेरे कंधे पर ज़ोर-ज़ोर से मारने लगी और साथ मे रोने लगी.

मैं : बस...बस... हो गया. पूरा चला गया.

जास्मिन : ससस्स आईइ... बाहर निकालो बहुत दर्द हो रहा

मैं : बस ५ मिनिट इंतजार कर लो. लिंग अंदर जगह बना लेगा तो दर्द भी ख़तम हो जाएगा.

जास्मिन : ससस्स थोड़ी देर के लिए बाहर निकाल लो. मेरी दर्द से जान जा रही है.

मैं : (जास्मिन के आँसू साफ करते हुए) बस हो गया .अभी ठीक हो जाएगा. मैने बोला था ना पहली बार दर्द होता है.उसके बाद मज़ा आएगा.

उसका ध्यान दर्द से हटाने के लिए मैं वापिस उसके होंठ और चेहरे को चूमने लगा. उसको शायद काफ़ी दर्द हो रहा था इसलिए अब वो मेरा साथ नही दे रही थी. मैं बिना हिले उसके उपर लेटा रहा और एक बार फिर से उसके स्तनाग्र को चूसने लगा क्योंकि मैं जानता था उसके स्तन ही उसका सबसे वीक पार्ट है .जहाँ उसको सबसे ज़्यादा मज़ा आता है. कुछ ही देर मे उसका दर्द अब पहले से कम हो गया और उसने भी नीचे से अपनी नितंब को उपर की तरफ उठाना शुरू कर दिया.

जास्मिन : अब बस करो और अंदर मत करना. पहले ही बहुत दर्द हो रहा है.बस इतने से ही कर लो.

मैं : अच्छा ठीक है और अंदर नही करूँगा.

अब मेरा लिंग जितना अंदर था. मैने उसी को थोड़ा सा बाहर निकलता और फिर से पहले जितना ही अंदर कर देता. कुछ देर उसको झटको से दर्द होता रहा. लेकिन फिर उसकी योनी ने मेरे लिंग के लिए रास्ता खोल दिया और उसकी योनी की दीवारो की पकड़ भी पहले से ढीली हो गई थी. कुछ ही देर मे उसको भी मज़ा आने लगा अब वो भी मेरा थोड़ा-थोड़ा साथ देने लगी थी लेकिन ज़ोर से झटका नही मारने दे रही थी शायद उसको दर्द हो रहा था. मैं अब अपने लिंग को उसकी योनी मे जहाँ तक जा सकता था बिना दर्द के डाला और अपनी नितंब को गोल-गोल घुमाने लगा जिससे उसको बेहद मज़ा आने लगा. अब उसने भी अपनी दोनो टांगे उठा ली थी और वापिस मेरी कमर पर अपनी दोनो टाँगो को लपेट लिया था.

जास्मिन : हाँ ऐसे ही करो मज़ा आ रहा है. झटका मत मारना दर्द होता है.

मैं : हमम्मम

कुछ ही देर मे उसको बेहद मज़ा आने लगा और वो फारिग होने के करीब पहुँच गई.

जास्मिन : तेज़ करो मुझे मज़ा आ रहा है.

मैं : हमम्म

उसके बाद मैने धीरे-धीरे झटके लगाने शुरू कर दिए कुछ देर झटके लगने के बाद अब उसको भी मज़ा आने लगा था. इसलिए अब मैं थोड़ा तेज़-तेज़ झटके मारने लगा और लिंग को भी जितना हो सकता था अंदर से अंदर तक डालने लगा. कुछ ही देर मे वो फारिग हो गई उसकी नितंब हवा मे अकड़ गई और फिर धडाम से ज़मीन पर गिर गई. शायद वो फारिग हो चुकी थी. इसलिए अब उसकी टांगे भी काँप रही थी. मैं कुछ देर उसकी कमर पर हाथ फेरता रहा और उसके स्तनाग्र को चूस कर फिर से उससे गरम करने लगा साथ-साथ नीचे से झटके भी मारता रहा. अब मेरा पूरा लिंग उसकी योनी मे जा रहा था लेकिन उसको दर्द नही हो रहा था बल्कि मज़ा आ रहा था इसलिए मैने उसकी कमर के नीचे हाथ डाला और योनी मे लिंग डाले ही पलट गया अब वो मेरे उपर थी और मैं उसके नीचे था उसको कुछ समझ नही आया कि क्या करना है इसलिए वो मुझे सवालिया नज़रों से देखने लगी.

मैं : मेरे लिंग पर उपर नीचे करो अपनी योनी को.

वो काफ़ी देर कोशिश करती रही लेकिन उससे हुआ नही सही से .इसलिए मैने उसको अपने उपर लिटा लिया और उसकी नितंब पर हाथ रख कर उसकी नितंब को थोड़ा सा उपर को उठा दिया जिससे मैं नीचे से झटके लगा सकूँ. मेरे ऐसा करने से शायद उसको और भी ज़्यादा मज़ा आ रहा था इसलिए वो मेरे उपर लेटी मेरी छाती को चूम रही थी. कुछ ही देर मे वो फिर से अपनी मंज़िल के करीब आ गई और झटके खाते हुए मेरे उपर ही फारिग होके मेरी छाती पर ढेर हो गई और तेज़-तेज़ साँस लेने लगी. मैं भी अपनी मज़िल के करीब ही था इसलिए मैं रुकना नही चाहता था. इसलिए तेज़-तेज़ झटके मारने जारी रखे लेकिन शायद अब उसको दर्द हो रहा था.

जास्मिन : झटके मत दो अब दर्द हो रहा है.वैसे ही पहले जैसे गोल-गोल करो उसमे मज़ा आता है.

मैं : ठीक है

उसके बाद मैं अपनी नितंब को गोल-गोल घुमाने लगा जिससे लिंग अंदर योनी की दीवारो टकरा रहा था.

जास्मिन : अंदर जलन हो रही है इसको फिर से गीला कर लो ना.

मैं : हमम्म

मैं लिंग को योनी से बाहर निकाला और अपने हाथ पर ढेर सारा थूक इकट्ठा करके अपने लिंग पर लगा लिया. अब मैने लिंग को फिर से योनी के निशाने पर रखा और धीरे-धीरे अंदर बाहर करने लगा. जिससे जास्मिन को फिर से दर्द होने लगा.इसलिए उसने सस्सस्स के साथ अपनी फिर से आँखें बंद कर ली.

लिंग डालने के बाद मैं कुछ देर वैसे ही योनी मे लिंग डाले पड़ा रहा .जब जास्मिन का दर्द कम हो गया तो मैने फिर से झटके लगाने शुरू कर दिए इस बार जास्मिन भी अपनी नितंब को नीचे की तरफ दबा रही थी और साथ मे मेरे होंठ चूस रही थी .हम दोनो ही अब मंज़िल के करीब थे. कुछ तेज़ और ज़ोरदार झटको के साथ मैं और जास्मिन दोनो एक साथ

अपनी मंज़िल के करीब पहुँच गये .मेरा लिंग एक के बाद एक झटके से पिचकारियाँ मारने लगा और मेरा सारा माल जास्मिन की योनी की गहराइयो मे उतरने लगा. मेरे लिंग की हर पिचकारी के साथ वो मज़े से सस्सस्स अहह सस्स्सस्स ऊओह कर रही थी .हम दोनो बुरी तरह हाँफ रहे थे और पसीने से भीगे पड़े थे वो मेरी छाती पर सिर रख कर अपनी साँस को दुरुस्त करने लगी. कुछ देर मे ही हम दोनो एक दम नॉर्मल हो गये थे और मेरा लिंग भी अपनी खुंराक मिलने के बाद शांत होके बैठ चुका था. साँस के दुरुस्त होने के बाद जास्मिन मेरे उपर से उठी और मेरा लिंग पुउउक्ककक की आवाज़ से उसकी योनी से बाहर निकल आया॥ साथ ही मेरा और उसका माल भी उसकी योनी से बहता हुआ मेरी रान पर गिरने लगा. साथ ही मेरे कानो मे जास्मिन की आवाज़ टकराई....

जास्मिन : हाए ये खून कहाँ से आ गया.

मैं : तुम्हारा निकला है... जब पहली बार करते हैं तो निकलता है.

जास्मिन : इतना सारा खून.

मैं : कुछ नही होता पहली बार आता है.

उसके बाद वो बिना कुछ कहे खड़ी हुई और इधर उधर देखने लगी और फिर संदूक खोलकर एक कपड़ा उठा लाई जिससे पहले उसने मेरी रान साफ की और फिर उसी कपड़े से अपनी योनी को अच्छे से साफ किया॥ मैं लेटा उसको देख रहा था और मुस्कुरा रहा था. वो भी मुझे देख रही थी और मुस्कुरा रही थी.

जास्मिन : ये क्या किया है.... गंदे कही के.... (मुँह बना कर)

मैं बिना कुछ बोले उसको देख कर मुस्कुरा रहा था. फिर उसने जल्दी से अपने कपड़े उठाए और कमरे मे ही एक कौने पर जाके अपनी योनी को पानी से धो कर साफ करने लगी. मैं भी खड़ा हुआ और उसके पिछे चला गया उसने पानी डाल कर मेरे लिंग को भी अच्छे से साफ किया जो कि उसके खून और हम दोनो के माल से भरा पड़ा था. उसके बाद हमने कपड़े पहने और वापिस उसी चद्दर की एक तरफ जहाँ साफ थी वहाँ जाके लेट गये जास्मिन इस बार भी मेरे उपर ही लेटी थी और मेरी छाती पर हाथ फेर रही थी. अब मैं आँखें बंद किए लेटा था और चौहान के आने का इंतज़ार कर रहा था कि कब चौहान आए

और उसको मार कर मैं अपने बिजनेस का लॉस और मेरे परिवार के साथ हुई ज़्यादती का बदला ले सकूँ.

मैं जास्मिन के साथ सहवास करके काफ़ी थक गया था इसलिए कुछ ही देर मे मुझे नींद ने अपनी आगोश मे ले लिया. अभी मुझे सोए हुए कुछ ही देर हुई थी कि मेरी जेब मे पड़ा मेरा फोन बजने लगा जिससे अचानक मेरी आँख खुल गई. मैने अपने उपर लेटी जास्मिन को जल्दी से साइड पर किया और खुद बैठ कर जेब मे हाथ डाल कर फोन देखने लगा. मैने फोन देखा तो डिसप्ले पर सलमान लिखा था. मैने जल्दी से फोन कान को लगाया और जास्मिन के पास बैठकर ही सलमान से बात करने लगा.

मैं : हां सलमान ! क्या हाल है ?

सलमान: मैं खेरियत से हूँ .भाई तुम कैसे हो.

मैं : मैं भी ठीक हूँ. बताओ कैसे फोन किया था.

सलमान : भाई मुझे अभी खबर मिली है कि तुम्हारे शिकार चौहान की आज शादी है और वो एक गाव मे जा रहा है.

मैं : (हँसते हुए) यार तुम्हारी गर्दन बड़ी लंबी है. वहाँ बैठे हुए भी सब जगह मुँह मारते रहते हो.

सलमान: (हँसते हुए) भाई मैं तो तुम्हारा काम ही आसान कर रहा हूँ जल्दी से. इस्लामपुर के लिए निकल जाओ वहाँ आज चौहान ज़रूर आएगा शादी करने के लिए.

मैं : तुम्हारे खबरी ने तुमको ये नही बताया कि मैं कहाँ हूँ.

सलमान : कहाँ हो भाई...?

मैं : मैं इस वक़्त चौहान के कभी ना होने वाले ससुराल मे बैठा उसका इंतज़ार कर रहा हूँ.

सलमान : वाह... क्या बात है च्छा गये यार उस्मान भाई.... लेकिन तुमको पता कैसे चला कि चौहान आज इस्लामपुर आएगा.

मैं : किस्मत भी कोई चीज़ होती है .मैं तो यहाँ कुछ और काम से आया था. लेकिन साला पंगा कुछ और ही हो गया फिर मुझे चौहान का पता चला तो मैं यही रुक गया.

सलमान : भाई तुमको वहाँ किस आदमी से काम पड़ गया और वहाँ तुम्हारा कौन है.

मैं : ये वही गाव है जहाँ मुझे नयी ज़िंदगी मिली थी. मैं तो यहाँ उन फरिश्तो से मिलने आया था. लेकिन यहाँ जब चौहान का पता चला तो मैं यही रुक गया.

सलमान : अच्छा... तो ये बात है.... भाई आपको कुछ बताना था.

मैं : वो छोड़ पहले मेरी बात सुन... तुझसे एक काम था !

सलमान : हुकुम करो भाई. जान हाज़िर है.

मैं : असल मे सलमान एक पंगा हो गया है.

सलमान : क्या हुआ भाई सब ख़ैरियत तो है.

मैं : (खड़ा होके कमरे से बाहर जाते हुए) एक मिनिट होल्ड कर...

(जास्मिन को देखते हुए) जास्मिन तुम रूको मैं ज़रा बात करके आया

जास्मिन : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म

मैं : सलमान दरअसल पंगा ये हुआ है कि जिस लड़की से चौहान की शादी होने वाली है वो लड़की मुझसे प्यार करती है और वो मुझसे शादी करना चाहती है और जिन्होने मेरी जान बचाई थी वो भी अब इस दुनिया मे नही रहे बिचारी उनकी लड़की एक दम अकेली हो गई है.

सलमान : भाई तो इसमे सोचना कैसा आप उनको भी यही ले आओ ना चौहान को मारने के बाद.

मैं : वही तो बता रहा हूँ ...

सलमान : जी भाई बोलो...

मैं : चौहान यहाँ अकेला नही आएगा उसके साथ काफ़ी लोग होंगे .अगर मुझे कुछ हो जाए तो इन दोनो को मैं वहाँ गाव मे तुम्हारे पास भेज दूँगा. तुम इनका ख़याल रखना.

सलमान : भाई कैसी बात कर रहे हो .तुमको कुछ नही होगा तुम इनको खुद लेके आओगे और मुझे तुम्हारे निशाने पर पूरा ऐतबार है और फिर मुझे लगा शायद तुमको पता नही होगा इसलिए मैने उस गाव मे अपने कुछ आदमी भी भेजे हैं जो आपकी मदद कर सके.

मैं : (हैरान होते हुए) क्या.... कौनसे आदमी ? कौन लोग आ रहे हैं यहाँ...

सलमान : भाई मुझे लगा आपको शायद पता नही होगा इसलिए हम ही चौहान का गेम बजा देंगे. इसलिए मैने वहाँ अपने लोग भेज दिए हैं.

मैं : अच्छा किया अब मुक़ाबला बराबरी का होगा .वो लोग कब तक यहाँ पहुँच जाएँगे.

सलमान : भाई आप लाला को फोन करके पूछ लो ना .अपने तमाम लोगो के साथ वही आ रहा है अब तो शायद पहुँचने वाले भी होंगे.

मैं : अच्छा... चलो ठीक है अब तुम फोन मत करना.... हम जल्द ही मिलेंगे.

उसके बाद मैने फोन रख दिया और आने वाले लम्हे के बारे मे सोचने लगा

३३

शाम हो चुकी थी .पूरी हवेली किसी नयी-नवेली दुल्हन की तरह रोशनी से जग-मगा रही थी .चौहान के भी आने का वक़्त हो गया था. अभी मैं अपनी सोच मे गुम था कि पिछे से अचानक मुझे जास्मिन ने पकड़ लिया और मेरी पीठ पर अपना सिर रख लिया ओर वैसे ही मुझसे चिपक कर खड़ी हो गई.

जास्मिन : मैने सब सुन लिया है... जो कुछ तुम अपने दोस्त को कह रहे थे

मैं : (पलट ते हुए) क्या सुन लिया है...

जास्मिन : मैं तुमको एक बात बहुत अच्छे से बता देती हूँ. मेरा इस दुनिया मे तुम्हारे और सुजल के सिवाए कोई नही है. अगर तुमने मुझे अकेले कही भेजने का सोचा भी तो मैं खुद अपनी जान ले लूँगी.

मैं : बकवास मत करो.... मैने जो भी किया वो सिर्फ़ तुम्हारी हीना की और सुजल की सेफ्टी के लिए किया.तुम जानती हो बाहर चौहान के कितने लोग आ गये होंगे. बाहर कुछ भी हो सकता है.

जास्मिन : मुझे नही पता ! जाएँगे तो सब साथ जाएँगे नही तो मैं भी नही जाऊंगी.

मैं : नीचे जब गोलियाँ चलना शुरू होंगी तो मैं तुम तीनो को संभालूँगा या उनका मुक़ाबला करूँगा.

जास्मिन : (मुँह फेरते हुए) मुझे कुछ नही पता...

मैं : अच्छा बाबा ठीक है. जैसी तुम्हारी मर्ज़ी... अब तो खुश....

जास्मिन : (हाँ मे सिर हिलाके मुस्कुराते हुए मुझे गले से लगा कर) हमम्म...

तभी पटाखो की और ढोल के नगाडो की आवाज़ सुनाई देने लगी और लोगो का शोर-शराबा भी सुनाई देने लगा.

मैं : लगता है वो लोग आ गये हैं... चलो अब तुम जल्दी से तैयार हो जाओ.तब तक मैं गाड़ी मे से असला और गोलियाँ ले आता हूँ ठीक है.

जास्मिन : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) अच्छा...

मैं : कुछ भी हो जाए तुम हवेली की उस तरफ नही आओगी समझ गई .तुम सुजल को लेके गाड़ी मे बैठो मैं हीना को लेके आता हूँ. तुम गाड़ी के पास ही हमारा इंतज़ार करना....

जास्मिन : (हाँ मे सिर हिलाते हुए) ठीक है.... अपना ख़याल रखना.

मैने बिना कुछ बोले एक नज़र जास्मिन को मुस्कुरा कर देखा फिर पलटकर जहाँ सुजल सोया हुआ था वहाँ गया उसके माथे को चूमा और वापिस दरवाज़ा खोलकर तेज़ कदमो के साथ बाहर की तरफ निकल गया. छोटे गेट से बाहर जाने से पहले मैने एक बार फिर पलट कर देखा .जास्मिन अब भी मुझे ही देख रही थी उसके चेहरे से मेरे लिए फिकर साफ दिखाई दे रहा था. उसके बाद मैं बाहर आया और अपनी गाड़ी मे से हथियार निकालने लगा. मैने जल्दी से अपना बॅग खोला उसमे से जल्दी से एक पेन और एक काग़ज़ का टुकड़ा निकाला जिस पर मैने अपने गाव तक जाने का पता और रास्ता लिखा और उससे अपनी जेब मे डाल लिया. मैं मन ही मन दुआ करने लगा कि इसकी ज़रूरत ना पड़े. अब मेरा एक ही टारगेट था चौहान और उसके आदमी इसलिए अब मेरी कही हुई बात पूरी करने का वक़्त आ गया था.... या तो मरना था या मार देना था.

मैने अपने बॅग मे से अपने कपड़े एक साइड पर किए और जल्दी से २ पिस्टल उठाई और उसकी म्याग्जिन चेक करके मैने दोनो पिस्टल को अपने जूतो की ज़ुराबो मे डाल लिया. एक रिवॉल्वार मे मैने गोलियाँ भरी और उसके अपनी पेंट मे बेल्ट के पास फिट कर लिया. अब मेरे पास बॅग मे सिर्फ़ ३ पिस्टल ही बची जिनमे से एक को मैने कार के आगे वाले हिस्से मे स्टियरिंग व्हील के पास रख दिया और बाकी २ पिस्टल को मैने अपनी पेंट के पिछे वाले हिस्से मे टाँग लिया और अपनी शर्ट बाहर निकाल ली जिससे किसी को मेरी पिस्टल नज़र ना आए. उसके बाद मैने गाड़ी को बंद किया फिर मैने जल्दी से लाला को फोन किया कुछ ही पल मे उसने फोन उठा लिया.

मैं : कहाँ है लाला...

लाला : (खुश होते हुए) भाई चौहान का काम करने जा रहा हूँ... इस्लामपुर गाव मे.

मैं : चौहान को मारने के लिए...

लाला : हाँ भाई... क्यो मानते हो ना अपने भाई के दिमाग़ को... तुम उसको कहाँ-कहाँ ढूँढ रहे थे और मैने उसको एक झटके मे ढूँढ लिया.

मैं : मैं इस्लामपुर मे ही हूँ! तुम जल्दी से जल्दी यहाँ पहुँचो शाम होने वाली है और मैं तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहा हूँ.

लाला : भाई इसका मतलब तुम पहले से वही मोजूद हो.

मैं : लाले जिस स्कूल मे तू मुझे पढ़ा रहा है वहाँ का प्रिन्सिपल आज तक मुझसे ट्यूशन लेता है.जो तुम लोग सोचते हो उससे पहले वो बात मैं सोच चुका होता हूँ.

लाला : (हँसते हुए) बस भाई अब तो गाव के पास ही हैं.हम कुछ ही देर मे पहुँच जाएँगे. आप बस हमारा इंतज़ार करो.हम कुछ ही देर मे आ रहे हैं.

मैं : ठीक है तुम अंदर ही आ जाना. मैं अंदर जा रहा हूँ.

लाला : पागल जैसी बात मत कर भाई ! तू अकेला है अंदर चौहान के बहुत लोग होंगे.

मैं : अब तो कितने भी लोग हो... बाबा की दुआ से आज मैं सब पर अकेला भी भारी हूँ.

लाला : भाई बात तो सुनो...

उसके बाद मैने बिना उसकी कोई बात सुने फोन रख दिया और भागता हुआ हवेली की आगे की तरफ चला गया. जहाँ गेट पहले से खुला हुआ था और काफ़ी लोग दरवाज़े के सामने खड़े थे. मैं इन लोगो के होते हुए अंदर नही जा सकता था क्योंकि लोग मेरी उम्मीद से भी ज़्यादा थे. मैं जल्दी से एक पेड़ के पिछे छिप गया और सही मोक़े का इंतज़ार करने लगा. थोड़ी देर बाद एक पुलिस वाला मुझे पेड़ की जानिब आता हुआ दिखाई दिया. इसलिए मैं जल्दी से पेड़ का तना पकड़कर उपर चढ़ गया. वो आदमी झून्मता हुआ आ रहा था शायद वो नशे मे था उसने चारो तरफ देखा और फिर अपनी पेंट की ज़िप्प खोलकर उसी पेड़ के सामने पेशाब करने लगा जिसके उपर मैं बैठा था. मुझे एक तरक़ीब सूझी मैने

जल्दी से अपनी टांगे पेड़ की शाख मे फसाई और उल्टा होके उस आदमी को गर्दन से पकड़ लिया और उपर को खींचकर उसकी गर्दन को झटके से मरोड़ दिया वो आदमी बिना कोई आवाज़ किए वही मर गया. उसके बाद मैने उस आदमी को भी पेड़ के उपर खींच लिया. फिर उसके सारे कपड़े उतारे और उसके कपड़े खुद पहन लिए वो आदमी वर्दी मे था.इसलिए अगर उसकी वर्दी मैं पहन लेता तो मुझ पर कोई भी शक़ नही कर सकता था. लेकिन समस्या अब पिस्टल को रखने का था क्योंकि शर्ट अंदर करने की वजह से पिस्टल बाहर से दिखाई दे सकती थी .इसलिए मैने २ पिस्टल को वापिस अपने जूतो मे डाल लिया और २ पिस्टल को शर्ट के अंदर वैसे ही रख लिया और १ पिस्टल को मैने अपनी टोपी के नीचे रख लिया. अब ३ पिस्टल बची थी २ मेरी खुद की और एक उस पोलिसेवाले की सर्विस रिवॉल्वार जो शायद अंदर मेरे काम आ सकती थी. मैं जल्दी से पेड़ से नीचे उतरा और २ रिवॉल्वार को वही पास ही एक झाड़ियो मे रख दिया और १ उस पोलिसेवाले की रिवॉल्वार जो उसकी वर्दी मे ही फिट थी उसको वैसे ही रहने दिया. अब मैं बिना कोई आवाज़ किए सामने खड़ी भीड़ मे शामिल हो गया और उन लोगो के साथ मैं भी अंदर घुस गया.अब मैं चारो तरफ देख रहा था लेकिन मेरी नज़रें सिर्फ़ चौहान को ही ढूँढ रही थी. तभी एक पुलिसवाला मेरे पास आया और मेरे कंधे पर हाथ रख दिया.

आदमी: भाई माचिस है क्या ? सिग्रेट जलानी है.

मैं : (ना मे सिर हिलाते हुए) नही... (मैं नही चाहता था कि वो पोलिसवाला मेरा चेहरा देखे इसलिए उसकी तरफ पीठ करके ही खड़ा रहा)

आदमी : कौनसे डिपार्टमेंट से हो जनाब....

मैं : नारकॉटैक्स डिपार्टमेंट

आदमी : नारकॉटैक्स से तो मैं भी हूँ क्या नाम है भाई (मुझे पलट ते हुए)

मैं : (उसकी तरफ पलट ते हुए) उस्मान....

आदमी : (अपनी पिस्टल निकाल कर मेरे सिर पर तानते हुए) कौन है ओये तू...

मैं : (उसके मुँह पर हाथ रख कर उसके सिर मे ज़ोर से कोहनी मारते हुए) तेरा बाप...

वो आदमी बेहोश होके वही गिर गया. वहाँ काफ़ी लोग थे इसलिए मैने उसको कंधे का सहारा देके अपने साथ खड़ा कर लिया और उसको कही गिराने की जगह देखने लगा. पास ही मुझे एक बड़ा सा फूल दान नज़र आया.मैने उसको उसके पीछे गिरा दिया और अंदर चला गया .जहाँ जशन का माहौल था सब लोग हाथ मे जाम लिए खड़े थे. मेरी नज़रें चारो तरफ चौहान को ढूँढ रही थी, लेकिन चौहान मुझे कही भी नज़र नही आ रहा था. मैं वक़्त ज़ाया नही करना चाहता था. इसलिए हॉल के चारो तरफ घूमने लगा और वहाँ खड़े लोगो के हथियारो का जायेज़ा लेने लगा जिससे मुझे ये पता चल सके कि मुझ पर कितने लोग गोलियाँ चला सकते हैं. वहाँ ज़्यादातर लोग तो सादे कपड़े मे ही नज़र आ रहे थे सिर्फ़ गिनती के कुछ ही लोग थे जो मेरी तरह वर्दीमे मोजूद थे. मैं नही चाहता था कि जब मैं चौहान पर गोली चलाऊ तो मुझ पर भी गोलियो की बारिश शुरू हो जाए .इसलिए मैने एक-एक करके सबको खामोशी से ख़तम करने का सोचा. मैं जल्दी से जाके एक पर्दे के पिछे छिप गया जहाँ २ पोलिसेवाले खड़े थे. मैं उनके पिछे से गया उनके मुँह पर हाथ रखा और ज़ोर से उनका सिरों को खंबे मे मारा जिससे वो दोनो बेहोश हो गये .उसके बाद मैने दोनो को पर्दे के पिछे ही खींच लिया और वही गिरा दिया उसके बाद मैं पर्दे के पिछे से होता हुआ आगे बढ़ा .तो मुझे एक और आदमी वर्दीमे नज़र आया. मैने जल्दी से जाके उसको भी पिछे से पकड़ लिया और अपनी दोनो बाजू मे उसकी गर्दन को पकड़ कर झटके से तोड़ दिया ओर उसको भी पर्दे के पिछे कर दिया.

अब मैं आगे नही जा सकता था क्योंकि आगे परदा नही था और लोगो की काफ़ी भीड़ भी थी. इसलिए मैने चारो तरफ नज़र दौड़ाई और सामने मुझे कुछ लोग बैठे हुए नज़र आए मैं चुप-चाप जाके उन लोगो मे ही बैठ गया और किसी को शक़ ना हो इसलिए एक जाम अपने हाथ मे लोगो को दिखाने के लिए पकड़ लिया. कुछ देर वहाँ बैठे रहने के बाद मुझे सीढ़ियो से नीचे उतरता हुआ चौहान नज़र आया वो सामने जाके स्टेज पर बैठ गया उसके पास ही सरपंच (हीना का बाप) भी खड़ा था. मेरे पास अच्छा मोक़ा था उससे मारने का लेकिन मैं चाहता था कि उसको पहले पता चले कि उसको क्यो मारा गया इसलिए मैने अपना हाथ पिस्टल से हटा लिया और मुँह नीचे करके बैठ गया ताकि वो मुझे देख ना सके. अभी मुझे वहाँ बैठे कुछ ही देर हुई थी कि एक हाथ मेरे कंधे पर पड़ा और पिछे से आवाज़ आई...

आदमी : ओये खाबीज़ तुझे यहाँ बड़े लोगो मे बैठने को किसने बोला है.चल बाहर दफ्फा हो और सेक्यूरिटी का ख़याल रख. साले को दारू पीने की पड़ी है.

मैं : (बिन कुछ बोले अपनी कुर्सी से खड़ा होते हुए) जी जनाब.

मैं उठकर बाहर जाने लगा तो उस आदमी ने पिछे से एक पिस्टल मेरी पीठ पर रख दी.

आदमी : अपने आप को बहुत होशियार समझता है उस्मान... तुझे क्या लगता है तू यहाँ आके हमारे लोगो को मारेगा और हम को पता भी नही चलेगा. अब बिना कोई आवाज़ किए चुप-चाप मेरे साथ चल नही तो यही गोली मार दूँगा.

मैं बिना कुछ बोले उसके आगे चलने लगा. वो मुझे सीढ़ियो से उपर की तरफ ले गया .मैं नही जानता था कि वो आदमी कौन है और मुझे कैसे जानता है. मेरे सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसने मेरी कमर पर लटकी पिस्टल भी उतार ली और मेरी कमर पर हाथ रख कर चेक करते हुए मेरी कमीज़ मे मोजूद २ पिस्टल भी निकाल ली अब मेरे पास सिर्फ़ ३ पिस्टल थी १ जो मेरी टोपी मे मोजूद थी और बाकी २ मेरे जुत्तो मे थी. मैं चुप चाप धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ रहा था और उस आदमी से नीज़ात पाने का रास्ता सोच रहा था.

आदमी : चौहान भाई सही थे ! तू साला यहाँ ज़रूर आएगा और देखो आ भी गया यहाँ मरने के लिए.

मैं : मादरजात ठोकना है तो गोली चला दिमाग़ मत चाट मेरा.

आदमी : तू चल तो सही बेटा इतनी भी क्या जल्दी है मरने की... एक बार चौहान भाई का निकाह हो लेने दे तुझे तो फुरसत से मारेंगे साले गद्दार.

मैं : गद्दार मैं नही तेरा हरामखोर चौहान है.जिसने हर कदम पर मेरे साथ फरेब किया है.

हम लोग बातें करते हुए उपर आ गये वो आदमी मुझे एक कमरे मे ले गया जहाँ पहले से कुछ लोग मोजूद थे. उन्होने मुझे एक कुर्सी पर बिठाया ओर बाँध दिया साथ ही मेरे सिर से टोपी उतार दी जिसमे मैने एक पिस्टल भी रखी हुई थी.

आदमी : ओये नवाब ये ले चौहान भाईजान का तोहफा. संभाल कर रख मैं उनको बताके आता हूँ कि आशिक़ कुत्ते की मौत मरने को खुद ही आ गया है.

मैं : मरने नही भोसडीके तुम्हारी मारने आया हूँ. अगर एक बाप का है तो खोल मेरे हाथ फिर तुझे बताता हूँ कि मैं यहाँ मरने आया हूँ या तुम सब की क़बर बनाने आया हूँ.

आदमी : मेरे मुँह पर मुक्का मारते हुए.... सस्स्सस्स ज़ोर से तो नही लगी उस्मान.

मैं : अगर मेरे हाथ आज़ाद हो गये तो तुझे फुरसत से मारूँगा भोसडीके शेर को बाँध कर मर्दानगी दिखाता है साले ना-मर्द.

नवाब: (मुझे लात मारते हुए) साले मे गर्मी बहुत है यार .इसका तो इलाज मैं करता हूँ. तू जा पांडु यहाँ से और चौहान भाई को लेके आ.

उसके बाद वो पांडु नाम का आदमी कमरे से बाहर चला गया.अब मेरे आस-पास कुछ लोग मोजूद थे जिन्होने मुझ पर लातों और मुक्को की बरसात शुरू करदी. मैं बँधा हुआ था इसलिए जवाब भी नही दे सकता था. लिहाजा पड़ा रहा और उनकी मार ख़ाता रहा. कुछ देर मुझे मारने के बाद वो लोग वापिस बेड पर जाके बैठ गये और शराब पीने लगे. मैने ज़मीन पर कुर्सी से बँधा हुआ गिरा पड़ा था और वो लोग मुझसे एक दम बे-फिकर थे. मैने अच्छा मोक़ा जान कर अपने बँधे हुए हाथो पर पूरा ज़ोर लगा दिया जिससे मेरे हाथो पर बँधी रस्सी टूट गई और मेरा एक हाथ आज़ाद हो गया. मैने जल्दी से अपने दूसरे हाथ की रस्सी भी खोली और वैसे ही पड़ा रहा. अब मैं सही मोक़े के इंतज़ार मे था कि कब उनकी मुझसे नज़र हटे ताकि मैं अपने पैरो की रस्सी खोल सकूँ. लेकिन कुछ ही देर मे पांडु वहाँ वापिस आ गया इसलिए मैं वापिस बँधी हुई हालत मे ही रस्सी को अपने दोनो हाथो से पकड़े हुए लेटा रहा.

पांडु : ओये कमीनो अपने बाप को उठा तो देते.सालो इतना मारने को किसने बोला था.

आदमी : यार हम क्या करते साला बहुत कड़वा बोलता है.हमारा भेजा घुमा रहा था. अब देख कैसे खामोश होके पड़ा है.

पांडु : चौहान भाई ने बोला है कि निकाह के बाद वो इसका भी काम कर देंगे तब तक इसको बाँध कर रखो.

आदमी : ठीक है...

उसके बाद अचानक पांडु के पिछे-पिछे वहाँ चौहान भी आ गया...

चौहान : अर्रे वाह आप भी शरीक है जनाब इस मुबारक मोक़े पर... बताने की ज़हमत उठाएँगे कि किस खुशी मे यहाँ आना हुआ.

मैं : तेरी मारने आया हूँ मादर जात.

चौहान : (हँसते हुए) साले तेरी गर्मी कभी नही जाएगी ना... (मेरा मुँह पकड़ते हुए) तू चीज़ क्या है यार साला तुझे ५-५ गोली मारो तब भी तू बच जाता है. कोई भी लड़की हो साला तुझे देखते ही कपड़े उतार कर खड़ी हो जाती है.वो साली डॉक्टर्नी.... क्या नाम था उसका.... हाँ याद आया नताशा.... वो भी साले तेरे चक्कर मे फस गई और मुझसे बग़ावत कर गई और साजिद को भेज दिया तेरे पास मेरी सच्चाई बताने को... ये तो अच्छा हुआ कि वक़्त पर मुझे पता चल गया और मैने साजिद और नताशा को वक़्त पर ख़तम करवा दिया वरना मेरा काम तो बहुत खराब हो जाना था.

मैं : क्या नताशा और साजिद को तूने मरवाया था और मुझे गोली तुमने मारी थी? (मतलब नताशा का प्यार झूठ नही सच था और मैं उस बिचारी को कितना ग़लत समझ रहा था जिसने मेरे लिए अपनी जान दे दी)

चौहान : हाँ... छोटे के साथ पार्ट्नरशिप जो करनी थी. चल आज लगे हाथ तेरी याददाश्त को भी थोड़ा सा ताज़ा कर देता हूँ.

मैं : लेकिन मेरे साथ तूने धोखा क्यो किया .मैं तो तेरा साथ देने तक को राज़ी था और मुझे कुछ याद भी नही था.

चौहान : देख यार बुरा मत मान लेकिन बिजनेस का असूल है. अगर खुद उपर जाना है तो किसी ना किसी को तो नीचे गिराना ही पड़ेगा. मेरे पास माल था लेकिन कोई तगड़ी कीमत देने वाला बायर नही था.इसलिए मैने छोटे से हाथ मिला लिया. लेकिन तेरा ख्वाजा बाबा इस बात की इजाज़त कभी नही देता क्योंकि ड्रग्स का सारा धंधा तू संभालता था और जब तक तू था तेरे बाबा ख्वाजा को भी हम रास्ते से नही हटा सकते थे क्योंकि उनकी ढाल तू था. इसलिए हमने सोचा कि पहले तुझे ही रास्ते से हटा देते हैं फिर बूढ़ा तो तेरे गम मे ही मर जाएगा और छोटे भी बाबा ख्वाजा की कुर्सी पर बैठ जाएगा लेकिन अफ़सोस वो साला भी बच गया.

मैं : (चौहान की बात सुन कर मुझे सब याद आने लगा कि कैसे मैं उस दिन डील करने के लिए जा रहा था जब पुलिस की एक जीप मेरे पिछे पड़ गई और मुझ पर अँधा-धुन्ध गोलियाँ चलाने लगी जिससे एक गोली मेरी गाड़ी के टायर पर लगी और गाड़ी का बॅलेन्स बिगड़ गया गाड़ी एक चट्टान के साथ जाके टकराई और मेरा स्टियरिंग व्हील से सिर टकरा गया और वो चौहान ही था जिसने मुझे गाड़ी से निकाल कर मुझ पर गोलियाँ चलाई थी और फिर मुझे मरा हुआ समझ कर गाड़ी समेत खाई से नीचे धक्का दे दिया. मुझे सब कुछ याद आ गया था कि यही वो हरामखोर था जिसने मुझ पर गोली चलाई थी)

मादर जात आज तक वो गोली नही बनी जो उस्मान को मार सके और हीना से निकाह के सपने देखना छोड़ दे उससे पहले ही मैं तुझे जहन्न्नुम पहुँचा दूँगा और याद रखना मेरी एक गोली भी तेरी नितंब फाड़ने के लिए काफ़ी है... क्योंकि उस्मान की मार और उस्मान का वार कभी खाली नही जाता.जिस पर पड़ता है वो आदमी सारी जिंदगी उठ नही सकता.

चौहान : (हँसते हुए) सपना अच्छा है... साले तू तो खुद मेरे रहम-ओ-करम पर है तू मुझे मारेगा... मैं चाहूं तो तुझे अभी मसल सकता हूँ लेकिन पहले निकाह हो जाए फिर आके तेरी खबर लेता हूँ. वैसे भी वो हीना साली बहुत तारीफ करती है तेरी... तू देखना तेरे सामने हीना को नंगी करके सुहागरात मनाऊंगा और फिर उसकी आँखो के सामने तुझे गोली मारूँगा. ओये नवाब इसका ख़याल रखना बहुत हरामी है. देखना ये खुलने ना पाए.

नॉवब : जी चौहान साहब.

उसके बाद चौहान कमरे से बाहर चला गया और पांडु को मेरे सामने बिठा कर चला गया.

मैं : ओये चूतिये... मुझे पानी पिला भोसड़ी के...

पांडु : (गुस्से से मेरा कॉलर पकड़ते हुए) साले चूतिया किसको बोला....

मैं : तेरे को बोला गंदी नाली के कीड़े...

पांडु : (गुस्से) आआववव.... क्यो मरना चाहता है साले. चौहान भाई का हुकुम नही होता तो अभी तुझे गोली मार देता.

मैं : साले हर काम चौहान की नितंब मे घुस कर ही करता है. या खुद मे भी दम है.

पांडु : (मेरे पेट मे मुक्का मारते हुए) साले दम देखना है तुझे मेरा दिखाता हूँ तुझे दम ... (ये बोलने के साथ ही उसने २ मुक्के और मेरे पेट मारे) हवा निकली साले...

मैं : क्यो भोसड़ी के थक गया या नितंब फॅट गई....

पांडु : ये मरेगा आज मेरे हाथ से... (ये बोलते ही उसने मेरे मुँह पर मुक्का मारा)

मैने तेज़ी से अपना हाथ आगे कर लिया और उसका मुक्का हवा मे ही पकड़ लिया. जिसे देखकर उसकी आँखें बाहर आने को हो गई.

मैं : मादर जात बोला था तुझे कि मुझे ठोक दे तू नही माना.... अब देख मैं तुम सबकी यहाँ कैसे क़बर बनाता हूँ.

मैं कुर्सी से बँधा हुआ ही खड़ा हो गया और पांडु को बालो से पकड़ कर उसका सिर कुर्सी पर ज़ोर से मारा जिससे कुर्सी बैठने वाली जगह से टूट गई और पांडु ज़मीन पर अपना सिर पकड़ कर गिर गया. अब सिर्फ़ कुर्सी की आगे वाली टांगे ही मेरी टाँगो से बँधी हुई थी. इतने मे वहाँ बैठे सब लोग खड़े हो गये और मुझे पकड़ने के लिए मेरी तरफ लपके जिनमे से एक को मैने गर्दन से पकड़ कर दूसरे के सिर मे पकड़े हुए आदमी का सिर मारा वो दोनो वही गिर गये. तभी एक आदमी छलाँग लगाके मेरे उपर गिर गया जिससे मैं खुद को संभाल नही सका और मैं भी ज़मीन पर उसके साथ ही गिर गया. मैने जल्दी से उसका एक बाजू पकड़ा और अपनी टाँग के नीचे से निकाल कर टाँग को मोड़ दिया जिससे उसकी गर्दन मेरे घुटने पर आ गई मेरे पैर के साथ कुर्सी की टाँग बँधे होने की वजह से मैं टाँग को मोड़ नही सकता था.इसलिए मैने उसकी गर्दन को अपनी सीधी हुई टाँग पर ही दबा दिया और गर्दन के पिछे की तरफ अपने हाथ का ज़ोर से वार किया जिससे उसकी गर्दन टूट गई और उसके मुँह से खून निकलने लगा. इतनी देर मे बाकी बचे २ लोगो ने मेरे सिर मे शराब की बोतल फोड़नी शुरू करदी जिससे मेरे सिर मे से भी खून आने लगा.

उनमे से एक आदमी का मैने हाथ पकड़ा और नीचे की तरफ खींच लिया जिससे वो आदमी मेरे उपर ही गिर गया. मैने शराब की टूटी हुई बोतल उसके हाथ से छीन ली और

उसके गले मे टूटे हुए हिस्से से वार किया जिससे उसकी गर्दन मे काँच धँसते चले गये और उसमे से पानी की तरह खून निकलने लगा जबकि दूसरा आदमी दरवाज़े की तरफ भागा. मैने हाथ मे पकड़ी बोतल हवा मे उछाल कर उसके सिर मे मारी जिससे बोतल फुट गई और वो दरवाज़े मे जाके लगा. मैने बेड का सहारा लेके खुद को खड़ा किया और जल्दी से अपनी टाँग से बँधी कुर्सी की टाँग की रस्सी को खोल दिया. अब मैने वही कुर्सी की टाँग उठाई और उसके सिर मे मारी जिससे कुर्सी की टाँग टूट गई और उसके सिर से भी खून निकलने लगा. वो आदमी ज़मीन पर गिर गया और मुझसे रहम की भीख माँगने लगा मैने टूटी हुई कुर्सी का टुकड़ा उठाया और उसके मुँह मे डाल कर ज़ोर से पैर को कुर्सी के बाहर निकले हिस्से पर दबा दिया जिससे कुर्सी का नीचे वाला हिस्सा जो उसके मुँह मे घुसा हुआ हलक तक को चीर गया और वो वही तड़प-तड़प के मर गया. अब मैने जल्दी से दूसरी टाँग पर बँधी कुर्सी भी खोली और कमरे मे बने बाथरूम मे चला गया खुद के चेहरे पर लगे ज़ख़्म को देखने लगा.फिर मैने अपने सिर को पानी से धोया और चेहरे पर लगा खून साफ किया. उसके बाद मैं जल्दी से बाहर आया और पुलिस वाली वर्दी उतार कर उन मरे हुए लोगो का कोट-पेंट पहन लिया क्योंकि लड़ाई के दोरान उन लोगो का काफ़ी खून वर्दी पर लग गया था. मैं हवेली के इस वक़्त आखरी हिस्से मे खड़ा था. जहाँ से हीना का कमरा काफ़ी दूर था. इसलिए मैं बाल्कनी के रास्ते से पाइप पर लटक कर हीना के कमरे की तरफ चला गया. जहाँ पहले से काफ़ी लड़कियाँ मोजूद थी और हीना को तैयार कर रही थी.

अब मैं हीना के कमरे मे भी नही जा सकता था इसलिए पाइप के सहारे ही लटकता हुआ आगे की तरफ बढ़ने लगा. जहाँ नीचे मुझे हॉल और स्टेज नज़र आया जहाँ पर चौहान बैठा था. उँचाई काफ़ी ज़्यादा थी इसलिए मैं सीधा नीचे छलाँग नही लगा सकता था. इसलिए मैं इधर उधर कोई रस्सी देखने लगा.जिससे लटक कर मैं नीचे तक जा सकूँ क्योंकि अब मुझे सिर्फ़ चौहान को ही मारना था. तभी मुझे सामने एक झुम्मर लटका हुआ नज़र आया मुझे बस वहाँ तक किसी भी तरह से पहुँचना था. क्योंकि वहाँ से स्टेज की उँचाई काफ़ी कम थी और मैं आसानी से छलाँग भी लगा सकता था. मैने इधर उधर देखा और पाइप के सहारे हवेली की छत की तरफ बढ़ने लगा जिससे लटक कर मैं उपर की एक बाल्कनी मे पहुँच गया. बाल्कनी से झूमर पर छलाँग लगाना आसान था इसलिए मैं बाल्कनी की रेलिंग पर पैर रख के खड़ा हो गया और नीचे झूमर के उपर छलाँग लगा दी. झूमर ज़ंजीरो से बँधा हुआ था.इसलिए उसने मेरा वजन तो उठा लिया लेकिन मेरे गिरने से बहुत ज़ोर की आवाज़ हुई और काफ़ी बल्ब भी टूट गये जिससे सबका ध्यान उपर की तरफ चला गया.

सरपंच : ओये कौन है उपर....

झूमर से नीचे की दूरी काफ़ी कम थी इसलिए मैने बिना कोई जवाब दिए नीचे स्टेज पर छलाँग लगा दी और मैं सीधा चौहान के उपर आके गिर गया जिससे उसकी कुर्सी टूट गई और चौहान को काफ़ी चोट आई मैने जल्दी से अपने दाए पैर को उपर उठाया और उसमे फँसी एक पिस्टल निकाल कर चौहान के सिर पर रख दी.

मैं : मादर जात मैने कहा था ना आज तू निकाह नही जहन्न्रुम क़बूल करेगा.

चौहान : गन नीचे कर ले उस्मान नही तो मेरे लोग यहाँ खड़े तमाम लोगो को मार डालेंगे.

मैं : अगर तेरे एक आदमी की भी गोली चली तो तेरा भेजा यही बाहर निकाल दूँगा. इसलिए अपने कुत्तो से बोल बंदूक नीचे रख दें. नही तो तेरा पोस्टमॉर्टम मैं यही खड़े-खड़े कर दूँगा.

चौहान : (अपने लोगो को गन नीचे करने का इशारा करते हुए) नीचे करो...

मैं : ये हुई ना बात ! चल अब शराफ़त से मुझे बाहर लेके चल. तुझे तो मैं अपने गाँव लेके जाऊंगा. जहाँ सब तेरा सीक कबाब बनाएँगे साले...

तभी पांडु हीना के सिर पर बंदूक लगाए सीढ़ियो से उतरता हुआ नज़र आया.

पांडु : इतनी जल्दी भी क्या है उस्मान... गन नीचे कर नही तो तेरी डार्लिंग तो गई.

सरपंच : ये क्या बदतमीज़ी है चौहान साहब .अपने आदमी से कहो छोड़ दे मेरी बेटी को नही तो अच्छा नही होगा.

चौहान : वाह पांडु वाह... चुप कर बूढ़े... साले तेरी बेटी के चक्कर मे हम अपनी क़ुर्बानी तो नही दे सकते ना....

हीना : (चलते हुए स्टेज के पास आते हुए) सुन लिया अब्बू.... यही वो लड़का था ना जो आपने मेरे लिए चुना था.

सरपंच : मुझे माफ़ कर दे बेटी...

पांडु : ओये तुम बाप-बेटी अपना ड्रामा बंद करो... उस्मान तुमने सुना नही मैने क्या बोला.घोड़ा नीचे कर नही तो मैं इस लड़की को गोली मार दूँगा.

सरपंच ये सब देख नही सका और जल्दी से पांडु से पिस्टल छीन ने लगा. तभी चौहान ने अपनी जेब से पिस्टल निकाल कर सरपंच को ३ गोली मार दी जिससे सरपंच वही ज़मीन पर गिर ढेर हो गया.

चौहान : उस्मान अपनी पिस्टल नीचे कर , नही तो अगली गोली हीना पर चलेगी.

मैं अब मजबूर था इसलिए चाह कर भी चौहान पर गोली नही चला सकता था. इसलिए अपनी पिस्टल चौहान को दे दी.

हीना : (रोते हुए) नही सुजल ऐसा मत करो ! मार दो इस कुत्ते को इसने मेरे अब्बू को मारा है.

चौहान ने मुझसे पिस्टल ले ली और एक ज़ोरदार तमाचा मेरे मुँह पर मारा .तभी चौहान के कुछ आदमियो ने मुझे पिछे से आके पकड़ लिया और एक रस्सी से दुबारा मेरे हाथ बाँध दिए. चौहान ने अपनी पिस्टल वापिस अपनी जेब मे डाली और क़ाज़ी को आवाज़ लगाई.

चौहान : क़ाज़ी साहब ! कहाँ हो ? जल्दी करो निकाह नही करवाना क्या हमारा.

क़ाज़ी : मैं लड़की की मर्ज़ी के खिलाफ उसकी शादी नही करवा सकता.ये गुनाह है.

चौहान : गुनाह किस बात का क़ाज़ी साहब आप देखना ये लड़की आपके सामने मुझे क़बूल करेगी.नही तो मैं इसके आशिक़ को गोली मार दूँगा.

हीना : (रोते हुए) नही... सुजल को कुछ मत करना तुम जो बोलोगे मैं वो करूँगी.

चौहान : देखा क़ाज़ी साहब मैं ना कहता था... चलिए निकाह की तैयारी कीजिए .अभी और भी बहुत से काम ख़तम करने हैं.

तभी पिछे से अँधा-धुन्ध गोलियाँ चलने की आवाज़ आने लगी और एक-एक करके चौहान के सब आदमियो पर गोलियाँ चलने लगी. मुझे ये समझते एक पल भी नही लगा कि मेरा यार लाला आ गया है और मेरे आदमियो ने पूरी हवेली को चारो तरफ से घेर लिया है.अब हवेली के चप्पे-चप्पे पर मेरे आदमी बंदूक लिए खड़े थे और सारी बाज़ी ही पलट गई थी.

लाला : (ताली बजाते हुए) क्या बात है भाई ! यहाँ तो पूरी महफ़िल लगी है. लगता है मैं वक़्त पर ही आ गया... मैने कहा चौहान साहब सलाम क़बूल कीजिए लाला का... अगर आप नही चाहते कि मैं आपकी नितंब पर लात मारू तो अपने आदमियो को प्यार से बोलो कि मेरे भाई और भाभी को शराफ़त से खोल दे नही तो ये आपकी सेहत के लिए अच्छा नही होगा.... (मुस्कुराते हुए)

मैं : (मुस्कुराते हुए) कहाँ मर गया था साले ५ मिनिट और नही आता तो हमारी लाशे मिलनी थी तुझे साला कोई काम का नही है तू.....

लाला : (स्टेज पर चढ़ते हुए) ओये क्या आदमी है साला अहसान तो मानता ही नही किसी का... अब फँस गया तो सारा बिल मेरे नाम पर फाड़ रहा है... मैने नही बोला था कि कुछ देर रुक जा. मैं आ जाऊ फिर साथ मे मिलकर इस कुत्ते की नितंब मारेंगे तब तो बड़ा चौड़ा होके अकेला ही भिड़ गया था सबके साथ.

मैं : अच्छा ठीक है ! अब नाटक मत ठोक और आके मेरे हाथ खोल.

लाला : (अदब से मेरे सामने झुकते हुए) जो हुकुम मेरे आका...

उसके बाद लाला ने पहले चौहान को एक ज़ोरदार तमाचा मारा और फिर मेरी रस्सी भी खोल दी. हीना जल्दी से भाग कर मेरे पास आई और मेरे गले से लग कर रोने लगी.

लाला : (मुस्कुराते हुए हीना को देख कर) मैने कहा सलाम क़बूल करो अपने देवर का होने वाली भाभी जी.

हीना : (मुझे गले से लगाए हुए लाला को देखने लगी) सुजल ये कौन है.

मैं : (मुस्कुरा कर) मेरा बचपन का दोस्त है.

लाला : चलो चौहान साहब मरने के लिए रेडी हो जाओ और हमने तो अपने ग़रीब खाने मे काफ़ी इंतज़ाम किया था लेकिन उस्मान भाई का हुकुम है कि आपको ठोकना है... ये लैला मजनू को लगे रहने दो आप फिलहाल मेरे साथ ही काम चलाओ.अभी तो सिर्फ़ मैं ही आपकी मारूँगा. (चौहान की नितंब पर लात मारते हुए) चल भोसड़ी के देखता क्या है... उस्मान को भाभी से फ्री होने दे तेरी तो यही मारेगा... बोल भाई उस्मान इसका क्या करना है.... ठोक दूं क्या...

मैं : नही... इसको गाड़ी मे डाल और लेके चल अपने ठिकाने पर.मेरा मूड बदल गया है.अब इसको मारेंगे नही बल्कि इसकी मारेंगे (आँख मारते हुए) और फिर अभी तो इससे छोटे के भी बहुत से राज़ उगलवाने हैं.

लाला : (पलट ते हुए) मुझे आज तू कुछ बदला-बदला सा लग रहा है यार...

मैं : (मुस्कुराते हुए) साले मुझे सब कुछ याद आ गया है...

लाला : (हवा मे फायर करते हुए) ओये यारा खुश कर दिया.... ब्बबुऊउर्र्राहह... चल तू भाभी को लेके बाहर आजा फिर देखते हैं क्या करना है.

मैं : तुम लोग चलो मैं अपनी गाड़ी मे ही आऊंगा.

लाला : ओये मैं बाहर से ही आया हूँ ! वहाँ तेरी गाड़ी नही खड़ी.

मैं : यार मेरी गाड़ी हवेली के पिछे खड़ी है और साथ मे मेरे कुछ और लोग भी हैं जिनको साथ ही लेके जाना है.

लाला : अच्छा तो तू चल मैं ज़रा अपने हाथ की खुजली ख़तम कर लून.... (अपना हाथ खुजाते हुए)

मैं : ठीक है लेकिन साले ज़्यादा मत मारना ये अपने जैसा नही है... ज़रा करारे ४ हाथ पड़ गये तो मर ही ना जाए....

लाला : (चौहान के मुँह पर मुक्का मारते हुए) तू जा यार मुझे डिस्टर्ब मत कर. अभी मैं बिजी हूँ देखता नही इतने दिन बाद तो किसी को तसल्ली से धोने का मोक़ा मिला है...

मैं : अच्छा ठीक है लेकिन ५ मिनिट मे बाहर आ जाना इसको लेकर ज़्यादा देर नही करना.

लाला : (चौहान के पेट मे लात मारते हुए) तू जा ना यार मैं आ जाऊंगा. इसके लिए तो ५ मिनिट भी बहुत है उसमे ही इसकी फॅट के हाथ मे आ जाएगी... (ज़ोर से हँसते हुए)

हीना अपने अब्बू को गले लगा कर काफ़ी देर रोती रही फिर जब मैने उसके पास जाके उसके आगे हाथ बढ़ाया तो वो बिन कुछ बोले मेरा हाथ पकड़कर खड़ी हो गई. मैने सबसे पहले हीना के आँसू साफ किए उसके बाद मैं और हीना जल्दी से हवेली से बाहर निकले और हवेली के पिछे की तरफ चले गये जहाँ पर मैने अपनी गाड़ी खड़ी की थी .गाड़ी के पास ही मुझे जास्मिन बैठी हुई नज़र आई जो बार-बार इधर उधर देख रही थी उसके चेहरे से मेरे लिए फिकर दूर से ही दिखाई दे रही थी. मुझे और हीना को दूर से आता हुआ देखकर जैसे उसका चेहरा खुशी से खिल गया वो तेज़ कदमों के साथ सुजल को गोद मे उठाए हमारी तरफ बढ़ने लगी और आते ही मुझे गले से लगा लिया और खुशी से मुस्कुराने लगी.

जास्मिन : कितनी देर कर दी आने मे. मैं तो बहुत डर गई थी... तुम ठीक तो हो ना....

मैं : कैसा लगता हूँ...

जास्मिन : ये सिर मे चोट कैसे लगी...

मैं : वो सब जाने दो. ये थोड़ा बहुत तो चलता रहता है. अब तुम जल्दी से गाड़ी मे बैठो हम को हमारे नये घर जाना है.

जास्मिन : (खुश होके हाँ मे सिर हिलाते हुए) हमम्म चलो...

हीना : लाओ छोटा सुजल मुझे दे दो और तुम आगे बड़े वाले सुजल के साथ बैठ जाओ.

उसके बाद मैं और जास्मिन आगे बैठ गये और सुजल को हीना ने पकड़ लिया और वो खुद ही पिछे बैठ गई. मैने जल्दी से गाड़ी स्टार्ट की और उसको हवेली के अगली तरफ ले आया और हवेली के बड़े गेट के सामने रोक दिया जहाँ मेरे साथियो की गाडियो का क़ाफ़िला पहले से मोजूद था. उसके बाद मैने अपने आदमियो से चलने का इशारा किया और वो लोग मेरा इशारा पाते ही अंदर गये और लाला और चौहान को ले आए. लाला ने कुछ ही देर मे चौहान की बहुत बुरी हालत कर दी थी. चौहान के चेहरे से और सिर से पानी की तरफ खून टपक रहा था और कुछ आदमी उसको ज़मीन पर घसीटकर ला रहे थे.

मैं : ओये साले मार तो नही दिया उसको.

लाला : (अपना हाथ रुमाल से साफ करते हुए) नही भाई ज़िंदा है कुत्ता... इसको तो अड्डे पर ले-जाकर तसल्ली से सब भाई मिल कर मारेंगे.

मैं : चल गाड़ी मे बैठ चलने का वक़्त हो गया है.

लाला : (मुझे सल्यूट करते हुए) ओके बॉस...

उसके बाद हम सब गाड़ी मे बैठे और अपने गाँव, अपने घर की तरफ गाडियो के क़ाफ़िले को बढ़ा दिया. हीना मुझे कुछ उदास लग रही थी लेकिन जास्मिन बहुत खुश थी और अपने नये घर का सुनकर बहुत ज़्यादा उतावली थी.

मेरी गाड़ी सबसे आगे थी और बाकी गाड़ियाँ मेरी गाड़ी के पिछे चल रही थी और कुछ फ़ासले पर थी कुछ ही देर मे हम अपनी गाँव की सरहद से काफ़ी दूर निकल आए थे. हम को गाँव से निकले अब काफ़ी वक़्त हो गया था.लेकिन हीना मुझे अब भी उदास लग रही थी.इसलिए मैने इशारे से अपने साथ बैठी जास्मिन को अपने पास किया और उसको पिछे जाने का इशारा किया,ताकि दोनो बातें कर सके और हीना का भी मन बहल जाए.
जास्मिन चलती हुई गाड़ी मे ही सीट को नीचे करके पिछे चली गई और हीना के साथ बैठ गई और कुछ ही देर मे दोनो की बाते शुरू हो गई और अब हीना भी पहले से काफ़ी बेहतर नज़र आ रही थी. मेरी तरक़ीब ने अपना काम दिखा दिया था क्योंकि २ औरते एक साथ चुप तो कभी बैठ ही नही सकती .इसलिए बात होना लाज़मी था इसी तरह हीना का मूड भी अब अच्छा हो गया था. ऐसे ही गुज़रते वक़्त के साथ हम अपनी रफ़्तार से मंज़िल को बढ़ रहे थे कि अचानक मुझे सामने एक चेक पोस्ट नज़र आई. हम वो क्रॉस करके नही जा

सकते थे क्योंकि हम सब के पास काफ़ी असला था और चौहान के साथ होने की वजह से हमारे पकड़े जाने का भी डर था

इसलिए मैने जल्दी से अपनी जेब से अपना फोन निकाला और लाला को फोन करके अपनी गाड़ी के पिछे आने का हुकुम दिया और अपनी गाड़ी को एक जंगल की तरफ घुमा दिया.मेरे पिछे-पिछे ही बाकी गाडिया भी जंगल मे घुस गई. कुछ दूर जाके मैने गाड़ी को रोक दिया क्योंकि मुझे आगे किस तरफ जाना है ये समझ मे नही आ रहा था. इसलिए मैने गाड़ी से बाहर निकल कर लाला की गाड़ी को भी रुकने का इशारा किया मेरे नज़दीक आके उसकी गाड़ी भी रुक गई और लाला गाड़ी से बाहर आ गया.

लाला : हाँ भाई यहाँ बीच जंगल मे कहाँ ले आया ! अब आगे कहाँ जाना है.

मैं : आगे चेक पोस्ट थी इसलिए मैने गाड़ी को जंगल मे घुमा लिया लेकिन अब आगे किस तरफ जाना है. ये मुझे भी समझ नही आ रहा शायद हम भटक गये हैं.

लाला : लो जी कर लो बात... अब बीच जंगल मे क्या करेंगे. दिन भी ढलने वाला है ऐसा करते हैं. वापिस चलते हैं वहाँ से हाइवे पर हो जाएँगे.

मैयाँ : पागल हो गया है क्या... आगे चेक पोस्ट थी इसलिए तो मैने गाड़ी जंगल मे घुसा दी थी और तू फिर से वही जाने की बात कर रहा है. अब तक ये कुत्ते (चौहान) के चमचे भी इसको ढूँढने निकल पड़े होंगे.

लाला : फिर क्या है ? साला डरता कौन है अपने पास हथियार की कमी है. क्या साला जो भी आएगा मार कर निकल जाएँगे और क्या चल भाई वापिस ही चलते हैं.

अभी हम दोनो बात ही कर रहे थे की अचानक चौहान गाड़ी से मुँह बाहर निकाल कर चिल्लाया...

चौहान : कमीनो तुम यहाँ से ज़िंदा नही जा सकते. तुमने मुझे अगवा करके अपनी मौत को दावत दी है. अभी तुम मुझे जानते नही हो.

लाला : (गुस्से मे) अर्रे भाई तू तो भाभी के साथ मज़े से बैठ गया और ये हरामी को मेरे साथ डाल दिया .साला भेजा खा गया मेरा कितना बोलता है ये.... (अपने आदमियो से) यार कोई गंदा कपड़ा ढुंढ़ो इसका मुँह बाँधने को...

मुन्ना (हमारा आदमी) : भाई एक ही पट्टी थी. वो भी ये साला कुत्ता काट गया और पट्टी फॅट गई.

लाला : (कुछ सोचते हुए और हँस कर) इसका इलाज तो मैं करता हूँ...

मैं : (सवालिया नज़रों से लाला को देखते हुए) ओये मार मत देना ये ज़िंदा चाहिए मुझे समझा.अभी इससे बहुत कुछ उगलवाना है.

लाला : भाई फिकर मत कर मार कौन रहा है मेरा तो कुछ और ही मूड है (आँख मारते हुए).

मैं : क्या करने जा रहा है तू...

लाला : (हँसते हुए) तू बस भाभी को गाड़ी से बाहर मत आने देना इसकी ऐसी-तैसी तो मैं करता हूँ साला मुँह खोलने के लायक नही रहेगा....

इतना कह कर वो अपना जूता उतारने लगा और फिर अपनी ज़ुराब भी उतार ली और फिर से जूता पहन लिया और अपनी गंदी बद-बू-दार ज़ुराब उठा कर एक झाड़ी के पिछे चला गया.मैने भी जास्मिन और हीना को गाड़ी से बाहर निकलने से मना कर दिया. कुछ देर बाद लाला जब हँसता हुआ वापिस आया तो उसकी ज़ुराब गीली थी और उससे पानी टपक रहा था.

मैं : (हँसते हुए) ये क्या है कमीने...

लाला : (हँसते हुए) इस कुत्ते का मुँह बंद करने का इलाज... चल भाई मुँह खोल इसका... लगे हाथ दोनो काम हो गये साला मेरा भी काफ़ी देर से प्रेशर बना हुआ था. साला पेट भी खाली हो गया और इसका भी इलाज हो गया.

लाला के साथ बैठे आदमियो ने चौहान का मुँह पकड़ लिया और ज़बरदस्ती पेशाब से गीली की हुई ज़ुराब चौहान के मुँह मे डाल दी और उसी फटी हुई पट्टी को दुबारा उसके मुँह पर बाँध दिया.वो किसी बिन पानी की मछली की तरफ छट-पटा रहा था और अपनी गर्दन को हवा मे इधर उधर कर रहा था. सब ये देख कर ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे थे और हीना और जास्मिन जो कि अब भी गाड़ी मे बैठी थी वो मुझे सवालिया नज़रों से देख रही थी.

हीना : क्या हुआ सब हँस क्यो रहे हैं.

मैं : (हँसते हुए) कुछ नही तुम्हारे काम की बात नही है.... यार हम रास्ता भटक गये हैं. आगे किस तरफ जाना है समझ नही आ रहा. तुमको यहाँ से आगे जाने का रास्ता पता है क्या.

जास्मिन : (बीच मे बोलते हुए) मुझे पता है किस तरफ जाना है. मैं बचपन मे स्कूल इसी रास्ते से जाया करती थी.

मैं : तो पहले बताया क्यो नही कितनी देर से हम बेकार मे भटक रहे हैं.

जास्मिन : (मुँह बनाते हुए) तुमने पूछा ही नही...

मैं : क्या तुम भी कमाल हो... (अपने सारे आदमियो से) चलो ओये गाड़ी मे बैठो सारे रास्ते का पता लग गया है.

उसके बाद सब आदमी वापिस गाडियो मे बैठ गये और चौहान को भी वापिस गाड़ी मे डाल लिया और हम सब जास्मिन के बताए रास्ते पर आगे बढ़ने लगे और कुछ ही देर मे हम हाइवे पर आ गये अभी हमें कुछ ही देर हुई थी कि मेरा फोन बजने लगा. मैने जेब से फोन निकाला तो स्क्रीन पर शहनाज लिखा आ रहा था. मुझे समझ मे नही आ रहा था कि जास्मिन और हीना के सामने शहनाज से बात कैसे करूँ लेकिन फोन उठाना भी ज़रूरी था .इसलिए कुछ सोचकर मैने फोन उठा लिया.

मैं : हंजी सरकार हुकुम कीजिए...

शहनाज : कहाँ हो तुम... मुझे फोन क्यो नही किया... मैने कहा था ना पहुँच कर मुझे फोन कर देना... जानते हो कितनी फिकर हो गई थी तुम्हारी....

मैं : बस... बस... बस... साँस तो लेलो... एक ही साँस मे सब कुछ पूछ लिया... यार मुझे बोलने का मोक़ा तो दो...

शहनाज : ठीक है बोलो... फोन क्यो नही किया और वापिस कब आ रहे हो.

मैं : मैं कल सुबह तक वापिस आ जाऊंगा और जिस काम के लिए गया था वो पूरा हो गया है...

शहनाज : सच्ची.... कमाल है ! इतनी जल्दी वापिस आ रहे हो...

मैं : तुम कहो तो ४-५ दिन और रुक जाता हूँ.

शहनाज : नही... मेरे कहने का वो मतलब नही था....

मैं : अच्छा एक काम की बात सुनो...

शहनाज : हम्म.... बोलो...

मैं : मेरे साथ कुछ मेहमान भी आ रहे हैं. जो हमारे घर मे ही रहेंगे हमारे साथ...

शहनाज : मेहमान है तो उनको हवेली मे रखो ना घर लाने की क्या ज़रूरत है.

मैं : अर्रे यार वो काम वाले मेहमान नही है, मेरे मेहमान है और बहुत ख़ास है. अब से वो भी हमारे साथ ही रहेंगे तो तुम उन लोगो के रहने का इंतज़ाम कर देना ठीक है...

शहनाज : हम्म ठीक है ! लेकिन तुमने ये तो बताया ही नही कितने लोग हैं.

मैं : (हँसते हुए) २ औरत है और एक छोटा सा शेर भी है उनके साथ.

शहनाज : औरत कौन है...

मैं : वो में तुमको आके सब बताऊंगा. बस अभी जितना कह रहा हूँ उतना कर लो.

शहनाज : अच्छा... जल्दी आ जाना मैं इंतज़ार करूँगी...

मैं : हमम्म चलो अब फोन रख दो मैं गाड़ी चला रहा हूँ...

शहनाज : उउउहहुउ.... कितनी बार कहा है गाड़ी चलाते हुए बात ना किया करो....

मैं : तुम्हारा भी पता नही चलता फोन उठा लो तो मुसीबत ना उठाओ तो मुसीबत...

शहनाज : अच्छा ! अब फोन बंद करो और ध्यान से गाड़ी चलाओ.

उसके बाद मैने फोन रख दिया अब मुझे एक नयी फिकर होने लगी थी कि मैं घर जाके शहनाज को इन दोनो के बारे मे क्या बताऊंगा.इसलिए आगे के बारे मे सोचने लगा और चुप-चाप गाड़ी चलाने लगा. कुछ देर बाद हम एक ढाबे पर रुके जहाँ हम सब ने मिलकर खाना खाया. खाना खाते हुए कुछ लोग हमें अज़ीब नज़रों से घूर-घूर कर देख रहे थे लेकिन मैने नज़र अंदाज़ कर दिया और खाने पर ध्यान देने लगा क्योंकि उस वक़्त हम सब को बहुत ज़ोर की भूख लगी हुई थी. खाना खाने के बाद हम सब वापिस अपनी गाडियो मे बैठ कर अपनी मंज़िल की तरफ बढ़ने लगे. कुछ दूर जाने के बाद मुझे लाला का फोन आया कि पुलिस की कुछ गाड़ियाँ हमारी गाडियो के पिछे आ रही हैं. ये सुनकर मुझे समझ आ गया कि ढाबे पर वो कौन लोग थे जो हम को घूर-घूर कर देख रहे थे. इसलिए मैने सबको बिना कोई खून-खराब किए वहाँ से शांति से चलने का हुकुम दे दिया क्योंकि अब रात के वक़्त मैं एक और खून-ख़राबा नही चाहता था. इसलिए मैने सबको गोली चलाने से मना कर दिया. लेकिन वो पुलिस की गाड़ियाँ लगातार अपना साइरन बजाते हुए हमारी गाडियो के पिछे आ रही थी और हम को रुकने के लिए कह रही थी. कुछ देर बाद हमारी सबसे पिछे वाली गाड़ी पर फायर होने शुरू हो गये.

अब हम लोग कुछ नही कर सकते थे. ना चाहते हुए भी हम को जवाब मे गोली चलानी ही थी. इसलिए अब चलती गाडियो मे ही दोनो तरफ से फायर होना शुरू हो गये मेरी गाड़ी उस वक़्त सबसे आगे थी और मेरे साथ जास्मिन, छोटा सुजल और हीना भी थी. इसलिए मैं सिर्फ़ गाड़ी चलाने पर ही ध्यान देने लगा. कुछ देर बाद एक पुलिस की जीप पिछे की तमाम गाडियो को ओवर टेक करती हुई एक दम मेरे बराबर मे आ गई और लगातार मेरी कार पर गोलियाँ चलाने लगी. मैने जल्दी से हीना और जास्मिन को नीचे झुका दिया ताकि उनको गोली ना लग जाए लेकिन एक गोली मेरे कंधे पर लग गई और गाड़ी का बॅलेन्स

बिगड़ने लगा. मैने जल्दी से स्टेरिंग के सामने रखी अपनी रेवोल्वर उठाई और सामने वाली जीप पर जवाबी गोलियाँ चलाने लगा ५ ही फायर मे मेरी रेवोल्वर खाली हो गई थी और अब मेरे पास कारतूस भी नही थे क्योंकि बाकी हथियार और कारतूस कार की दिग्गी मे पड़े थे और कार रोकने का मेरे पास मोक़ा नही था. लेकिन जीप मे से अब भी फाइरिंग जारी थी अब मेरे पास दूसरा कोई असला नही था इसलिए मैने एक रिस्क उठाया मैने अपनी गाड़ी की स्पीड कम की और अपनी गाड़ी को उस जीप के एक दम साथ मे कर लिया और जास्मिन और हीना को झुके रहने का कहकर ज़ोर से अपनी गाड़ी को उस जीप मे धकेल दिया जिससे उनकी जीप का बॅलेन्स बिगड़ गया और वो सामने वाली चट्टान मे जाके टकरा गई और जीप पलट गई. अब मेरा उस जीप से तो पीछा छूट गया था लेकिन मेरे आदमियो की गाडियो के पिछे अब भी काफ़ी पुलिस की जीप लगी हुई थी और दोनो तरफ से फायर हो रहे थे. मेरे कंधे मे भी गोली लग चुकी थी जिस वजह से तेज़ दर्द उठ रहा था और अब मुझसे गाड़ी भी नही चलाई जा रही थी लेकिन फिर भी मैं हिम्मत करके गाड़ी चलाता रहा. मेरी अब हिम्मत जवाब दे रही थी क्योंकि बाजू से काफ़ी खून निकल रहा था इसलिए मैने लाला की गाड़ी को हाथ से इशारा करके मेरी गाड़ी के बराबर आने को कहा कुछ ही सेकेंड्स मे उसकी गाड़ी रफ़्तार पकड़ती हुई एक दम मेरी गाड़ी के साथ आ गई.....

मैं : (चिल्लाते हुए) मेरे कारतूस ख़तम हो गये हैं और मुझे गोली भी लगी है मुझे हथियार वाला बॅग दे लाला....

लाला : (हाथ से इशारा करते हुए) देता.. हु...

हम दोनो ने एक ही वक़्त पर चलती कार का दरवाज़ा खोल दिया और अपनी दोनो गाडियो को बराबर पर लाके मैने एक हाथ से हथियार वाला बॅग अंदर खीच लिया.साथ ही मैने अपने एक आदमी को मेरी गाड़ी मे आने को कहा ताकि वो कार चला सके. हम दोनो की गाडियो की रफ़्तार काफ़ी तेज़ थी इसलिए गाड़ी बराबर आने मे दिक्कत हो रही थी कुछ एफर्ट्स के बाद मैने उस आदमी को अपनी गाड़ी मे खींच लिया. अब वो मेरी जगह गाड़ी चला रहा था और मैं साथ वाली सीट पर बैठा बॅग से हथियार निकाल रहा था बॅग खोलते ही मेरी नज़र बाज़ुक़ा पर पड़ी मैने जल्दी से उसमे बॉम्ब लोड किया और अपनी जेब से फोन निकाला और लाला को फोन किया...

मैं : लाला एक आइडिया आया है. मैं गाड़ी की छत पर जा रहा हूँ जब मैं इशारा करूँगा तब अपने आदमियो को बोलना कि सब अपनी अपनी गाड़ियों को बाई तरफ कर ले और एक दम से अपनी सब गाडियो की रफ़्तार बढ़ा दे...

लाला : ठीक है.... भाई मैं अभी सबको फोन करके कह देता हूँ....

उसके बाद मैने फोन रख दिया और लाला के इशारे का इंतज़ार करने लगा. क्योंकि उसके बाद ही मैं गाड़ी की छत पर जा सकता था. तभी मुझे हीना की आवाज़ आई...

हीना : सुजल तुम ठीक तो हो ना....

मैं : मैं ठीक हूँ ! फिकर मत करो तुम नीचे रहो....

हीना : तुम्हारी बाजू से तो बहुत खून निकल रहा है...

मैं : कोई बात नही अभी सब ठीक हो जाएगा तुम दोनो नीचे रहो बाहर फाइरिंग हो रही है....

तभी मुझे लाला ने गाड़ी से हाथ बाहर निकाल कर अपने हाथ का अंगूठा दिखाते हुए डन का इशारा किया. मैने जल्दी से गाड़ी का दूसरी तरफ का दरवाज़ा खोला और बाज़ुक़ा लेकर गाड़ी की छत पर बैठ गया और बाज़ुक़ा को अपने कंधे पर सेट कर लिया और पुलिस की बीच वाली गाड़ी का निशाना लगाया ताकि धमाके से आगे और पिछे दोनो तरफ की गाड़िया उड़ जाए.लेकिन उससे पहले मुझे मेरे आदमियो को इशारा करना था.इसलिए मैं कुछ सेकेंड्स के लिए अपना बॅलेन्स बनाता हुआ गाड़ी की छत पर सीधा खड़ा हो गया. जिससे मेरे सब आदमियो ने मुझे देख लिया और अपनी सारी गाडियो को एक साथ बाई तरफ कर लिया. मेरे पास यही सही मोक़ा था मेरी इस चाल को कोई भी पुलिस वाला समझ नही पाया और वो एक सीध मे ही गाड़ी चलाते रहे. तभी मैने बाज़ुक़ा का ट्रिग्गर दबा दिया और उनकी बीच वाली जीप पर फायर कर दिया.

मेरा आइडिया कामयाब रहा ३ जीप धमाके से एक साथ उड़ गई और बाकी ७ जीपों ने वही अपनी गाड़ी को रोक लिया. लाला ये देख कर काफ़ी खुश लग रहा था और गाड़ी के शीशे से मुँह बाहर निकाल कर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था और उन पुलिस वालों को गालियाँ निकाल रहा था. मैने एक नज़र मुस्कुरा कर उसको देखा और फिर बाज़ुक़ा गाड़ी के अंदर फैंक कर खुद भी गाड़ी के अंदर जाके बैठ गया. गाड़ी के अंदर आते ही हीना और जास्मिन ने मेरा बाजू पकड़ लिया और देखने लगी...

हीना और जास्मिन : तुम ठीक हो ना...

मैं : मैं एक दम ठीक हूँ तुम दोनो फिकर मत करो ...

हीना : फिकर कैसे नही करे तुमको गोली लगी है देखो कितना खून निकल रहा है

इतना कह कर उसने खून वाली जगह पर अपना हाथ रख दिया ताकि खून रुक सके...

हीना : (ड्राइवर को देखते हुए) अपने आदमी से कहो किसी डॉक्टर के पास लेके चले खून बहुत निकल रहा है.

मैं : बीच हाइवे मे अब मैं डॉक्टर कहाँ से लेके आऊ अब तो शहर जाके ही डॉक्टर मिलेगा और तुम लोग फिकर मत करो यार मैं एक दम ठीक हूँ.

उसके बाद कोई खास बात नही हुई हीना पूरे रास्ते मेरी बाजू पकड़ कर बैठी रही. कुछ ही देर मे शहर आ गया जहाँ लाला गन पॉइंट पर एक डॉक्टर को उठा लाया जिसने मेरी बाजू से गोली निकाली और गाड़ी मे ही मेरी मरहम पट्टी भी करदी. डॉक्टर के दिए हुए पेन किल्लर से दर्द तो कम हुआ ही साथ ही मुझे नींद आने लगी और मैं सो गया.

३४

सुबह जब आँख खुली तो हम अपनी बस्ती के काफ़ी करीब थे.कुछ ही देर हम बस्ती पहुँच गये. जहाँ सलमान हमारे तमाम आदमियो के साथ हमारा इंतज़ार कर रहा था. जैसे ही मेरी गाड़ी रुकी मेरे सब लोग दौड़कर मेरी गाड़ी के पास आ गये और एक आदमी ने जल्दी से मेरी गाड़ी का दरवाज़ा खोला.सामने सलमान अपनी सदा-बाहर मुस्कान के साथ मेरा इंतज़ार कर रहा था. उसने आते ही मुझे गले से लगा लिया. वही पास ही मेरे घर के बाहर शहनाज भी खड़ी थी जो मुझे देख कर मुस्कुरा रही थी.

सलमान : वाह भाई वाह ! मान गये उस्मान... कमाल कर दिया यार तूने....

मैं : मैने क्या किया ....

सलमान : भाई अकेले ही इस कुत्ते को उठा के वहाँ से ले आया! ये क्या छोटी बात है...

लाला : (भाग कर हमारे पास आते हुए) कमीनो मुझे क्यो भूल जाते हो... और ये तुम्हारा शेर वही ढेर हो जाता. अगर मैं वक़्त पर नही आता.... बड़ा आया कमाल करने वाला...

सलमान : अच्छा.... ठीक है यार.... वैसे वो हमारा नया मेहमान है कहाँ.ज़रा दर्शन तो करवाओ.

लाला : होना कहाँ है ? वही गाड़ी मे पड़ा है.

मैं : सलमान तू ज़रा इस चौहान के बच्चे को देख. मैं ज़रा शहनाज से मिलकर आता हूँ.

सलमान : ठीक है भाई...

उसके बाद मैने अपनी गाड़ी का पिछे का दरवाज़ा खोला और जास्मिन, सुजल और हीना को लेकर अपने घर की तरफ बढ़ने लगा. जास्मिन और हीना दोनो बड़े गौर से चारो तरफ के माहौल और लोगो को देख रही थी.

जास्मिन : हम लोग यही रहेंगे क्या...

मैं : हमम्म क्यो जगह पसंद नही आई क्या...

जास्मिन : नही वो बात नही है. लेकिन यहाँ पर बहुत सारे लोग हैं, तो इन सबके सामने अजीब सा लगता है. अपने गाँव मे तो हम चन्द ही लोग रहते थे ना.

मैं : (मुस्कुराते हुए) यहाँ के लोग भी बहुत अच्छे हैं और तुम्हारा ख़याल रखेंगे. तुम जैसे चाहो यहाँ रह सकती हो. तुम यहाँ एक दम महफ़ूज़ हो.

हीना : यहाँ पर सब लोग तुमको उस्मान कह कर क्यों बुला रहे हैं.

मैं : क्योंकि मेरा असल नाम उस्मान ही है.सुजल नही भूल गई मैने तुम्हे बताया तो था.

ऐसे ही बाते करते हुए हम सब मेरे घर के सामने पहुँच गये, जहाँ शहनाज गेट के सामने खड़ी हमारा इंतज़ार कर रही थी. शहनाज को देखते ही मैं उसको साइड पर ले गया. जहाँ मैने उसको दोनो की सारी कहानी बता दी. इसलिए शहनाज ने बहुत अच्छे से उनका स्वागत किया और उनको घर के अंदर ले गई. मैं उन तीनो के साथ बैठा था लेकिन मुझे उस वक़्त बहुत अजीब सा महसूस हो रहा था और मैं एक अजीब सी दिमागी जंग से गुज़र रहा था. समझ नही आ रहा था कि इन तीनो को एक साथ यहाँ कैसे रखूं. अगर तीनो मे से किसी ने भी पूछ लिया कि बाकी २ से तुम्हारा क्या रिश्ता है. तो मैं क्या जवाब दूँगा. ऐसे ही कई सवाल अब घर आके एक दम से मेरे दिमाग़ मे चलने लगे थे. अभी तो हम सब साथ मे बैठे थे लेकिन बोलने की हिम्मत कोई भी नही कर पा रहा था. हीना और जास्मिन नये माहौल और गुज़रे हुए वक़्त की वजह से चुप थी.शहनाज उन दोनो के साथ मेरे रिश्ते को शायद समझ नही पा रही थी.इसलिए चुप थी और मैं इन तीनो मे फँस गया था क्योंकि तीनो ही मुझे प्यार करती थी और मैं किसी का भी दिल नही तोड़ना चाहता था.

एक तरफ हीना और जास्मिन थी, जो मुझ पर भरोसा करके सिर्फ़ मेरे लिए यहाँ तक आ गई थी.दूसरी तरफ शहनाज थी जो हमेशा से ही मेरे साथ थी और हमेशा मुझे खुश रखने की कोशिश मे लगी रहती थी. ऐसे ही कई सवाल थे जिनके जवाब हम मे से किसी के पास नही थे. तभी सलमान आ गया और उसने हमारे बीच बनी खामोशी को एक दम से तोड़ दिया.

सलमान : तुम लोग यहाँ बैठे एक दूसरे की शक़ल ही देखते रहोगे या कुछ खाने पीने का भी मूड है... भाई इतने लंबे सफ़र से आए हो पहले कुछ खा लो...

शहनाज : हाँ भाईजान ! मैं खाने पीने का ही इंतज़ाम करने जा रही थी...

सलमान : कोई ज़रूरत नही है ! अली की अम्मी (सलमान की बीवी) ने सब इंतज़ाम कर दिया है.उस्मान ने आने से पहले बता दिया था. इसलिए मैने सब इंतज़ाम करवा दिया है. अब आप सब लोग मेरे घर चलिए और दावत क़बूल फरमाये...

उसके बाद हम सब सलमान के घर चले गये. जहाँ हमेशा की तरफ अली मेरे साथ आके खेलने लगा और छोटे सुजल के आ जाने से वो भी काफ़ी खुश लग रहा था और उसके साथ खेलने मे लग गया. उसके बाद हीना जास्मिन और शहनाज को सलमान की बेगम के पास छोड़ कर मैं और सलमान अपने अड्डे पर चले गये जहाँ चौहान को बाँध रखा था. अड्डे पर सूमा , गानी और लाला पहले से मोजूद थे जो शायद मेरे आने का ही इंतज़ार कर रहे थे.

मैं: लाला ये सूमा कहाँ है नज़र नही आ रहा.

लाला : (मुस्कुराकर) भाई वो अपने नये मेहमान की खातिर मे लगा हुआ है.

मैं : अब्बे... कमीनो जान से मत मार देना. अभी उससे छोटे ख्वाजा का माल कहाँ रखा हुआ है,उसका भी पता निकलवाना है.

लाला : भाई अपना काम था चौहान को सूमा तक पहुँचाना. मैने अपना काम कर दिया है.अब आगे तू जान, सूमा जाने और तेरा चौहान जाने... मैं तो खाना खाने जा रहा हूँ. (सलमान को देखकर) साला भूख से जान निकल रही है और यहाँ तो किसी कमीने ने खाना तक नही पूछा. खुद तो मज़े से बिर्यानी खा आए हैं.

सलमान : साले तू मेहमान है ! जो तुझे इन्विटेशन कार्ड देके जाऊ... जा घर चल जा और जाके खाना ठूंस ले...

मैं : (हँसते हुए) अच्छा ठीक है ! जा खाना खा ले जाके.तब तक मैं सूमा से मिलकर आता हूँ.

उसके बाद हम उस कमरे मे चले गये जहाँ चौहान और सूमा थे. सूमा, चौहान को बुरी तरह मार रहा था और कमरे के बाहर ही चौहान के चिल्लाने की आवाज़ आ रही थी. हमने जैसे ही कमरे का दरवाज़ा खोला तो देखा चौहान ज़मीन पर गिरा पड़ा था और सूमा उससे बुरी तरह ठोकर से मार रहा था.

मैं: बस... बस... ! बस कर सूमा.वो मर जाएगा॥

सूमा : मरता है तो मर जाए साला. लेकिन आज इससे सारे माल का पता निकलवाके रहूँगा. इस हरामी की वजह से सबसे ज़्यादा मेरा नुक़सान हुआ है. इस हरामी के कुत्तो ने मेरे माल पर रेड डाल कर सारा माल पकड़ा था. जानता है बाबा से कितनी बार गाली खाई है मैने इस हरामी की वजह से और इस भोसडीके ने सारा माल अपने बाप छोटे को दे दिया. मादर जात को पैसे ही चाहिए थे तो मेरे पास नही आ सकता था.

उसके बाद हमारे काफ़ी पूछने पर चौहान ने अपना मुँह खोल दिया. उसने छोटा ख्वाजा के सारे अड्डे और गोदाम हम को बता दिए जहाँ वो सारा माल रखता था.इसके अलावा पुलिस डिपार्टमेंट मे चौहान के कितने लोग थे उन सबके बारे मे भी उसने हम को बता दिया.

चौहान की दी हुई इन्फर्मेशन से लाला, गानी और सूमा ने छोटे चौहान का सारा बिजनेस ख़तम कर दिया और उसके लगभग सब आदमियो को मार दिया था. उसके सारे गोदमो का माल मेरे आदमियो ने लूट लिया और यहाँ ले आए जिससे मार्केट मे हम लोगो की मोनोपली हो गई थी. अब हम हर गैर क़ानूनी चीज़ को अपने प्राइस और अपनी कंडीशन पर बेचने लगे थे. चौहान के डिपार्टमेंट के सब लोगो को हमने अपने पैसे की ताक़त से खरीद लिया और अपनी तरफ कर लिया. अब वो लोग दूसरे डीलर्स के पकड़े हुए ड्रग्स और सारे हथियार हम को सप्लाइ करते थे .उन लोगो के हमारे साथ मिल जाने से माल पकड़े जाने की टेंशन भी ख़तम हो गई थी. चौहान से सारी इन्फर्मेशन निकलवाने के बाद हमने चौहान को भी ख़तम कर दिया.

देखते ही देखते कुछ ही दिन मे हमने मार्केट मे अपनी पहले से भी मज़बूत पोज़ीशन हासिल कर ली थी. अब हमारे विदेशी क्लाइंट्स के पास भी हम से माल खरीदने के अलावा कोई रास्ता नही था. इसलिए उन्होने मुझसे माफी माँग कर फिर से मेरे साथ बिजनेस शुरू कर दिया. इस तरह हमने छोटे ख्वाजा को पूरी तरह बर्बाद कर दिया था. साथ ही जो छोटे-मोटे गँग थे वो या तो ख़तम कर दिए थे या अपने साथ मिला लिए थे.

अब सिर्फ़ इंतज़ार था तो छोटे ख्वाजा को ख़तम करने का लेकिन हमारी बढ़ती हुई ताक़त को देखते हुए वो भी अंडर ग्राउंड हो गया था या मुल्क़ से फरार हो गया था. अब उसके पास ना पैसा था. ना ही आदमी थे और ना ही बिजनेस था. बाबा के सिखाए हुए नियम के दम पर हम अब अंडरवर्ल्ड मे सबसे उपर आ गये थे. कुछ ही महीनो की मेहनत के बाद एक दिन हम को छोटा ख्वाजा भी मिल गया जिसे हम सब भाइयो ने मिलकर बड़ी तसल्ली से तडपा-तडपा कर मार दिया.

उसके बाद हमारे सारे दुश्मन ख़तम हो चुके थे अब अंडरवर्ल्ड मे हम ही हम थे. एक साल के अंदर-अंदर मैने बाबा के फ़ैसले को सही साबित करते हुए अपने हर बिजनेस को सौ गुना बढ़ा दिया था. अब हमें पहले जितनी पूरे बिजनेस मे कमाई होती थी उससे ज़्यादा अब हमें एक-एक बिजनेस मे होने लगी थी. वही दूसरी तरफ नाम और बढ़ती हुई शौहरत ने मुझे पूरे मुल्क़ मे मोस्ट-वांटेड क़रार करवा दिया था क्योंकि चौहान की किडन्यापिंग से लेकर मुझ पर कई पोलिसेवालो के मर्डर्स के केस भी चल रहे थे. साथ मनी लौंडरी, हथियारो की और ड्रग्स की तस्करी जैसे मामले भी अब मेरे नाम पर थे. इसलिए अब मेरा इस मुल्क़ मे रहना सेफ नही था लिहाज़ा मुझे सारा बिजनेस सलमान, लाला, गानी और सूमा मे बाँट कर इस मुल्क़ को छोड़ना था.क्योंकि अब अगर कुछ दिन और इस मुल्क़ मे मैं रहता तो पुलिस मुझ तक कभी भी पहुँच सकती थी और उनका मुझे गिरफ्तार करने का मूड तो बिल्कुल भी नही था और इस बार मैं एक और पुलिस एनकाउंटर के लिए मैं राज़ी नही था लिफाज़ा मैने मुल्क़ छोड़ने का फ़ैसला कर लिया.

वही दूसरी तरफ शहनाज, जास्मिन और हीना अकेली हो गई थी.मैं उनके साथ होके भी पूरी तरह उनके साथ नही था. ना तो मैं पूरी तरह से किसी को अपनी कह पा रहा था और ना ही मैं अब उनको छोड़ सकता .था इसलिए एक दिन मैने सलमान से अपने दिल बात करने की सोची क्योंकि हम सब मे एक सलमान ही था जो ना सिर्फ़ उमर मे मुझसे बड़ा था बल्कि वो शादी-शुदा भी था. इसलिए एक दिन मैने बात करने के लिए सलमान को बुलाया और खुद अपने कॅबिन मे बैठकर उसके आने का इंतज़ार करने लगा.

सलमान : हाँ भाई तुमने मुझे बुलाया था.

मैं : हाँ सलमान ! बैठ जाओ .तुमसे एक दिल की बात करना चाहता था .समझ नही आ रहा कहाँ से शुरू करू.

सलमान : (मेरे सामने की कुर्सी पर बैठ ते हुए) बोल भाई ! क्या बात है ?

मैं : तू तो जानता है कि मैं ये मुल्क़ छोड़ कर जा रहा हूँ लेकिन जाने से पहले मैं एक उलझन मे हूँ.

सलमान : बताना यार कैसी उलझन.अब तो अपनी सारी प्रॉब्लम्स भी सॉल्व हो गई .है बिजनेस भी टॉप पर चल रहा है अब कैसी उलझन.

मैं : जब से हीना और जास्मिन यहाँ आई है मैं बहुत उलझ गया हूँ. शहनाज , हीना और जास्मिन तीनो ही मुझे बहुत प्यार करती है और उन तीनो ने ही मेरे लिए अपना सब कुछ छोड़ दिया है. अब मुझे समझ नही आ रहा कि अपने मतलब के लिए उनको ऐसे छोड़ कर जाना सही होगा या नही.

सलमान : हमम्म बात तो तुम्हारी सही है... यार मेरी मानो तो तुम शादी कर लो सारी उलझन दूर हो जाएगी.

मैं : लेकिन किससे करूँ शादी ? तीनो ही मुझे प्यार करती हैं और कही ना कही तीनो ही मेरे बुरे वक़्त मे मेरे साथ थी और मेरा हमेशा साथ दिया.बिल्कुल तुम सब की तरह.

सलमान : हमम्म मेरी मानेगा तो उससे शादी कर जिससे तू प्यार करता है समझा.... और यार बहुत सोच समझकर फ़ैसला करना.

मैं : ठीक है...

उसके बाद सलमान मुझे मेरी सोच के साथ तन्हा छोड़ कर चला गया और मैं सोचने लगा कि प्यार किसको करता हूँ. सच तो ये था कि मैं तीनो से प्यार करता था लेकिन अब मैं तीनो से शादी कैसे करता. बस इसी क़श-म-क़श मे मैं उलझा हुआ था लिहाज़ा मैने ये फ़ैसला भी उन तीनो पर ही छोड़ दिया और वहाँ से सीधा घर चला गया.

३५

घर पहुँच कर मैने बहुत हिम्मत से घर का दरवाज़ा खट-खटाया. कुछ देर बाद हीना ने एक दिल-क़श मुस्कान के साथ दरवाज़ा खोला.

हीना : आज जल्दी आ गये सुजल ...

मैं : हाँ आज कुछ खास काम नही था. इसलिए जल्दी आ गया.

उसके बाद मैने चारो तरफ देखा तो मुझे सिर्फ़ जास्मिन नज़र आई जो सुजल को बोतल से दूध पिला रही थी. लेकिन मुझे शहनाज कही नज़र नही आई...

मैं : शहनाज कहाँ है...

हीना : वो यतीम खाने मे हैं .अभी बच्चों का स्कूल चल रहा है ना इसलिए शाम को आएगी.

मैं : अच्छा... मैं तुम लोगो से एक ज़रूरी बात करना चाहता था.

ये सुनकर दोनो मेरे पास आके खड़ी हो गई और सवालिया नज़रों से मुझे देखने लगी. मैने दोनो को एक नज़र देखा और दोनो का हाथ पकड़कर अपने साथ उनको भी बेड पर अपनी दोनो तरफ बिठा लिया.

मैं : तुम दोनो तो जानती ही हो कि हमारे बढ़ते हुए बिजनेस और मेरे कारनामो की वजह से मैं पूरे मुल्क़ मे मोस्ट-वांटेड हूँ. इसलिए मुझे ये मुल्क़ छोड़ना होगा लेकिन मैं सोच रहा हूँ इस मुल्क़ से मैं अकेला नही बल्कि शादी करके अपनी बीवी के साथ जाऊ.

हीना : (खुश होते हुए) ये तो बहुत अच्छी बात है कि तुमने शादी करने का फ़ैसला कर लिया है. वैसे कौन है वो खुश-नसीब.

मैं : इसका फ़ैसला मैं नही बल्कि तुम तीनो मिलकर कर ही कर लो क्योंकि मैं जानता हूँ तुम, जास्मिन और शहनाज तीनो ही मुझे बे-इंतेहा प्यार करती हो .मेरे लिए तुमने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया. अब मुझ मे इतनी हिम्मत नही है कि तुम तीनो मे से किसी को भी बीच रास्ते मे ऐसे ही छोड़ कर चला जाऊ.

हीना : (हँसते हुए) बस इतनी सी बात तो इसमे कन्फ्यूज़ होने की क्या बात है... चलो तुम्हारी एक मुश्किल तो मैं आसान कर देती हूँ.. तुमको शहनाज और जास्मिन मे से एक को चुनना है .क्योंकि मुझे लगता है मुझसे ज़्यादा तुमको ये दोनो प्यार करती हैं.

जास्मिन : नही... मुझे लगता है तुमको शहनाज और हीना ज़्यादा प्यार करती है...

हीना : चलो जी हो गया फ़ैसला... तुम शहनाज से ही शादी कर लो. वो तुमको हम दोनो से ज़्यादा प्यार करती है.

मैं : और तुम दोनो...

जास्मिन : हम दोनो की फिकर मत करो ! हम दोनो यहाँ महफ़ूज़ है ना ! तो फिकर कैसी और वैसे भी शहनाज के जाने के बाद यतीम खाना संभालने वाला भी तो कोई होना चाहिए ना.

उनकी बात सुनकर मैं कुछ देर सोचता रहा और फिर बिना कुछ कहे बेड से उठा और चुप-चाप घर से बाहर निकल गया. मैं अपनी गहरी सोच मे इतना उलझा हुआ था कि मुझे पता ही नही चला कब मैं यतीम खाने तक पैदल ही आ गया. वहाँ जाके मैं शहनाज से मिला और यही बात शहनाज से भी कही तो उसका भी जवाब यही था कि हीना और जास्मिन मुझे उससे ज़्यादा प्यार करती है. इसलिए मैं उन दोनो मे से किसी से शादी करूँ. उसका जवाब सुनके मैं वहाँ से वापिस घर की तरफ चल दिया और जाने कब मेरे कदम मुझे बाबा की क़ब्र तक ले आए. वहाँ मैं कुछ देर बैठा रहा और अपने सवालो के जवाब हासिल करने की कोशिश करता रहा लेकिन मैं नाकाम साबित हो रहा था फिर मैं अपनी गुज़री हुई ज़िंदगी को देखने लगा जब मैं सबसे पहले जास्मिन से मिला था वहाँ उसने कैसे पहले मेरी जान बचाई फिर सलमा के साथ मेरी बेहतरीन देख-भाल कि जिससे मैं चन्द महीनो मे अपने पैरो पर खड़ा हो गया.कही ना कही मेरा रोम-रोम जास्मिन और उसके परिवार के अहसान के नीचे दबा हुआ था और वैसे भी अब उसका मेरे सिवा कौन था. मैं उसको कैसे

छोड़कर जा सकता था, दूसरी तरफ हीना थी जिसने मेरी एक छोटी सी दिल्लगी को प्यार समझ कर मेरे जाने के बाद सुजल और जास्मिन का ना सिर्फ़ ख़याल रखा बल्कि मेरी गैर हाज़री मे बाबा और सलमा की भी हमेशा मदद की. वो नही होती तो आज शायद जास्मिन और सुजल भी ज़िंदा नही होते, वही शहनाज के बारे मे सोचता तो वो सबसे अलग थी सारी दुनिया ने मान लिया था कि मैं मर चुका हूँ फिर भी वो मेरा इंतज़ार करती रही. मुझसे शादी किए बिना भी मेरी बेवा बनकर वो अपनी उमर गुज़ारने के लिए तैयार थी और मेरे चले जाने के बाद उसने मेरे सपने को अपनी ज़िंदगी का मकसद बना लिया और अपनी सारी ज़िंदगी यतीम खाने के नाम क रदी. देखा जाए तो मैं इन तीनो का ही कही ना कही कर्ज़दार था.इनके किए हुए प्यार और अहसान को मैं ऐसे कैसे छोड़ कर नही जा सकता था लिहाज़ा मैने एक ऐसा फ़ैसला किया जो शायद किसी ने भी ना सोचा हो. एक नतीजे पर पहुँच कर मैं खुद को काफ़ी शांत महसूस कर रहा था और बाबा की कब्र के पास बैठा खुश हो रहा था. तभी पिछे से एक हाथ मेरे कंधे पर आके रुक गया. मैने पिछे मुड़कर देखा तो ये सलमान था.

सलमान : भाई ! कहाँ है तू दुपेहर से. मैं घर भी गया था लेकिन हीना और जास्मिन ने बताया कि तू बिना कुछ कहे वहाँ से चला गया .मैने समझा तू यतीम खाने गया होगा वहाँ से भी शहनाज से ऐसा ही जवाब मिला. तुझे काफ़ी ढूँढा जब तू नही मिला तो मैं जानता था तू कहाँ मिलेगा.

मैं : यार शाम हो गई ? पता ही नही चला ! मैं आज खुद को काफ़ी उलझा हुआ महसूस कर रहा था. इसलिए सोचा यहाँ आ जाऊ तो मन शांत हो जाएगा.

सलमान : मैं जानता हूँ यार... चल बता फिर किसको प्यार करता है तू और किससे शादी करेगा .मैं कल ही क़ाज़ी को बुलवा लेता हूँ.

मैं : तू क़ाज़ी को बुलवा ले मैने. मेरी हम-सफ़र को चुन लिया है.

सलमान : (खुश होके मेरे गले लगते हुए) अर्रे वाह भाई ! दिल खुश कर दिया.क्या मस्त खबर सुनाई है.... चल बता कौन है हमारी होने वाली भाभी...

मैं : (मुस्कुरा कर) कल निकाह पर देख लेना

सलमान :यार तू कल ही शादी करेगा क्या...

मैं : हाँ क्यो... नही कर सकता क्या...

सलमान : नही... नही... यार ! ऐसी बात नही है . मेरा मतलब था शादी अगर धूम-धाम से होगी तो ज़्यादा बेहतर होगा और उसके लिए तैयारियाँ करने के लिए वक़्त चाहिए.

मैं : (कुछ सोचते हुए) एक हफ़्ता काफी है ...

सलमान : हाँ एक हफ्ते मे तो मैं सब इंतज़ाम कर दूँगा...

मैं : तो ठीक है फिर तय हो गया....

उसके बाद मैं ओर सलमान कार मे बैठ कर घर आ गये. जहाँ जास्मिन शहनाज और हीना मेरा इंतज़ार कर रही थी.

सलमान : लो जी आपका मुजरिम पकड़ लाया हूँ. अब खुद ही संभाल लो. मैं तो चला शादी की तैयारियाँ करने... मुझे बहुत काम है.

सलमान की बात सुन्नकर वो तीनो मेरे पास आके बैठ गई और मुझे सवालिया नज़रों से देखने लगी क्योंकि सलमान की तरह वो भी जानना चाहती थी कि मैं किससे शादी करना चाहता हूँ.लेकिन उनमे से कोई भी मुझसे ये सवाल नही पूछ रही थी. शायद उनमे किसी मे भी दूसरे का नाम सुनने की हिम्मत नही थी.इसलिए कुछ देर मेरे पास खामोश बैठी रहने के बाद तीनो अपने-अपने कामो मे लग गई. मैं जानता था कि वो तीनो ही अंदर से बेहद उदास हैं. लेकिन फिर भी मेरी खुशी के लिए तीनो सलमान की बीवी के साथ शादी की शॉपिंग मे लग गई.

तय किए हुए दिन पूरी बस्ती को दुल्हन की तरह सज़ा दिया गया और मेरी शादी बस्ती मे करना ही तय हुआ क्योंकि मेरा भी कोई अपना खास रिश्तेदार तो था नही. जो भी थे ये बस्ती वाले और मेरे दोस्त मेरे यार ही थे. इसलिए मैने बस्ती मे ही शादी करने का फ़ैसला किया जिसको सबने खुशी-खुशी मान लिया. लेकिन इन गुज़रे दिनों मे सब मुझसे आके

बार-बार एक ही सवाल पूछते थे कि दुल्हन कौन है और मैं किसी को कुछ नही बता रहा था. इसलिए सब एक अजीब सी उलझन मे शादी की तैयारियाँ कर रहे थे.

शादी वाले दिन क़ाज़ी ने दुल्हन को बुलाने का कहा था तो सब मेरी तरफ सवालिया नज़रों से देखने लगे कि अब मैं किसका नाम लूँगा. मैने चारो तरफ नज़र घूमके देखा तो वहाँ पर ना तो जास्मिन थी ना ही शहनाज थी और नही ही हीना थी इसलिए मैने सलमान से तीनो का पूछा.

सलमान : वो तीनो घर मे हैं. जो भी तुम्हारी दुल्हन है उसको जाके खुद ले आओ.

इतना सुनकर मैं वहाँ से उठा ओर चुपचाप घर के अंदर चला गया जहाँ तीनो अलग-अलग बैठी हुई थी और एक दम खामोश थी वो काफ़ी उदास लग रही थी. मुझे देख कर वो कुछ ज़्यादा ही परेशान सी लगने लगी.

मैं : क्या हुआ तुम तीनो यहाँ क्यो हो...

हीना : सुजल बस करो अब बहुत हो गया है. हम तीनो कितने दिन से देख रही है तुम ना तो कुछ कहते हो ना किसी की सुनते हो. आख़िर तुम बताते क्यो नही कि तुमने किसको चुना है .कितने दिन हो गये तुमने हम तीनो की जान सूली पर टाँग रखी है .समझ ही नही आ रहा है कि तुम्हारे दिल मे क्या है.

मैं : (ज़ोर से हँसते हुए) अगर मैं कहूँ कि मैं तुम तीनो से शादी करना चाहता हूँ, तो तुम तीनो मे से किसी को ऐतराज़ है क्या...?

मेरी ये बात सुनकर तीनो एक दूसरे की शक़ल देखने लगी. उनको शायद समझ नही आ रहा था कि वो क्या कहें. शायद किसी ने भी मुझसे ऐसे जवाब की उम्मीद नही की थी इसलिए अब मेरे जैसी उन तीनो की हालत हुई पड़ी थी.

शहनाज : तुम पागल तो नही हो गये हो.तुम जानते भी हो तुम क्या कह रहे हो. ये ना-मुमकिन है.

मैं : मैं एक दम ठीक हूँ और मैने जो कहा वो भी एक दम सही है. मैं तुम तीनो के बारे मे सोचा लेकिन कोई भी फ़ैसला नही कर पाया.इसलिए मैने तुम तीनो को ही चुन लिया. क्योंकि मैं जानता हूँ ,तुम तीनो मे से कोई भी मेरे बिना नही रह सकती और एक को खुश करके मैं दो का दिल नही तोड़ सकता. अब बताओ तुम तीनो को इससे कोई ऐतराज़ है या नही.

इतना कहकर मैने सबसे पहले जास्मिन की तरफ देखा तो उसने ना मे सिर हिला दिया. फिर शहनाज की तरफ देखा तो उसने भी ना मे सिर हिला दिया और लास्ट हीना की तरफ देखा तो उसने बिना कुछ कहे मुझे गले से लगा लिया.

मैं : अगर ऐतराज़ नही है तो तैयार होके बाहर आ जाओ. बाहर क़ाज़ी इंतज़ार कर रहा है.

उसके बाद मैं वापिस बाहर आ गया और अपनी जगह पर जाके बैठ गया और सलमान और लाला को सारी बात बता दी. तो मेरी बात सुनकर उनके भी होश उड़ गये. लेकिन मेरी बात को समझने के बाद वो भी मान गये और मेरी खुशी मे वो भी खुश हो गये. कुछ देर बाद तीनो तैयार होके आ गई और क़ाज़ी ने थोड़े बहुत नाटक करने के बाद मेरा तीनो से निकाह करवा दिया. उसके बाद मैने, मेरी बीवियो ने और सुजल ने एक साथ ये मुल्क़ छोड़ दिया.

मैने ऊपरवाले से मन ही मन कहा कि , "***अब बस करो !*** ,में थक चुका हूं इस खून खराबे से " और ऊपरवाले ने मेरी सुन भी ली.अब मैं अपनी तीनो बीवियो के साथ बहुत सुकून से रहता हूँ. मुझे मेरा मुल्क़ छोड़े हुए चौबीस साल हो गये हैं और इन बीते चौबीस सालो मे मुझे हीना, शहनाज और जास्मिन से एक-एक बेटा हुआ है .जो अभी स्कूल और कॉलेज की एजुकेशन पूरी कर रहे हैं और हमारे साथ ही रहते हैं. तीनो मे मेरी कोई ना कोई खूबी है. लड़कियों का शाँक सबको ही है जिनसे उनकी माँ हमेशा ही परेशान रहती हैं लेकिन वो हर बार मुझे डाँट खाने के लिए आगे करके खुद साफ बचकर निकल जाते हैं. छोटा सुजल भी अब बड़ा हो गया है और वो और अली (सलमान का बेटा) अब मेरा बिजनेस संभालने लगे हैं. सुजल देखने मे काफ़ी हद तक मेरे जैसा है. थोड़ा गरम मिज़ाज़ का भी है. अली एक दम सलमान जैसा ठंडे दिमाग़ का .है जो सुजल को ठंडा करने मे लगा रहता है.

हमारे जाने के बाद यतीम खाना अब साधरन यतीम खाना नही रहा. वहाँ अब हमने एक शानदार स्कूल और बच्चों के रहने के लिए एक आलीशान होस्टल बनवा दिया है. जहाँ बच्चे अच्छी तालीम हासिल करते हैं. क्योंकि हम उन बच्चो को अपने जैसा नही बनाना चाहते. बस्ती भी वो पुरानी टूटी फूटी नही रही हमने वहाँ सबके लिए अच्छे और शानदार घर बनवा दिए हैं और लोगो के रोज़गार के लिए वहाँ फॅक्टरीस और मिल्स खोल दी हैं.जिसको लाला, सूमा संभालते हैं.

अर्रे हाँ हमारे बिजनेस का बताना तो मैं भूल ही गया. हमने अब अपना ड्रग्स और हथियारों का बिजनेस बंद कर दिया है और सारा पैसा रियल एस्टेट, होटेल्स, कसीनो और फाइनान्स कंपनी मे लगा दिया है और अपने हर ग़लत धंधे को शरीफो वाला बिजनेस बना दिया है.जिसको मेरे साथ सलमान, गानी संभालते हैं. लाला, सूमा और गानी ने भी शादी कर ली है और सुधरने की पूरी कोशिश कर रहे हैं. लेकिन आज भी उनके अंदर का गुंडा कभी कभी बाहर आ जाता है जिसको मुझे और सलमान को संभालना पड़ता है. आज मैं एक अंडरवर्ल्ड डॉन होते हुए भी एक नॉर्मल बिजनेस मेन की जिंदगी गुज़ार रहा हूँ और अपने परिवार के साथ बहुत खुश हूँ.

•◆■★ *समाप्त* ★■◆•